बालकृष्ण एम० ए० द्वारा युगान्तर प्रेस, डफ़रिन पुल, दिल्ली में मुद्रित।

रामचरितमानस की इस टीका पर महात्मा गांधीजी की सम्मति



भाई रामनरेश जी,

आप का खत मिला है और सटीक मानस भी। आजकल आराम के दिनों में रोज आध घंटा रामायण सुनता हूँ। तीन दिन से आप ही का पुस्तक पढ़ता हूँ। जो प्रसंग चल रहा है सो तो पढ़ता ही हूँ, और भूमिका से आरम्भ किया है। अब जीवनी चलती है। मेरी तो आप के अनुवाद पर श्रद्धा है, इसलिये इस बारे में तो क्या लिखूँ ?

वर्धा
५-३-१९३६

आपका
मो० क० गांधी

भूमिका



कुछ वर्ष पूर्व रामचरितमानस के शुद्ध पाठ की खोज करके मैंने उसे टीका सहित प्रकाशित कराया था।

'मानस' के प्रेमियों में इसकी बड़ी प्रसिद्धि हुई और महात्मा गाँधीजी ने भी इसको पढ़ा और आशीर्वाद दिया। 'मानस' का पहला संस्करण बहुत थोड़े समय में ही समाप्त होगया; पर उसका दूसरा संस्करण कारणवश न हो सका। हाँ, इसकी माँग बराबर बनी रही और गोस्वामी तुलसीदासजी के भक्तगण इसके नये संस्करण के लिये बराबर प्रेरणा पहुँचाते रहे। अंत में दिल्ली के राजपाल एण्ड सन्ज़, पुस्तक प्रकाशक ने इसके प्रकाशन की इच्छा प्रकट की, मैंने उनको इसका कापी-राइट दे दिया।

रामचरितमानस की विस्तृत भूमिका अलग पुस्तकाकार प्रकाशित हुई है[1]। वह इस ग्रन्थ में इसलिए सम्मिलित नहीं की क्योंकि केवल भूमिका के लिये बहुतों को पूरा रामचरितमानस खरीदना पड़ता, जो उन्हें महँगा हो जाता। आशा है, रामचरितमानस के इस नए संशोधित संस्करण से मानस के प्रेमी पाठकगण लाभ उठायेंगे।

वसंत निवास,
सुलतानपुर,
१५—११—१९५१

—रामनरेश त्रिपाठी

---

१. तुलसी और उनका काव्य, लेखक—रामनरेश त्रिपाठी, मूल्य ७)

गोस्वामी तुलसीदासजी का जीवन-चरित

आज से लगभग चार सौ वर्ष पहले सोरों (ज़िला एटा, उत्तर-प्रदेश) के एक मुहल्ले में एक अत्यन्त निर्धन भिक्षुक ब्राह्मण के घर एक बालक पैदा हुआ। उसके जन्म लेते ही उसकी माँ का देहान्त होगया। फिर थोड़े ही दिनों में उसका पिता भी चल बसा। बालक किसी तरह, पता नहीं दरिद्रता की किन-किन गोदों में पलकर, जीवित बच गया। शरीर में चलने-फिरने की शक्ति आते ही वह पेट का भार उठाये हुए, राम-राम बोलते हुए, पेट की आग को बुझाने के लिए स्वजाति, विजाति और कुजाति सब के घरों में खीस काढ़कर, पेट दिखाकर और बार-बार पैरों पर सिर रखकर टुकड़े माँगता फिरा, और केवल अपने बाहु-बल पर उसने करोड़ों मनुष्यों के कल्याणकारी अपने जीवन को मृत्यु से लगभग नव्बे वर्षों तक बचाये रखा।

बचपन में उसकी गरीबी का यह हाल था कि कहीं किसी के यहाँ विवाह के बाजे की आवाज़ सुनकर वह दौड़ जाता और बचा-खुचा आहार पाकर निहाल हो जाता था। किसी के यहाँ श्राद्ध का समाचार पाकर वहाँ जा बैठता और एक टुकड़े के लिए घंटों टकटकी लगाये रखता था।

उसके शरीर पर वस्त्र नहीं थे, इधर-उधर से चिथड़े जमा करके, सीकर या गाठें देकर वह तन ढक लेता। रात में कभी सड़क पर, कभी किसी मन्दिर में और कभी-कभी किसी मसजिद में भी सो रहता। इस प्रकार की न जाने कितनी भीषण वेदनाओं, असह्य यातनाओं के अन्दर से वह अपने शरीर को बचाकर समाज के सामने आया और अपने अमूल्य जीवन को उसने उसी दुःख से दग्ध, ताप से पीड़ित और चिन्ता से व्याकुल समाज को दान कर दिया, जिसने उसकी जीवन-रक्षा में स्वेच्छा से कुछ भी हाथ नहीं बँटाया था।

वह दुःख ही में जन्मा, दुःख ही में पला और फिर जब तक जिया तब तक दुःख ही को सहोदर की भाँति अपने हृदय से उसने चिपकाये रखा और फिर अपने तपोबल से उसी दुःख को सुख बनाकर संसार को सौंप दिया।

उस चमत्कारी बालक का नाम रामबोला था, जो पीछे गोस्वामी तुलसीदास के नाम से विख्यात हुआ। तुलसीदास जी का जीवन-चरित दुःखों का मर्मबेधी इतिहास है।

उस दीन, हीन, अनाथ मनुष्य ने जागृत अवस्था में एक सुन्दर स्वप्न देखा। उसने उस स्वप्न को आदर्श पुरुष-स्त्री, आदर्श समाज और सुराज

के रूप में चित्रित किया। वही चित्र 'रामचरितमानस' है। 'रामचरितमानस' दीनता की एक अमूल्य भेंट है, जो गरीबों की ओर से एक अत्यन्त निर्धन व्यक्ति द्वारा संसार को मिली है। यह 'रामचरितमानस' गृहस्थों का अमूल्य धन है। इसे किसी मूल्य पर, बदले में बड़े-बड़े राज्य लेकर भी, वे देना स्वीकार नहीं करेंगे। यही इस युग में हिन्दुओं का वेद है।

एक गरीब ने जो कर दिखाया, वह राम से नहीं हो सका था। न अब राम है, न सीता, न लक्ष्मण, न विभीषण और न हनुमान; पर तुलसीदास अब भी हैं। 'रामचरितमानस' उनका प्रत्यक्ष रूप है, जो अमर है, अजर है, अमिट है और अचल है। तुलसीदास न होते तो शायद उनके राम भी न होते और तब हम भी न होते। परिवर्तनशील काल हमें खा चुका होता—यद्यपि यह भी राम ही की महिमा है।

माघ नाम के एक दानी कवि ने वदान्यता के असह्य भार को न सहन करके स्वयं पराजित होकर, आत्मघात कर लिया था। कहा जाता है कि वह निर्धनता से प्रताड़ित होकर एक बार धन के लिए धारा-नरेश की राजधानी में पहुँचा। उसने अपनी स्त्री के हाथ राजा के पास यह श्लोक लिखकर भेजा:—

कुमुदवनमपश्री श्रीमदम्भोजखण्डं
त्यजति मुदमुलूकः प्रीतिमाँश्चक्रवाकः
उदयमहिमरश्मिर्याति शीतांशुरस्तं
हतविधिलसितानां दुर्विपाको विचित्रः ॥

'कुमुद-वन की शोभा जाती रही, कमल शोभायमान हो गए, उल्लूक हर्ष को त्याग रहा है, चक्रवाक प्रसन्न हो रहा है, इधर सूर्य उदय हो रहा है, उधर चन्द्र अस्त हो रहा है। हा! विधाता के कार्यों का परिणाम विचित्र है।'

इस पद्य के भाव पर मुग्ध होकर धारा-नरेश ने कवि-पत्नी को प्रचुर धन-राशि देकर विदा किया। कवि-पत्नी धन लेकर पति के पास चली। रास्ते में याचकों के मुख से अपने पति की कीर्ति सुनकर उसने सब धन उन्हें दे डाला और वह खाली हाथ पति के पास पहुँची।

माघ ने सब वृत्तान्त सुनकर कहा—तुमने बहुत अच्छा किया। पर तुम्हारे दान का समाचार पाकर जो याचकों की भीड़ आ रही है, उसे अब क्या दिया जायगा? दान-शक्ति की क्षीणता से विकल होकर माघ ने यह कहकर आत्म-हत्या करली—

अर्था न सन्ति न च मुंचति मां दुराशा,
त्यागान्न संकुचति दुर्ललितं मनो मे।
याञ्चा च लाघवकरी स्ववधे च पापं,
प्राणाः स्वयं व्रजत किं प्रविलम्बितेन ॥

'धन पास नहीं, आशा छोड़ती नहीं, मूढ़ मन दान देने से हिचकता नहीं, माँगने से लघुता प्राप्त होती है, आत्महत्या में पाप है ! अरे प्राणो ! क्यों देरी करते हो ? स्वयं क्यों नहीं निकल जाते ?'

दारिद्रानलसंतापः शान्तः सन्तोषवारिणा।
याचकाशाविघातान्तर्दाहः केनोपशाम्यति ॥

'दरिद्रतारूपी अग्नि का संताप तो सन्तोषरूपी जल से शान्त हो गया, पर याचकों की आशा के विघात से हृदय में जो जलन हो रही है, वह कैसे शान्त हो ?'

व्रजत व्रजत प्राणा अर्थिनि व्यर्थतां गते।
पश्चादपि हि गन्तव्यं क्व सार्थः पुनरीदृशाः ॥

'प्राणो ! याचक निराश होकर चले गए, अब तुम भी चल दो। पीछे भी तो जाना ही होगा; पर ऐसा साथ कहाँ मिलेगा ?'

जिस दरिद्रता से पराजित होकर माघ ने शरीर त्याग किया, उसी दरिद्रता पर विजयी होकर तुलसीदास ने वह अक्षय-भण्डार दान किया है, जिससे कोई याचक कभी निराश होकर नहीं लौटेगा। दरिद्रता पर तुलसीदास की यह विजय साधारण विजय नहीं है।

मनुष्यों का कल्याण करने के लिए तुलसीदास ने धन की लालसा ही नहीं छोड़ी, उन्होंने स्त्री का भी त्याग किया, जिसके सम्बन्ध में नीलपट्ट कवि कहता है—

स्त्री-बल से गर्वित कामदेव रति का हाथ अपने हाथ में लेकर अट्टहास करके कहता है :

अयं स भुवनत्रय प्रथित संयमी शंकरो
बिभर्ति वपुषाधुना विरहकातरः कामिनीम्।
अनेन किल निर्जिता वयमिति प्रियायाः करं
करेण परिलालयंजयति जातहासः स्मरः ॥

'देखो, यह शंकर है, जो तीनों भुवनों में जितेन्द्रिय प्रसिद्ध है। ये क्षण-भर भी अपनी प्रिया का वियोग नहीं सह सकते। उसे अपने अर्धाङ्ग में

धारण किये हुए हैं। इन्होंने, अरे इन्होंने ही, हमें जीता है।'

पर कामदेव तुलसीदास पर अट्टहास न कर सका। वे दुखियों की सेवा में निमग्न थे; इससे कामदेव के लिए उन्होंने अपने अन्तर्जगत् का द्वार ही नहीं खुलने दिया।

जिस स्त्री-बल की अजेयता का गान इन शब्दों में किया गया है:—

जनमजितमयीच्छता विजेतुं निशितदशार्धशरं धनुर्विमुच्य।
अतिरभसतयोद्यता स्मरेण ध्रुवमसियष्टिरिहांगनाभिधाना॥

'मनुष्य पर विजय पाने के लिए कामदेव ने अपने पाँचों तेज़ बाण छोड़े, पर मनुष्य जीता नहीं गया। तब उसने झटपट नारी-रूपी तलवार उठा ली।'

उसी स्त्री-बल को, कामदेव की उस तलवार को, तुलसीदास ने निष्फल कर दिया।

अश्वघोष ने सच ही कहा है :

तथा ही वीराः पुरुषा न ते मता जयन्ति ये साश्वरथद्विपान् नरान्।
यथा मता वीरतरा मनीषिणो जयन्ति लोलानि षडिन्द्रियाणि ये॥

'जो घोड़े, हाथी और रथ से युक्त मनुष्यों को जीतते हैं, वे सच्चे वीर नहीं हैं। सच्चे वीर तो वे विद्वान् हैं तो छहों चंचल इन्द्रियों को जीतते हैं।'

तुलसीदास को हम ऐसे ही वीरों में अग्रगण्य पाते हैं। बाह्य जगत् में राम रावण पर विजय प्राप्त करते हैं तो तुलसीदास अपने अन्तर्जगत् के शत्रुओं— मोह, मद, मत्सर आदि से जीवन-भर युद्ध करते रह कर कीर्ति पाते हैं।

तुलसीदास ने मानव-समाज के समस्त मानसिक और प्राकृतिक व्यापारों का अनुभव किया था। उनके मुख से एक विशाल जन-समुदाय की सरस्वती बोली थी। वे एक कवि थे, भक्ति उनका गौण विषय था। वे कवि होकर ही समाज में आये और अन्त समय तक कवि ही रहे भी। यों तो कवि की प्रतिभा बहुमुखी होती है और वह प्रत्येक विषय की मर्मज्ञता प्रकट भी करता है; पर उसकी एक खास प्रकृति अलग होती है, जिसमें वह विशेष रुचि रखता है। कोई शृंगार-रस का रसिक होता है, तो कोई करुण का; कोई हास्य-रस का प्रेमी होता है तो कोई वीर का। जिसकी रुचि जिस रस में अधिक होती है, वह उस पर अधिक अनुराग रखता है। तुलसीदास की रुचि भक्ति की ओर अधिक थी, और उन्होंने अध्ययन और अनुभव से भी उसमें अन्तरंगता बढ़ा ली थी; उनका लक्ष्य भी यही था कि भक्ति को जीवन का केन्द्र बनाकर उसकी ओर लोगों को आकर्षित करें, जिससे उनके मन की

कर्कशता और उनके जीवन का कल्मष दूर हो और वे सुखी बनें। इससे उन्होंने भक्ति पर अधिक तन्मयता दिखलाई। पर भक्ति का विवेचन उन्होंने कवि ही की हैसियत से किया है।

तुलसीदास एक राम के उपासक थे। उनके राम कौन थे? 'मैं सेवक, सचराचर रूप-रासि भगवन्त' कहाने वाले राम। अर्थात् यह सचराचर जगत् ही उनका राम था। उसी के लिये उन्होंने तपस्या की थी। उनकी तपस्या का एक प्रत्यक्ष फल 'रामचरितमानस' है।

संसार की भयानक विपत्तियाँ सहकर कवि तुलसीदास ने हमें अमूल्य पदार्थ 'रामचरितमानस' के रूप में दान दिया है, उसकी तुलना संसार के किसी दान से नहीं हो सकती। 'रामचरितमानस' एक कल्याणकारी ग्रन्थ है। वह एक साँचा है जिसमें जीवन को ढालकर उससे एक सुन्दर स्वरूप प्राप्त किया जा सकता है।

इस ग्रन्थ-रत्न का आदर गरीब की झोंपड़ी से लेकर राजमहल तक है। अच्छे-अच्छे विद्वान् भी इसका आनन्द लेते हैं और अपढ़ और अशिक्षित भी इसे बड़े चाव से गाते और सुनते हैं।

ज्ञान-प्राप्ति के लिये मनुष्य ने वर्णमाला का निर्माण किया पर जो उसे नहीं जानते वे ज्ञान से भी वंचित रह जाते हैं। ज्ञान और मनुष्य के बीच में वह एक दीवार है, जिसे लाँघे बिना न कोई वाल्मीकि, व्यास को जान सकता है, न कालिदास को और न शेख सादी या शेक्सपीयर को। पर तुलसीदास ने अक्षरों की उस दीवार को तोड़ दिया है। अक्षर-ज्ञान से रहित अहीर, धोबी, चमार, नाई, कहार आदि जातियों के लोग 'मानस' की चौपाइयाँ अपने जातीय गीतों में मिलाकर गाते और नाचते हैं। अक्षरों पर इस तरह की विजय संसार में शायद ही किसी कवि को प्राप्त हुई हो।

ऐसे ग्रन्थ-रत्न की चर्चा के पहले उसके रचयिता का जीवन-चरित जानने की लालसा उसके प्रेमी पाठकों में स्वभावतः उत्पन्न होती है। पर खेद है, कवि में अपने गौरव का गर्व था ही नहीं; इससे उसने अपने बारे में हमें कुछ नहीं बताया। अपने राम से विनय-प्रदर्शन करने में प्रसंगवश उसके मुख से जो कुछ निकला है, उसी से हम उसके जीवन-चरित का कुछ अनुमान कर सकते हैं। उसके सम्बन्ध की कुछ दन्त-कथाएँ भी मुख से मुख में चली आ रही हैं, उनमें भी सचाई का बहुत कुछ अंश है। हमने उन सबको, जो उपलब्ध हो सकीं, एकत्र कर दिया है।

रामचरित मानस की विषय-सूची



आरण्य-काण्ड

किष्किंधा-काण्ड

सुन्दर-काण्ड

उत्तर-काण्ड

श्रीरामशलाका प्रश्न

दोहा—श्रीगणपति को ध्यान करि, राम सिया चित धारि ।
प्रश्नोत्तर हित चौपदी, याते लेहु निकारि ॥

सु	प्र	उ	बि	हो	मु	ग	ब	सु	नु	बि	घ	धि	इ	द
र	रु	फ	सि	सि	रे	बस	है	मं	ल	न	ल	य	न	अं
सुज	सो	ग	सु	कु	म	स	ग	त	न	ई	ल	धा	बे	नो
त्य	र	न	कु	जो	म	रि	र	र	अ	कि	हो	सं	रा	य
पु	सु	थ	सी	जे	ई	ग	म	सं	क	रे	हो	स	स	नि
ति	र	त	र	स	ई	हु	ब	ब	प	चि	स	य	स	तु
म	का	ा	र	र	मा	मि	मी	म्हा	ा	जा	हू	ही	ा	जू
ता	रा	रे	री	हृ	का	फ	खा	जि	ई	र	रा	पू	द	ल
णि	को	मि	गो	न	म	ज	य	ने	मणि	क	ज	प	स	ल
हि	रा	म	स	रि	ग	द	न	प	म	खि	जि	मनि	त	जं
सि	सु	न	न	कौ	मि	ज	र	ग	धु	ख	सु	का	स	र
गु	क	म	अ	ध	नि	म	ल	ा	न	ब	ती	न	रि	भ
ना	पु	ब	अ	ढा	र	ल	का	ए	तु	र	न	नु	ब	थ
सि	हु	सु	म्हा	रा	र	स	हि	र	त	न	प	ा	जा	ा
र	सा	ा	ला	धी	ा	री	जू	हू	हीं	षा	जू	ई	रा	रे

चौपाई निकालने की रीति

दोहा—जबहीं पृच्छक अंक पर, अँगुरी को धरि देत ।
ताके अगिले अंक ते, नवमाक्षर गनि लेत ॥
ऊपर को ऊपर लिखे, नीचे निम्न लिखेत ।
रामशलाका प्रश्न यह, जथा उचित फल देत ॥

श्रीरामशलाका प्रश्न में जो चौपाइयाँ निकलती हैं उनको फलसहित लिखते हैं—

सुनु सिय सत्य असीस हमारी। पूजहिं मन कामना तुम्हारी ॥१॥

प्रश्न उत्तम है, कार्य सिद्ध होगा ॥१॥

प्रविशि नगर कीजे सब काजा। हृदय राखि कोशलपुर राजा ॥२॥

भगवान् का स्मरण करके कार्य का आरम्भ करो, सिद्ध होगा, फल शुभ है ॥२॥

उघरे अंत न होइ निबाहू। कालनेमि जिमि रावण राहू ॥३॥

जो कार्य तुमने विचारा उसके अन्त में भलाई नहीं, फल मध्यम है ॥३॥

बिधिबस सुजन कुसंगति परहीं। फणिमणि समनिजगुण अनुसरहीं॥४॥

खोटे मनुष्यों का साथ छोड़ो, कार्य में विलम्ब है ॥४॥

होइहै वहै जो राम रचिराखा। को करि तरक बढ़ावै साखा ॥५॥

अपने कार्य को भगवान् के ऊपर छोड़ो, कार्य होने में सन्देह है ॥५॥

मुदमंगलमय, संत समाजू। जिमि जग जंगम तीरथ राजू ॥६॥

प्रश्न अच्छा है, कार्य सिद्ध होगा ॥६॥

गरल सुधा रिपु करै मिताई। गोपद सिंधु अनल सितलाई ॥७॥

प्रश्न अच्छा है, शत्रुओं का नाश अवश्य होगा ॥७॥

वरुण कुबेर सुरेस समीरा। रण सन्मुख धरि काहु न धीरा ॥८॥

काय सिद्ध होने में बहुत सन्देह है, फल मध्यम है ॥८॥

सफल मनोरथ होइँ तुम्हारे। राम लषन सुनि भये सुखारे ॥९॥

सब मनोरथ सिद्ध होंगे, धन की प्राप्ति होगी, फल बहुत श्रेष्ठ है ॥९॥



 रामचरितमानस 

भाग छोट अभिलाषु बड़, करौं एक विस्वास ।

श्रीगणेशाय नमः

श्रीजानकीवल्लभो विजयते

रामचरितमानस

प्रथम सोपान

बाल-कांड

श्लोकाः

वर्णानामर्थसङ्घानां रसानां छंदसामपि ।
मङ्गलानां च कर्त्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ ॥१॥

वर्णों (अक्षरों), अर्थ-समूह, रसों, छन्दों और मंगलों के करने वाली वाणी (सरस्वती) और विनायक (गणेशजी) की मैं वन्दना करता हूँ ॥१॥

भवानीशङ्करौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ ।
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तःस्थमीश्वरम् ॥२॥

श्रद्धा और विश्वासरूपी पार्वती और शङ्कर की मैं वन्दना करता हूँ, जिनके बिना सिद्ध-जन अपने हृदय में स्थित ईश्वर को नहीं देख पाते ॥२॥

वन्दे बोधमयं नित्यं गुरुं शङ्कररूपिणम् ।
यमाश्रितो हि वक्रोऽपि चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते ॥३॥

ज्ञानमय, नित्य, शंकररूपी गुरु की मैं वन्दना करता हूँ, जिनका आश्रित होकर टेढ़ा चन्द्रमा भी सर्वत्र वंदित होता है ॥३॥

सीतारामगुणग्रामपुण्यारण्यविहारिणौ ।
वन्दे विशुद्धविज्ञानौ कवीश्वरकपीश्वरौ ॥४॥

सीता और राम के गुण-समूह-रूपी पवित्र वन में विहार करने वाले विशुद्ध विज्ञान वाले कवीश्वर (वाल्मीकि) और कपीश्वर (हनूमान) की मैं वन्दना करता हूँ ॥४॥

उद्भवस्थितिसंहारकारिणीं क्लेशहारिणीम् ।
सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोऽहं रामवल्लभाम् ॥५॥

उत्पत्ति, स्थिति (पालन), और संहार (नाश) करने वाली और क्लेशों को हरने वाली तथा सम्पूर्ण कल्याणकारिणी राम की प्रियतमा सीता को मैं नमस्कार करता हूँ ॥५॥

यन्मायावशवर्त्ति विश्वमखिलं ब्रह्मादिदेवासुराः
यत्सत्त्वादमृषैव भाति सकलं रज्जौ यथाऽहेर्भ्रमः ।
यत्पादप्लवमेकमेव हि भवाम्भोधेस्तितीर्षावतां
वन्देऽहं तमशेषकारणपरं रामाख्यमीशं हरिम् ॥६॥

जिसकी माया के वश में समस्त संसार, ब्रह्मादिक देवता तथा असुर हैं, जिसकी सत्ता से रस्सी में सर्प के भ्रम की भाँति यह सारा जगत् सत्य प्रतीत होता है, और जिसके चरण ही भवसागर से तरने की इच्छा करने वालों के लिये एक-मात्र नौका स्वरूप हैं; समस्त कारणों से परे उन राम कहाने वाले भगवान हरि की मैं वन्दना करता हूँ ॥६॥

नानापुराणनिगमागमसम्मतं यद्
रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोऽपि ।
स्वान्तःसुखाय तुलसीरघुनाथगाथा
भाषानिबन्धमतिमञ्जुलमातनोति ॥७॥

अनेक पुराण, वेद और शास्त्र से सम्मत तथा रामायण में वर्णित और कुछ अन्यत्र से भी प्राप्त श्रीरघुनाथजी की कथा को तुलसीदास अपने अन्तःकरण के सुख के लिये अति मनोहर भाषा की रचना में विस्तृत करता है ॥७॥

सो० जेहि सुमिरत सिधि होइ गननायक करिबर बदन ।
करउ अनुग्रह सोइ बुद्धिरासि सुभ गुन सदन ॥१॥

जिनके स्मरण करने से सब मनोरथ सिद्ध हो जाते हैं, जो गणों के स्वामी हैं, और जिनका मुख हाथी के मुख के समान सुन्दर है, वे ही बुद्धि की राशि और सब शुभ गुणों के घर श्रीगणेशजी मुझ पर कृपा करें ॥१॥

मूक होइ बाचाल पंगु चढ़इ गिरिवर गहन।
जासु कृपा सो दयाल द्रवौ सकल कलि मल दहन॥२॥

जिनकी कृपा से गूँगा अच्छी तरह से बोलने वाला हो जाता है और लँगड़ा दुर्गम पहाड़ पर चढ़ जाता है, वे कलियुग के सब पापों को जलाने वाले दयालु (भगवान्) मुझ पर प्रसन्न हों॥२॥

नील सरोरुह स्याम तरुन अरुन बारिज नयन।
करउ सो मम उर धाम सदा छीर सागर सयन॥३॥

जो नीले कमल के समान श्याम हैं, नये खिले हुए लाल कमल के समान जिनके नेत्र हैं, जो सदा क्षीरसागर में शयन करते हैं, वे विष्णु भगवान मेरे हृदय-मन्दिर में निवास करें॥३॥

कुंद इंदु सम देह उमा रमन करुना अयन।
जाहि दीन पर नेह करउ कृपा मर्दन मयन॥४॥

कुन्द के फूल और चन्द्रमा के समान (गौर) शरीरवाले, पार्वतीजी के साथ विहार करने वाले, करुणा के घर, और जिनका दीन जनों पर स्नेह है, वे कामदेव को भस्म करनेवाले (शिव) मुझ पर कृपा करें॥४॥

बंदउँ गुरु पदकंज कृपासिंधु नररूप हरि।
महा मोह तम पुंज जासु बचन रबिकर निकर॥५॥

मैं गुरुजी के कमल ऐसे चरणों की वन्दना करता हूँ, जो दया के समुद्र और नररूप में हरि हैं। अज्ञानरूपी महा अन्धकार के समूह के लिये जिनके वचन सूर्य की किरणों के समूह के समान हैं॥५॥

बंदउँ गुरु पद पदुम परागा ❀ सुरुचि सुबास सरस अनुरागा
अमिअ मूरि मय चूरन चारू ❀ समन सकल भवरुज परिवारू

मैं गुरुजी महाराज के चरण-कमलों की धूलि की वन्दना करता हूँ जिसमें सुरुचि (प्राप्ति की उत्कण्ठा) रूपी सुगंध और प्रेमरूपी रस है, जो संजीवनी बूटी के सुन्दर चूर्ण के समान संसार की सब व्याधियों के परिवार को नाश करने वाली है।

सुकृत संभुतन विमल विभूती ❀ मंजुल मंगल मोद प्रसूती
जन मन मंजु मुकुर मल हरनी ❀ किएँ तिलक गुन गन बस करनी

वह पुण्यरूपी शिवजी के शरीर पर शोभित पवित्र विभूति अथवा ऐश्वर्य है और सुन्दर कल्याण और आनन्द उत्पन्न करनेवाली है। वह भक्त के मनरूपी दर्पण का मैल दूर करने वाली और तिलक करने से सारे गुणों को वश में करने वाली है।

श्रीगुर पद नख मनि गन जोती ❀ सुमिरत दिव्य दृष्टि हिय होती
दलन मोहतम सो सुप्रकासू ❀ बड़े भाग उर आवइ जासू

श्रीगुरुजी महाराज के चरणों के नखों की ज्योति (चमक) मणि-समूह के प्रकाश के समान है, जिसके स्मरण से हृदय में दिव्यदृष्टि उत्पन्न होती है। वह सुन्दर प्रकाश अज्ञानरूपी अन्धकार को नाश करने वाला है, अथवा वह अपने प्रकाश से मोहरूपी अन्धकार का नाश करता है। उस मनुष्य के बड़े भाग्य हैं, जिसके हृदय में वह प्रकाश आजाय।

उघरहिं विमल बिलोचन ही के ❀ मिटहिं दोप दुख भवरजनी के
सूझहिं रामचरित मनिमानिक ❀ गुपुत प्रगट जहँ जो जेहि खानिक

उसके हृदय में आते ही हृदय के निर्मल नेत्र खुल जाते हैं और संसार-रूपिणी रात्रि के सारे दोप और दुःख मिट जाते हैं। फिर उसको रामचरितरूपी मणि-माणिक्य, जहाँ गुप्त और प्रगट जिस खानि के हैं, दिखाई पड़ने लगते हैं।

दो० जथा सुअंजन अंजि दृग साधक सिद्ध सुजान।
कौतुक देखहिं सैल बन भूतल भूरि निधान ॥१॥

जिस प्रकार साधक, सिद्ध और बुद्धिमान-जन उत्तम अंजन नेत्रों में आँजकर पर्वत, वन और भूमि के भाँति-भाँति के कौतुक देखते हैं ॥१॥

गुर पद रज मृदु मंजुल अंजन ❀ नयन अमिअ[1] दृग दोप विभंजन
तेहि करि विमल विवेक विलोचन ❀ वरनउँ राम चरित भव मोचन

गुरु के चरणकमलों की धूलि सुन्दर और सरस नयनामृताञ्जन के समान नेत्र के सारे दोपों को दूर करने वाली है। उसी अञ्जन से विवेकरूपी नेत्रों को

१. अमृत।

निर्मल करके मैं संसार के आवागमन से छुड़ाने वाले रामचरित का वर्णन करता हूँ।

बंदउँ प्रथम महीसुर[1] चरना ❀ मोह जनित संसय सब हरना
सुजन समाज सकल गुन खानी ❀ करउँ प्रनाम सप्रेम सुबानी

मैं पहले पृथ्वी के देवता ब्राह्मणों के चरणों को प्रणाम करता हूँ, जो अज्ञान से पैदा हुए सब सन्देहों को हरने वाले हैं। सज्जनों का समाज सब गुणों की खान है। मैं प्रेमसहित सुन्दर वाणी से उसको प्रणाम करता हूँ।

साधु चरित सुभ सरिस कपासू ❀ निरस बिसद गुनमय फल जासू
जो सहि दुख परछिद्र दुरावा ❀ बंदनीय जेहि जग जस पावा

सज्जनों का चरित कपास के समान कल्याण करने वाला है। नीरस (विषय-वासना से रहित) उज्ज्वल, गुण (डोरा और सद्वृत्ति) से युक्त है। जो दुःख सह करके दूसरों के छिद्र (दोष) को ढकता है और जिसने जगत में वन्दना करने योग्य यश पाया है। [पूर्णोपमालङ्कार]

मुद मंगल मय सन्त समाजू ❀ जो जग जंगम तीरथराजू
राम भगति जहँ सुरसरि धारा ❀ सरसइ[2] ब्रह्म बिचार प्रचारा

सन्तों का समाज आनन्द-मंगल-युक्त है। वह संसार में चलता-फिरता तीर्थराज (प्रयाग) है। उस सन्त-समाजरूपी प्रयाग में राम की भक्ति गङ्गा की धारा है और ब्रह्मविचार का प्रवाह सरस्वती है।

बिधि निषेधमय कलि मल हरनी ❀ करमकथा रबिनंदिनि बरनी
हरि हर कथा बिराजति बेनी[3] ❀ सुनत सकल मुद मंगल देनी

कलियुग के पापों को दूर करने वाली, करने और न करने योग्य कर्मों की कथा सूर्य-पुत्री यमुना है। इस तरह विष्णु और शिवजी की कथा त्रिवेणीरूप से शोभित है, जो सुनते ही सब आनन्द-मंगल की देने वाली है।

बटु बिस्वास अचल निज धर्मा ❀ तीरथराज समाज सुकरमा
सबहि सुलभ सब दिन सब देसा ❀ सेवत सादर समन कलेसा
अकथ अलौकिक तीरथराऊ ❀ देइ सद्य[4] फल प्रगट प्रभाऊ

उस संत-समाजरूपी प्रयाग में अपने धर्म में अचल विश्वास का होना ही

१. ब्राह्मण। २. सरस्वती। ३. त्रिवेणी। ४. तत्काल।

अक्षयवट है। तीर्थराज सुकर्मों का समाज (मेला) है। यह सब देशों में, सब दिन, सबको सहज ही प्राप्त हो सकता है। आदरपूर्वक सेवन करने से यह दुःखों का नाश करने वाला है। यह तीर्थराज अलौकिक और अकथनीय है। यह तत्काल फल देता है। इसका प्रभाव प्रत्यक्ष है।

दो०— सुनि समुझहिं जन मुदित मन मज्जहिं अति अनुराग।
लहहिं चारि फल अछत[1] तनु साधु समाज प्रयाग॥२॥

जो मनुष्य प्रसन्नचित्त से इस तीर्थराजरूपी संत-समाज में उपदेशों को सुनकर समझते हैं और प्रेम के साथ उसमें गोते लगाते हैं, वे इस शरीर से—इसी जन्म में—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष, इन चारों फलों को पाते हैं॥२॥

मज्जन फल पेषिय ततकाला ❁ काक होहिं पिक बकउ मराला
सुनि आचरज करै जनि कोई ❁ सतसङ्गति महिमा नहिं गोई[2]

इस सन्त-समाजरूपी तीर्थराज में स्नान करने का फल तत्काल देखने में आता है कि कौए तो कोयल और बगले हंस होजाते हैं। यह सुनकर कोई आश्चर्य न करे; क्योंकि सत्संग की महिमा छिपी हुई नहीं है।

बालमीकि नारद घटजोनी[3] ❁ निज निज मुखनि कही निज होनी[4]
जलचर थलचर नभचर नाना ❁ जे जड़ चेतन जीव जहाना

बाल्मीकि, नारद और अगस्त्य मुनि ने अपनी-अपनी कथा (जीवन का वृत्तान्त) अपने ही मुँह से कही है। इस संसार में जल में रहनेवाले, भूमि पर रहनेवाले और आकाश-विहारी जो नाना प्रकार के जड़ और चेतन जीव हैं—

मति कीरति गति भूति भलाई ❁ जब जेहि जतन जहाँ जेहि पाई
सो जानब सतसङ्ग प्रभाऊ ❁ लोकहु वेद न आन[5] उपाऊ

उन्होंने जो बुद्धि, कीर्ति, गति, ऐश्वर्य और कल्याण आदि जब कभी, जिस किसी उपाय से, जहाँ-कहीं पाया है, वह सब सत्संग ही का प्रभाव जानो। इनके मिलने का लोक में और वेद में कोई दूसरा उपाय ही नहीं है।

बिनु सतसङ्ग बिबेकु न होई ❁ रामकृपा बिनु सुलभ न सोई
सतसङ्गति मुद मङ्गल मूला ❁ सोइ फल सिधि सब साधन फूला

---

१. जीते जी। २. छिपी। ३. अगस्त्य मुनि। ४. जीवन चरित्र। ५. अन्य, दूसरा।

सत्संग के बिना भले बुरे का ज्ञान नहीं होता और रामचन्द्रजी की कृपा के बिना वह सत्संग सहज में नहीं मिलता। सत्संगति आनन्द और मंगल की जड़ है। सिद्धियों का फल वही है और सब साधन तो उसके फूल हैं। [द्वितीय कारण-माला अलङ्कार]

सठ सुधरहिं सतसङ्गति पाई ❁ पारस परस कुधातु सोहाई
बिधिबस सुजन कुसङ्गति परहीं ❁ फनिमनिसम निज गुन अनुसरहीं

दुष्ट भी सत्संगति पाकर सुधर जाते हैं, जैसे पारस के छू जाने से लोहा सुन्दर (सुवर्ण) हो जाता है। दैवयोग से यदि सज्जन कभी कुसंगति में पड़ जाते हैं, तो भी वे साँप की मणि के समान अपने गुणों ही का अनुसरण करते हैं। [अतद्गुण अलङ्कार]

बिधि हरि हर कबि कोबिद बानी ❁ कहत साधुमहिमा सकुचानी
सो मो[1] सन[2] कहि जात न कैसे ❁ साक बनिक मनि गुनगन जैसे

ब्रह्मा, विष्णु, महादेव, कवि, पण्डित और सरस्वती भी साधुओं की महिमा के वर्णन करने में सकुचाते हैं। वह मुझसे वैसे ही नहीं कहा जा रहा है, जैसे साग-भाजी बेचनेवाला मणियों के गुण नहीं कह सकता।

दो॰ बंदउँ सन्त समानचित हित अनहित नहिं कोउ।
अंजलिगत सुभ सुमन जिमि सम सुगंध कर दोउ॥३॥(१)

मैं सन्तों को प्रणाम करता हूँ, जिनका चित्त सबके लिये समान है अर्थात् जो समदर्शी हैं, और जिनका न कोई मित्र है, न कोई शत्रु; जैसे अंजलि में रखे हुये अच्छे फूल दोनों ही हाथों में बराबर सुगन्ध देते हैं ॥३॥

सन्त सरलचित जगत हित जानि सुभाउ सनेहु।
बालबिनय सुनि करि कृपा रामचरन रति देहु ॥३॥ (२)

ऐसे सरलचित्त और जगत के हितकारी सन्तजन अपने स्वभाव और मेरे स्नेह को जानकर, मुझ बालक के विनय को सुनकर कृपा करके श्रीरामचन्द्रजी के चरणों में मुझे प्रीति दें।

बहुरि बंदि खलगन सतिभाये[3] ❁ जे बिनु काज दाहिनेहु बाये
पर हित हानि लाभ जिन्ह केरे ❁ उजरे हरष बिषाद बसेरे

१. मुझ। २. से। ३. सद्भाव से, प्रेम-सहित।

अब मैं सद्भाव से दुष्टों को प्रणाम करता हूँ, जो बिना कारण ही दाहिने के भी बायें (अनुकूल के भी प्रतिकूल) रहते हैं। अर्थात् भलाई करने वाले के साथ भी बुराई करते हैं। दूसरों के हित की हानि ही जिनका लाभ है और जिन को दूसरों के उजड़ने पर आनन्द और बसने पर शोक होता है। [प्रथम असंगति अलङ्कार]

हरि हर जस राकेस राहु से ❀ पर अकाज भट सहसबाहु से
जे परदोष लखहिं सहसाखी ❀ परहित घृत जिन्हके मन माखी

विष्णु और शिव के यशरूपी पूर्ण चन्द्र के लिये जो राहु के समान हैं, जो दूसरों का काम बिगाड़ने में सहस्रबाहु के समान योद्धा हैं, जो दूसरों के दोषों को इन्द्र के समान हज़ार नेत्रों से देखते हैं और दूसरों की भलाई रूपी घी के लिये जिनका मन मक्खी के समान है। [मालोपमा अलङ्कार]

तेज कृसानु रोष महिषेसा[1] ❀ अघ अवगुन धन धनी धनेसा
उदय केतुसम हित सबहीके ❀ कुंभकरन सम सोवत नीके

जो ताप में अग्नि और क्रोध में यमराज के समान हैं, पाप और दुर्गुणरूपी धन से जो कुबेर के समान धनी हैं, केतु (पुच्छल तारे) के उदय के समान जिन का उदय (बढ़ना) सब ही के लिये दुखदायी है, कुम्भकर्ण की तरह जिनका सोते रहना ही अच्छा है।

पर अकाजु लगि तनु परिहरहीं ❀ जिमि हिम उपल कृषी दलि[2] गरहीं[3]
बंदउँ खल जस सेष सरोषा ❀ सहसबदन बरनइ पर दोषा

जो दूसरों का अकाज करने के लिये अपने शरीर तक का नाश कर देते हैं, जैसे पाला और ओले खेती का नाश करके आप भी गल जाते हैं। मैं दुष्टों को प्रणाम करता हूँ, जो पराये दोषों को बड़े रोष के साथ शेष जी की तरह हजार मुख से वर्णन करते हैं। [उत्प्रेक्षा और पूर्णोपमा अलङ्कार]

पुनि प्रनवउँ पृथुराज समाना ❀ पर अघ सुनइ सहसदस काना
बहुरि सक्र सम बिनवउँ तेही ❀ संतत सुरानीक हित जेही
बचन बज्र जेहि सदा पिआरा ❀ सहसनयन पर दोष निहारा

फिर मैं उन दुष्टों को राजा पृथु (जिन्होंने भगवान का यश सुनने के लिये

---

१. यमराज। २. नाश करके। ३. गल जाते हैं।

दश हजार कान मांगे थे) के समान मानकर प्रणाम करता हूँ, जो दस हजार कानों से दूसरों की बुराइयां सुनते हैं। फिर मैं उनको इन्द्र के समान मानकर प्रणाम करता हूँ, जैसे इन्द्र को 'सुरानीक' (सुर=देव+अनीक=सेना) अर्थात् देवताओं की सेना प्रिय है, वैसे ही दुष्टों को सदा सुरा (मदिरा) नीक (अच्छी) लगती है। जिनको वचनरूपी वज्र सदा प्यारा लगता है और जो हजार आँखों से पराये दोषों को देखते हैं।

दो०— उदासीन अरि मीत हित सुनत जरहिं खल रीति।
जानि पानि जुग जोरि जन[1] बिनती करइ सप्रीति ॥४॥

दुष्टों की यह रीति है कि वे उदासीन, शत्रु और मित्र के हित को सुनकर जलते रहते हैं। यह जानकर प्रीतिपूर्वक हाथ जोड़कर यह जन उनसे विनती करता है। [चतुर्थ तुल्ययोगिता अलंकार]

मैं अपनी दिसि कीन्ह निहोरा[2] ❀ तिन्ह निज ओर न लाउब भोरा[3]
बायस पलिअहिं अति अनुरागा ❀ होहिं निरामिष कबहुँ कि कागा

मैंने अपनी ओर से बहुत कुछ विनती की है, परन्तु वे अपनी ओर से कभी न चूकेंगे। कौए को बड़े प्रेम से पालिये, परन्तु क्या वे कभी मांस के त्यागी हो सकते हैं?

बंदउँ सन्त असज्जन चरना ❀ दुखप्रद उभय बीच कछु बरना
बिछुरत एक प्रान हरि लेहीं ❀ मिलत एक दुख दारुन देहीं

अब मैं सज्जन और दुर्जन दोनों के चरणों की वन्दना करता हूँ। दोनों दुःखदाई हैं; पर उनमें कुछ अन्तर कहा गया है। वह अन्तर यह है कि एक (सज्जन) बिछुड़ते हैं, तब प्राण हर लेते हैं, अर्थात् उनके वियोग में मरण का कष्ट होता है और एक (दुर्जन) मिलते हैं, तब दारुण दुःख देते हैं। [उन्मीलित अलंकार। उत्तरार्द्ध में व्याघात अलंकार।]

उपजहिं एक सङ्ग जग माहीं ❀ जलज जोंक जिमि गुन बिलगाहीं
सुधा सुरा सम साधु असाधू ❀ जनक एक जग जलधि अगाधू

दोनों (सज्जन और दुष्ट) एक साथ संसार में पैदा होते हैं; पर कमल और

---

१. सेवक, व्यक्ति। २. विनती। ३. चूक।

जोंक की तरह उनके गुण अलग-अलग होते हैं। साधु अमृत और असाधु मदिरा के समान हैं। इन दोनों का जनक—पैदा करने वाला—संसाररूपी अगाध समुद्र एक ही है।

भल अनभल निज निज करतूती ❀ लहत सुजस अपलोक बिभूती
सुधा सुधाकर सुरसरि साधू ❀ गरल अनल कलिमल सरि ब्याधू
गुन अवगुन जानत सब कोई ❀ जो जेहि भाव नीक तेहि सोई

भले और बुरे मनुष्य अपनी-अपनी करनी से जगत में यश और अपयश की सम्पत्ति पाते हैं। अमृत, चन्द्रमा, और गंगा जी और विष, अग्नि और कलियुग के पापों की नदी (कर्मनाशा) और हिंसा करने वाले व्याध के गुण और अवगुण को सब कोई जानते हैं। पर जिसको जो भाता है, वही उसे अच्छा लगता है।

दो०— भलो भलाइहि पै लहइ, लहइ[1] निचाइहि नीचु।
सुधा सराहिअ अमरता, गरल सराहिअ[2] मीचु ॥५॥

भला भलाई से शोभा पाता है और नीच नीचता से, जिस तरह अमृत की प्रशंसा अमर करने में और विष की सराहना मारने में होती है ॥ ५ ॥
[पदार्थावृत्ति दीपक अलंकार]

खल अघ अगुन साधु गुन गाहा ❀ उभय अपार उदधि अवगाहा
तेहि तें कछु गुन दोष बखाने ❀ संग्रह त्याग न बिनु पहिचाने

खलों के पाप और अवगुण और सज्जनों के गुणों की गाथाएँ (कथाएँ) दोनों अपार, अथाह समुद्र हैं; इसी से मैंने यहाँ उनके कुछ गुणों और दोषों का वर्णन किया है, क्योंकि बिना पहचाने उनका संग्रह या त्याग उचित नहीं।

भलेउ पोच[3] सब बिधि उपजाए ❀ गनि गुन दोष बेद बिलगाए[4]
कहहिं बेद इतिहास पुराना ❀ बिधि प्रपंचु गुन अवगुन साना[5]

ब्रह्मा ने भले-बुरे सभी पैदा किये हैं, वेदों ने उनके गुण-दोष गिनाकर अलग कर दिया है। वेद, इतिहास और पुराण बतलाते हैं कि ब्रह्मा का प्रपंच—यह संसार—गुण और अवगुण दोनों से सना हुआ है।

---

१. लहइ=लसई=शोभा पाता है। २. सराहना की जाती है। ३. बुरा। ४. अलग किया। ५. मिला हुआ।

दुख सुख पाप पुन्य दिन राती ❀ साधु असाधु सुजाति कुजाती
दानव देव ऊँच और नीचू ❀ अमिअ सजीवनु माहुरु मीचू

दुःख और सुख, पाप और पुण्य, दिन और रात, साधु और असाधु, सुजाति और कुजाति, राक्षस और देवता, ऊँच और नीच, अमृत और संजीवन, विष और मृत्यु,

माया ब्रह्म जीव जगदीसा ❀ लच्छि[1] अलच्छि रंक अवनीसा
कासी मग[2] सुरसरि क्रमनासा ❀ मरु मारव[3] महिदेव गवासा[4]
सरग नरक अनुराग बिरागा ❀ निगम अगम गुन दोष बिभागा

माया और ब्रह्म, जीवात्मा और परमात्मा, लक्ष्मी और दरिद्रता, रङ्क और राजा, काशी और मगह (मगध देश), गंगा और कर्मनाशा नदी, मारवाड़ और मालवा, ब्राह्मण और कसाई, स्वर्ग और नरक, प्रीति और वैराग्य, वेद-शास्त्र ने इन सबके गुण-दोषों का विभाग कर दिया है।

दो० जड़ चेतन गुन दोषमय बिस्व कीन्ह करतार।
सन्त हंस गुन गहहिं पय परिहरि बारि बिकार ॥६॥

ब्रह्मा ने इस जड़-चेतन जगत् को गुण और दोष से युक्त बनाया है। सन्त-रूपी हंस गुणरूपी दूध को ग्रहण करते हैं और दुर्गुण रूपी जल को छोड़ देते हैं।

अस बिबेक जब देइ बिधाता ❀ तब तजि दोष गुनहिं मनु राता
काल सुभाउ करम बरिआई ❀ भलेउ प्रकृति बस चुकइ भलाई

जब ब्रह्मा इस प्रकार का ज्ञान देते हैं, तब मन दोषों को छोड़कर गुणों में लग जाता है। समय, स्वभाव और कर्मों की प्रबलता से साधुजन भी कभी-कभी माया के फेर में पड़कर भलाई से चूक जाते हैं।

सो सुधारि हरिजन जिमि लेहीं ❀ दलि दुःख दोष बिमल जसु देहीं
खलउ करहिं भल पाइ सुसंगू ❀ मिटइ न मलिन सुभाउ अभंगू

ईश्वर-भक्त जैसे उस भूल को सुधार लेते हैं और दुःख-दोषों को मिटाकर निर्मल यश देते हैं, वैसे ही दुष्ट भी सुसंग पाकर भलाई करने लगते हैं; परन्तु

१. लक्ष्मी। २. मगध देश। ३. मालवा। ४. कसाई।

उनका न टूटने वाला नीच स्वभाव नहीं मिटता। [पूर्वरूप अलङ्कार]

लखि सुबेष जग बंचक जेऊ ❀ बेष प्रताप पूजिअहि तेऊ
उघरहिं[1] अंत न होइ निबाहू ❀ कालनेमि जिमि रावन राहू

जो संसार को ठगनेवाले हैं, उन्हें भी अच्छा वेष बनाये देखकर, वेष के प्रताप से लोग पूजते ही हैं। परन्तु अन्त में उनका कपट खुल जाने पर उनका निभाव नहीं होता; जैसे कालनेमि, रावण और राहु का हुआ।

कियेहु कुबेषु साधु सनमानू ❀ जिमि जग जामवंत हनुमानू
हानि कुसङ्ग सुसङ्गति लाहू ❀ लोकहु बेद बिदित सब काहू

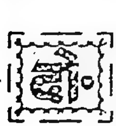
कुवेष किये रहने पर भी साधुओं का सम्मान ही होता है, जैसे संसार में जाम्बवान और हनुमान का। कुसंग से हानि और सुसंग से लाभ होता है, यह बात संसार में और वेद में प्रकट है और इसे सब लोग जानते हैं।

गगन चढ़इ रज पवन प्रसङ्गा ❀ कीचहि मिलइ नीच जल सङ्गा
साधु असाधु सदन सुक सारी[2] ❀ सुमिरहिं रामु देहिं गनि गारी

वायु के संग से धूल आकाश में चढ़ जाती है, और वही नीच जल के साथ कुसंग में पड़कर कीचड़ में मिलती है। साधुजनों के घर में (पले हुए) तोता-मैना राम-नाम का स्मरण करते हैं और असाधुजनों के घर के तोता-मैना गिन-गिन कर गालियाँ देते हैं।

धूम कुसङ्गति कारिख होई ❀ लिखिअ पुरान मंजु मसि गोई
सोइ जल अनल अनिल सङ्घाता[3] ❀ होइ जलद जग जीवनुदाता

कुसंग में पड़कर धुआँ कालख के नाम से पुकारा जाता है और वही पुराण लिखने पर सुन्दर स्याही कहलाता है। वही धुआँ जल, अग्नि और वायु के संग से संसार को जीवन (जल और जिन्दगी) देनेवाला बादल होता है।



ग्रह भेषज जल पवन पट पाइ कुजोग सुजोग।
होहिं कुबस्तु सुबस्तु जग लखहिं सुलच्छन लोग।७(१)

ग्रह, औषधि, जल, पवन और वस्त्र, ये सब भी कुसंग और सुसंग पाकर बुरे और भले हो जाते हैं, इसको चतुर जन देखते हैं।

---

१. खुल जाते हैं। २. मैना। ३. संयोग, मिलना।

सम प्रकास तम पाख दुहुँ नाम भेद बिधि कीन्ह।
ससि पोषक सोषक समुझि जग जस अपजस दीन्ह ॥७(२)॥

महीने के दो पखवारों में उजाला और अन्धेरा समान ही होता है; पर ब्रह्मा ने इनके नाम में भेद (एक को कृष्ण अर्थात् काला और दूसरे को शुक्ल अर्थात् उजला) कर दिया है। एक को चन्द्रमा का बढ़ाने वाला और दूसरे को उसका घटाने वाला समझकर संसार के लोगों ने एक को सुयश और दूसरे को अपयश दे दिया है।

जड़ चेतन जग जीव जत[1] सकल राममय जानि।
बंदउँ सबके पद कमल सदा जोरि जुग पानि ॥७(३)॥

जगत् में जितने जड़ और चेतन प्राणी हैं, सबको राममय जानकर मैं उन सबके चरणकमलों को सदा दोनों हाथ जोड़कर प्रणाम करता हूँ।

देव दनुज नर नाग खग प्रेत पितर गंधर्व।
बंदउँ किन्नर रजनिचर कृपा करहु अब सर्व ॥७(४)॥

मैं देवता, दैत्य, मनुष्य, सर्प, पत्ती, प्रेत, पितर, गन्धर्व, किन्नर और निशाचर सबको प्रणाम करता हूँ। अब सब मुझ पर कृपा करो।

आकर चारि लाख चौरासी ❀ जाति जीव जल थल नभ वासी
सीय राममय सब जग जानी ❀ करौं प्रनाम जोरि जुग पानी

चौरासी लाख योनि वाले चार प्रकार के (स्वेदज, अंडज, उद्भिज, जरायुज) जीव जल, धरती और आकाश में रहते हैं। उनको अर्थात् सारे जगत् को सीताराममय (सीताराम का रूप) जानकर मैं दोनों हाथ जोड़कर प्रणाम करता हूँ।

जानि कृपा कर किंकर मोहू ❀ सब मिलि करहु छाँड़ि छल छोहू
निज बुधिबल भरोस मोहि नाहीं ❀ तातें बिनय करौं सब पाहीं

मुझे अपना सेवक समझकर कृपा करके छल को छोड़कर सब मिलकर छोह कीजिये। मुझे अपनी बुद्धि का भरोसा नहीं है, इसलिये मैं सबके निकट विनती करता हूँ।

---

१. जितने।

करन चहौं रघुपति गुन गाहा ❀ लघु मति मोरि चरित अवगाहा
सूझ न एकौ अङ्ग उपाऊ ❀ मन मति रङ्क मनोरथ राऊ

मैं रामचन्द्रजी के गुणों की कथा कहना चाहता हूँ; परन्तु मेरी बुद्धि छोटी-सी है और रामचरित अथाह है। (इस काम के लिये) मुझे उपाय का एक भी अङ्ग नहीं सूझता। मेरा मन तो बुद्धि का दरिद्र है पर मनोरथ राजा-जैसा है। [दृष्टान्त अलंकार]

मति अति नीचि ऊँचि रुचि आछी ❀ चहिय अमिय जग जुरै न छाछी
छमिहहिं सज्जन मोरि ढिठाई ❀ सुनिहहिं बालवचन मन लाई

मेरी बुद्धि अति नीच है और इच्छा बड़ी ऊँची है, इच्छा तो अमृत के पाने की है, पर संसार में मट्ठा भी नहीं जुड़ता। सज्जन मेरी ढिठाई को क्षमा करेंगे और मुझ बालक के वचनों को मन लगाकर सुनेंगे।

जौं बालक कह तोतरि बाता ❀ सुनहिं मुदितमन पितु अरु माता
हँसिहहिं कूर कुटिल कुबिचारी ❀ जे पर दूषन भूषन धारी

जैसे बालक तोतली बातें कहता है, तो उसके माता-पिता उसे प्रसन्न-मन से सुनते हैं। जो लोग क्रूर हैं, खोटे हैं, बुरे विचार के हैं और जो दूसरों के दूषणों ही को अपना भूषण समझकर धारण करते हैं, वे हँसेंगे। [अनुमान प्रमाण अलंकार]

निज कवित्त केहि लाग न नीका ❀ सरस होउ अथवा अति फीका
जे परभनिति सुनत हरषाहीं ❀ ते वर पुरुष बहुत जग नाहीं

रसीली हो या बहुत फीकी, अपनी कविता किसे अच्छी नहीं लगती? जो दूसरों की कविता को सुनकर प्रसन्न होते हैं, ऐसे श्रेष्ठ मनुष्य संसार में बहुत नहीं हैं।

जग बहु नर सर सरि सम भाई ❀ जे निज बाढ़ि बढ़हिं जल पाई
सज्जन सुकृत सिंधु सम कोई ❀ देखि पूर बिधु बाढ़इ जोई

भाई! संसार में नदी और तालाब के समान मनुष्य बहुत हैं, जो जल पाकर अपनी बाढ़ से बढ़ जाते हैं, अर्थात् अपनी बढ़ती से प्रसन्न होने वाले बहुत हैं; लेकिन समुद्र के समान सज्जन बिरले ही हैं, जो चन्द्रमा की (पराई) बढ़ती देखकर उमड़ते हैं।

दो० भाग छोट अभिलाषु बड़ करउँ एक बिस्वास।
पइहहिं सुख सुनि सुजन सब खल करिहहिं उपहास॥८॥

मेरा भाग्य छोटा और लालसा बहुत बड़ी है; परन्तु मुझे एक ही भरोसा है कि इसे सुनकर सब सज्जन सुख पायेंगे और दुर्जन हँसी उड़ायेंगे ॥८॥

खल परिहास होइ हित मोरा ❀ काक कहहिं कलकंठ कठोरा
हंसहिं बक दादुर चातकही ❀ हँसहिं मलिन खल बिमल बतकही

दुष्टों की हँसी मेरी भलाई ही होगी। कोयल की मीठी और सुरीली बोली को कौवे कठोर ही बतलाया करते हैं। जिस तरह बगले हंसों को और मेंढक पपीहों को हँसते हैं, उसी प्रकार मलिन स्वभाव के दुष्ट लोग अच्छी बातों की हँसी उड़ाते हैं।

कबित रसिक न राम-पद नेहू ❀ तिन कहँ सुखद हास रस एहू
भाषाभनिति भोरि मति मोरी ❀ हँसिबे जोग हँसे नहिं खोरी

जो न तो काव्य-रस के रसिक हैं और न रामचन्द्रजी के चरणों में प्रीति रखते हैं, उन्हें भी यह कविता हास्य-रस (हँसने की वस्तु) होने से आनन्द ही देगी। एक तो यह भाषा की कविता है, दूसरे मेरी बुद्धि भी भोली है, सो हँसने के योग्य है। इससे हँसने में कोई दोष नहीं है।

प्रभुपद प्रीति न सामुझि नीकी ❀ तिन्हहिं कथा सुनि लागिहि फीकी
हरि हर पद रति मति न कुतरकी ❀ तिन्ह कहुँ मधुर कथा रघुबर की

जिन्हें न प्रभु रामचन्द्रजी के चरणों में प्रीति है और न अच्छी समझ ही है, उन्हें यह कथा सुनकर फीकी लगेगी। जिन्हें हरिहर के चरणों में प्रीति है और जिनकी बुद्धि कुतर्क करने वाली नहीं है, उन्हीं को श्रीरामचन्द्रजी की यह कथा मीठी लगेगी।

रामभगति भूषित जिय जानी ❀ सुनिहहिं सुजन सराहि सुबानी
कबि न होउँ नहिं बचन प्रबीनू ❀ सकल कला सब बिद्या हीनू

सज्जन लोग अपने जी में इस कथा को श्रीरामचन्द्रजी की भक्ति से भूषित जानकर और सुन्दर वाणी से इसकी सराहना करते हुये सुनेंगे। मैं न कवि हूँ, न बोलने में चतुर हूँ; मैं तो सब कलाओं और सारी विद्याओं से भी रहित हूँ।

आखर अरथ अलंकृति नाना ❀ छंद प्रबन्ध अनेक विधाना
भावभेद रसभेद अपारा ❀ कबित दोष गुन विविध प्रकारा
कबित बिबेक एक नहिं मोरे ❀ सत्य कहौं लिखि कागद कोरे[1]

अक्षर, अर्थ, बहुत-से अलङ्कार, छन्द और उनकी रचनायें अनेक प्रकार की होती हैं। भावों और रसों के अपार भेद हैं तथा कविता में नाना प्रकार के गुण और दोष होते हैं। इनमें से काव्य का एक भी ज्ञान मुझे नहीं है। यह बात मैं कोरे काग़ज़ पर लिखकर (शपथ पूर्वक) सत्य कहता हूँ।

दो० भनिति[2] मोरि सब गुन रहित बिस्वबिदित गुन एक।
सो बिचारि सुनिहहिं सुमति जिन्हके बिमल बिबेक ॥९

मेरी रचना सारे गुणों से रहित है। बस, इसमें एक ही गुण है, जो सारे संसार में प्रकट है। यह विचारकर वे मनुष्य, जिनकी बुद्धि अच्छी है और जिनके हृदय में निर्मल ज्ञान है, इसे सुनेंगे ॥९॥

एहि महुँ रघुपति नाम उदारा ❀ अति पावन पुरान स्रुति सारा
मंगल भवन अमंगल हारी ❀ उमा सहित जेहि जपत पुरारी

इसमें रामचन्द्रजी का पवित्र और उदार नाम है, जो पुराणों और श्रुतियों का सार है, जो कल्याण का घर और अमंगल को दूर करने वाला है और जिसे पार्वती-सहित शिवजी जपा करते हैं।

भनिति विचित्र सुकवि कृत जोऊ ❀ राम नाम बिनु सोह न सोऊ
बिधुवदनी सब भाँति सँवारी ❀ सोह न बसन बिना बर नारी

चाहे कैसे ही अच्छे कवि की अनोखी कविता हो, पर राम नाम के बिना उसकी शोभा नहीं होती, जैसे चन्द्रमा के समान मुख वाली सुन्दर स्त्री सब प्रकार के शृङ्गार करने पर भी वस्त्र के बिना शोभा नहीं पाती।

सब गुन रहित कुकबि कृत बानी ❀ राम नाम जस अंकित जानी
सादर कहहिं सुनहिं बुध ताही ❀ मधुकर सरिस सन्त गुनग्राही

किन्तु सब गुणों से रहित कुकवि की रची हुई कविता भी राम नाम के यश से अङ्कित हो तो पंडितजन उसको आदरपूर्वक कहते और सुनते हैं; क्योंकि

१. सादे। २. रचना, कविता।

सन्तजन भौंरे की भाँति गुण ही को ग्रहण करने वाले होते हैं।

जदपि कवित रस एकउ नाहीं ❀ राम प्रताप प्रगट एहि माहीं
सोइ भरोस मोरे मन आवा ❀ केहि न सुसंग बड़प्पनु पावा

यद्यपि मेरी रचना में कविता का एक भी रस नहीं है, तथापि रामचन्द्रजी का प्रताप इसमें प्रकट है। बस, मेरे मन में यही एक भरोसा है। किसने सत्संग से बड़प्पन नहीं पाया ?

धूमउ तजइ सहज करुआई[1] ❀ अगरु प्रसंग सुगन्ध वसाई[2]
भनिति भदेस[3] वस्तु भलि वरनी ❀ राम कथा जग मंगल करनी

धुआँ भी अगर के साथ से सुगन्धित होकर अपने स्वाभाविक कड़वेपन को छोड़ देता है। मेरी कविता यद्यपि भद्दी है, परन्तु इस में जगत् का मंगल करने वाली रामकथा रूपी अच्छी वस्तु का वर्णन किया गया है।

छंद—मंगल करनि कलि मल हरनि तुलसी कथा रघुनाथ की
गति कूर कविता सरित की ज्यों सरित पावन पाथ की
प्रभु सुजस संगति भनिति भलि होइ हि सुजनमनभावनी
भव अंग भूति मसान की सुमिरत सुहावनि पावनी

तुलसीदासजी कहते हैं कि रामचन्द्रजी की कथा कल्याण करने वाली और कलियुग के पापों को दूर करने वाली है। इस भद्दी कवितारूपी नदी की गति, पवित्र जल वाली गंगा की गति के समान है। प्रभु के सुयश के सत्संग से मेरी भद्दी कविता भी अच्छी और सज्जनों के मन को भाने वाली हो जायगी। श्मशान की अपवित्र राख महादेव जी के अङ्ग का संग पाने से सुहावनी लगती है और स्मरण करते ही पवित्र करने वाली होती है।

दो०—प्रिय लागिहि अति सबहि मम भनिति राम जस संग।
दारु[4] बिचारु कि करइ कोउ बंदिअ मलय[5] प्रसंग।१०।

श्रीरामचन्द्रजी के यश के साथ मेरी कविता भी सबको बहुत प्रिय लगेगी। क्या कोई चन्दन के लिये यह विचार करता है कि यह किस वृक्ष का काष्ठ है ?

१. कड़वापन। २. सुगंधित होकर। ३. भद्दी। ४. काष्ठ। ५. मलय पर्वत।

मलय पर्वत के प्रसंग से काष्ठमात्र वंदनीय हो जाता है।

स्याम सुरभि[1] पय बिसद अति गुनद करहिं सब पान।
गिरा ग्राम्य[2] सियराम जस गावहिं सुनहिं सुजान।१०।(२)।

श्यामा गाय काली होती है, पर दूध उज्ज्वल और अत्यन्त गुणकारी होता है, यही समझ कर सब लोग उसे पीते हैं। उसी तरह बोली गँवारू होने पर भी उसमें सीता राम जी का सुन्दर, उज्ज्वल यश होने से सज्जन उसे गाते और सुनते हैं।

मनि मानिक मुकुता छबि जैसी ❀ अहि गिरि गजसिर सोह न तैसी
नृप किरीट[3] तरुनी तनु पाई ❀ लहहिं सकल सोभा अधिकाई

मणि, माणिक्य और मोती की जैसी शोभा है वह साँप, पर्वत और हाथी के मस्तक पर वैसी शोभा नहीं पाते जैसे राजा के मुकुट और नवयौवना स्त्री के शरीर को पाकर वे अधिक शोभा को प्राप्त होते हैं।

तैसेहि सुकबि कबित बुध कहहीं ❀ उपजहिं अनत अनत छबि लहहीं
भगति हेतु बिधि भवन बिहाई ❀ सुमिरत सारद आवति धाई

इसी तरह सुकवि की कविता के सम्बन्ध में विद्वान् लोग कहते हैं कि वह पैदा तो और जगह होती है और शोभा और जगह पाती है। कोई कवि जब कविता करने बैठता है, तब उसकी भक्ति के कारण सरस्वती देवी कवि के स्मरण करते ही ब्रह्मलोक को छोड़कर तुरन्त उसके पास दौड़कर आजाती है।

राम चरित सर बिनु अन्हवाये ❀ सो स्रमु जाइ न कोटि उपाये
कबि कोबिद अस हृदयँ बिचारी ❀ गावहिं हरि जस कलि मल हारी

थकी हुई सरस्वती को रामचरितरूपी सरोवर में स्नान कराये बिना उनकी थकावट करोड़ों उपाय करने पर भी नहीं जाती। कवि और पंडित अपने हृदय में ऐसा विचार कर कलियुग के पापों को हरने वाले हरि के यश का गान करते हैं।

कीन्हे प्राकृत जन गुन गाना ❀ सिर धुनि गिरा लगति पछिताना
हृदय सिंधु मति सीप समाना ❀ स्वाती सारद कहहिं सुजाना
जौं बरखइ बर बारि बिचारू ❀ होहिं कबित मुकुता मनि चारू

१. गाय। २. गँवारू। ३. मुकुट।

संसारी मनुष्यों का गुणगान करने से सरस्वती सिर धुनकर पछताने लगती हैं। बुद्धिमान लोग कवि के हृदय को समुद्र, बुद्धि को सीप और सरस्वती को स्वाती नक्षत्र के समान कहते हैं। जो सरस्वती अच्छे विचाररूपी जल की वर्षा करें, तो कवितारूपी सुन्दर मुक्तामणि उससे उत्पन्न होते हैं।

दो०— जुगुति बेधि पुनि पोहिअहि राम चरित बर ताग।
पहिरहिं सज्जन बिमल उर सोभा अति अनुराग ॥११॥

उन कवितारूपी मोतियों को युक्ति से बेधकर फिर रामचरितरूपी सुन्दर तागे में पिरोकर उस माला को सज्जन लोग अपने शुद्ध हृदय में धारण करते हैं; अत्यन्त प्रेम ही उसकी शोभा है।

जे जनमे कलिकाल कराला ❀ करतब बायस बेष मराला
चलत कुपंथ बेद मग छाँड़े ❀ कपट कलेवर कलि मल भाँड़े[1]

इस कराल कलियुग में जो ऐसे जन्मे हैं कि जिनकी करनी कौए के समान और वेष हंस के समान है, जो वेद के मार्ग को छोड़कर कुमार्ग पर चलते हैं, जो कपट की मूर्ति और कलियुग के पापों के भाँड़े हैं।

बंचक भगत कहाइ राम के ❀ किंकर कंचन कोह[2] काम के
तिन्ह महँ प्रथम रेख जग मोरी ❀ धिग धरम ध्वज धंधक धोरी[3]

जो राम के भक्त कहाकर लोगों को ठगते हैं, वास्तव में वे कंचन (सोना), क्रोध और कामदेव के गुलाम हैं। जगत् के ऐसे लोगों में सब से पहले मेरी गिनती है। धर्म की झूठी पताका उड़ाने का धन्धा करने वाले मुझ सरीखे बैल को धिक्कार है। [विचित्र अलङ्कार]

जौं अपने अवगुन सब कहऊँ ❀ बाढ़इ कथा पार नहिं लहऊँ
ताते मैं अति अलप[4] बखाने ❀ थोरे महुँ जानिहहिं सयाने

यदि मैं अपने सब अवगुणों को कहने लगूँ, तो कथा बहुत बढ़ जायगी और मैं पार न पाऊँगा। इसीसे मैंने बहुत कम वर्णन किया है। बुद्धिमान लोग थोड़े ही में समझ लेंगे।

समुझि बिबिध बिधि बिनती मोरी ❀ कोउ न कथा सुनि देइहि खोरी[5]
एतेहु पर करिहहिं जे संका ❀ मोहि ते अधिक ते जड़ मति रंका

१. पात्र, बरतन। २. क्रोध। ३. बैल। ४. संक्षेप। ५. रोष।

इस प्रकार मेरी अनेक प्रकार की विनती को समझ कर, कथा सुनकर कोई भी मुझे दोष न देगा। इतने पर भी जो शङ्का करेंगे, वे मुझसे भी अधिक मूर्ख और बुद्धि के दरिद्र हैं।

कबि न होउँ नहिं चतुर कहावउँ ❀ मति अनुरूप रामगुन गावउँ
कहँ रघुपति के चरित अपारा ❀ कहँ मति मोरि निरत[1] संसारा

न मैं कवि हूँ, न चतुर कहलाता हूँ। मैं अपनी बुद्धि के अनुसार रामचन्द्रजी के गुण गाता हूँ। कहाँ अपार रामचरित और कहाँ संसार के प्रपंच में फँसी हुई मेरी बुद्धि !

जेहि मारुत गिरि मेरु उड़ाहीं ❀ कहहु तूल केहि लेखे[2] माहीं
समुझत अमित राम प्रभुताई ❀ करत कथा मन अति कदराई

जिस पवन से सुमेरु जैसे पर्वत उड़ जाते हैं, कहो, उसके सामने रूई किस गिनती में है ? श्रीरामचन्द्रजी की प्रभुता को अपार समझकर कथा रचने में मेरा मन बहुत हिचकता है। [काव्यार्थापत्ति अलङ्कार]

दो० **सारद सेष महेस बिधि आगम निगम पुरान।**
नेति नेति कहि जासु गुन करहिं निरंतर गान ॥१२॥

सरस्वती, शेषजी, शिवजी, ब्रह्मा, शास्त्र, वेद और पुराण ये सब "नेति नेति" (इतना ही नहीं, इतना ही नहीं) कहकर जिनका गुण-गान सदा किया करते हैं।

सब जानत प्रभु प्रभुता सोई ❀ तदपि कहे बिनु रहा न कोई
तहाँ बेद अस कारन राखा ❀ भजन प्रभाउ भाँति बहु भाखा[3]

यद्यपि सब जानते हैं कि प्रभु श्रीरामचन्द्रजी की प्रभुता (महिमा) वैसी ही है, तो भी कोई कहे बिना नहीं रहा। इसमें वेद ने ऐसा कारण बताया कि भजन का प्रभाव अनेक प्रकार का कहा गया है। अर्थात् भक्त को अपनी-अपनी श्रद्धा के अनुसार भजन करना चाहिये।

एक अनीह अरूप अनामा ❀ अज सच्चिदानंद परधामा
ब्यापक बिस्वरूप भगवाना ❀ तेहि धरि देह चरित कृत[4] नाना

१. फँसी हुई। २. गिनती। ३. कहा। ४. करता है।

जो परमेश्वर एक है और इच्छा से रहित है, जिसका न कोई रूप है, न नाम है, जिसका जन्म नहीं होता, जो सच्चिदानन्द और परमधाम है, जो समस्त संसार में व्यापक और विश्वरूप है, वही परमेश्वर शरीर धारण करके तरह-तरह के चरित्र दिखाया करता है।

सो केवल भगतन हित लागी ❀ परम कृपाल प्रनत अनुरागी
जेहि जन पर ममता अति छोहू ❀ जेहि करुना करि कीन्ह न कोहू[1]

वह लीला केवल अपने भक्तों ही के लिये है। क्योंकि भगवान् बड़े कृपालु और शरणागत पर स्नेह करने वाले हैं। भक्तजनों पर उनकी ममता और अत्यन्त कृपा रहती है और एक बार जिस पर कृपा की फिर कभी उन पर उन्होंने क्रोध नहीं किया।

गई[2] बहोर[3] गरीब नेवाजू[4] ❀ सरल सबल साहिब रघुराजू
बुध बरनहिं हरि जस अस जानी ❀ करहिं पुनीत सुफल निज बानी

वही प्रभु रघुनाथजी बिगड़ी वस्तु को फिर प्राप्त कराने वाले, गरीब-नेवाज (दीनबन्धु), सरल-स्वभाव, सर्वशक्तिमान् और सबके स्वामी हैं। यही समझकर पंडित लोग उन हरि का वर्णन करते और अपनी वाणी को पवित्र और सफल बनाते हैं।

तेहि बल मैं रघुपति गुन गाथा ❀ कहिहउँ नाइ राम पद माथा
मुनिन्ह प्रथम हरि कीरति गाई ❀ तेहि मग चलत सुगम मोहिं भाई

उसी बल से श्रीरामचन्द्रजी के चरणों में सिर नवाकर मैं श्रीरघुनाथजी के गुणों की कथा कहूंगा। हे भाई! मुनियों (वाल्मीकि, व्यास आदि) ने पहले हरि की कीर्ति गाई है। उसी मार्ग पर चलना मेरे लिये सुगम होगा।



अति अपार जे सरित बर जौं नृप सेतु कराहिं।
चढ़ि पिपीलिकउ[5] परम लघु बिनु स्रम पारहिं जाहिं १२

जो बहुत बड़ी और श्रेष्ठ नदियाँ हैं उन पर राजा यदि पुल बँधवा देता है, तो उस (पुल) पर चढ़कर बहुत छोटी चींटी भी बिना परिश्रम के पार चली जाती है।

---

१. क्रोध। २. गई हुई। ३. फेर लाना। ४. कृपा करने वाले। ५. चींटी।

एहि प्रकार बल मनहिं दिखाई ❀ करिहउँ रघुपति कथा सोहाई
व्यास आदि कवि पुंगव[1] नाना ❀ जिन्ह सादर हरि सुजस बखाना

इस प्रकार का बल मन को दिखाकर मैं रघुपति की सुहावनी कथा की रचना करूँगा। व्यास आदि जो अनेक श्रेष्ठ कवि हो गये हैं और जिन्होंने बड़े आदर से हरि का सुयश वर्णन किया है

चरन कमल बंदउँ तिन्ह केरे ❀ पुरवहु[2] सकल मनोरथ मेरे
कलि के कबिन्ह करउँ परनामा ❀ जिन्ह बरने रघुपति गुन ग्रामा

मैं उन सब कवियों के चरणकमलों को प्रणाम करता हूं। वे सब मेरे मनोरथ को पूरा करें। मैं कलियुग के भी उन कवियों को प्रणाम करता हूं, जिन्होंने रामचन्द्रजी के गुण-समूहों का वर्णन किया है।

जे प्राकृत[3] कवि परम सयाने ❀ भाषा जिन्ह हरि चरित बखाने
भये जे अहहिं[4] जे होइहहिं आगे ❀ प्रनवउँ सबहिं कपट सब त्यागे

जो अन्य बड़े बुद्धिमान संसारी कवि हैं, जिन्होंने भाषा में हरि-चरित वर्णन किये हैं, ऐसे कवि जो पहले हो चुके, जो वर्तमान हैं और जो आगे होंगे, उन सबको मैं सारा कपट छोड़कर प्रणाम करता हूँ।

होहु प्रसन्न देहु बरदानू ❀ साधु समाज भनिति सनमानू
जो प्रबंध बुध नहिं आदरहीं ❀ सो सम बादि[5] बाल कबि करहीं

सब कवि मुझ पर प्रसन्न होकर वरदान दीजिये कि साधु-समाज में मेरी कविता का आदर हो; क्योंकि जिस काव्य का आदर पण्डित लोग नहीं करते, उसके रचने का व्यर्थ परिश्रम बाल (मूर्ख) कवि ही करते हैं।

कीरति भनिति भूति[6] भलि सोई ❀ सुरसरि सम सब कहँ हित होई
राम सुकीरति भनिति भदेसा ❀ असमंजस अस मोहिं अँदेसा
तुम्हरी कृपा सुलभ सोउ मोरे ❀ सिअनि सोहावनि टाट पटोरे[7]

कीर्ति, कविता और सम्पत्ति वही उत्तम है, जो गङ्गाजी के समान सब का हित करने वाली हो। रामचन्द्रजी की कीर्ति तो बड़ी सुन्दर है, पर मेरी कविता भद्दी है। मुझे इस बात की बड़ी चिन्ता और अंदेशा है। परन्तु हे सुकवियो !

१. श्रेष्ठ। २. पूरा करो। ३. संसारी। ४. हैं। ५. व्यर्थ। ६. सम्पत्ति, ऐश्वर्य। ७. रेशम।

आपकी कृपा से मुझे वह (अच्छी कविता) भी सुलभ हो जायगी। रेशम की सिलाई टाट पर भी सुहावनी ही लगेगी। [दृष्टान्त अलङ्कार]

दो॰ सरल कवित कीरति बिमल सोइ आदरहिं सुजान।
सहज बयर बिसराइ रिपु जो सुनि करहिं बखान॥१४॥

उसी सरल कविता और निर्मल कीर्ति का विद्वान् लोग आदर करते हैं, जिसे सुनकर शत्रु भी स्वाभाविक बैर को छोड़कर प्रशंसा करने लगें।

सो न होइ बिनु बिमल मति मोहिं मतिबल अति थोर।
करहु कृपा हरि जस कहउँ पुनि पुनि करउँ निहोर॥१४(२)॥

ऐसी कविता बिना शुद्ध बुद्धि के नहीं हो सकती और मुझे बुद्धि का बल बहुत ही थोड़ा है। इसलिये मैं बार-बार विनती करता हूँ कि हे कवियो! आप लोग मुझ पर कृपा करें, जिससे मैं हरि का यश वर्णन कर सकूं।

कबि कोबिद रघुबर चरित मानस मंजु मराल[1]।
बालबिनय सुनि सुरुचि लखि मो पर होहु कृपाल॥१४(३)॥

रामचरित-रूपी मान-सरोवर के सुन्दर हंस हे कवि और पंडितगण आप मुझ बालक की विनय सुनकर और राम-कथा कहने की सुरुचि देखकर मुझ पर कृपा करें।

सो॰ बंदउँ मुनि पद कंजु[2] रामायन जेहिं निरमयउ।
सखर सुकोमल मंजु दोष रहित दूषन सहित॥१४(४)॥

मैं उन बाल्मीकि मुनि के चरण-कमलों की वन्दना करता हूँ, जिन्होंने रामायण की रचना की है। जो खर (राक्षस) सहित होने पर भी कोमल और सुन्दर है और दूषण (राक्षस) सहित होने पर भी निर्दोष हैं। [विरोधाभास अलङ्कार]

बंदउँ चारिउ बेद भव बारिधि बोहित[3] सरिस।
जिन्हहिं न सपनेहुँ खेद बरनत रघुबर बिसद जसु॥१४(५)॥

चारों वेदों की वन्दना करता हूँ, जो संसार-समुद्र के पार होने के लिये

१. हंस। २. कमल। ३. जहाज।

जहाज के समान हैं और जिन्हें रामचन्द्रजी का निर्मल यश वर्णन करने में स्वप्न में भी खेद (थकान) नहीं होता।

बंदउँ बिधि पद रेनु[1] भवसागर जेहि कीन्ह जहँ।
संत सुधा ससि धेनु प्रगटे खल बिष बारुनी॥१४(६)॥

मैं ब्रह्मा की धूलि की वन्दना करता हूँ जिन्होंने यह भवसागर बनाया है। जिसमें एक ओर अमृत, चन्द्रमा, और कामधेनुरूपी सज्जन तथा दूसरी ओर विष और मदिरारूपी दुष्टजन उत्पन्न हुये हैं।

दो०— बिबुध बिप्र बुध ग्रह चरन बंदि कहउँ कर जोरि।
होइ प्रसन्न पुरवहु सकल मंजु मनोरथ मोरि।१४।(७)।

देवता, ब्राह्मण, पण्डित, ग्रह, इन सबके चरणों की वन्दना करके मैं हाथ जोड़कर कहता हूँ कि मुझ पर प्रसन्न होकर सब मेरे सुन्दर मनोरथ को पूरा करें।

पुनि बंदउँ सारद सुरसरिता ❀ जुगल पुनीत मनोहर चरिता
मज्जन पान पाप हर एका ❀ कहत सुनत एक हर अबिबेका

फिर मैं सरस्वती और गंगाजी की वन्दना करता हूँ। दोनों पवित्र और मनोहर चरित्रवाली हैं। एक स्नान करने और जल पीने से पापों को हरती है और दूसरी गुण और यश के कहने-सुनने से अज्ञान को हर लेती है।

गुर पितु मातु महेस भवानी ❀ प्रनवउँ दीनबंधु दिन दानी
सेवक स्वामि सखा सिय पी के ❀ हित निरुपधि सब बिधि तुलसी के

मेरे गुरु, माता और पिता शिव और भवानी हैं। वे दीनबन्धु और नित्य दान देने वाले हैं। मैं उनको प्रणाम करता हूँ। वे सीतापति श्रीरामचन्द्रजी के सेवक, स्वामी और मुझ तुलसीदास के तो सब प्रकार कपट-रहित सच्चे हितकारी हैं।

कलि बिलोकि जग हित हर गिरिजा ❀ साबर मंत्र जाल जिन्ह सिरिजा
अनमिल आखर अरथ न जापू ❀ प्रगट प्रभाउ महेस प्रतापू

जिन शिव-पार्वती ने कलियुग को देखकर, जगत् के हित के लिये, साबर-

---

१. धूलि, रज।

मन्त्र समूह (सिद्ध साबर-तन्त्र) की रचना की है, जिन के अक्षर बेमेल हैं, जिनका न कोई ठीक अर्थ है, न जप ही होता है, तथापि शिव के प्रताप से उनका प्रभाव प्रत्यक्ष है।

सो उमेस मोहिं पर अनुकूला ❁ करउँ कथा मुद मंगल मूला
सुमिरि सिवा सिव पाइ पसाऊ ❁ बरनउँ रामचरित चित चाऊ

वे उमापति मुझ पर प्रसन्न हैं। अतएव मैं आनन्द और मंगल की जड़ राम-कथा रचता हूँ। मैं शिव और पार्वती दोनों को स्मरण करके और उनका प्रसाद पाकर बड़े चाव से रामचरित का वर्णन करता हूँ।

भनिति मोरि सिव कृपा बिभाती[1] ❁ ससि समाज मिलि मनहुँ सुराती
जे एहि कथहिं सनेह समेता ❁ कहिहहिं सुनिहहिं समुझि सचेता
होइहहिं राम चरन अनुरागी ❁ कलि मल रहित सुमंगल भागी

मेरी कविता शिवजी की कृपा से ऐसी सुहावनी लगेगी, जैसे तारागण-सहित चन्द्रमा के साथ रात्रि की शोभा होती है। जो इस कथा को प्रेम से कहेंगे, सुनेंगे और मन लगा कर समझेंगे, वे रामचन्द्रजी के चरणों के भक्त हो जायँगे और कलियुग के दोषों से मुक्त हो कर कल्याण के भागी होंगे।

दो॰ सपनेहुँ साँचेहु मोहि पर जौं हर गौरि पसाउ।
तौ फुर[2] होउ जो कहेउँ सब भाषाभनिति प्रभाउ॥१५॥

यदि मुझ पर शिवजी और पार्वती जी की प्रसन्नता स्वप्न में भी सचमुच हुई हो, तो मैंने अपनी भाषा की कविता का जो प्रभाव बताया है, वह सब सच हो।

बंदउँ अवधपुरी अति पावनि ❁ सरजू सरि कलि कलुष नसावनि
प्रनवउँ पुर नर नारि बहोरी ❁ ममता जिन्ह पर प्रभुहि न थोरी

मैं अति पवित्र अयोध्यापुरी और कलियुग के पापों का नाश करने वाली सरयू नदी की वन्दना करता हूँ। फिर उस पुरी के स्त्री-पुरुषों को प्रणाम करता हूँ, जिन पर प्रभु रामचन्द्रजी की कृपा थोड़ी नहीं है।

सिय निंदक अघ ओघ[3] नसाये ❁ लोक बिसोक बनाइ बसाये
बंदउँ कौसल्या दिसि प्राची[4] ❁ कीरति जासु सकल जग माँची

१. शोभा पाती है। २. सत्य। ३. समूह। ४. पूर्व दिशा।

उन्होंने सीताजी की निन्दा करनेवालों (धोबी आदि) के पापों के समूह को नाश कर, उनको शोक-रहित करके वैकुण्ठ- लोक में बसा दिया। मैं पूर्व-दिशा के समान कौशल्या माता की वन्दना करता हूँ, जिनकी कीर्ति समस्त संसार में फैल रही है।

प्रगटेउ जहँ रघुपति ससि चारू[1] ❀ बिस्व सुखद खल कमल तुषारू[2]
दसरथ राउ सहित सब रानी ❀ सुकृत सुमंगल मूरति मानी

यहाँ कौशल्यारूपिणी पूर्व दिशा में सुन्दर चन्द्रमा के समान रामचन्द्रजी का उदय हुआ, जो सारे संसार को सुख देने वाले और दुष्टरूपी कमलों के लिये पाले के समान हैं। सब रानियों-सहित राजा दशरथ को सारे पुण्यों और कल्याण की मूर्ति मान कर

करउँ प्रनाम करम मन बानी ❀ करहु कृपा सुत सेवक जानी
जिन्हहिं बिरंचि बड़ भयेउ बिधाता ❀ महिमा अवधि राम पितु माता

मैं मन, वचन और कर्म से प्रणाम करता हूँ। मुझे अपने पुत्र का सेवक जानकर मुझ पर कृपा करो। जिन को रच कर ब्रह्मा ने भी बड़ाई पाई। राम के माता और पिता होने के कारण वे महिमा की सीमा हैं।



बंदउँ अवध भुआल सत्य प्रेम जेहि राम पद।
बिछुरत दीनदयाल प्रिय तनु तृन इव परिहरेउ ॥१६॥

मैं अवध के राजा दशरथ की वन्दना करता हूँ, जिनको रामचन्द्रजी के चरणों में सच्चा प्रेम था, जिन्होंने दीनदयालु (रामचन्द्रजी) के बिछड़ते ही अपने प्रिय शरीर को तिनके के समान त्याग दिया।

प्रनवउँ परिजन सहित बिदेहू[3] ❀ जाहि राम पद गूढ़ सनेहू
जोग भोग महँ राखेउ गोई[4] ❀ राम बिलोकत प्रगटेउ सोई

परिवार-सहित राजा जनक को मैं प्रणाम करता हूँ, जिनको रामचन्द्रजी के चरणों में गूढ़ स्नेह था, जिन्हें उन्होंने योग और भोग में छिपा रक्खा था; परन्तु रामचन्द्रजी को देखते ही वह प्रकट हो गया।

प्रनवउँ प्रथम भरत के चरना ❀ जासु नेम ब्रत जाइ न बरना
राम चरन पंकज मन जासू ❀ लुबुध मधुप इव तजइ न पासू

१. सुन्दर। २. पाला। ३. राजा जनक। ४. गुप्त, छिपा हुआ।

भाइयों में सबसे पहले मैं भरतजी के चरणों को प्रणाम करता हूँ, जिनका नियम और व्रत वर्णन नहीं किया जा सकता, और जिनका मन रामचन्द्रजी के चरणरूपी कमलों में भौंरे के समान लुभाया हुआ पास से नहीं हटता।

बंदउँ लछिमन पद जलजाता ❀ सीतल सुभग भगत सुखदाता
रघुपति कीरति बिमल पताका ❀ दंड समान भयेउ जस जाका[1]

मैं लक्ष्मणजी के चरणकमलों की वन्दना करता हूँ, जो परम शीतल, सुन्दर और भक्तों को सुख देने वाले हैं और रामचन्द्रजी की कीर्तिरूपी विमल पताका में जिनका यश पताका को फहराने वाली लकड़ी या दंड के समान हुआ।

सेष सहस्रसीस जग कारन ❀ जो अवतरेउ भूमि भय टारन
सदा सो सानुकूल रह मोपर ❀ कृपासिंधु सौमित्रि गुनाकर

जो जगत् के कारण और हज़ार सिर वाले शेषजी हैं और जिन्होंने पृथ्वी का भय दूर करने के लिये अवतार लिया, वे कृपा-सागर, गुणों की खान, सुमित्रा के पुत्र लक्ष्मणजी सदा मुझ पर प्रसन्न रहें।

रिपुसूदन पदकमल नमामी ❀ सूर सुशील भरत अनुगामी
महावीर बिनवउँ हनुमाना ❀ राम जासु जस आपु बखाना

मैं शत्रुघ्नजी के चरण-कमलों को प्रणाम करता हूँ, जो शूर, सुशील और भरत के पीछे चलने वाले हैं। मैं महावीर हनुमानजी की विनती करता हूं, जिन के यश का वर्णन रामचन्द्रजी ने श्रीमुख से स्वयं किया है।

सो० प्रनवउं पवनकुमार खल बन पावक[2] ग्यानघन।
जासु हृदय आगार बसहिं राम सर चाप धर ॥१७॥

मैं पवनकुमार हनुमानजी को प्रणाम करता हूँ, जो दुष्टरूपी वन के भस्म करने के लिये अग्नि रूप और ज्ञान के मेघरूप हैं; और जिनके हृदयरूपी भवन में धनुष-बाण धारण किये हुये श्रीरामचन्द्रजी निवास करते हैं।

कपिपति रीछ[3] निसाचर राजा ❀ अंगदादि जे कीस समाजा
बंदउँ सबके चरन सोहाए ❀ अधम सरीर राम जिन्ह पाए

बानरों के राजा सुग्रीव, रीछों के राजा जाम्बवान, राक्षसों के राजा विभीषण

१. जिसका। २. अग्नि। ३. भालू।

और अंगद आदि जो वानरों का समाज है उन सब के सुन्दर चरणों की मैं वन्दना करता हूँ, जिन्होंने अधम (पशु और राक्षस के) शरीर (योनी) में भी रामचन्द्रजी को पा लिया।

रघुपति चरन उपासक जेते ❁ खग मृग सुर नर असुर समेते
वंदउँ पद सरोज सब केरे ❁ जे बिनु काम राम के चेरे[1]

पशु, पक्षी, देवता, मनुष्य और असुर समेत जितने रामचन्द्रजी के चरणों के उपासक हैं, मैं उन सबके चरण-कमलों की वन्दना करता हूं, जो बिना किसी कामना के रामचन्द्रजी के सेवक हैं।

सुक सनकादि भगत मुनि नारद ❁ जे मुनिवर विग्यान बिसारद
प्रनवउँ सबहिं धरनि धरि सीसा ❁ करहु कृपा जन जानि मुनीसा

शुकदेव, सनक, सनन्दन, सनत्कुमार आदि भक्त और नारद मुनि तथा जितने बड़े ज्ञानी मुनिवर हैं, उन सबको मैं धरती पर मस्तक रखकर प्रणाम करता हूं। हे मुनीश्वरो! मुझे अपना दास जानकर कृपा कीजिये।

जनकसुता जग जननि जानकी ❁ अतिसय प्रिय करुनानिधान की
ताके जुग पद कमल मनावउँ ❁ जासु कृपा निरमल मति पावउँ

राजा जनक की कन्या, जगत् की माता और करुणा-निधान रामचन्द्रजी की अत्यन्त प्यारी श्रीजानकीजी के दोनों चरणों को मैं मनाता (प्रणाम करता) हूं, जिनकी कृपा से मैं निर्मल बुद्धि पाऊँगा।

पुनि मन बचन कर्म रघुनायक ❁ चरन कमल बँदौं सब लायक
राजिव नयन धरे धनु सायक ❁ भगत बिपति भंजन सुखदायक

फिर मैं मन, वाणी और कर्म से सब लायक श्रीरामचन्द्रजी के चरण-कमलों को प्रणाम करता हूँ। उनके नयन कमल-ऐसे हैं। धनुष-बाण धारण किये हुये वे भक्तों की विपत्ति दूर कर उनको सुख देने वाले हैं।

दो० गिरा[2] अरथ जल बीचि[3] सम कहिअत भिन्न न भिन्न।
वंदउँ सीता राम पद जिन्हहिं परम प्रिय खिन्न[4] ॥१८॥

जो वाणी और उसके अर्थ तथा जल और उसकी लहर के समान कहने

१. सेवक। २. वाणी। ३. लहर। ४. दुःखी, दुर्बल।

में अलग-अलग हैं, पर वास्तव में एक ही हैं। वैसे ही सीताराम हैं। मैं उनके चरणों को प्रणाम करता हूँ, उनको दुर्बल ही अत्यन्त प्यारे हैं।

बंदउँ राम नाम रघुबर को ❀ हेतु कृसानु[1] भानु हिमकर[2] को
बिधि हरि हर मय बेद प्रान सो ❀ अगुन अनूपम गुन निधान सो

मैं रामचन्द्रजी के नाम 'राम' की वन्दना करता हूँ, जो अग्नि, सूर्य और चन्द्रमा के हेतु (कारण) हैं। जो कृशानु (र) भानु (आ) और हिमकर(म) का बीज है, वह 'राम' नाम ब्रह्मा, विष्णु और शिव रूप है। अर्थात् इन तीनों में एक रूप होकर रम रहा है। वह वेदों का प्राण है और निर्गुण, उपमा-रहित और गुणों का भण्डार है। [यथासंख्य अलंकार]

महामंत्र सोइ जपत महेसू ❀ कासी मुकुति हेतु उपदेसू
महिमा जासु जान गनराऊ ❀ प्रथम पूजिअत नाम प्रभाऊ

वही रामनामरूपी महामन्त्र जिसको महादेवजी जपा करते हैं और जिसका उपदेश काशी में मुक्ति का कारण है, तथा जिसकी महिमा को गणेशजी जानते हैं। राम नाम ही के प्रभाव से वे सबसे पहले पूजे जाते हैं।

जान आदि कबि नाम प्रतापू ❀ भयेउ सुद्ध करि उलटा जापू
सहसनाम सम सुनि सिव बानी ❀ जपि जेईं पिय संग भवानी

आदिकवि वाल्मीकि मुनि राम नाम के प्रताप को जानते हैं। जो उलटा अर्थात् "मरा, मरा" जप करके ही पवित्र हो गये। जब पार्वतीजी ने शिवजी के मुँह से सुना कि रामनाम का एक बार का उच्चारण सहस्रनाम के बराबर है, तब इस नाम को जपकर पति के साथ उन्होंने भोजन किया।

हरषे हेतु[3] हेरि हर ही को ❀ किय भूषन तिय भूषन ती[4] को
नाम प्रभाउ जान सिव नीको ❀ कालकूट फल दीन्ह अमी को

पार्वतीजी के हृदय की ऐसी प्रीति देखकर शिवजी हर्षित हो गये और पार्वतीजी को, जो स्त्रियों में भूषण हैं, अपना भूषण (अर्धाङ्ग-निवासिनी) बना लिया। शिवजी नाम के प्रभाव को अच्छी तरह जानते हैं। नाम के प्रभाव से ही उनको कालकूट विष ने अमृत का फल दिया।

---

१. अग्नि। २. चन्द्रमा। ३. प्रीति। ४. स्त्री।

दो०– बरषा रितु रघुपति भगति तुलसी सालि[1] सुदास ।
राम नाम बर बरन[2] युग सावन भादव मास ॥१९॥

रामचन्द्रजी की भक्ति वर्षा-ऋतु है । तुलसीदास कहते हैं कि सुन्दर भक्त-जन धान हैं, राम नाम के दोनों सुन्दर अक्षर सावन और भादों के महीने हैं ।
[परंपरित रूपक अलंकार]

आखर मधुर मनोहर दोऊ ❀ बरन बिलोचन जन जिय जोऊ
सुमिरत सुलभ सुखद सब काहू ❀ लोक लाहु परलोक निबाहू

दोनों अक्षर मधुर और मनोहर हैं । ये वर्णमाला के नेत्र भक्तों के प्राण हैं । ये स्मरण करने में सबके लिये सुलभ और सुख देने वाले हैं । इन से इस लोक में लाभ और परलोक में निर्वाह होता है, अर्थात् मुक्ति मिलती है ।

कहत सुनत सुमिरत सुठि[3] नीके ❀ राम लखन सम प्रिय तुलसी के
बरनत बरन प्रीति बिलगाती ❀ ब्रह्म जीव सम सहज सँघाती[4]

दोनों अक्षर, कहने, सुनने और स्मरण करने में बहुत ही सुहावने लगते हैं । तुलसीदास को तो ये दोनों अक्षर राम-लक्ष्मण के समान प्यारे हैं । र और म का अलग अलग वर्णन करने में प्रीति में अन्तर आता है । वास्तव में ये दोनों अक्षर ब्रह्म और जीव के समान स्वाभाविक साथी हैं ।

नर नारायन सरिस सुभ्राता ❀ जग पालक बिसेषि जन त्राता
भगति सुतिय[5] कल करन बिभूषन ❀ जग हित हेतु बिमल बिधु पूषन

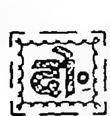
ये दोनों अक्षर नर-नारायण के समान सुन्दर भाई हैं । ये जगत् के पालक और विशेषकर भक्तों के रखवाले हैं । ये दोनों अक्षर भक्ति-रूपिणी सुन्दर स्त्री के कानों के सुन्दर कर्णफूल हैं । संसार के हित के लिये ये दोनों अक्षर निर्मल चन्द्रमा और सूर्य हैं ।

स्वाद तोष[6] सम सुगति सुधा के ❀ कमठ सेष सम धर बसुधा के
जन मन मंजु कंज मधुकर से ❀ जीह जसोमति हरि हलधर से

ये मुक्तिरूपी अमृत के स्वाद और तृप्ति के समान हैं । पृथ्वी के धारण करने के लिये ये कच्छप और शेषजी के समान हैं । भक्तों के मनरूपी सुन्दर

१. धान । २. वर्ण, अक्षर । ३. सुन्दर । ४. संगी, साथी । ५. सुन्दर स्त्री । ६. तृप्ति ।

कमल के लिये ये भौंरे के समान हैं, और जिह्वारूपी यशोदा के लिये ये श्रीकृष्ण और बलराम जी के समान हैं। [मालोपमा अलंकार]



एक छत्रु एकु मुकुटमनि सब बरननि पर जोउ।
तुलसी रघुबर नाम के बरन बिराजत दोउ ॥२०॥

तुलसीदास जी कहते हैं—श्री रामचन्द्र जी के नाम के दोनों अक्षर में से एक (रेफ—) छत्र के समान और दूसरा (मकार —) मुकुट की मणि के समान सब अक्षरों के ऊपर बिराजता है। [काव्यालिंग अलंकार]

समुझत सरिस नाम अरु नामी ❀ प्रीति परसपर प्रभु अनुगामी
नाम रूप दुइ ईस उपाधी ❀ अकथ अनादि सुसामुझि साधी[1]

समझने में नाम और नामी (रामनाम और रामचन्द्र) दोनों समान हैं। दोनों में प्रीति है और दोनों स्वामी और सेवक हैं। नाम और रूप ये दोनों ईश्वर की उपाधियाँ हैं। ये दोनों अकथनीय और अनादि हैं और सुन्दर बुद्धि ही से जाने जाते हैं।

को बड़ छोट कहत अपराधू ❀ सुनि गुन भेदु समुझिहहिं साधू
देखिअहिं रूप नाम आधीना ❀ रूप ग्यान नहिं नाम बिहीना

इन में कौन बड़ा है, कौन छोटा है ? यह कहना अपराध है। इनके गुणों के भेद को सुनकर साधु पुरुष स्वयं ही समझ लेंगे। रूप नाम के अधीन देखा जाता है। नाम के बिना रूप का ज्ञान हो नहीं सकता।

रूप बिसेष नाम बिनु जाने ❀ करतल[2] गत न परहिं पहिचाने
सुमिरिअ नामु रूप बिनु देखे ❀ आवत हृदय सनेह बिसेखे

रूप कैसा ही हो, बिना उसका नाम जाने हाथ पर रक्खा हुआ भी वह पहचाना नहीं जा सकता। रूप के बिना देखे भी नाम को स्मरण करने से वह रूप विशेष प्रेम के साथ हृदय में आजाता है।

नाम रूप गति अकथ कहानी ❀ समुझत सुखद न परति बखानी
अगुन सगुन बिच नाम सुसाखी ❀ उभय प्रबोधक चतुर दुभाखी[3]

नाम और रूप की गति की कथा अकथनीय है। वह समझने में आनन्द-

१. साध्य, जानने योग्य। २. हथेली। ३. दो भाषाओं का जानने वाला।

दायक है पर उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। निर्गुण और सगुण के बीच में नाम सुन्दर साक्षी है, फिर दोनों का यथार्थ ज्ञान कराने वाला चतुर दुभाषिया है।

दो०— राम नाम मनि दीप धरु जीह[1] देहरी[2] द्वार।
तुलसी भीतर बाहिरेहुँ जौं चाहसि उँजियार[3] ॥२१॥

तुलसीदासजी कहते हैं कि यदि तू घरके बाहर और भीतर दोनों ओर उजाला चाहता है, तो द्वार की जीभ रूपी देहली पर रामनाम रूपी मणि का दीपक रख।

नाम जीहँ जपि जागहिं जोगी ❀ बिरति बिरंचि प्रपंच बियोगी
ब्रह्मसुखहिं अनुभवहिं अनूपा ❀ अकथ अनामय नाम न रूपा

ब्रह्मा के बनाये हुये इस प्रपञ्च (दृश्यमान जगत) से भलीभाँति उदासीन योगीजन जीभ से नाम को ही जपते हुये जागते हैं। वे अनुपम ब्रह्म-सुख का अनुभव करते हैं, जो अकथनीय, निर्मल, बिना नाम और रूप का है।

जाना चहहिं गूढ़गति जेऊ ❀ नाम जीहँ जपि जानहिं तेऊ[4]
साधक नाम जपहिं लय लाए ❀ होहिं सिद्ध अनिमादिक पाए

जो आत्मा-परमात्मा के गूढ़ भेद को जानना चाहते हैं, वे भी नाम को जीभ से जपकर उसे जान लेते हैं। साधकजन लौ लगा कर नाम का जप करते हैं और अणिमा आदि आठों सिद्धियाँ पाकर सिद्ध हो जाते हैं।

जपहिं नाम जनु[5] आरत भारी ❀ मिटहिं कुसंकट होहिं सुखारी
राम भगत जग चारि प्रकारा ❀ सुकृती चारिउ अनघ उदारा

अत्यन्त दुःखी भक्त नाम को जपते हैं, उनके बुरे संकट मिट जाते हैं और वे सुखी होते हैं। संसार में चार प्रकार के राम के भक्त हैं; अर्थात् जिज्ञासु—ईश्वर के जानने की इच्छा रखनेवाला; अर्थी—किसी प्रयोजन की सिद्धि के लिये ईश्वर का स्मरण करनेवाला; आर्त्त—किसी दुःख में फंसकर ईश्वर को याद करनेवाला; ज्ञानी—ईश्वर को जानकर भजने वाला। चारों ही पुण्यात्मा, पापहीन और उदार हैं।

---

१. जीभ। २. चौखट। ३. प्रकाश। ४. वे भी। ५. भक्त।

चहुँ चतुर कहुँ नाम अधारा ❀ ग्यानी प्रभुहिं बिसेषि पिआरा
चहुँ जुग चहुँ स्रुति नाम प्रभाऊ ❀ कलि बिसेषि नहिं आन उपाऊ

चारों चतुर भक्तों को नाम ही का आधार है; पर ज्ञानी भक्त प्रभु को विशेष रूप से प्रिय है। यों तो चारों युगों के लिये चारों वेदों में नाम की महिमा गाई गई है, परन्तु कलियुग में तो नाम को छोड़कर कोई दूसरा उपाय ही नहीं।

दो०। सकल कामनाहीन जे राम भगति रस लीन।
नाम सुपेम पियूष ह्रद तिन्हहुँ किये मन मीन।२२।

जो सब प्रकार कामनाओं से रहित होकर राम की भक्ति के रस में लीन हैं, उन्होंने भी रामनाम-रूपी सुन्दर प्रेम के अमृत-कुण्ड में अपने मन को मछली बना रखा है।

अगुन सगुन दुइ ब्रह्मसरूपा ❀ अकथ अगाध अनादि अनूपा
मोरे मत बड़ नाम दुहूँ ते ❀ किय जेहि जुग निज बस निज बूते[1]

निर्गुण और सगुण ब्रह्म के दो स्वरूप हैं। दोनों ही अकथनीय, अथाह, अनादि और अनुपम हैं। (तुलसीदासजी कहते हैं) मेरी सम्मति में नाम दोनों से बड़ा है, जिसने अपने बल से सगुण और निर्गुण दोनों को अपने वश में कर रखा है।

प्रौढ़ि[2] सुजन जनि[3] जानहिं जन की ❀ कहउँ प्रतीति प्रीति रुचि मन की
एक दारु गत देखिअ एकू ❀ पावक सम जुग ब्रह्म बिबेकू

सज्जनगण इस बात को मुझ दास की ढिठाई या प्रौढ़ोक्ति न समझें। मैं अपने मन के विश्वास, प्रीति और रुचि की बात कहता हूँ। दोनों प्रकार के ब्रह्म का ज्ञान (परिचय) अग्नि के समान है। एक अग्नि तो लकड़ी के भीतर व्याप्त है और दूसरी बाहर दिखाई देती है।

उभय अगम जुग सुगम नाम तें ❀ कहेउँ नामु बड़ ब्रह्म राम तें
ब्यापकु एकु ब्रह्म अबिनासी ❀ सत चेतन घन आनँदरासी

सगुण और निर्गुण दोनों का जानना कठिन है; परन्तु नाम से दोनों सुगम हो जाते हैं। इसी से मैंने निर्गुण (ब्रह्म) और सगुण (राम) दोनों को बड़ा कहा है। यद्यपि ब्रह्म सर्व व्यापक, एक, अविनाशी, सत्, चेतन और आनन्द की घनी राशि है।

---

१. बल से। २. ढिठाई। ३. मत, न।

असं प्रभु हृदय अछत अविकारी ❀ सकल जीव जग दीन दुखारी
नाम निरूपन नाम जतन तें ❀ सोउ प्रगटत जिमि मोल रतन तें

हृदय में ऐसे शुद्ध और निर्विकार प्रभु के रहते हुए भी जगत् के सब जीव, दीन और दुखी हैं। नाम का निरूपण करके नाम का यत्न (जप) करने से वही ब्रह्म ऐसे प्रकट हो जाता है, जैसे रत्न के जानने से उसका मूल्य। [उदाहरण अलङ्कार]

दो॰ निरगुन तें एहि भाँति बड़ नाम प्रभाउ अपार।
कहउँ नामु बड़ राम तें निज बिचार अनुसार ॥२३॥

इस प्रकार निर्गुण से नाम का प्रभाव बहुत ही बड़ा है। अब अपने विचार के अनुसार कहता हूँ कि नाम राम से भी बड़ा है।

राम भगत हित नर तनु धारी ❀ सहि संकट किय साधु सुखारी
नामु सप्रेम जपत अनयासा ❀ भगत होहिं मुद मंगल बासा

रामचन्द्र जी ने भक्तों के हित के लिये मनुष्य-शरीर धारण करके और स्वयं संकट सहकर साधुओं को सुखी किया। किन्तु प्रेम से नाम का जप करने से भक्त सहज ही में आनन्द और कल्याण के घर हो जाते हैं।

राम एक तापस तिय तारी ❀ नाम कोटि खल कुमति सुधारी
रिषि हित राम सुकेतु सुता की ❀ सहित सेन सुत कीन्हि बिबाकी

राम ने एक तपस्वी की पत्नी अहिल्या का उद्धार किया, परन्तु नाम ने करोड़ों दुष्टों की कुबुद्धि को सुधार दिया। राम ने विश्वामित्र ऋषि के हित के लिये सुकेतु की कन्या ताड़का को, उसकी सेना और पुत्र सुबाहु सहित, निःशेष (विध्वंस) कर दिया।

सहित दोष दुख दास दुरासा ❀ दलइ नाम जिमि रबि निसि नासा
भंजेउ राम आपु भव चापू ❀ भव भय भंजन नाम प्रतापू

परन्तु नाम भक्तों के दोष, दुःख और दुराशाओं का ऐसे संहार करता है, जैसे सूर्य रात्रि का नाश करता है। राम ने स्वयं भव (शिव) का धनुष तोड़ा; परन्तु नाम का प्रताप भव (संसार) के सब भयों का नाश कर देने वाला है।

दंडक वन प्रभु कीन्ह सोहावन ❀ जन मन अमित[1] नाम किय पावन
निसिचर निकर[2] दले रघुनंदन ❀ नाम सकल कलि कलुष निकंदन[3]

प्रभु राम ने दण्डक-वन को सुहावना बना दिया; किन्तु नाम ने असंख्य भक्तों के मनों को पवित्र कर दिया। राम ने राक्षसों के समूह को मारा; परन्तु नाम तो कलियुग के सारे पापों का नाश करने वाला है।

दो० सबरी गीध सुसेवकनि सुगति दीन्हि रघुनाथ।
नाम उधारे अमित खल बेद बिदित गुन गाथ॥२४॥

राम ने शबरी, गीध आदि उत्तम सेवकों (भक्तों) को मुक्ति दी; परन्तु नाम ने अनगिनत दुष्टों का उद्धार किया। नाम के गुणों की कथा वेदों में विदित है।

राम सुकंठ[4] बिभीषन दोऊ ❀ राखे सरन जान सबु कोऊ
नाम गरीब अनेक नेवाजे ❀ लोक बेद बर बिरद बिराजे

राम ने सुग्रीव और विभीषण दो को ही अपनी शरण में रक्खा, यह सब कोई जानते हैं। पर नाम ने अनेक दीनों पर कृपा की है। नाम का यह विरद लोक और वेद दोनों में विराजमान है।

राम भालु कपि कटकु बटोरा ❀ सेतु हेतु स्रमु कीन्ह न थोरा
नाम लेत भवसिंधु सुखाहीं ❀ करहु बिचार सुजन मन माहीं

राम ने भालू और बन्दरों की सेना बटोरी और समुद्र पर पुल बाँधने के लिये थोड़ा परिश्रम नहीं किया; पर नाम लेते ही संसाररूपी समुद्र सूख जाता है। हे सज्जनो! मन में विचार करें (कि दोनों में कौन बड़ा है।)

राम सकुल रन रावनु मारा ❀ सीय सहित निज पुर पगु धारा
राजा रामु अवध रजधानी ❀ गावत गुन सुर मुनि बर बानी

राम ने कुटुम्ब-सहित रावण को युद्ध में मारा और सीता-सहित वे अपने नगर अयोध्या को लौटे। राम राजा हैं, उनकी राजधानी अयोध्या है; जिसके गुण देवता और मुनि सुन्दर वाणी से गाते हैं।

सेवक सुमिरत नाम सप्रीती ❀ बिनु स्रम प्रबल मोह दलु जीती
फिरत सनेह मगन सुख अपने ❀ नाम प्रसाद सोच नहिं सपने

१. असंख्य। २. समूह। ३. नाश करने वाला। ४. सुग्रीव।

परन्तु भक्त प्रेमपूर्वक नाम के स्मरणमात्र से अज्ञान की प्रबल सेना को बिना परिश्रम के जीत लेता है और प्रेम में मग्न होकर आत्मानन्द में विचरता है। नाम के प्रसाद से उसे सपने में भी कोई चिन्ता नहीं रहती।

दो॰ ब्रह्म राम तें नामु बड़ बरदायक बर दानि।
रामचरित सत कोटि महँ लिय महेस जियँ जानि।२५।

ब्रह्म और राम से नाम बड़ा है। यह वरदान देने वालों (देवताओं) को भी वर देने वाला है। सौ करोड़ या सौ प्रकार के रामचरित में से शिवजी ने इस "राम" नाम को मन में साररूप जानकर ग्रहण किया है।

नाम प्रसाद संभु अबिनासी ❀ साजु अमंगल मंगल रासी
सुक सनकादि सिद्ध मुनि जोगी ❀ नाम प्रसाद ब्रह्म-सुख भोगी

नाम ही के प्रसाद से शिवजी अविनाशी हैं और असंगल (बुरा) वेष होने पर भी वे मंगल की राशि (मंगलमय) हैं। शुक और सनक आदि सिद्ध, मुनि, योगीजन नाम ही के प्रसाद से ब्रह्मानन्द को भोगते हैं।

नारद जानेउ नाम प्रतापू ❀ जग प्रिय हरि हरि हर प्रिय आपू
नामु जपत प्रभु कीन्ह प्रसादू ❀ भगति सिरोमनि भे प्रहलादू

नाम के प्रताप को नारद जी ने जाना है। हरि सारे संसार को प्यारे हैं और हरि और हर दोनों को नारद मुनि प्यारे हैं। नाम के जपने से भगवान प्रह्लाद पर प्रसन्न हुये और वे भक्तों के शिरोमणि हो गये।

ध्रुव सगलानि जपेउ हरि नाऊँ ❀ पायउ अचल अनूपम ठाऊँ
सुमिरि पवनसुत पावन नामू ❀ अपने बस करि राखे रामू

ध्रुवजी ने (विमाता के वचनों से दुखी होने पर) ग्लानिपूर्वक नाम को जपा और अचल (स्थिर) तथा अनुपम स्थान पाया। हनुमान जी ने पवित्र नाम को जपकर राम को अपने वश में कर रक्खा है।

अपतु[1] अजामिलु गजु गनिकाऊ ❀ भये मुकुत हरि नाम प्रभाऊ
कहउँ कहाँ लगि नाम बड़ाई ❀ रामु न सकहिं नाम गुन गाई

नीच अजामिल, गज और गणिका भी भगवान् के नाम के प्रभाव से मुक्त

---

१. नीच।

हो गये। मैं नाम की बड़ाई कहाँ तक कहूँ। राम भी नाम के गुणों को नहीं गा सकते।

दो० नामु राम को कलपतरु कलि कल्यान निवासु।
जो सुमिरत भयो भाँग तें तुलसी तुलसीदासु।२६।

राम का नाम कलियुग में कल्पतरु (मन चाहा पदार्थ देने वाला) और कल्याण का घर है, जिसको स्मरण करके भाँग ऐसा निकृष्ट तुलसीदास तुलसी के समान (पवित्र) हो गया।

चहुँ जुग तीनि काल तिहुँ लोका ❀ भये नाम जपि जीव बिसोका
बेद पुरान संत मत एहू ❀ सकल सुकृत फल राम सनेहू

चारों युगों में, तीनों कालों में और तीनों लोकों में नाम को जपकर जीव शोक रहित हुये हैं। वेद, पुराण और सन्तों का मत यही है कि सारे पुण्यों का फल रामचन्द्र जी में प्रेम का होना है।

ध्यानु प्रथम जुग मख बिधि दूजे ❀ द्वापर परितोषत प्रभु पूजे
कलि केवल मल मूल मलीना ❀ पाप पयोनिधि जन मन मीना

प्रथम (सत्य) युग में ध्यान से, दूसरे (त्रेता) में यज्ञ से, द्वापर में पूजन से भगवान् प्रसन्न होते हैं, परन्तु कलियुग केवल पाप की जड़ और मलिन है। मनुष्यों का मन पाप के समुद्र में मछली के समान रहता है।

नाम कामतरु काल कराला ❀ सुमिरत समन सकल जग जाला
राम नाम कलि अभिमत दाता ❀ हित परलोक लोक पितु माता

इस कराल काल में नाम ही कल्पवृक्ष है, जो स्मरण करते ही संसार के सब बन्धनों का नाश कर देता है। राम का नाम कलियुग में मनोवाँछित फल देने वाला है। यह परलोक में हित करता है और इस लोक में माता-पिता के समान (रक्षक और पालक) है।

नहिं कलि करम न भगति बिबेकू ❀ राम नाम अवलंबन[3] एकू
कालनेमि कलि कपट निधानू ❀ नाम सुमति समरथ हनुमानू

कलियुग में न कर्म है, और न भक्ति और ज्ञान ही है। केवल रामनाम ही

१. नशीला पौधा। २. पौधा, जिसकी पत्तियाँ पूजन में मूर्ति पर चढ़ाई जाती हैं। ३. आधार, सहारा।

एक आधार है। कपट की खान कलियुगरूपी कालनेमि (दैत्य) के (मारने के) लिये राम का नाम ही बुद्धिमान और समर्थ हनुमान के समान है।

दो० रामनाम नरकेसरी कनककसिपु कलिकालु।
जापक[1] जन प्रहलाद जिमि पालिहि दलि सुरसालु २७

राम का नाम नृसिंह है, कलियुग हिरण्यकशिपु है, और जप करने वाले भक्तजन प्रह्लाद हैं। नामरूपी नृसिंह भगवान् देवताओं को दुःख देने वाले हिरण्यकशिपु को मारकर जप करनेवाले प्रह्लाद की रक्षा करेंगे।

भायँ कुभायँ अनख[2] आलसहूँ ❀ नाम जपत मंगल दिसि दसहूँ
सुमिरि सो नाम राम गुन गाथा ❀ करउँ नाइ रघुनाथहिं माथा

प्रेम से, बैर से, क्रोध से या आलस्य से किसी तरह से भी नाम जपने से दशों दिशाओं में कल्याण होता है। उसी रामनाम का स्मरण करके और रामचन्द्रजी को मस्तक नवाकर मैं राम के चरणों की कथा रचता हूँ।

मोरि सुधारिहि सो सब भाँती ❀ जासु कृपा नहिं कृपा अघाती
राम सुस्वामि कुसेवकु मो सो ❀ निज दिसि देखि दयानिधि पोसो[3]

वे श्रीरामजी सब तरह से मेरी बिगड़ी सुधारेंगे। जिनकी कृपा से कृपा तृप्त नहीं होती अर्थात् कृपा करने से नहीं अघाती। राम से उत्तम स्वामी और मुझ-सा बुरा सेवक! इसपर अपनी ओर देखकर उन दयानिधान ने मेरा पालन किया है।

लोकहुँ वेद सुसाहिब रीती ❀ बिनय सुनत पहिचानत प्रीती
गनी[4] गरीब ग्राम-नर[5] नागर ❀ पंडित मूढ़ मलीन उजागर

लोक और वेद में भी अच्छे स्वामी की यही रीति प्रसिद्ध है कि वह विनय सुनते ही प्रार्थी की प्रीति को पहचान लेते हैं। धनी, निर्धन, गँवार, नगर-निवासी, पण्डित, मूर्ख, बदनाम, और विख्यात—

सुकबि कुकबि निज मति अनुहारी[6] ❀ नृपहि सराहत सब नर नारी
साधु सुजान सुसील नृपाला ❀ ईस अंस भव परम कृपाला

कवि और कुकवि सब स्त्री-पुरुष अपनी-अपनी बुद्धि के अनुसार राजा की

१. जप करने वाला। २. क्रोध। ३. पालन किया। ४. धनी। ५. गँवार। ६. अनुसार।

सराहना करते हैं और साधु, बुद्धिमान, सुशील और ईश्वर के अंश से उत्पन्न बड़ा दयालु राजा—

सुनि सनमानहिं सबहिं सुबानी ❀ भनिति भगति नति[1] गति पहिचानी
यह प्राकृत महिपाल सुभाऊ ❀ जानि[2] सिरोमनि कोसलराऊ
रीझत राम सनेह निसोतें ❀ को जग मंद मलिन मति मोतें

सब के कथन को सुनकर, उनकी वाणि, भक्ति, नम्रता और चाल को पहचानकर, मीठी वाणी से सबका सम्मान करता है। यह तो संसारी राजाओं का स्वभाव है। अयोध्यापति रामचन्द्रजी तो ज्ञानियों के शिरोमणि हैं। राम तो केवल विशुद्ध प्रेम से रीझ जाते हैं; पर मुझ-से बढ़कर मूर्ख और मैले मनवाला और कौन है ?

दो० सठ सेवक की प्रीति रुचि रखिहहिं राम कृपालु ।
उपल[3] किये जलजान जेहिं सचिव सुमति कपि भालु ।

कृपालु रामचन्द्रजी मुझ जैसे दुष्ट सेवक की प्रीति और रुचि को अवश्य रक्खेंगे। जिन्होंने पत्थरों को जहाजरूप और बन्दर भालुओं को बुद्धिमान् मंत्री बना लिया। [अर्थान्तरन्यास अलंकार]

हौंहु कहावत सबु कहत राम सहत उपहास ।
साहिब सीतानाथ सों सेवक तुलसीदास ॥२८॥(२)॥

मैं भी राम का भक्त कहलाता हूँ और सारा जगत् भी यही कहता है, कृपालु रामचन्द्रजी इस निन्दा को सहते हैं कि कहाँ सीतानाथ जैसे स्वामी और कहाँ तुलसीदास-सा सेवक !

अति बड़ि मोरि ढिठाई खोरी ❀ सुनि अघ नरकहु नाक सिकोरी
समुझि सहम मोहिं अपडर अपनें ❀ सो सुधि राम कीन्ह नहिं सपनें

यह कहना मेरी बड़ी ढिठाई और दोष है, मेरे पापों को सुनकर नरक भी नाक सिकोड़ता है। यह समझकर मुझे अपने ही कल्पित भय से संकोच हो रहा है; पर रामचन्द्रजी ने तो इसका स्वप्न में भी कभी ख़्याल नहीं किया।

---

१. नम्रता। २. ज्ञानी। ३. पत्थर।

सुनि अवलोकि सुचित चख[1] चाही[2] ❀ भगति मोरि मति स्वामि सराही
कहत नसाइ होइ हियँ नीकी ❀ रीझत राम जानि जन जी की

मेरी प्रार्थना सुनकर स्वामी रामचन्द्रजी ने आँख की अपेक्षा चित्त से अच्छी तरह देखकर मेरी मति और भक्ति की सराहना की। कहने में भले ही बिगड़ जाय, परन्तु हृदय में अच्छी हो, तो रामचन्द्रजी भक्तों के हृदय की बात जानकर रीझ जाते हैं।

रहति न प्रभु चित चूक किये की ❀ करत सुरति सय[3] वार हिये की
जेहि अघ वधेउ व्याध जिमि वाली ❀ फिरि सुकंठ सोइ कीन्हि कुचाली

प्रभु रामचन्द्रजी के चित्त में भक्तों की की हुई भूल-चूक याद नहीं रहती। वे उनके हृदय की अच्छाई को सौ बार स्मरण करते रहते हैं। जिस पाप से रामचन्द्रजी ने बालि को व्याध की तरह मारा था, वही कुचाल फिर सुग्रीव ने चली। [निदर्शना अलंकार]

सोइ करतूति विभीषन केरी[4] ❀ सपनेहुँ सो न राम हिय हेरी
ते भरतहिं भेंटत सनमाने ❀ राजसभा रघुवीर बखाने

वही करनी विभीषण ने की; पर उन रामचन्द्रजी ने स्वप्न में भी मन में विचार नहीं किया। उलटे भरतजी से मिलने के समय रामचन्द्रजी ने उनका सम्मान किया और राज-सभा में भी उनका बखान किया।

दो० प्रभु तरु तर कपि डार पर ते किय आपु समान।
तुलसी कहूँ न राम से साहिब सील निधान।२९। (१)

प्रभु रामचन्द्रजी तो वृक्ष के नीचे और बन्दर डाली पर; तो भी उन्होंने उन्हें अपने समान बना लिया। तुलसीदास जी कहते हैं कि रामचन्द्रजी के समान शीलनिधान स्वामी कहीं भी नहीं है।

राम निकाईं[5] रावरी[6] है सब ही को नीक।
जौं यह साँची है सदा तौ नीको तुलसीक॥२९॥ (२)

हे रामचन्द्रजी! आपकी अच्छाई सबका कल्याण करने वाली है। यदि यह बात सच है, तो तुलसीदास को भी वह सदा अच्छी ही रहेगी।

---

१. आँख। २. अपेक्षा। ३. सौ। ४. की। ५. अच्छापन। ६. आपकी।

एहि बिधि निज गुन दोष कहि सबहिं बहुरि[1] सिरु नाइ।
बरनउँ रघुबर बिसद जसु सुनि कलि कलुष नसाइ ।२९।(३)

इस प्रकार अपने गुण-दोषों को कहकर और सबको सिर नवा करके रामचन्द्रजी का निर्मल यश वर्णन करता हूँ, जिसे सुनने से कलियुग के पाप नष्ट हो जाते हैं।

जागबलिक जो कथा सोहाई ❀ भरद्वाज मुनिबरहिं सुनाई
कहिहउँ सोइ संबाद बखानी ❀ सुनहु सकल सज्जन सुखु मानी

याज्ञवल्क्य मुनि ने जो सुहावनी कथा मुनिवर भरद्वाजजी को सुनाई थी, उसी संवाद को मैं बखानकर कहूँगा, सब सज्जन सुख का अनुभव करते हुए उसे सुनें।

संभु कीन्ह यह चरित सोहावा ❀ बहुरि कृपा करि उमहिं सुनावा
सोइ सिव कागभुसुंडिहिं दीन्हा ❀ रामभगत अधिकारी चीन्हा

उस सुहावने रामचरित को पहले शिवजी ने रचा और फिर कृपा करके पार्वती को सुनाया था। वही चरित शिवजी ने, राम का भक्त और अधिकारी पहचानकर कागभुशुण्डि को दिया।

तेहि सन[2] जागबलिक पुनि पावा ❀ तिन्ह पुनि भरद्वाज प्रति गावा
ते श्रोता बकता समसीला ❀ समदरसी जानहिं हरि लीला

फिर कागभुशुण्डि से याज्ञवल्क्य ने पाया और फिर उन्होंने उसे भरद्वाजजी से वर्णन किया। वे दोनों वक्ता और श्रोता समान शील वाले और समदर्शी हैं और हरि की लीलाओं को जानते हैं।

जानहिं तीनि काल निज ग्याना ❀ करतल गत आमलक[3] समाना
औरउ जे हरि भगत सुजाना ❀ कहहिं सुनहिं समुझहिं बिधि नाना

वे अपने ज्ञान से हाथ पर रक्खे हुए आमले के फल के समान तीनों कालों की बातों को जानते हैं। और भी जो चतुर हरिभक्त हैं, वे इस चरित को तरह-तरह से कहते, सुनते और समझते हैं।

---

१. फिर। २. से। ३. आँवला।

दो॰ मैं पुनि निज गुरु सन सुनी कथा सो सूकरखेत।
समुझी नहिं तसि बालपन तब अति रहेउँ अचेत।३०।

फिर वही कथा मैंने अपने गुरुजी से शूकरक्षेत्र में सुनी थी। परन्तु तब बालकपन के कारण मैं बहुत नादान था, इसी से उसे भली भाँति मैंने समझा नहीं।

श्रोता बकता ग्याननिधि कथा राम कै गूढ़।
किमि समुझौं मैं जीव जड़ कलि मल ग्रसित बिमूढ़।३०।(२)

राम की कथा बड़ी ही गूढ़ है, इसके लिये वक्ता और श्रोता दोनों पूरे ज्ञानी होने चाहियें। मैं कलियुग के पापों में फँसा हुआ महामूढ़, जड़ जीव उसको कैसे समझ सकता था ?

तदपि कही गुर बारहिं बारा ❀ समुझि परी कछु मति अनुसारा
भाषाबद्ध करबि[1] मैं सोई ❀ मोरे मन प्रबोध जेहि होई

तो भी गुरुजी ने बार-बार कथा कही, तब अपनी बुद्धि के अनुसार कुछ समझ में आई। उसी को अब मैं भाषा में कहूँगा, जिससे मेरे मन को सन्तोष हो।

जस कछु बुधि बिबेक बल मेरे ❀ तस कहिहौं हियँ हरि के प्रेरे
निज संदेह मोह भ्रम हरनी ❀ करउँ कथा भव सरिता तरनी

जैसा कुछ मुझमें बुद्धि और ज्ञान का बल है, मैं हृदय में हरि की प्रेरणा से उसी के अनुसार कहूंगा। मैं अपने सन्देह, अज्ञान और भ्रम को हरने वाली कथा रचता हूं, जो संसार-रूपी नदी के लिये नाव के समान है।

बुध बिस्राम सकल जन रंजनि ❀ रामकथा कलि कलुष बिभंजनि
रामकथा कलि पन्नग[2] भरनी[3] ❀ पुनि बिबेक पावक कहुँ अरनी[4]

राम-कथा पण्डितों को विश्राम देने वाली, सब मनुष्यों के मन को प्रसन्न करने वाली और कलियुग के पापों को नाश करने वाली है। राम-कथा कलियुग-

१. करूँगा। २. साँप। ३. मोरनी। ४. लकड़ी। एक प्रकार का जंगली वृक्ष, जिसे गनियार और अगेथु भी कहते हैं। इसकी सूखी लकड़ी घिसने से तुरन्त आग पैदा होती है, और मसाल की तरह जलती है।

रूपी साँप के लिये मोरनी है, और फिर ज्ञानरूपी अग्नि को प्रज्वलित करने के लिये अरनी (मंथन की जाने वाली) लकड़ी है।

रामकथा कलि कामद गाई[1] ❀ सुजन सजीवन मूरि सोहाई
सोइ बसुधातल सुधा तरंगिनि ❀ भय भञ्जनि भ्रम भेक भुअंगिनि

राम-कथा कलियुग में सब मनोरथों को पूर्ण करने वाली कामधेनु (गौ) और सज्जनों के लिये सुन्दर सञ्जीवनी जड़ी है। पृथ्वी पर यही अमृत की नदी है। यह भय को दूर करने वाली और सन्देहरूपी मेंढकों को खाने के लिये सर्पिणी है।

असुर सेन सम नरक निकंदिनि ❀ साधु विबुध कुल हित गिरिनंदिनि
संत समाज पयोधि रमा सी ❀ बिस्व भार भर अचल छमा सी

यह राम-कथा राक्षसों की सेना के समान जो नरक हैं उनको नाश करने वाली है और साधु और देवकुल का कल्याण चाहने वाली गंगा तथा पार्वती दुर्गा है। यह सन्त-समाज रूपी क्षीरसागर के लिये लक्ष्मी है और सम्पूर्ण विश्व का भार उठाने में अचल पृथ्वी के समान है।

जम गन मुँह मसि[2] जग जमुना सी ❀ जीवन मुकुति हेतु जनु कासी
रामहिं प्रिय पावन तुलसी सी ❀ तुलसिदास हित हिय हुलसी सी

यमदूतों के मुख पर कालिख लगाने के लिये यह संसार में यमुना के समान है। जीवों को मुक्ति देने के लिये तो मानो साक्षात् काशी है। रामचन्द्रजी को पवित्र तुलसी के समान प्रिय है। तुलसीदास के लिये हुलसी (तुलसीदासजी की माता) के समान जी से हित करने वाली है।

सिव प्रिय मेकल सैल[3] सुता सी ❀ सकल सिद्धि सुख संपति रासी
सदगुन सुरगन अंब अदिति सी ❀ रघुबर भगति प्रेम परिमिति सी

यह रामकथा शिवजी को नर्मदा के समान प्यारी है। यह सब सिद्धियों, सुख और सम्पत्ति की राशि है। सद्गुणरूपी देवताओं के लिये यह माता अदिति के समान है; और रामचन्द्रजी की भक्ति और प्रेम की सीमा-सी है।

दो० **रामकथा मंदाकिनी चित्रकूट चित चारु[4]।**
तुलसी सुभग सनेह बन सिय रघुबीर बिहारु॥३१॥

---

१. गाय। २. स्याही। ३. विन्ध्याचल पर्वत। ४. सुन्दर।

तुलसीदासजी कहते हैं कि रामकथा मन्दाकिनी नदी है और चित्त सुन्दर चित्रकूट है। उसमें सुन्दर स्नेह ही वन है, जिसमें सीतारामजी विहार करते हैं। [रूपक अलङ्कार]

रामचरित चिंतामनु चारू ❀ संत सुमति तिय सुभग सिंगारू
जग मंगल गुनग्राम राम के ❀ दानि मुकुति धन धरम धाम के

रामचन्द्रजी का चरित्र सुन्दर चिन्तामणि है और सन्तों की सुबुद्धि-रूपी स्त्री का सुन्दर शृङ्गार है। रामचन्द्रजी के गुण-समूह जगत् का कल्याण करने वाले और मोक्ष, धन, धर्म तथा परमधाम के देने वाले हैं।

सदगुर ग्यान बिराग जोग के ❀ बिबुध बैद भव भीम[1] रोग के
जननि जनक सिय राम पेम के ❀ बीज सकल व्रत धरम नेम के

ज्ञान, वैराग्य और योग के लिये रामचरित सद्गुरु और संसाररूपी भयंकर रोग के लिये देव-वैद्य अश्विनीकुमार है। यह सीताराम के प्रेम के उत्पन्न करने के लिये माता-पिता और सारे व्रत, धर्म और नियमों के बीज हैं।

समन पाप संताप सोक के ❀ प्रिय पालक परलोक लोक के
सचिव सुभट भूपति बिचार के ❀ कुंभज लोभ उदधि अपार के

पाप, सन्ताप और शोक को नाश करने वाले और इस लोक तथा परलोक के प्यारे पालक हैं। विचाररूपी राजा के वीर मन्त्री और लोभ-रूपी अपार समुद्र के सोखने के लिये अगस्त्य मुनि हैं।

काम कोह कलि मल करि[2] गन के ❀ केहरि सावक[3] जन मन बन के
अतिथि पूज्य प्रियतम पुरारि के ❀ कामद घन दारिद दवारि के

भक्तों के मनरूपी वन में काम, क्रोध और कलियुग के पापरूपी हाथियों को मारने के लिये ये सिंह के बच्चे हैं। महादेवजी के बहुत ही प्रिय और पूज्य अतिथि और दरिद्रतारूपी वन की अग्नि के लिये कामना पूर्ण करने वाले मेघ हैं।

मंत्र महा मनि बिषय ब्याल[4] के ❀ मेटत कठिन कुअंक भाल के
हरन मोह तम दिनकर कर[5] से ❀ सेवक सालि[6] पाल जलधर से

विषयरूपी साँप के लिये मन्त्र और महामणि हैं। ये ललाट पर लिखे हुए

---

१. भयंकर। २. हाथी। ३. बच्चा। ४. साँप। ५. किरण। ६. धान।

कठिनता से मिटने वाले बुरे लेखों (मंद प्रारब्ध) को मिटा देने वाले हैं। अज्ञान-रूपी अन्धकार के दूर करने को सूर्य की किरणों के समान और सेवकरूपी धानों को पालने वाले मेघ के समान हैं।

अभिमत दानि देवतरु वर से ❀ सेवत सुलभ सुखद हरिहर से
सुकबि सरद नभ मन उडगन से ❀ राम भगत जन जीवन धन से

मनोवाञ्छित फल देने में श्रेष्ठ कल्पवृक्ष के समान हैं। और सेवा करने में हरिहर के समान सहज सुख देने वाले हैं। सुकविरूपी शरद् ऋतु के मनरूपी आकाश में तारागण के समान हैं और राम के भक्तों के तो ये जीवनधन (सर्वस्व) ही हैं।

सकल सुकृत फल भूरि भोग से ❀ जग हित निरुपधि साधु लोग से
सेवक मन मानस मराल से ❀ पावन गंग तरंग माल से

सम्पूर्ण पुण्यों के फल-स्वरूप महान् सुख-भोग के समान हैं। निःस्वार्थ भाव से छल-रहित जगत् का हित करने के लिये साधु-सन्तों के समान हैं। भक्तों के मनरूपी मानसरोवर में हंस के समान और पवित्र करने में गंगा की तरंग-माला के समान हैं।

दो०— कुपथ कुतरक कुचालि कलि कपट दंभ पाखंड।
दहन राम गुन ग्राम जिमि इंधन अनल प्रचंड॥३२॥(१)

रामचन्द्र के गुणों के समूह कुमार्ग, कुतर्क, कुचाल, कलि, कपट, दम्भ और पाखण्ड के लिये वैसे ही हैं, जैसे ईंधन के लिये प्रचंड अग्नि।

रामचरित राकेस[1] कर सरिस सुखद सब काहु।
सज्जन कुमुद चकोर चित हित बिसेषि बड़ लाहु॥३२॥(२)

रामचन्द्रजी का चरित पूर्णिमा के चन्द्रमा की किरणों के समान सभी को सुख देने वाला है। परन्तु सज्जनरूपी कुमुद और चकोरों के चित्त को विशेष हितकारी और बहुत लाभदायक है।

कीन्हि प्रस्न जेहि भाँति भवानी ❀ जेहि बिधि संकर कहा बखानी
सो सब हेतु कहब मैं गाई ❀ कथा प्रबंध बिचित्र बनाई

---

१. पूर्णिमा का चन्द्रमा।

जिस भाँति पार्वती ने (शिवजी से) प्रश्न किया और जिस भाँति शिवजी ने विस्तार के साथ उसका उत्तर दिया, वह सब कारण मैं विचित्र कथा की रचना करके और गाकर कहूँगा।

जेहि यह कथा सुनी नहिं होई ❀ जनि आचरज करइ सुनि सोई
कथा अलौकिक सुनहिं जे ग्यानी ❀ नहिं आचरजु करहिं अस जानी

जिसने यह कथा पहले कभी न सुनी हो, वह इसे सुनकर आश्चर्य न करे। जो ज्ञानी इस विचित्र कथा को सुनते हैं, वे यह जानकर आश्चर्य नहीं करते कि—

रामकथा कै मिति जग नाहीं ❀ असि प्रतीति तिन्ह के मन माहीं
नाना भाँति राम अवतारा ❀ रामायन सत कोटि अपारा

संसार में रामकथा की सीमा नहीं है। उनके मन में ऐसा विश्वास रहता है। रामचन्द्रजी के अवतार नाना प्रकार के हुए हैं और सौ करोड़ तथा अपार रामायण हैं।

कलपभेद हरिचरित सोहाए ❀ भाँति अनेक मुनीसन्ह गाए
करिअ न संसय अस उर आनी ❀ सुनिअ कथा सादर रति मानी

मुनीश्वरों ने रामचन्द्रजी का सुन्दर चरित कल्प-भेद के अनुसार अनेकों प्रकार से गाया है। हृदय में ऐसा विचार कर सन्देह न कीजिये और इस कथा को आदरपूर्वक प्रेम से सुनिये।

दो० राम अनंत अनंत गुन अमित कथा बिस्तार।
सुनि आचरजु न मानिहहिं जिन्हके बिमल बिचार॥३३॥

रामचन्द्रजी अनन्त हैं, उनके गुण भी अनन्त हैं और उनके गुणों की कथा का विस्तार भी अपार है। अतएव जिनके विचार शुद्ध हैं, वे इस कथा को सुनकर आश्चर्य नहीं मानेंगे।

एहि बिधि सब संसय करि दूरी ❀ सिर धरि गुर पद पंकज धूरी
पुनि सबहीं बिनवउँ कर जोरी ❀ करत कथा जेहि लाग न खोरी

इस भाँति सब सन्देहों को दूर करके और गुरुजी महाराज के चरण-कमलों की धूलि को सिर पर धारण करके मैं फिर हाथ जोड़कर सबकी विनती करता हूँ कि जिसमें कथा की रचना में कोई दोष न छू जाय।

सादर सिवहिं नाइ अब माथा ❀ बरनउँ बिसद राम गुन गाथा
संबत सोरह सै इकतीसा ❀ करउँ कथा हरिपद धरि सीसा

अब मैं शिवजी को आदरसहित सिर नवाकर रामचन्द्रजी के गुणों की विमल कथा कहता हूँ। श्रीहरि के चरणों पर सिर रखकर संवत् १६३१ में मैं इस कथा का आरम्भ करता हूँ।

नौमी भौमबार मधुमासा[1] ❀ अवधपुरी यह चरित प्रकासा
जेहि दिन राम जनम श्रुति गावहिं ❀ तीरथ सकल तहाँ चलि आवहिं

चैत्रमास की नवमी तिथि मंगलवार को यह चरित अयोध्याजी में प्रकाशित हुआ। जिस दिन रामचन्द्रजी का जन्म होता है, उस दिन वेद कहते हैं कि सारे तीर्थ वहाँ (अयोध्याजी में) चले आते हैं।

असुर नाग खग नर मुनि देवा ❀ आइ करहिं रघुनायक सेवा
जनम महोत्सव रचहिं सुजाना ❀ करहिं राम कल[2] कीरति गाना

उस दिन असुर, नाग, पक्षी, मनुष्य, मुनि और देवता सब अयोध्याजी में आकर रघुनाथजी की सेवा करते हैं। बुद्धिमान् लोग उस दिन जन्म का महोत्सव मनाते हैं, और रामचन्द्रजी की सुन्दर कीर्ति का गान करते हैं।

दो॰ मज्जहिं सज्जन बृन्द बहु पावन सरजू नीर।
जपहिं राम धरि ध्यान उर सुन्दर स्याम सरीर ॥३४॥

सज्जनों के बहुत से समूह रामनवमी के दिन सरयू के पवित्र जल में स्नान करते हैं और सुन्दर श्यामशरीर रामचन्द्र जी का हृदय में ध्यान करके उनके नाम का जप करते हैं।

दरस परस मज्जन अरु पाना ❀ हरइ पाप कह बेद पुराना
नदी पुनीत अमित महिमा अति ❀ कहि न सकइ सारदा बिमल मति

वेद और पुराण कहते हैं कि सरयू का दर्शन, स्पर्श, स्नान और जल-पान पापों को हरता है। यह नदी बड़ी ही पवित्र है। इसकी महिमा अनन्त है, जिसे विमल बुद्धिवाली सरस्वती भी नहीं कह सकती।

राम धामदा पुरी सुहावनि ❀ लोक समस्त बिदित अति पावनि
चारि खानि जग जीव अपारा ❀ अवध तजे तनु नहिं संसारा

१. चैत्रमास। २. सुन्दर।

यह शोभायमान अयोध्यापुरी रामचन्द्रजी के धाम (बैकुण्ठ) की देने वाली, समस्त लोकों में प्रसिद्ध और अति पवित्र है। जगत् में अंडज, स्वेदज, उद्भिज और जरायुज चार खानि के जो अनन्त जीव हैं, उनमें से जो अयोध्या में शरीर-त्याग करते हैं वे फिर संसार में नहीं आते।

सब बिधि पुरी मनोहर जानी ❀ सकल सिद्धिप्रद मंगलखानी
बिमल कथा कर कीन्ह अरंभा ❀ सुनत नसाहिं काम मद दंभा

इस अयोध्यापुरी को सब भाँति से मनोहर, सब सिद्धियों की देने वाली और कल्याण की खान समझकर इस निर्मल कथा का मैंने आरम्भ किया है, जिसके सुनने से काम, मद और दम्भ दूर हो जाते हैं।

रामचरितमानस एहि नामा ❀ सुनत स्रवन पाइअ बिस्रामा
मन करि बिषय अनल बन जरई ❀ होइ सुखी जौं एहि सर परई

इसका नाम रामचरितमानस है, कानों से जिसके सुनने से शान्ति मिलती है। मनरूपी हाथी विषयरूपी दावानल में जल रहा है। यदि वह इस रामचरितमानसरूपी सरोवर में आ पड़े, तो सुखी हो जाय।

रामचरितमानस मुनि भावन ❀ बिरचेउ संभु सुहावन पावन
त्रिविध दोष दुख दारिद दावन[1] ❀ कुलि[2] कुचालि कलि कलुष नसावन

मुनियों को प्रिय, पवित्र और सुहावने इस रामचरितमानस को शिवजी ने रचा है। यह तीनों प्रकार के दोषों, दुःखों और दरिद्रता को तथा सब बुराइयों और कलियुग के पापों को नष्ट करने वाला है।

रचि महेस निज मानस राखा ❀ पाइ सुसमउ सिवा[3] सन भाखा
तातें रामचरितमानस बर ❀ धरेउ नाम हियँ हेरि हरषि हर
कहउँ कथा सोइ सुखद सुहाई ❀ सादर सुनहु सुजन मन लाई

इसको रचकर शिवजी ने अपने मन में रक्खा था और सुअवसर पाकर उन्होंने पार्वती से कहा। इसी से शिवजी ने खूब सोच-समझकर और प्रसन्न होकर इसका सुन्दर नाम "रामचरितमानस" रक्खा। उसी सुखदायक और सुन्दर राम-कथा को मैं कहता हूँ। हे सज्जनो ! आदरपूर्वक मन लगाकर इसे सुनिये।

१. नष्ट करने वाला। २. कुल, समस्त। ३. पार्वती।

दो०—जस मानस जेहि बिधि भयेउ जग प्रचार जेहि हेतु।
अब सोइ कहौं प्रसंग सब सुमिरि उमा बृषकेतु॥३५॥

यह रामचरितमानस जैसा है, जिस प्रकार बना है और जिस कारण से जगत् में इसका प्रचार हुआ, वही सब कथा मैं शिवजी और पार्वतीजी को स्मरण करके कहता हूँ।

संभु प्रसाद सुमति हिअँ हुलसी ❀ रामचरितमानस कवि तुलसी
करइ मनोहर मति अनुहारी ❀ सुजन सुचित सुनि लेहु सुधारी

शिवजी की कृपा से मेरे हृदय में सुन्दर बुद्धि का विकास हुआ जिससे यह तुलसीदास इस रामचरितमानस का कवि हुआ। अपनी बुद्धि के अनुसार तो वह इसे मनोहर ही बनाता है, पर फिर भी हे सज्जनो! उसे सावधानी से सुनकर सुधार लीजिये।

सुमति भूमि थल हृदय अगाधू ❀ बेद पुरान उदधि घन साधू
बरषहिं राम सुजस बर बारी ❀ मधुर मनोहर मंगलकारी

सुन्दर (सात्विकी) बुद्धि धरती है, हृदय उसमें गहरा स्थान है, वेद-पुराण समुद्र हैं और साधु-सन्त मेघ हैं। वे मेघ रामचन्द्रजी के सुयशरूपी सुन्दर, मधुर, मनोहर और कल्याणकारी जल की वर्षा करते हैं।

लीला सगुन जो कहहिं बखानी ❀ सोइ स्वच्छता करइ मल हानी
प्रेम भगति जो बरनि न जाई ❀ सोइ मधुरता सुसीतलताई

सगुण लीला का जो विस्तार से वर्णन करते हैं, वही जल की निर्मलता है, जो मल को नाश करने वाली है। और जिस प्रेमभक्ति का वर्णन नहीं किया जा सकता, वही जल की मिठास और सुन्दर शीतलता है।

सो जल सुकृत सालि हित होई ❀ राम भगत जन जीवन सोई
मेधा महिगत सो जल पावन ❀ सकिलि श्रवन मग चलेउ सुहावन
भरेउ सुमानस सुथल थिराना ❀ सुखद सीत रुचि चारु चिराना

वही जल सत्कर्मरूपी धान के लिये हितकारी है और रामचन्द्रजी के भक्तों का तो जीवनाधार ही है। वह पवित्र जल बुद्धिरूपी पृथ्वी पर गिरा और

---

१. शिव।

सुन्दर कानरूपी मार्ग से चला और मानस (हृदय) रूपी श्रेष्ठ स्थान में भरकर थिराया। वही पुराना होकर सुन्दर, रुचि बढ़ाने वाला, शीतल और सुख देने वाला हुआ।

दो०— सुठि सुंदर संबाद बर बिरचे बुद्धि बिचारि।
तेइ एहि पावन सुभग सर घाट मनोहर चारि॥३६॥

इस कथा में बुद्धि से विचारकर जो चार अत्यन्त सुन्दर और उत्तम संवाद (अर्थात् शिव-पार्वती, कागभुशुण्ड और गरुड़, याज्ञवल्क्य-भरद्वाज, तुलसीदास और श्रोतागण) रचे गये हैं, वही इस सुन्दर और पवित्र सरोवर के चार मनोहर घाट हैं।

सप्त प्रबंध सुभग सोपाना[1] ❀ ग्यान नयन निरखत मन माना
रघुपति महिमा अगुन अबाधा ❀ बरनब सोइ बर बारि अगाधा

सातों प्रबन्ध (काण्ड) ही सात सीढ़ियाँ हैं, जिनको ज्ञानरूपी नेत्रों से देखते ही मन प्रसन्न हो जाता है। रामचन्द्रजी की निर्गुण और एकरस महिमा, जिसका वर्णन किया जायगा, वही इस सुन्दर जल की अथाह गहराई है।

राम सीअ जस सलिल सुधा सम ❀ उपमा बीचि[2] बिलास मनोरम
पुरइनि[3] सघन चारु चौपाई ❀ जुगुति मंजु मनि सीप सुहाई

रामचन्द्रजी और सीताजी का यश ही अमृत के समान जल है। इसमें जो उपमा दी गई है, वही तरंगों का मनोहर विलास है। सुन्दर चौपाइयाँ ही इसमें घनी फैली हुई पुरइन (कमलपत्र) हैं और कविता की युक्तियाँ सुन्दर मणि (मोती) उत्पन्न करने वाली सुहावनी सीपियाँ हैं।

छंद सोरठा सुन्दर दोहा ❀ सोइ बहुरंग कमल कुल सोहा
अरथ अनूप सुभाव सुभासा ❀ सोइ पराग मकरंद सुबासा

छन्द, सोरठा और सुन्दर दोहे ही रंग-बिरंगे कमलों के समूह शोभित हैं। अनुपम अर्थ, सुन्दर भाव और अच्छी भाषा ही (क्रमशः) फूलों की धूलि, पुष्प-रस और सुगन्ध है।

सुकृत पुंज मंजुल अलि माला ❀ ग्यान बिराग बिचार मराला
धुनि अवरेब कबित गुन जाती ❀ मीन मनोहर ते बहु भाँती

---

१. सीढ़ी। २. लहर। ३. कमल के पत्ते।

सत्कर्मों (पुण्यों) के समूह ही सुन्दर भौरों के झुण्ड हैं। ज्ञान, वैराग्य और विचार हंस हैं। कविता की ध्वनि, वक्रोक्ति, गुण और जाति ही अनेकों प्रकार की मनोहर मछलियाँ हैं।

अरथ धरम कामादिक चारी ❀ कहव ग्यान बिग्यान विचारी
नव रस जप तप जोग बिरागा ❀ ते सब जलचर चारु तड़ागा[1]

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ये चारों और ज्ञान, विज्ञान का विचार-पूर्वक कहना काव्य के नवरस; जप, तप, योग और वैराग्य के प्रसंग ये सब इस सुन्दर सरोवर के जलचर जीव हैं।

सुकृति साधु नाम गुन गाना ❀ ते विचित्र जल-विहँग समाना
संत सभा चहुँ दिसि अँबराई ❀ श्रद्धा रितु वसंत सम गाई

पुण्यात्मा और साधुजनों और राम-नाम के गुणों का गान ही जल में विहार करने वाले विचित्र पक्षी हैं। सन्तों की सभा ही सरोवर के चारों ओर लगी हुई अमराई (आम की वाटिकायें) हैं और श्रद्धा वसन्त-ऋतु के समान कही गई है।

भगति निरूपन विविध विधाना ❀ छमा दया दम लता विताना
सम जम नियम फूल फल ग्याना ❀ हरि पद रति रस वेद बखाना
औरउ कथा अनेक प्रसंगा ❀ तेइ सुक पिक बहु वरन विहंगा

अनेक प्रकार से भक्ति का निरूपण, क्षमा, दया और इन्द्रिय-निग्रह ये लता-मंडप हैं। समदर्शिता यम (अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह) और नियम (शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर-प्रणिधान) ही उनके फूल हैं, ज्ञान फल है। और भगवान के चरणों में प्रेम ही रस है, ऐसा वेद कहते हैं। इस (रामचरितमानस) में और भी जो अन्य कथायें और प्रसंग हैं, वे ही इसमें तोते और कोकिल आदि रंग-बिरंग के पक्षी हैं।

दो० पुलक बाटिका बाग बन सुख सुबिहंग बिहारु।
माली सुमन सनेह जल सींचत लोचन चारु ॥३७॥

कथा के सुनने से जो रोमाञ्च हो आता है, वही बाटिका, बाग और वन

---

१. तालाब।



है और जो सुख होता है, वही सुन्दर पक्षियों का विहार है। सुन्दर मन माली है, वह स्नेहरूपी जल से सुन्दर नेत्रों द्वारा उन्हें सींचता है। [द्वितीय उल्लेख अलंकार]

जे गावहिं यह चरित सँभारे ❀ तेइ एहि ताल चतुर रखवारे
सदा सुनहिं सादर नर नारी ❀ तेइ सुर बर मानस अधिकारी

जो लोग इस चरित को सावधानी से गाते हैं, वे ही इस तालाब के चतुर रखवाले हैं। जो स्त्री-पुरुष इसको आदर-पूर्वक सदा सुनते हैं वे ही इस सुन्दर मानसरोवर के अधिकारी श्रेष्ठ देवता हैं।

अति खल जे बिषई बक कागा ❀ एहि सर निकट न जाहिं अभागा
संबुक भेक सेवार समाना ❀ इहाँ न बिषय कथा रस नाना

जो अत्यन्त दुष्ट और लम्पट हैं, वेही बगुले और कौवे हैं। वे अभागे इस (रामचरितमानस) सरोवर के पास नहीं जाते। क्योंकि यहाँ घोंघे, मेंढक और सेवार के समान विषय-रस की नाना कथायें नहीं हैं।

तेहि कारन आवत हियँ हारे ❀ कामी काक बलाक बिचारे
आवत एहि सर अति कठिनाई ❀ राम कृपा बिनु आइ न जाई

इसलिये बेचारे कौवे और बगुले-रूपी विषयी लम्पट लोग यहाँ आते हुये हृदय में हार मान जाते हैं। इस सरोवर तक आने में बड़ी कठिनाइयाँ हैं। रामचन्द्रजी की कृपा के बिना यहाँ आया नहीं जाता।

कठिन कुसंग कुपंथ कराला ❀ तिन्हके बचन बाघ हरि ब्याला[1]
गृह कारज नाना जंजाला ❀ तेइ अति दुर्गम सैल बिसाला
बन बहु बिषम मोह मद माना ❀ नदीं कुतर्क भयंकर नाना

कठिन कुसंग ही भयानक बुरा रास्ता है और उन (कुसंगियों) के वचन ही बाघ, सिंह और साँप हैं। घर के काम-काज और गृहस्थी की भाँति-भाँति की उलझनें ही बड़े-बड़े अगम पर्वत हैं। मोह, मद और मान ही बहुत-से गहन वन हैं और तरह-तरह के कुतर्क ही भयंकर नदियाँ हैं।

दो०— जे श्रद्धा संबल[2] रहित नहिं संतन्ह कर साथ।
तिन्ह कहँ मानस अगम अति जिनहिं न प्रिय रघुनाथ॥

---

१. साँप। २. राह-खर्च।

जिनके पास श्रद्धारूपी पाथेय (राह-खर्च) नहीं है और न सन्तों का साथ है, और जिनको रघुनाथजी प्रिय नहीं हैं, उनके लिये यह "मानस" अत्यंत ही अगम्य है।

जौं करि कष्ट जाइ पुनि कोई ❀ जातहि नींद जुड़ाई होई
जड़ता जाड़ बिषम उर लागा ❀ गयहुँ न मज्जन पाव अभागा

यदि कोई मनुष्य कष्ट उठाकर वहाँ तक पहुँच भी जाय, तो वहाँ जाते ही उसे नींदरूपी जूड़ी घेर लेती है। उसके हृदय में मूर्खतारूपी कड़ा जाड़ा ऐसा लगता है कि वहाँ पहुँचने पर भी वह अभागा स्नान नहीं कर पाता।

करि न जाइ सर मज्जन पाना ❀ फिरि आवइ समेत अभिमाना
जौं बहोरि कोउ पूछन आवा ❀ सर निंदा करि ताहि बुझावा

उससे उस सरोवर में न तो स्नान ही किया जाता है और न उसका जल ही पिया जाता है। वह अभिमान-सहित लौट आता है। फिर यदि कोई उससे वहाँ का कुछ हाल पूछने आता है, तो वह सरोवर की निन्दा करके उसे समझाता है।

सकल बिघ्न ब्यापहिं नहिं तेही ❀ राम सुकृपा बिलोकहिं जेही
सोइ सादर सर मज्जनु करई ❀ महा घोर त्रय ताप न जरई

ये सारे विघ्न उसे नहीं व्यापते, जिसे रामचन्द्रजी सुन्दर कृपा की दृष्टि से देखते हैं। वही आदरपूर्वक इस सरोवर में स्नान करता है और महा भयंकर तीनों प्रकार के (दैहिक, दैविक और भौतिक) तापों से नहीं जलता।

ते नर यह सर तजहिं न काऊ ❀ जिन्हके राम चरन भल भाऊ
जो नहाइ चह एहि सर भाई ❀ सो सतसंग करौ मन लाई

वे मनुष्य इस सरोवर को कभी नहीं छोड़ते, जिनके हृदय में रामचन्द्रजी के चरणों में सुन्दर प्रेम है। हे भाई ! जो कोई इस सरोवर में स्नान करना चाहे, वह मन लगाकर सत्संग करे।

अस मानस मानस चष[1] चाही ❀ भइ कबि बुद्धि बिमल अवगाही
भयेउ हृदयँ आनंद उछाहू ❀ उमगेउ प्रेम प्रमोद प्रवाहू

ऐसे मानसरोवर को हृदय के नेत्रों से देखकर और उसमें स्नान करके कवि

१. आँख।

की बुद्धि निर्मल हो गई। उसके हृदय में आनन्द और उत्साह भर गया और प्रेम और आनन्द का प्रवाह उमड़ आया।

चली सुभग कबिता सरिता सो ❀ राम बिमल जस जल भरिता सो
सरजू नाम सुमंगल मूला ❀ लोक बेद मत मंजुल कूला[1]
नदी पुनीत सुमानस नंदिनि ❀ कलि मल त्रिन तरु मूल निकंदिनि

उससे सुन्दर कवितारूपी नदी बह निकली, जिसमें रामचन्द्रजी का विमल यशरूपी जल भरा हुआ है। उस (कवितारूपी नदी) का नाम सरयू है, जो सारे सुन्दर मंगलों की जड़ है। लोकमत और वेदमत ही उसके दो सुन्दर किनारे हैं। यह मानसरोवर की कन्या सरयू नदी बड़ी ही पवित्र और कलि के पापरूपी तृणों और वृक्षों को निर्मूल करने वाली है।

दो० श्रोता त्रिबिध समाज पुर ग्राम नगर दुहुँ कूल।
संत सभा अनुपम अवध सकल सुमंगल मूल।३९॥

तीनों प्रकार के श्रोताओं का समाज ही सरयू नदी के दोनों किनारों पर बसे हुए पुर, गाँव और नगर हैं। सब मंगलों की जड़ संतों की सभा ही अनुपम अयोध्या है।

रामभगति सुरसरितहि जाई ❀ मिली सुकीरति सरजु सुहाई
सानुज राम समर जसु पावन ❀ मिलेउ महानदु सोन सुहावन

सुन्दर कीर्तिरूपी सुहावनी सरयू राम-भक्तिरूपी गंगा में जा मिली है। छोटे भाई लक्ष्मण-सहित श्रीरामजी के पवित्र युद्ध का यशरूपी महानद सोन उसमें आ मिला है।

जुग बिच भगति देवधुनि[2] धारा ❀ सोहति सहित सुबिरति बिचारा
त्रिविध ताप त्रासक तिमुहानी ❀ राम सरूप सिंधु समुहानी

दोनों के बीच में भक्तिरूपी गङ्गा की धारा ज्ञान और वैराग्य सहित सुहावनी लगती है। इस प्रकार तीनों तापों को भयभीत करने वाली तीन मुंह वाली नदी रामस्वरूप सागर से मिलने के लिये जा रही है।

मानस मूल मिली सुरसरिही ❀ सुनत सुजन मन पावन करिही
बिच बिच कथा बिचित्र बिभागा ❀ जनु सरि तीर तीर बनु बागा

१. तट। २. गंगाजी।

यह सरयू नदी, जिसका मूल मानस अर्थात् रामचरित है (राम-भक्ति-रूपी) गङ्गाजी में जा मिली। सुनने वाले सज्जनों के मन को यह (कथा) पवित्र कर देती है। बीच-बीच में जो भिन्न-भिन्न प्रकार की अद्भुत कथायें हैं, वे ही मानों नदी-किनारे के बन और बाग हैं।

उमा महेस बिबाह बराती ❀ ते जलचर अगनित बहु भाँती
रघुबर जनम अनंद बधाई ❀ भँवर तरंग मनोहरताई

शिव-पार्वती के विवाह के बराती इस नदी में भाँति-भाँति के असंख्य जलचर जीव हैं। रामचन्द्रजी के जन्म की आनन्द बधाई ही इस नदी के भँवर और लहरों की मनोहरता है।

दो०—बालचरित चहुँ बंधु के बनज[1] बिपुल बहुरंग।
नृप रानी परिजन सुकृत मधुकर बारि बिहंग॥४०॥

चारों भाइयों के जो बाल-चरित हैं, वे ही इसमें रंग-बिरंग के बहुत-से कमल हैं। राजा दशरथ, उनकी रानियों और अन्यान्य कुटुम्बी लोगों के सत्कर्म ही भ्रमर और जल-पक्षी हैं।

सीय स्वयंबर कथा सुहाई ❀ सरित सुहावनि सो छबि छाई
नदी नाव पटु प्रस्न अनेका ❀ केवट कुसल उतर[2] सबिबेका

इसमें सीताजी के स्वयंवर की जो सुन्दर कथा है, वही इस सुहावनी नदी में शोभा छा रही है। अनेक प्रकार के विवेकपूर्ण प्रश्न ही इस नदी की नावें हैं और उनके विवेकमय उत्तर ही उन (नावों) के चतुर केवट हैं।

सुनि अनुकथन परसपर होई ❀ पथिक समाज सोह सरि सोई
घोर धार भृगुनाथ रिसानी ❀ घाट सुबद्ध राम बर बानी

इस कथा को सुनकर पीछे जो आपस में चर्चा होती हैं, वही मानो इस नदी के किनारे चलने वाले यात्रियों का समूह सोहता है। परशुरामजी का क्रोध इस नदी की भयानक धारा है और रामचन्द्रजी के श्रेष्ठ वचन ही सुन्दर बँधे हुए (पक्के) घाट हैं।

सानुज[3] राम बिबाह उछाहू ❀ सो सुभ उमंग सुखद सब काहू
कहत सुनत हरषहिं पुलकाहीं ❀ ते सुकृती मन मुदित नहाहीं

---

१. कमल। २. उत्तर, जवाब। ३. छोटे भाई सहित।

भाइयों-सहित रामचन्द्रजी के विवाह का उत्साह ही इस (कथा-नदी) की कल्याण-कारिणी बाढ़ है, जो सबको सुख देने वाली है। इसके कहने-सुनने में जो लोग पुलकायमान और आनन्दित होते हैं, वे ही पुण्यात्मा पुरुष प्रसन्न मन से स्नान करते हैं।

रामतिलक हित मंगल साजा ❁ परब जोग जनु जुरे समाजा
काई कुमति केकई केरी ❁ परी जासु फल बिपति घनेरी

रामचन्द्रजी के राज-तिलक के लिये जो मंगल-साज सजाया गया, वही इस नदी पर पर्व के दिन यात्रियों की भीड़-भाड़ है। कैकेयी की कुबुद्धि ही इस नदी में काई है, जिसके फल से घोर विपत्ति आ पड़ी।

दो॰ समन अमित उतपात सब भरत चरित जप जाग।
कलिअघ खल अवगुन कथन ते जल मल बक काग।

अनगिनत उत्पातों को शान्त करने के लिये भरत का चरित्र नदी-तट पर किया जाने वाला जप-यज्ञ है, कलियुग के पापों और दुष्टों के दोषों के जो वर्णन हैं, वे ही इस नदी के जल के कीचड़, बगुले और कौए हैं।

कीरति सरित छहूँ रितु रूरी[1] ❁ समय सुहावनि पावनि भूरी[2]
हिम हिमसैलसुता सिव ब्याहू ❁ सिसिर सुखद प्रभु जनम उछाहू

यह कीर्ति-रूपिणी नदी छहों ऋतुओं में सुन्दर और सभी समयों पर परम सुहावनी और अत्यन्त पवित्र है। इसमें शिव-पार्वतीजी का विवाह हेमंत-ऋतु है और रामचन्द्रजी का जन्मोत्सव सुख देने वाला शिशिर-ऋतु है।

बरनब राम बिबाह समाजू ❁ सो मुद मंगलमय रितुराजू
ग्रीषम दुसह राम बन गवनू ❁ पंथ कथा खर[3] आतप पवनू

इसमें रामचन्द्रजी के विवाह-समाज का वर्णन आनन्द-मंगलमय ऋतुराज बसन्त है। रामचन्द्रजी का बन-गमन ही असह्य ग्रीष्म-ऋतु है और मार्ग की कथा ही कड़ी धूप और लू है।

बरषा घोर निसाचर रारी[4] ❁ सुरकुल सालि सुमंगलकारी
राम राज सुख बिनय बड़ाई ❁ बिसद सुखद सोइ सरद सोहाई

राक्षसों के साथ घोर युद्ध ही वर्षा-ऋतु है, जो देवताओं के कुलरूपी धान

१. सुन्दर। २. बहुत। ३. कड़ी। ४. युद्ध।

के लिये सुन्दर कल्याण करने वाली है। रामचन्द्रजी के राज्य में जो सुख, सुनीति और प्रशंसा है वही सुख देने वाली निर्मल शरद-ऋतु है।

सती सिरोमनि सिय गुन गाथा ❀ सोइ गुन अमल अनूपम पाथा
भरत सुभाउ सुसीतलताई ❀ सदा एक रस बरनि न जाई

सती-शिरोमणि सीताजी के गुणों की जो कथा है, वही इसके जल का निर्मल और अनुपम गुण है। भरतजी का स्वभाव इस नदी की सुन्दर शीतलता है, जो सदा एक-सी रहती है और जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता।

दो॰ अवलोकनि[1] बोलनि मिलनि प्रीति परसपर हास।
भायप भलि चहुँ बंधु की जल माधुरी सुबास ॥४२॥

चारों ओर भाइयों का परस्पर देखना, बोलना, मिलना, परस्पर स्नेह करना, हँसना और सुन्दर भाईपन इस जल की मिठास और सुगन्ध है।

आरति बिनय दीनता मोरी ❀ लघुता ललित सुबारि न खोरी
अदभुत सलिल सुनत गुनकारी ❀ आस पिआस मनोमल हारी

मेरी आर्ति, विनती और दीनता ही इस सुन्दर स्वच्छ जल का हलकापन है; पर अच्छे जल का हल्का होना कोई दोष नहीं है। यह जल बड़ा ही अनोखा है कि सुनते ही गुण करता है और आशारूपी प्यास और मन के मैल को दूर कर देता है।

राम सुप्रेमहि पोपत पानी ❀ हरत सकल कलि कलुप गलानी
भव श्रम सोषक तोषक तोषा ❀ समन दुरित दुख दारिद दोषा

यह जल रामचन्द्रजी के सुन्दर प्रेम को पुष्ट करता है और कलियुग के सब पापों को और उनसे उत्पन्न ग्लानि को हर लेता है। यह जल संसार की थकावट को सोख लेता है, सन्तोष को भी संतुष्ट करता है और पाप, दुःख दरिद्रता और दोषों को नष्ट करता है।

काम कोह मद मोह नसावन ❀ बिमल बिबेक बिराग बढ़ावन
सादर मज्जन पान किए तें ❀ मिटहिं पाप परिताप हिए तें

यह जल काम, क्रोध, मद और मोह को नष्ट करने वाला और निर्मल,

१. देखना।

ज्ञान और वैराग्य का बढ़ाने वाला है। इसमें आदर-सहित स्नान करने और इसे पीने से हृदय के सारे पाप और दुःख मिट जाते हैं।

जिन्ह एहिं बारि न मानस धोए ❀ ते कायर कलिकाल बिगोए[1]
त्रिषित निरखि रबिकर भव बारी ❀ फिरिहहिं मृग जिमि जीव दुखारी

जिन्होंने इस जल से अपना हृदय नहीं धोया, वे कायर कलिकाल द्वारा ठगे गये या बिगाड़े गये। जैसे प्यासा हिरन सूर्य की किरणों के पड़ने से रेत पर जल का भ्रम (मरीचिका) देखकर दौड़ता है, वैसे ही वे कलियुग से ठगे हुए मनुष्य भी (संसारी विषयों के पीछे भटक कर) दुःखी होंगे।

दो०— **मति अनुहारि सुबारि गुन गन गनि मन अन्हवाइ।**
सुमिरि भवानी संकरहि कह कबि कथा सुहाइ ॥४३॥(१)

अपनी बुद्धि के अनुसार सुन्दर जल के गुणों को गिनाकर इस सुन्दर जल में अपने मन को स्नान कराकर और पार्वती-महादेवजी को स्मरण करके कवि (तुलसीदास) सुन्दर कथा कहता है।

अब रघुपति पद पंकरुह[2] हिअ धरि पाइ प्रसाद।
कहौं जुगल मुनिवर्य कर मिलन सुभग संबाद ॥४३॥(२)

मैं अब रामचन्द्रजी के चरण-कमलों को हृदय में धारण कर और उनका प्रसाद पाकर दोनों मुनिवरों के मिलने का सुन्दर संवाद वर्णन करता हूँ।

भरद्वाज मुनि बसहिं प्रयागा ❀ तिन्हहिं राम पद अति अनुरागा
तापस सम दम दया निधाना ❀ परमारथ पथ परम सुजाना

भरद्वाज मुनि प्रयाग में बसते हैं। रामचन्द्रजी के चरणों में उनका बहुत ही प्रेम है। वे तपस्वी, शान्त, जितेन्द्रिय, दया के निधान और परमार्थ के मार्ग में बड़े ही चतुर हैं।

माघ मकरगत रबि जब होई ❀ तीरथपतिहि आव सब कोई
देव दनुज किन्नर नर स्रेनी ❀ सादर मज्जहिं सकल त्रिबेनी

माघ के महीने में जब सूर्य मकर-राशि में आते हैं, तब सब कोई तीर्थराज (प्रयाग) में आते हैं। देव, दैत्य, किन्नर और मनुष्यों के झुण्ड सभी आदर पूर्वक त्रिवेणी में स्नान करते हैं।

१. बिगाड़ दिया, ठगे गये। २. कमल।

पूजहिं माधव पद जलजाता[1] ❀ परसि अखयवटु हरषहिं गाता
भरद्वाज आश्रम अति पावन ❀ परम रम्य मुनिवर मन भावन

वेणी-माधवजी के चरण-कमलों की पूजा करते हैं और अक्षयवट को छूकर उनके शरीर पुलकित होते हैं। भरद्वाज मुनि का आश्रम बहुत ही पवित्र परम रमणीय और श्रेष्ठ मुनियों के मन को भाने वाला है।

तहाँ होइ मुनि रिषय समाजा ❀ जाहिं जे मज्जन तीरथराजा
मज्जहिं प्रात समेत उछाहा ❀ कहहिं परसपर हरि गुन गाहा

प्रयाग में जो स्नान करने जाते हैं, भरद्वाजजी के आश्रम में उन ऋषि-मुनियों का जमाव होता है। प्रातःकाल सब उत्साह-सहित स्नान करते हैं और फिर आपस में भगवान् के गुणों की कथायें कहते हैं।

दो॰ ब्रह्म निरूपन धर्म बिधि बरनहिं तत्त्व बिभाग।
कहहिं भगति भगवंत कै संजुत ग्यान बिराग ।४४।

ब्रह्म का विचार, धर्म का विधान और तत्वों के विभाग का वर्णन करते और ज्ञान और वैराग्य से संयुक्त भगवद्-भक्ति की चर्चा करते हैं।

एहि प्रकार भरि माघ नहाहीं ❀ पुनि सब निज निज आस्रम जाहीं
प्रति संबत अति होइ अनंदा ❀ मकर मज्जि[2] गवनहिं मुनिबृन्दा

इस प्रकार वे माघ के महीने भर स्नान करते हैं और फिर अपने-अपने आश्रमों को चले जाते हैं। इसी तरह वहाँ हर साल बहुत ही आनन्द होता है। मकरभर स्नान करके मुनि-गण चले जाते हैं।

एक बार भरि मकर नहाए ❀ सब मुनीस आस्रमन्ह सिधाए
जागबलिक मुनि परम बिबेकी ❀ भरद्वाज राखे पद टेकी

एक बार माघभर स्नान करके सब मुनीश्वर अपने-अपने आश्रमों को लौट गये; परन्तु परम ज्ञानी याज्ञवल्क्य मुनि के चरण पकड़कर भरद्वाजजी ने उन्हें रोक लिया।

सादर चरन सरोज[3] पखारे ❀ अति पुनीत आसन बैठारे
करि पूजा मुनि सुजसु बखानी ❀ बोले अति पुनीत मृदु बानी

१. कमल। २. नहाकर। ३. कमल।

भरद्वाजजी ने आदर-सहित उनके चरण-कमल धोये और बहुत पवित्र आसन पर उन्हें बैठाया। पूजा करके मुनि के यश का वर्णन किया और फिर अत्यंत पवित्र और कोमल वाणी से बोले—

नाथ एक संसउ बड़ मोरें ❀ करगत बेदतत्त्व सबु तोरें
कहत सो मोहिं लागत भय लाजा ❀ जौं न कहौं बड़ होइ अकाजा

हे नाथ! मेरे हृदय में एक बड़ा सन्देह है, वेदों का सब तत्व आपके हाथों में है। उस सन्देह को कहते हुये मुझे भय और लज्जा मालूम होती है। पर न कहूँ तो भी बड़ी हानि होगी।

दो०—**संत कहहिं अस नीति प्रभु श्रुति पुरान मुनि गाव।**
होइ न बिमल बिबेक उर गुर सन किएँ दुराव[1]॥४५॥

हे प्रभो! सन्तजन ऐसी नीति कहते हैं और वेद-पुराण तथा मुनि भी यही बतलाते हैं कि गुरु के साथ छिपाव रखने से हृदय में निर्मल ज्ञान नहीं होता।

अस बिचारि प्रगटउँ निज मोहू ❀ हरहु नाथ करि जन पर छोहू
राम नाम कर अमित प्रभावा ❀ संत पुरान उपनिषद गावा

यही सोचकर मैं अपना अज्ञान प्रकट करता हूँ। हे नाथ! आप इस दास पर कृपा करके इस सन्देह को दूर कीजिये। संत, पुराण और उपनिषद् ने राम-नाम के असीम प्रभाव का गान किया है।

संतत[2] जपत संभु अबिनासी ❀ सिव भगवान ग्यान गुन रासी
आकर चारि जीव जग अहहीं ❀ कासी मरत परम पद लहहीं

जिसको नित्य कल्याण-स्वरूप, अविनाशी और ज्ञान और गुणों की राशि भगवान् शंकर जपते हैं। संसार में जीवों की चार जातियाँ हैं। काशी में मर कर सब परम पद को प्राप्त करते हैं।

सोपि राम महिमा मुनिराया ❀ सिव उपदेसु करत करि दाया
रामु कवन प्रभु पूछउँ तोहीं ❀ कहिअ बुझाइ कृपानिधि मोहीं

हे मुनिराज! सो यह भी राम (नाम) ही की महिमा है; शिवजी दया करके जिसका उपदेश करते हैं। हे प्रभो! मैं आपसे पूछता हूँ कि वे राम कौन हैं? हे कृपासागर! मुझे समझा कर कहिये।

---

१. छिपाव। २. सदा, नित्य।

एक राम अवधेस कुमारा ❀ तिन्ह कर चरित विदित संसारा
नारि बिरह दुखु लहेउ अपारा ❀ भयउ रोषु रन रावनु मारा

एक राम तो अवध के राजा दशरथजी के पुत्र हैं। उनका चरित सारे जगत् में विख्यात है। उन्होंने स्त्री के वियोग में अपार दुःख पाया था और क्रोध आने पर युद्ध में रावण को मार डाला था।

दो०— प्रभु सोइ राम कि अपर कोउ जाहि जपत त्रिपुरारि[1]।
सत्यधाम सर्बग्य तुम्ह कहहु बिबेकु बिचारि ॥४६॥

हे प्रभो! वही राम हैं या और कोई दूसरे हैं, जिनको शिवजी जपते हैं? आप सत्य के धाम और सब जानने वाले हैं, अपने ज्ञान से विचार कर कहिये।

जैसे मिटइ मोर भ्रम भारी ❀ कहहु सो कथा नाथ बिस्तारी
जागबलिक बोले मुसुकाई ❀ तुम्हहिं विदित रघुपति प्रभुताई

हे नाथ! जिस तरह मेरा भारी भ्रम मिट जाय, आप वही कथा विस्तार से कहिये। इस पर याज्ञवल्क्यजी मुस्कुराकर बोले—तुम रामचन्द्रजी की प्रभुता को जानते हो।

राम भगत तुम्ह मन क्रम बानी ❀ चतुराई तुम्हारि मैं जानी
चाहहु सुनइ रामगुन गूढ़ा ❀ कीन्हिहु प्रस्न मनहुँ अति मूढ़ा

तुम मन, कर्म और वाणी से राम के भक्त हो। मैं तुम्हारी चतुराई जानता हूँ। तुम राम के रहस्यमय गुणों को सुनना चाहते हो। इसी से तुमने इस तरह से पूछा है, मानो बड़े अनजान हो।

तात सुनहु सादर मन लाई ❀ कहउँ राम कै कथा सुहाई
महा मोह महिषेसु बिसाला ❀ राम कथा कालिका कराला

हे तात! तुम आदरपूर्वक मन लगाकर सुनो। मैं राम की सुहावनी कथा कहता हूँ। बड़ा भारी अज्ञान विशाल महिषासुर है, राम की कथा भयंकर काली जी हैं।

रामकथा ससि किरन समाना ❀ सन्त चकोर करहिं जेहि पाना
ऐसेइ संसय कीन्ह भवानी ❀ महादेव तब कहा बखानी

---

१. शिव।

राम की कथा चन्द्रमा की किरणों के समान है, जिसे सन्तरूपी चकोर पान करते हैं। ऐसा ही सन्देह पार्वती जी ने भी किया था। तब महादेवजी ने उनसे विस्तारपूर्वक कहा था।

दो०— कहउँ सो मति अनुहारि अब उमा सम्भु सम्वाद।
भयेउ समय जेहि हेतु जेहि सुनु मुनि मिटिहि बिषाद।

मैं अब अपनी बुद्धि के अनुसार उमा और शिवजी का संवाद कहता हूँ। वह जिस समय और जिस हेतु से हुआ, हे मुनि! उसे सुनो, तुम्हारा विषाद नष्ट हो जायगा।

एक बार त्रेता जुग माहीं ❁ संभु गए कुंभज ऋषि पाहीं
संग सती जगजननि भवानी ❁ पूजे रिषि अखिलेस्वर जानी

एक बार त्रेता युग में शिवजी अगस्त्य ऋषि के पास गये थे। उनके साथ जगत्-जननी सतीजी भी थीं। ऋषि ने उनको सारे जगत् का ईश्वर जानकर उन का पूजन किया।

रामकथा मुनिबर्ज बखानी ❁ सुनी महेस परम सुखु मानी
रिषि पूछी हरिभगति सुहाई ❁ कही संभु अधिकारी पाई

मुनिवर अगस्त्य ने राम-कथा विस्तार से कही, जिसे शिवजी ने बहुत सुख मानकर सुना। फिर ऋषिजी ने शिवजी से सुन्दर हरि-भक्ति पूछी और शिवजी ने उनको अधिकारी पाकर (भक्ति की सब बातें) कहीं।

कहत सुनत रघुपति गुन गाथा ❁ कछु दिन तहाँ रहे गिरिनाथा[1]
मुनि सन बिदा माँगि त्रिपुरारी ❁ चले भवन संग दच्छकुमारी

रामचन्द्रजी के गुणों की कथा कहते-सुनते शिवजी कुछ दिनों तक वहाँ रहे। फिर मुनि से विदा माँगकर शिवजी दक्ष की कन्या भवानी के साथ घर (कैलाश) को चले।

तेहि अवसर भंजन महिभारा ❁ हरि रघुबंस लीन्ह अवतारा
पिता बचन तजि राजु उदासी ❁ दंडक बन बिचरत अबिनासी

उन्हीं दिनों पृथ्वी का भार उतारने के लिये विष्णु भगवान् ने रघुकुल में

१. शिव।

अवतार लिया था। वे अविनाशी भगवान पिता के वचन से राजपाट छोड़कर, तपस्वी वेश में दण्डक-वन में विचर रहे थे।

दो० हृदयँ बिचारत जात हर केहि बिधि दरसनु होइ।
गुप्त रूप अवतरेउ प्रभु गयें[1] जान सब कोइ ।४८। (१)

शिवजी अपने मन में विचारते जाते थे कि रामचन्द्रजी के दर्शन मुझे किस प्रकार हों। प्रभु ने गुप्त रूप से अवतार लिया है, मेरे जाने से सब कोई उन्हें जान जायँगे।

सो० संकर उर अति छोभु सती न जानइ मरमु सोइ।
तुलसी दरसन लोभु मन डरु लोचन लालची ॥४८॥ (२)

महादेवजी के मन में बड़ी खलबली मच गई थी, परन्तु सतीजी इस भेद को न जानती थीं। तुलसीदास कहते हैं कि शङ्करजी राम के समीप जाने से मन में डरते थे; पर दर्शन के लोभ से उनके नेत्र ललचा रहे थे।

रावन मरन मनुज कर जाँचा ❀ प्रभु बिधि बचन कीन्ह चह साँचा
जौं नहिं जाउँ रहइ पछतावा ❀ करत विचारु न बनत बनावा

रावण ने (ब्रह्मा से) अपनी मृत्यु मनुष्य के हाथ से माँगी थी। ब्रह्मा की बात को प्रभु सत्य किया चाहते हैं। जो नहीं जाता हूँ, तो जी में पछतावा बना रहेगा। इस तरह शिवजी विचार करते थे, पर कोई बात उनके मन में ठीक बैठती न थी।

एहि बिधि भये सोच बस ईसा[2] ❀ तेही समय जाइ दससीसा
लीन्ह नीच मारीचहिं संगा ❀ भयउ तुरत सोइ कपट कुरंगा

इस प्रकार महादेवजी चिन्ता के वश में हुए। उसी समय रावण ने जाकर नीच मारीच को साथ लिया और वह तुरन्त कपट-मृग बन गया।

करि छल मूढ़ हरी बैदेही ❀ प्रभु प्रभाउ तस बिदित न तेही
मृग बधि बंधु सहित हरि आये ❀ आश्रमु देखि नयन जल छाये

उस मूर्ख ने छल करके सीताजी को हर लिया। वह रामचन्द्रजी की वास्तविक महिमा को नहीं जानता था। मृग को मारकर रामचन्द्रजी भाई-सहित आश्रम में आये। वहाँ सीताजी को न देखकर उनकी आँखों में आँसू भर आये।

---

१. जाने से। २. शिवजी।

विरह विकल नर इव[1] रघुराई ❀ खोजत बिपिन फिरत दोउ भाई
कबहूँ जोग बियोग न जाकें ❀ देखा प्रगट बिरह दुखु ताकें

रामचन्द्रजी मनुष्यों की भाँति विरह से व्याकुल हैं। दोनों भाई वन में सीता को ढूँढ़ते फिरने लगे। जिनको कभी संयोग-वियोग नहीं होता, उनमें विरह का दुख प्रत्यक्ष देखा गया।

दो॰ अति बिचित्र रघुपति चरित जानहिं परम सुजान।
जे मतिमंद बिमोह बस हृदयँ धरहिं कछु आन[2] ॥४६॥

रामचन्द्रजी का चरित बड़ा ही विलक्षण है। इसे बड़े ज्ञानी ही जानते हैं। जो मन्दबुद्धि हैं, वे अज्ञान के वश में मन में कुछ और ही समझ बैठते हैं।

संभु समय तेहि रामहिं देखा ❀ उपजा हियँ अति हरषु बिसेखा
भरि लोचन छबिसिंधु निहारी ❀ कुसमय जानि न कीन्ह चिन्हारी[3]

शिवजी ने उस समय रामचन्द्रजी को देखा और उनके मन में बहुत बड़ा आनन्द उत्पन्न हुआ। उन शोभा के समुद्र (रामचन्द्रजी) को शिवजी ने नेत्र भरकर देखा। पर मौक़ा ठीक न समझकर उन्होंने उनसे परिचय नहीं किया।

जय सच्चिदानन्द जग पावन ❀ अस कहि चलेउ मनोज नसावन
चले जात सिव सती समेता ❀ पुनि पुनि पुलकत कृपानिकेता

"जगत् को पवित्र करने वाले सच्चिदानन्द की जय हो" ऐसा कहकर कामदेव का नाश करने वाले (शिवजी) चल पड़े। कृपा-निधान शिवजी बार-बार आनन्द से पुलकित होते हुए सतीजी के साथ चले जा रहे थे।

सती सो दसा संभु कै देखी ❀ उर उपजा संदेहु बिसेखी
सङ्कर जगतबंद्य जगदीसा ❀ सुर नर मुनि सब नावत सीसा

सतीजी ने महादेवजी की वह दशा देखी तो उनके मन में बड़ा सन्देह हुआ। (वे मन ही मन कहने लगीं) सारा जगत् तो शिवजी की वन्दना करता है, वे जगत् के ईश्वर हैं, उनको देवता, मनुष्य, मुनि सब सिर नवाते हैं।

तिन्ह नृपसुतहिं कीन्ह परनामा ❀ कहि सच्चिदानंद परधामा
भये मगन छबि तासु बिलोकी[4] ❀ अजहुँ प्रीति उर रहति न रोकी

---

१. समान। २. अन्य, दूसरा। ३. परिचय। ४. देखकर।

उन्होंने एक राजपुत्र को सच्चिदानन्द और परमधाम कहकर प्रणाम किया और उसकी छवि देखकर वे इतने मगन हुये कि अब तक उनके हृदय में प्रीति रोकने से भी नहीं रुकती।

दो०— ब्रह्म जो व्यापक बिरज[1] अज अकल अनीह अभेद।
सो कि देह धरि होइ नर जाहि न जानत बेद ॥५०॥

जो ब्रह्म सब में व्याप्त, माया-रहित, अजन्मा, अगोचर, इच्छा और भेद से रहित है और जिसे वेद भी नहीं जानते, वह क्या देह धारण करके मनुष्य हो सकता है?

बिष्नु जो सुर हित नरतनु धारी ❀ सोउ सर्बग्य जथा त्रिपुरारी
खोजइ सो कि अग्य इव नारी ❀ ग्यानधाम श्रीपति असुरारी

जो विष्णु भगवान् देवताओं के हित के लिये मनुष्य-शरीर धारण करते हैं, वे भी शिवजी के समान सर्वज्ञ हैं। वे ज्ञान के भण्डार, लक्ष्मीपति और असुरों के शत्रु विष्णु, अज्ञानी की तरह स्त्री को कैसे खोजेंगे?

संभु गिरा पुनि मृषा[2] न होई ❀ सिव सर्बग्य जान सब कोई
अस संसय मन भयउ अपारा ❀ होइ न हृदय प्रबोध प्रचारा

फिर शिवजी के वचन भी झूठे नहीं हो सकते। सब कोई जानते हैं कि शिवजी सर्वज्ञ हैं। ऐसी अपार शङ्का सती के हृदय में उठी। किसी तरह भी उनके हृदय में ज्ञान का प्रसार नहीं होता था।

जद्यपि प्रगट न कहेउ भवानी ❀ हर अंतरजामी सब जानी
सुनहु सती तव नारि सुभाऊ ❀ संसय अस न धरिय उर काऊ[3]

यद्यपि भवानी ने प्रकट नहीं कहा, पर अन्तर्यामी शिवजी सब जान गये। वे बोले—हे सती! सुनो, तुम्हारा स्वभाव स्त्री का है। ऐसा सन्देह मन में कभी न रखना चाहिये।

जासु कथा कुम्भज रिषि गाई ❀ भगति जासु मैं मुनिहिं सुनाई
सोइ मम इष्टदेव रघुबीरा ❀ सेवत जाहि सदा मुनि धीरा

जिनकी कथा का गान कुम्भज (अगस्त्य) ऋषि ने किया और जिनकी

१. माया-रहित। २. मिथ्या। ३. कभी।

भक्ति मैंने मुनि को सुनाई, ये वही मेरे इष्टदेव रामचन्द्रजी हैं, जिनकी सेवा ज्ञानी मुनि सदा किया करते हैं।

छंद—मुनि धीर जोगी सिद्ध संतत बिमल मन जेहि ध्यावहीं।
कहि नेति निगम[1] पुरान आगम[2] जासु कीरति गावहीं।
सोइ रामु ब्यापक ब्रह्म भुवन निकाय पति माया धनी।
अवतरेउ अपने भगत हित निज तंत्र नित रघुकुल मनी।

ज्ञानी मुनि, योगी और सिद्ध निरन्तर शुद्धचित्त से जिनका ध्यान करते हैं; वेद, पुराण और शास्त्र 'नेति-नेति' कहकर जिनकी कीर्त्ति गाते हैं; उन्हीं सर्वव्यापक, समस्त ब्रह्माण्डों के स्वामी, माया-पति, नित्य परम स्वतंत्र, ब्रह्मरूप रघुकुल में मणि-स्वरूप भगवान् रामचन्द्रजी ने अपने भक्तों के हित के लिये, अपनी इच्छा से अवतार लिया है।

सो०—लाग न उर उपदेसु जदपि कहेउ सिव बार बहु।
बोले बिहँसि महेसु हरि माया बलु जानि जिय ॥५१॥

यद्यपि शिवजी ने अनेक बार कहा, तो भी सतीजी के हृदय में उनका उपदेश नहीं बैठा। तब शिवजी मन में भगवान् की माया का बल जानकर मुस्कराते हुये बोले—

जौं तुम्हरे मन अति संदेहू ❀ तौ किन जाइ परीछा लेहू
तब लगि बैठ अहौं[3] बट छाँहीं ❀ जब लगि तुम्ह ऐहहु मोहिं पाहीं[4]

जो तुम्हारे मन में बहुत सन्देह है, तो तुम जाकर परीक्षा क्यों नहीं लेतीं; जब तक तुम मेरे पास लौट न आओ तबतक मैं इसी बड़ की छाँह में बैठा हूँ।

जैसे जाइ मोह भ्रम भारी ❀ करेहु सो जतन बिबेकु बिचारी
चलीं सती सिव आयसु पाई ❀ करइ बिचारु करउँ का भाई

जिस प्रकार तुम्हारा अज्ञान से उत्पन्न यह भारी भ्रम दूर हो, तुम वही यत्न सोच-समझ कर करना। शिवजी की आज्ञा पाकर सती (रामचन्द्रजी की परीक्षा लेने के लिये) चलीं और मन में सोचने लगीं—भाई! क्या करूँ?

---

१. वेद। २. शास्त्र। ३. हूँ। ४. पास।

इहाँ संभु अस मन अनुमाना ❀ दच्छसुता कहुँ नहिं कल्याना
मोरेहु कहे न संसय जाहीं ❀ बिधि बिपरीत भलाई नाहीं

इधर शिवजी ने मन में ऐसा अनुमान किया कि दक्ष की पुत्री सती का कुशल नहीं है। जब मेरे समझाने से भी सन्देह दूर नहीं होता, तब तो विधाता ही उलटे हैं। अब सती का कुशल नहीं है।

होइहि सोइ जो राम रचि राखा ❀ को करि तरक बढ़ावइ साखा
अस कहि लगे जपन हरिनामा ❀ गईं सती जहँ प्रभु सुखधामा

जो कुछ राम ने रच रक्खा है, वही होगा। तर्क-वितर्क करके कौन बात बढ़ाये। ऐसा कहकर शिवजी भगवान् का नाम जपने लगे और सती वहाँ गईं, जहाँ सुख के धाम प्रभु रामचन्द्रजी थे।

दो॰ पुनि पुनि हृदय बिचारु करि धरि सीता कर रूप।
आगे होइ चलि पंथ तेहि जेहि आवत नरभूप ॥५२॥

सती बार-बार मन में विचार कर और सीताजी का रूप धारण करके उस राह में आगे होकर चलीं, जिस राह से मनुष्यों के राजा रामचन्द्रजी आ रहे थे।

लछिमन दीख उमा कृत बेषा ❀ चकित भये भ्रम हृदयँ बिसेषा
कहि न सकत कछु अति गंभीरा ❀ प्रभु प्रभाउ जानत मतिधीरा

सती के बनावटी रूप को लक्ष्मणजी ने देखा, जिससे उनके हृदय में बड़ा भ्रम हो गया और वे चकित हुये। वे बहुत गम्भीर हो गये; कुछ कह नहीं सकते थे; क्योंकि धीर बुद्धि लक्ष्मण रामचन्द्रजी के प्रभाव को जानते थे।

सती कपटु जानेउ सुरस्वामी ❀ सबदरसी सब अंतरजामी
सुमिरत जाहि मिटइ अग्याना ❀ सोइ सरबग्य राम भगवाना

सती के कपट को देवताओं के स्वामी रामचन्द्रजी जान गये; क्योंकि वे सब कुछ देखने वाले और सबके हृदय की बात जानने वाले हैं। जिनके स्मरण-मात्र से अज्ञान का नाश हो जाता है; वही सर्वज्ञ भगवान् रामचन्द्रजी हैं।

सती कीन्ह चह तहहुँ दुराऊ[1] ❀ देखहु नारि सुभाउ प्रभाऊ
निज माया बलु हृदयँ बखानी ❀ बोले बिहँसि राम मृदु बानी

---

१. छिपाव।



स्त्री के स्वभाव का प्रभाव तो देखो कि सती ने वहाँ उन सर्वज्ञ के सामने भी छिपाव करना चाहा। अपनी माया के बल को हृदय में बखानकर, हँसकर, कोमल वाणी से रामचन्द्रजी बोले—

जोरि पानि[1] प्रभु कीन्ह प्रनामू ❀ पिता समेत लीन्ह निज नामू
कहेउ बहोरि कहाँ बृषकेतू ❀ बिपिन अकेलि फिरहु केहि हेतू

पहले प्रभु रामचन्द्रजी ने हाथ जोड़कर सती को प्रणाम किया और पिता सहित अपना नाम लिया। फिर कहा कि शिवजी कहाँ हैं ? आप यहाँ वन में अकेली किस लिये फिर रही हो ?

दो०—राम बचन मृदु गूढ़ सुनि उपजा अति संकोचु।
सती सभीत[2] महेस पहिं चलीं हृदयँ बड़ सोचु।५३।

रामचन्द्रजी के कोमल और गूढ़ वचन सुनकर सती को बड़ा संकोच हुआ। वे डरती हुई शिवजी के पास चलीं, उनके हृदय में बड़ी चिंता हो गई।

मैं संकर कर कहा न माना ❀ निज अग्यानु राम पर आना
जाइ उतरु अब देहउँ काहा ❀ उर उपजा अति दारुन दाहा

मैंने शङ्करजी का कहना नहीं माना और अपनी नासमझी रामचन्द्रजी पर प्रकट की। अब जाकर मैं शिवजी को क्या उत्तर दूंगी ? यह सोचकर सतीजी के हृदय में भयानक जलन उत्पन्न हुई।

जाना राम सती दुखु पावा ❀ निज प्रभाउ कछु प्रगटि जनावा
सती दीख कौतुक मग जाता ❀ आगे राम सहित श्री भ्राता

रामचन्द्रजी ने जान लिया कि सतीजी को दुःख हुआ। तब उन्होंने अपना कुछ प्रभाव प्रकट करके दिखाया। सती ने मार्ग में जाते समय यह कौतुक देखा कि रामचन्द्रजी लक्ष्मण और सीता-सहित आगे चले जा रहे हैं।

फिरि चितवा पाछें प्रभु देखा ❀ सहित बंधु सिय सुन्दर बेषा
जहँ चितवहिं तहँ प्रभु आसीना[3] ❀ सेवहिं सिद्ध मुनीस प्रबीना

उन्होंने पीछे की ओर फिरकर देखा, तो भाई लक्ष्मण और सीताजी के साथ रामचन्द्रजी को सुन्दर वेष में पाया। वे जिधर देखती हैं, उधर ही रामचन्द्रजी विराजमान हैं और प्रवीण सिद्ध मुनि उनकी सेवा कर रहे हैं।

---

१. हाथ। २. डर सहित। ३. बैठे हुये, विराजमान।

देखे सिव बिधि बिष्नु अनेका ❁ अमित प्रभाउ एक तें एका
बंदत चरन करत प्रभु सेवा ❁ बिबिध बेष देखे सब देवा

सती ने अनेक शिव, ब्रह्मा और विष्णु भी देखे, जो एक से एक बढ़कर असीम प्रभाव वाले थे। उन्होंने देखा कि तरह-तरह के वेष धारण करके सभी देवता रामचन्द्रजी की चरण-वन्दना और सेवा कर रहे हैं।

दो०— सती बिधात्री[1] इंदिरा[2] देखीं अमित अनूप।
जेहि जेहि बेष अजादि[3] सुर तेहि तेहि तन अनुरूप ५४

उन्होंने बहुत-सी सती, सरस्वती और लक्ष्मी देखीं, जो अनुपम थीं। जिस-जिस वेष में ब्रह्मादि देवता थे, उन्हीं के अनुकूल वेष में वे भी थीं।

देखे जहँ तहँ रघुपति जेते ❁ सक्तिन्ह सहित सकल सुर तेते
जीव चराचर जो संसारा ❁ देखे सकल अनेक प्रकारा

सती ने जहाँ-तहाँ जितने रामचन्द्र देखे, उन्हीं के साथ शक्तियों के सहित उतने ही सारे देवताओं को भी देखा। संसार में जितने चराचर जीव हैं, वे भी वहाँ अनेक प्रकार के देखे।

पूजहिं प्रभुहिं देव बहु बेखा ❁ राम रूप दूसर नहिं देखा
अवलोके रघुपति बहुतेरे ❁ सीता सहित न बेष घनेरे

अनेक वेष धारण किये हुए देवता रामचन्द्रजी का पूजन कर रहे हैं। परन्तु रामचन्द्रजी का दूसरा रूप कहीं नहीं देखा। सीता-सहित रामचन्द्रजी भी बहुत-से देखे, पर उनके वेष अनेक नहीं थे।

सोइ रघुबर सोइ लछिमनु सीता ❁ देखि सती अति भई सभीता
हृदय कंप तन सुधि कछु नाहीं ❁ नयन मूंदि बैठीं मग माहीं

वही रामचन्द्रजी, वही लक्ष्मणजी और वही सीताजी। ऐसा देखकर सती बहुत डर गईं। उनका हृदय काँपने लगा और तन की सारी सुध-बुध जाती रही। वे आँख मूंदकर मार्ग में बैठ गईं।

बहुरि बिलोकेउ नयन उघारी ❁ कछु न दीख तहँ दच्छकुमारी
पुनि पुनि नाइ राम पद सीसा ❁ चलीं तहाँ जहँ रहे गिरीसा[4]

१. सरस्वती। २. लक्ष्मी। ३. ब्रह्मा आदि। ४. शिवजी।

फिर आँख खोलकर देखा, तो दक्ष-कुमारी सती को वहाँ कुछ भी न देख पड़ा। वे बारम्बार रामचन्द्रजी के चरणों को सिर नवाकर वहाँ चलीं, जहाँ शिवजी थे।

दो०—गईं समीप महेस तब हँसि पूछी कुसलात।
लीन्हि परीछा कवन बिधि कहहु सत्य सब बात॥५५॥

जब पास पहुँचीं, तब शिवजी ने उनसे हँसकर कुशल-प्रश्न पूछा और कहा—तुमने किस तरह परीक्षा ली, सत्य-सत्य सब बातें कहो।

सतीं समुझि रघुबीर प्रभाऊ ❀ भय बस सिव सन कीन्ह दुराऊ
कछु न परीछा लीन्हि गोसाईं ❀ कीन्ह प्रनामु तुम्हारिहि नाईं

सती ने रामचन्द्रजी के प्रभाव को समझकर डर के मारे महादेवजी से छिपाव किया और कहा—स्वामिन्! मैंने कुछ भी परीक्षा नहीं ली। आपही की तरह मैंने भी उन्हें प्रणाम किया।

जो तुम्ह कहा सो मृषा न होई ❀ मोरे मन प्रतीति अस सोई
तब संकर देखेउ धरि ध्याना ❀ सती जो कीन्ह चरित सबु जाना

आपने जो कहा वह झूठ नहीं हो सकता, मेरे मन में ऐसा विश्वास होता है। तब शिवजी ने ध्यान करके देखा और सती ने जो चरित किया था, सब जान लिया।

बहुरि राममायहि सिरु नावा ❀ प्रेरि[1] सतिहि जेहि झूँठ कहावा
हरि इच्छा भावी बलवाना ❀ हृदय बिचारत संभु सुजाना

फिर उन्होंने रामचन्द्रजी की माया को प्रणाम किया, जिसने प्रेरणा करके सती के मुंह से झूठ कहला दिया। सुजान महादेवजी ने अपने जी में विचार किया कि हरि की इच्छारूपी भावी बड़ी प्रबल है। अर्थात् भगवान् जो चाहते हैं, वही होता है और जो होनहार होता है, वह होकर रहता है।

सती कीन्ह सीता कर बेषा ❀ सिव उर भयउ बिषाद बिसेषा
जौं अब करउँ सती सन प्रीती ❀ मिटइ भगति पथ होइ अनीती

सती ने सीता का वेष धारण किया, यह जानकर शिवजी के हृदय में

---

१. प्रेरणा करके।

बड़ा खेद हुआ। उन्होंने सोचा, जो अब मैं सती से प्रीति करता हूँ, तो भक्ति-मार्ग मिटता है और बड़ा अनर्थ होता है।

दो०-परम पुनीत न जाइ तजि कियें प्रेम बड़ पाप।
प्रगटि न कहत महेसु कछु हृदयँ अधिक संताप ॥५६॥

सती परम पवित्र हैं, इसलिये इनको छोड़ा भी नहीं जा सकता और प्रेम करने में भी बड़ा पाप है। प्रकट रूप से महादेवजी कुछ नहीं कहते हैं; पर उनके हृदय में बड़ा दुःख है।

तब संकर प्रभु पद सिरु नावा ❀ सुमिरत रामु हृदयँ अस आवा
एहिं तन सतिहि भेंट मोहि नाहीं ❀ सिव संकल्पु[1] कीन्ह मन माहीं

तब शिवजी ने प्रभु रामचन्द्रजी के चरणों में सिर नवाया और उनको स्मरण करते ही मन में यह आया कि सती के अपने इस शरीर से मेरी भेंट नहीं हो सकती। शिवजी ने अपने मन में यह सङ्कल्प कर लिया।

अस बिचारि संकर मतिधीरा ❀ चले भवन सुमिरत रघुबीरा
चलत गगन[2] भइ गिरा[3] सुहाई ❀ जय महेस भलि भगति दृढ़ाई

ऐसा विचार कर स्थिरबुद्धि शिवजी रामचन्द्रजी का स्मरण करते हुये अपने स्थान (कैलाश) को चले। चलते समय सुन्दर आकाशवाणी हुई—हे शंकर, आपकी जय हो। आपने भक्ति की अच्छी दृढ़ता की।

अस पन तुम्ह बिनु करइ को आना[4] ❀ राम भगत समरथ भगवाना
सुनि नभगिरा सती उर सोचा ❀ पूछा सिवहिं समेत सकोचा

आपके बिना ऐसी कठिन प्रतिज्ञा कौन कर सकता है? आप रामचन्द्रजी के भक्त हैं, समर्थ हैं और भगवान् हैं। इस आकाशवाणी को सुनकर सती के मन में चिन्ता हुई और उन्होंने सकुचाते हुए शिवजी से पूछा—

कीन्ह कवन पन[5] कहहु कृपाला ❀ सत्यधाम प्रभु दीनदयाला
जदपि सती पूछा बहु भाँती ❀ तदपि न कहेउ त्रिपुर आराती[6]

"हे कृपालु! कहिए, आपने कौन-सी प्रतिज्ञा की है? हे प्रभो! आप सत्य के धाम और दीनदयालु हैं।" यद्यपि सती ने बहुत तरह से पूछा, पर त्रिपुरारि शिवजी ने कुछ नहीं कहा।

---

१. दृढ़ निश्चय। २. आकाश। ३. वाणी। ४. अन्य। ५. प्रतिज्ञा। ६. शत्रु।

दो॰ सती हृदय अनुमान किय सब जानेउ सर्बग्य।
कीन्ह कपट मैं संभु सन नारि सहज जड़ अग्य॥५७(१)

सती ने अपने हृदय में अनुमान किया कि सर्वज्ञ शिवजी सब जान गये। मैंने शिवजी से छल किया। स्त्री स्वभाव ही से मूर्ख और नासमझ होती है।

सो॰ जलु पय[1] सरिस बिकाइ देखहु प्रीति कि रीति भलि।
बिलग होइ रसु जाइ कपट खटाई परत पुनि॥५७(२)

प्रीति की सुन्दर रीति देखिये कि (दूध के साथ मिलकर) पानी दूध के समान-भाव बिकता है; पर कपटरूपी खटाई पड़ते ही दूध, पानी दोनों अलग हो जाते हैं और स्वाद जाता रहता है। [दृष्टान्त अलंकार]

हृदय सोच समुझत निज करनी ❀ चिंता अमित जाइ नहिं बरनी
कृपासिंधु सिव परम अगाधा ❀ प्रगट न कहेउ मोर अपराधा

अपनी करतूत को याद करके सती के मन में इतना सोच और इतनी अधिक चिन्ता हुई, जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। वे समझ गईं कि शिवजी महाराज बड़े ही गम्भीर और कृपा के सागर हैं, इससे मेरा अपराध उन्होंने प्रगट रूप में नहीं कहा।

संकर रुख अवलोकि भवानी ❀ प्रभु मोहि तजेउ हृदयँ अकुलानी
निज अघ[2] समुझि न कछु कहि जाई ❀ तपइ अवाँ इव उर अधिकाई

सती ने शंकरजी का रुख देखकर समझ लिया कि स्वामी ने मुझे छोड़ दिया। वे मन में बहुत व्याकुल हुईं। अपना अपराध समझकर उनसे कुछ कहते नहीं बनता। कुम्हार के आवे के समान उनका हृदय बहुत जलने लगा।

सतिहि ससोच जानि बृषकेतू ❀ कहीं कथा सुंदर सुख हेतू[3]
बरनत पंथ बिबिध इतिहासा ❀ बिस्वनाथ पहुँचे कैलासा

सती को चिन्तित जानकर शिवजी ने उनको सुख देने के लिये सुन्दर कथायें कहीं। इस प्रकार मार्ग में अनेक प्रकार के इतिहास कहते-कहते शिवजी कैलाश जा पहुँचे।

---

१. दूध। २. पाप। ३. लिये।

तहँ पुनि संभु समुझि पन आपन ❁ बैठे बट तर करि कमलासन
संकर सहज सरूपु सँभारा ❁ लागि समाधि अखंड अपारा

वहाँ फिर अपने प्रण को स्मरण करके शिवजी बरगद के पेड़ के नीचे पद्मासन लगाकर बैठ गये। महादेवजी ने अपना स्वाभाविक स्वरूप सँभाला। उनकी अखण्ड और अपार समाधि लग गई।

दो० सती बसहिं कैलास तब अधिक सोचु मन माहिं।
मरमु न कोऊ जान कछु जुग सम दिवस सिराहिं[1]।५८।

तब सती कैलाश पर रहने लगीं। उनके मन में बड़ा दुःख था। इसका रहस्य कोई कुछ भी नहीं जानता था। एक-एक दिन युग के समान बीतने लगा।

नित नव सोच सती उर भारा ❁ कब जैहउँ दुख सागर पारा
मैं जो कीन्ह रघुपति अपमाना ❁ पुनि पति बचनु मृषा करि जाना

सती के जी में दिन-दिन नया और भारी सोच हो रहा था कि इस शोक-सागर से कब पार जाऊँगी। मैंने जो रामचन्द्रजी का अपमान किया और फिर पति के वचन को झूठ माना,

सो फल मोहि बिधाता दीन्हा ❁ जो कछु उचित रहा सोइ कीन्हा
अब बिधि अस बूझिअ[2] नहिं तोहीं ❁ संकर बिमुख जिआवसि मोहीं

उसका फल मुझे विधाता ने दिया और जो उचित था वही किया। पर हे विधाता! अब तुझे यह उचित नहीं है कि शंकर के प्रतिकूल होने पर भी मुझे जीवित रखता है।

कहि न जाइ कछु हृदय गलानी ❁ मन महुँ रामहिं सुमिरि सयानी
जौं प्रभु दीनदयालु कहावा ❁ आरति हरन बेद जसु गावा

उनके हृदय की ग्लानि कुछ कही नहीं जाती। बुद्धिमती सती ने मन में रामचन्द्रजी का स्मरण किया और कहा—हे प्रभो! यदि आप दीनदयालु कहलाते हैं और यदि वेद ने दुःख मेटने वाला कहकर आपका यश गाया है—

तौ मैं बिनय करउँ कर जोरी ❁ छूटउ बेगि[3] देह यह मोरी
जौं मोरें सिव चरन सनेहू ❁ मन क्रम बचन सत्य ब्रतु एहू

१. बीतते हैं। २. चाहिये। ३. शीघ्र, जल्दी।

तो मैं हाथ जोड़कर विनती करती हूँ कि मेरा यह शरीर जल्दी छूट जाय। यदि मेरा शिवजी के चरणों में प्रेम है और मन, वचन, कर्म से मेरा पातिव्रत सच्चा है—

दो०—तौ सबदरसी सुनिअ प्रभु करौ सो बेगि उपाइ।
होइ मरनु जेहि बिनहिं स्रम दुसह बिपत्ति बिहाइ[1]।५९।

तो हे सर्वदर्शी प्रभो! सुनिये और जल्दी उपाय कीजिये, जिससे मेरा मरण हो और बिना ही परिश्रम यह असह्य विपत्ति छूट जाय।

एहि बिधि दुखित प्रजेसकुमारी ❀ अकथनीय दारुन दुखु भारी
बीते सम्बत सहस सतासी ❀ तजी समाधि सम्भु अबिनासी

इस तरह राजा दक्ष की पुत्री सती बहुत दुःखी थीं। उनको बड़ा कठिन दुःख था, उसका वर्णन नहीं हो सकता। सत्तासी हज़ार वर्ष बीत गये, तब अविनाशी महादेवजी ने अपनी समाधि खोली।

रामनाम सिव सुमिरन लागे ❀ जानेउ सती जगतपति जागे
जाइ सम्भु पद बंदनु कीन्हा ❀ सन्मुख सङ्कर आसन दीन्हा

शिवजी रामनाम का स्मरण करने लगे, तब सती ने जाना कि अब जगत् के स्वामी जागे। उन्होंने जाकर शिवजी के चरणों में प्रणाम किया। शिवजी ने उनको बैठने के लिये सामने आसन दिया।

लगे कहन हरि कथा रसाला ❀ दच्छ प्रजेस भये तेहि काला
देखा बिधि बिचारि सब लायक ❀ दच्छहिं कीन्ह प्रजापति नायक

शिवजी भगवान् हरि की रसीली कथायें कहने लगे। उसी समय (सतीजी के पिता) दक्ष प्रजापति हुए थे। ब्रह्मा ने सब तरह से योग्य समझकर दक्ष को प्रजापतियों का नायक बना दिया।

बड़ अधिकार दच्छ जब पावा ❀ अति अभिमान हृदय तब आवा
नहिं कोउ अस जनमा जग माहीं ❀ प्रभुता पाइ जाहि मद नाहीं

जब दक्ष ने इतना बड़ा अधिकार पाया, तब उनके मन में अत्यन्त अभिमान आ गया। संसार में ऐसा कोई नहीं जन्मा है, जिसे प्रभुता पाकर मद न हो। [अर्थान्तरन्यास अलंकार]

---

१. छूट जाय।

दो० — दच्छ लिये मुनि बोलि सब करन लगे बड़ जाग[1]।
नेवते सादर सकल सुर जे पावत मख भाग ॥६०॥

दक्ष ने सब मुनियों को बुला भेजा और वे बड़ा यज्ञ करने लगे। जो देवता यज्ञ में भाग पाते हैं, उन्होंने उन सबको आदर-सहित निमंत्रित किया।

किन्नर नाग सिद्ध गंधर्बा ❀ बधुन्ह समेत चले सुर सर्बा
बिष्नु बिरंचि महेसु बिहाई ❀ चले सकल सुर जान बनाई

(दक्ष का निमंत्रण पाकर) किन्नर, नाग, सिद्ध, गन्धर्व और सब देवता अपनी-अपनी स्त्रियों-सहित चले। विष्णु, ब्रह्मा और शिवजी को छोड़कर शेष सब देवता अपना-अपना विमान सजाकर चले।

सती बिलोके ब्योम[2] बिमाना ❀ जात चले सुंदर बिधि नाना
सुर सुंदरी करहिं कल गाना ❀ सुनत स्रवन छूटहिं मुनि ध्याना

सती ने देखा कि आकाश में अनेक प्रकार के सुन्दर विमान चले जा रहे हैं। देवों की सुन्दरियाँ (विमानों में बैठी हुई) मधुर गीत गाती जाती हैं, जिन को सुनकर मुनियों का भी ध्यान छूट जाता है।

पूछेउ तब सिव कहेउ बखानी ❀ पिता जग्य सुनि कछु हरषानी
जौं महेस मोहि आयसु देहीं ❀ कछु दिन जाइ रहौं मिस एहीं

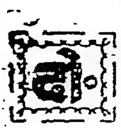
सती ने जब पूछा, तब शिवजी ने उनके जाने का कारण बताया। पिता के यज्ञ की बात सुनकर सती को कुछ हर्ष हुआ। (वे मन में कहने लगीं कि) यदि शिवजी मुझे जाने की आज्ञा दें, तो इसी बहाने से मैं कुछ दिन पिता के घर जाकर रहूँ।

पति परित्याग हृदयँ दुखु भारी ❀ कहइ न निज अपराध बिचारी
बोलीं सती मनोहर बानी ❀ भय संकोच प्रेम रस सानी

पति द्वारा त्यागी जाने का उनके हृदय में बड़ा दुःख था; पर अपना अपराध समझकर वे कुछ कहती न थीं। वे भय, संकोच और प्रेमरस से सनी हुई मनोहर वाणी बोलीं—

---

१. यज्ञ। २. आकाश।



पिता भवन उत्सव परम जौं प्रभु आयसु होइ।
तौ मैं जाउँ कृपायतन सादर देखन सोइ ॥६१॥

मेरे पिता के यहाँ बहुत बड़ा उत्सव है। हे प्रभो! हे कृपानिधान! यदि आपकी आज्ञा हो, तो मैं आदर-सहित उसे देखने जाऊँ।

कहेहु नीक मोरेहुँ मन भावा ❀ यह अनुचित नहिं नेवत पठावा
दच्छ सकल निज सुता बोलाई ❀ हमरे बयर तुम्हउ बिसराई

शिवजी ने कहा—तुमने बात तो अच्छी कही, मुझे भी पसंद आई पर अनुचित तो यह है कि उन्होंने नेवता नहीं भेजा। दक्ष ने अपनी सब बेटियाँ बुलाई हैं; परन्तु हमारे साथ बैर होने से उसने तुमको भी भुला दिया।

ब्रह्म सभा हम सन दुखु माना ❀ तेहि ते अजहुँ करहिं अपमाना
जौं बिनु बोलें जाहु भवानी ❀ रहै न सीलु सनेहु न कानी[1]

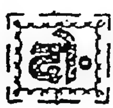
एक बार ब्रह्मा की सभा में हमसे अप्रसन्न हो गये थे। उसी से वे अब तक हमारा अपमान करते हैं। हे सती! जो बिना बुलाये जाओगी, तो न शील और स्नेह ही रहेगा और न मर्यादा ही रहेगी।

जदपि मित्र प्रभु पितु गुर गेहा ❀ जाइअ बिनु बोलेहु न सँदेहा
तदपि बिरोध मान जहँ कोई ❀ तहाँ गये कल्यानु न होई

यद्यपि इसमें सन्देह नहीं कि मित्र, स्वामी, पिता और गुरु के घर बिना बुलाये भी जाना चाहिये। तो भी जहाँ कोई विरोध मानता हो, उसके घर जाने से भलाई नहीं होती।

भाँति अनेक संभु समुझावा ❀ भावी बस न ग्यानु उर आवा
कह प्रभु जाहु जो बिनहिं बोलाएँ ❀ नहिं भलि बात हमारे भाएँ[2]

शिवजी ने बहुत तरह से समझाया; पर होनहार-वश सती के हृदय में बोध न हुआ। फिर शिवजी ने कहा—यदि बिना बुलाये जाओगी, तो हमारी समझ में अच्छी बात न होगी।



कहि देखा हर जतन बहु रहइ न दच्छकुमारि।
दिये मुख्य गन[3] सङ्ग तब बिदा कीन्ह त्रिपुरारि ।६२।

---

१. मर्यादा। २. समझ में। ३. गण, सेवक।

जब शिवजी ने बहुत उपाय करके देखा कि सती नहीं रुकतीं, तव उन्होंने अपने मुख्य सेवकों को साथ करके उनको विदा किया। [परिकरांकुर अलंकार]

पिता भवन जब गईं भवानी ❀ दच्छ त्रास[1] काहु न सनमानी
सादर भलेहि मिली एक माता ❀ भगिनी मिलीं वहुत मुसुकाता

जब सती पिता के घर पहुँचीं, तब दक्ष के डर से किसी ने उनका सत्कार नहीं किया। केवल एक माता भले ही आदर से मिली। वहनें बहुत मुसकुराती हुई मिलीं।

दच्छ न कछु पूछी कुसलाता ❀ सतिहि विलोकि जरे सब गाता
सती जाइ देखउ तब जागा ❀ कतहुँ न दीख संभु कर भागा

दक्ष ने तो उनकी कुछ कुशल तक न पूछी; उलटे सती को देखकर उनका सारा शरीर जल उठा। तब सती ने जाकर यज्ञ देखा तो वहाँ कहीं शिवजी का भाग दिखाई न दिया।

तब चित चढ़ेउ जो सङ्कर कहेऊ ❀ प्रभु अपमान समुझि उर दहेऊ
पाछिल दुख न हृदय अस व्यापा ❀ जस यह भयउ महा परितापा

तब शिवजी ने जो कहा था, वह उनकी समझ में आया। स्वामी का अपमान देखकर सती का हृदय जल उठा। पिछला अर्थात् पति के त्याग का दुःख उनके हृदय में उतना नहीं व्यापा, जितना भारी दुःख सती को यह हुआ।

जद्यपि जग दारुन[2] दुख नाना ❀ सब तें कठिन जाति अपमाना
समुझि सो सतिहि भयउ अति क्रोधा ❀ बहु विधि जननी कीन्ह प्रबोधा

यद्यपि जगत् में अनेक प्रकार के कठिन दुःख हैं, तथापि स्वजाति से अपमानित होना सबसे बढ़कर कठिन है। यह समझकर सती को वड़ा क्रोध आया। माता ने उन्हें बहुत तरह से समझाया-बुझाया। [अर्थान्तरन्यास अलंकार]

दो० **सिव अपमान न जाइ सहि हृदय न होइ प्रबोध।**
सकल सभहिं हठि हटकि[3] तब बोलीं बचन सक्रोध ६३

शिवजी का अपमान उनसे सहा नहीं जाता है इससे उनके हृदय को सन्तोष भी नहीं है; तब सारी सभा को हठ से डाँट कर क्रोध भरे वचन बोलीं—

---

१. डर। २. कठिन। ३. डाँटकर।

सुनहु सभासद सकल मुनिन्दा ❀ कही सुनी जिन्ह सङ्कर निंदा
सो फल तुरत लहब सब काहू ❀ भली भाँति पछिताव पिताहू

हे सभासदो और सब मुनीश्वरो ! सुनो। जिन लोगों ने यहाँ शिवजी की निन्दा कही या सुनी है, उन सबको उसका फल तुरंत ही मिलेगा और मेरे पिता दक्ष भी ख़ूब पछतायँगे।

संत संभु श्रीपति अपबादा ❀ सुनिअ जहाँ तहँ असि मरजादा
काटिअ तासु जीभ जो बसाई[1] ❀ स्रवन मूँदि न त चलिअ पराई[2]

जहाँ संत, शिवजी और लक्ष्मीपति (विष्णु भगवान्) की निन्दा सुनी जाय, वहाँ ऐसी मर्यादा है कि वश चले, तो उस निन्दक की जीभ काट ले और नहीं तो अपने कान बन्द करके वहाँ से भाग जाय।

जगदातमा महेसु पुरारी ❀ जगत जनक सबके हितकारी
पिता मंदमति निंदत तेही ❀ दच्छ सुक्र[3] संभव[4] यह देही

त्रिपुर दैत्य के शत्रु भगवान् शिवजी सारे जगत् की आत्मा हैं। वे सबके उत्पन्न करने वाले और हितकारी हैं। मेरा मूर्ख पिता उनकी निन्दा करता है और मेरा यह शरीर दक्ष ही के वीर्य से उत्पन्न हुआ है।

तजिहउँ तुरत देह तेहि हेतू ❀ उर धरि चंद्रमौलि बृषकेतू
अस कहि जोग अगिनि तनु जारा ❀ भयउ सकल मख हाहाकारा

इसलिये चन्द्रमा को मस्तक पर धारण करने वाले और वृषकेतु शिवजी को हृदय में धारण करके मैं इस शरीर को तुरन्त त्याग दूंगी। ऐसा कहकर योग की अग्नि में सती ने अपना शरीर भस्म कर डाला। (यह देखकर) सारी यज्ञशाला में हाहाकार मच गया।

दो०— सती मरनु सुनि संभु गन लगे करन मख खीस।
जग्य बिधंस बिलोकि भृगु रच्छा कीन्हि मुनीस॥६४॥

सती का मरण सुनकर शिवजी के गण यज्ञ को विध्वंस करने लगे। यज्ञ को विध्वंस होते देखकर मुनीश्वर भृगुजी ने उसकी रक्षा की।

समाचार जब संकर पाये ❀ बीरभद्रु करि कोप पठाये
जग्य बिधंस जाइ तिन्ह कीन्हा ❀ सकल सुरन्ह बिधिवत फल दीन्हा

१. वश चले। २. भाग। १. वीर्य। २. उत्पन्न।

जब यह समाचार शिवजी को मिला, तब उन्होंने कोप करके वीरभद्र को भेजा। उन्होंने वहाँ जाकर यज्ञ विध्वंस कर डाला और सारे देवताओं को यथोचित फल (दंड) दिया।

भइ जग बिदित दच्छ गति सोई ❀ जसि कछु संभु बिमुख कै होई
यह इतिहास सकल जग जाना ❀ तातें मैं संछेप बखाना

दक्ष की संसार-प्रसिद्ध वही गति हुई, जो शिव-द्रोही की हुआ करती है। इस इतिहास को सारा संसार जानता है, इसलिये मैंने संक्षेप में वर्णन किया।

सती मरत हरि सन बरु माँगा ❀ जनम जनम सिवपद अनुरागा
तेहि कारन हिमगिरि गृह जाई ❀ जनमी पारबती तनु पाई

मरते समय सती ने भगवान् हरि से यह वर माँगा कि हरएक जन्म में शिवजी के चरणों ही में मेरा अनुराग रहे। इसी कारण हिमवान् के घर जाकर पार्वती का शरीर धारण करके उन्होंने जन्म लिया।

जब तें उमा सैल गृह जाई[1] ❀ सकल सिद्धि संपति तहँ छाई
जहँ तहँ मुनिन्ह सुआस्रम कीन्हे ❀ उचित बास हिम भूधर दीन्हे

जब से उमा हिमवान् के घर जन्मीं तब से वहाँ सारी सिद्धियाँ और सम्पत्तियाँ छा गईं। मुनियों ने जहाँ-तहाँ अच्छे-अच्छे आश्रम बना लिये और हिमवान् ने उन्हें उचित स्थान दिये।

दो०— सदा सुमन फल सहित सब द्रुम नव नाना जाति।
प्रगटीं सुन्दर सैल पर मनि आकर[2] बहु भाँति॥६५॥

पर्वत पर भाँति-भाँति के सब नवीन वृक्ष सदा फल-फूल-सहित हो गये और मणियों की बहुत तरह की सुन्दर खानें प्रकट हो गईं।

सरिता सब पुनीत जलु बहहीं ❀ खग मृग मधुप सुखी सब रहहीं
सहज बयरु सब जीवन्ह त्यागा ❀ गिरि पर सकल करहिं अनुरागा

सारी नदियों में पवित्र जल बहता है और पक्षी, पशु, भौंरे सभी सुखी रहते हैं। सब जीवों ने अपना स्वाभाविक वैर छोड़ दिया। पर्वत पर सब जीव परस्पर प्रेम करते हैं।

---

१. पैदा हुई, जन्मी। २. खान।

सोह सैल गिरिजा गृह आएँ ❀ जिमि जन राम भगति के पाएँ
नित नूतन मंगल गृह तासू ❀ ब्रह्मादिक गावहिं जसु जासू

घर में पार्वती के आ जाने से वह पर्वत ऐसा शोभायमान हुआ, जैसा राम की भक्ति पाकर भक्त शोभायमान होता है। उस पर्वतराज के घर में नित्य नये-नये मंगल-उत्सव होते हैं, जिसका यश ब्रह्मा आदिक गाते हैं।

नारद समाचार सब पाए ❀ कौतुकहीं गिरि गेह सिधाए
सैलराज बड़ आदर कीन्हा ❀ पद पखारि[1] बर आसनु दीन्हा

जब नारद मुनि ने (पार्वती के जन्म के) सब समाचार सुने, तब वे योंही प्रसन्नता से हिमवान् के घर आये। पर्वतराज ने उनका बड़ा आदर किया और पाँव धोकर उनको उत्तम आसन दिया।

नारि सहित मुनि पद सिरु नावा ❀ चरन सलिल सबु भवनु सिंचावा
निज सौभाग्य बहुत गिरि बरना ❀ सुता बोलि मेली[2] मुनि चरना

हिमवान् ने अपनी स्त्री-सहित मुनि के चरणों में शिर नवाया और उनके चरणों का जल सारे घर में छिड़काया। हिमवान् ने अपने सौभाग्य को बहुत सराहा और पुत्री को बुलाकर मुनि के चरणों पर डाल दिया।

दो॰ त्रिकालग्य सर्बग्य तुम्ह गति सर्बत्र तुम्हारि।
कहहु सुता के दोष गुन मुनिबर हृदयँ बिचारि॥६६॥

हिमवान् ने कहा—हे मुनिवर, आप त्रिकालदर्शी और सर्वज्ञ हैं और आपकी सब जगह पहुँच है। इसलिये आप हृदय में विचार कर कन्या के दोष-गुण कहिये।

कह मुनि बिहँसि गूढ़ मृदु बानी ❀ सुता तुम्हारि सकल गुन खानी
सुंदर सहज सुसील सयानी ❀ नाम उमा अंबिका भवानी

नारद मुनि ने हँसकर रहस्य-युक्त और कोमल वाणी से कहा—तुम्हारी पुत्री सब गुणों की खान है। यह स्वभाव ही से सुन्दर, सुशील और चतुर है। 'उमा', 'अम्बिका' और 'भवानी' इसके नाम हैं।

सब लच्छन संपन्न कुमारी ❀ होइहि संतत पिअहि पिआरी
सदा अचल एहि कर अहिवाता ❀ एहि तें जसु पइहहिं पितु माता

१. धोकर। २. डाल दिया।

कन्या सब लक्षणों से सम्पन्न है। यह अपने पति को सदा प्यारी होगी। इसका सुहाग सदा अचल रहेगा और इससे इसके माता-पिता यश पायेंगे।

होइहि पूज्य सकल जग माहीं ❀ एहि सेवत कछु दुर्लभ नाहीं
एहि कर नाम सुमिरि संसारा ❀ तिय चढ़िहहिं पतिब्रत असिधारा

यह सारे जगत् में पूज्य होगी और इसकी सेवा करने से कुछ भी दुर्लभ न होगा। संसार में स्त्रियाँ इसका नाम स्मरण करके पातिव्रत-धर्म रूपी तलवार की धार पर चढ़ जायँगी।

सैल सुलच्छनि सुता तुम्हारी ❀ सुनहु जे अब अवगुन दुइचारी
अगुन अमान मातु पितु हीना ❀ उदासीन सब संसय छीना[1]

हे पर्वतराज! तुम्हारी पुत्री सुन्दर लक्षणों वाली है। अब उसमें दो-चार अवगुण हैं, उन्हें भी सुन लो। गुणहीन, मानहीन, माता-पिता-विहीन, उदासीन समस्त सन्देहों से रहित (लापरवाह),

दो०— जोगी जटिल अकाम मन नगन अमंगल बेष।
अस स्वामी एहि कहँ मिलिहि परी हस्त असि रेख॥६७॥

योगी, जटाधारी, निष्काम-हृदय, नङ्गा और अमंगल वेष वाला पति इसको मिलेगा, इसके हाथ में ऐसी ही रेखा पड़ी है।

सुनि मुनि गिरा सत्य जियँ जानी ❀ दुख दंपतिहिं उमा हरषानी
नारदहूँ यह भेदु न जाना ❀ दसा एक समुझब बिलगाना

मुनि की वाणी सुनकर और उसको हृदय में सत्य जानकर पार्वती के माता-पिता दोनों को दुःख हुआ; परन्तु पार्वती प्रसन्न हुई। नारदमुनि ने भी यह भेद नहीं जाना; क्योंकि सबकी बाहरी दशा एक-सी होने पर भी भीतर की समझ भिन्न-भिन्न थी।

सकल सखी गिरिजा गिरि मैना ❀ पुलक सरीर भरे जल नैना
होइ न मृषा देवरिषि भाखा ❀ उमा सो बचनु हृदय धरि राखा

सारी सखियाँ, पार्वती, पर्वतराज हिमवान् और मैना सभी के शरीर पुलकित हो गये और आँखों में जल भर आये। देवर्षि नारद ने जो कहा है, वह झूठ नहीं हो सकता; यह बात पार्वती ने हृदय में धारण कर ली।

---

१. क्षीण, रहित।

उपजेउ सिव पद कमल सनेहू ❀ मिलन कठिन मन भा सन्देहू
जानि कुअवसरु प्रीति दुराई ❀ सखी उछँग[1] बैठि पुनि जाई

उन्हें शिवजी के चरण-कमलों में स्नेह उत्पन्न हो आया; परंतु मन में यह सन्देह हुआ कि उनका मिलना कठिन है। अवसर ठीक न जानकर पार्वती ने वह प्रीति छिपा ली और फिर वे सखी की गोद में जाकर बैठ गईं।

झूठि न होइ देवरिषि बानी ❀ सोचहिं दंपति सखी सयानी
उर धरि धीर कहइ गिरिराऊ ❀ कहहु नाथ का करिअ उपाऊ

देवर्षि नारद की वाणी झूठी न होगी, हिमवान् और उसकी स्त्री मैना और पार्वती की चतुर सखियाँ चिन्ता करने लगीं। हृदय में धीरज धरकर हिमवान् ने कहा—हे नाथ! कहिये, क्या उपाय किया जाय?

दो० कह मुनीस हिमवंत सुनु जो बिधि लिखा लिलार[2]।
देव दनुज नर नाग मुनि कोउ न मेटनिहार ॥६८॥

मुनीश्वर नारदजी ने कहा—हे हिमवान्, सुनो। जो बात ब्रह्मा ने माथे में लिख दी है, देवता, दानव, मनुष्य, नाग और मुनि कोई भी उसको मिटा नहीं सकता।

तदपि एक मैं कहउँ उपाई ❀ होइ करइ जौं दैउ सहाई
जस बर मैं बरनेउँ तुम्ह पाहीं ❀ मिलिहि उमहिं तस संसय नाहीं

तो भी मैं एक उपाय बताता हूँ। जो प्रारब्ध सहायता करे, तो वह सिद्ध हो सकता है। जैसा मैंने तुम्हारे सामने कहा, वैसा ही वर उमा को मिलेगा, इसमें सन्देह नहीं है।

जे जे बर के दोष बखाने ❀ ते सब सिव पहिं मैं अनुमाने
जौं बिबाहु संकर सन होई ❀ दोषउ गुन सम कह सब कोई

मैंने वर के जो-जो दोष बताये हैं, मैं अनुमान से कहता हूँ, वे सभी शिवजी में हैं। यदि शिवजी के साथ विवाह हो जाय, तो दोषों को भी सब लोग गुणों के समान ही कहेंगे।

जौं अहि सेज सयन हरि करहीं ❀ बुध कछु तिनकर दोषु न धरहीं
भानु कृसानु सर्ब रस खाहीं ❀ तिन्ह कहँ मंद[3] कहत कोउ नाहीं

१. गोद। २. मस्तक, ललाट। ३. बुरा।

जैसे विष्णु भगवान् शेषनाग की शय्या पर सोते हैं, तो भी पण्डित लोग उनको कुछ दोष नहीं लगाते। सूर्य और अग्नि अच्छे-बुरे सभी रसों को खाते हैं; पर उन्हें कोई बुरा नहीं कहता।

सुभ अरु असुभ सलिल सब बहई ❀ सुरसरि कोउ अपुनीत न कहई
समरथ कहुँ नहिं दोष गोसाईं ❀ रबि पावक सुरसरि की नाईं

गंगाजी में पवित्र और अपवित्र सब जल बहता है; पर कोई उन्हें अपवित्र नहीं कहता। हे हिमवान्! सूर्य, अग्नि और गङ्गाजी की तरह समर्थ को कुछ दोष नहीं लगता।

दो०— जौं अस हिसिषा[1] करहिं नर जड़ बिबेक अभिमान।
परहिं कलप भरि नरक महुँ जीव कि ईस समान॥६९॥

जो मूर्ख मनुष्य ज्ञान के अभिमान से ऐसी बराबरी अर्थात् सूर्य, अग्नि और गङ्गा की समता करते हैं, वे कल्पभर के लिये नरक में पड़ते हैं। भला, कहीं जीव भी ईश्वर के समान हो सकता है?

सुरसरि जल कृत बारुनि जाना ❀ कबहुँ न सन्त करहिं तेहि पाना
सुरसरि मिलें सो पावन जैसे ❀ ईस अनीसहि[2] अंतरु तैसे

गंगाजल से भी बनाई हुई मदिरा को जानकर संतजन कभी उसका पान नहीं करते। पर वही मदिरा गङ्गाजी में मिल जाने से जैसे पवित्र हो जाती है, ईश्वर और जीव में भी वैसा ही भेद है।

सम्भु सहज समरथ भगवाना ❀ एहि बिबाहँ सब बिधि कल्याना
दुराराध्य पै अहहिं महेसू ❀ आसुतोष पुनि किएँ कलेसू

भगवान् महादेवजी स्वभाव ही से समर्थ हैं। इसलिये इस विवाह में सब तरह का कल्याण है। परन्तु महादेवजी की आराधना बड़ी कठिन है; पर क्लेश करने से (तप से) वे बहुत जल्दी संतुष्ट हो जाते हैं।

जौं तपु करइ कुमारि तुम्हारी ❀ भाविउ मेटि सकहिं त्रिपुरारी
जद्यपि बर अनेक जग माहीं ❀ एहि कहँ सिव तजि दूसर नाहीं

जो तुम्हारी पुत्री (उनकी प्राप्ति के लिये) तप करे, तो शिवजी होनहार

---

१. होड़, बराबरी। २. जीव।

को भी मिटा सकते हैं। यद्यपि संसार में वर अनेक हैं, पर इसके लिये शिवजी को छोड़कर दूसरा वर नहीं है।

वर दायक प्रनतारति भञ्जन ❀ कृपा सिन्धु सेवक मन रंजन
इच्छित फल बिनु सिव अवराधें ❀ लहिअ न कोटि जोग जप साधें

शिवजी वर देने वाले, शरणागतों के दुःख-नाशक, दया-सागर और सेवकों के मन को प्रसन्न करने वाले हैं। शिवजी की आराधना किये बिना करोड़ों योग और जप करने पर भी वाञ्छित फल नहीं मिलता।

दो०—अस कहि नारद सुमिरि हरि गिरिजहिं दीन्ह असीस।
होइहि यह कल्यान अब संसय तजहु गिरीस ।७०।।

ऐसा कहकर और भगवान का स्मरण करके नारदजी ने पार्वती को आशीर्वाद दिया और कहा—हे हिमवान्, तुम सन्देह दूर करो, अब इसका कल्याण होगा।

कहि अस ब्रह्म भवन मुनि गयऊ ❀ आगिल चरित सुनहु जस भयऊ
पतिहि एकांत पाइ कह मैना ❀ नाथ न मैं समुझे मुनि बैना

यों कहकर मुनि ब्रह्मलोक को चले गये। अब जो कुछ चरित्र आगे हुआ, उसे सुनो। पति को एकान्त में पाकर मैना ने कहा—नाथ, मैंने मुनि की बात नहीं समझी।

जौं घरु बरु कुलु होइ अनूपा ❀ करिअ बिबाहु सुता अनुरूपा
न त कन्या बरु रहउ कुँआरी ❀ कंत उमा मम प्रान पिआरी

जो हमारी कन्या के अनुकूल घर, वर और कुल उत्तम हो तो विवाह कीजिये। नहीं तो कन्या चाहे कुमारी ही रहे। हे स्वामिन्, पार्वती मुझको प्राण के समान प्यारी है।

जौं न मिलिहि बरु गिरिजहि जोगू ❀ गिरि जड़ सहज कहिहि सब लोगू
सोइ बिचारि पति करहु बिबाहू ❀ जेहि न बहोरि[1] होइ उर दाहू

यदि पार्वती के योग्य वर न मिला, तो सब लोग कहेंगे कि पर्वत स्वभाव ही से जड़ (मूर्ख) होता है। हे नाथ ! इस बात को विचारकर ही विवाह कीजिए, जिसमें फिर पीछे हृदय में संताप न हो।

---

१. फिर।

अस कहि परी चरन धरि सीसा ❀ बोले सहित सनेह गिरीसा
बरु पावक प्रगटइ ससि माहीं ❀ नारद बचनु अन्यथा नाहीं

यों कहकर पार्वती की माता ने पति के चरणों पर सिर रख दिया। तब हिमवान् ने स्नेह से कहा—चाहे चन्द्रमा से अग्नि प्रकट हो, पर नारदजी के वचन झूठे नहीं हो सकते।

दो॰ प्रिया सोच परिहरहु सब सुमिरहु श्रीभगवान।
पारबतिहि निरमयेउ[1] जेहि सोइ करिहि कल्यान।७१।

हे प्रिये! तुम सब चिन्ता छोड़कर श्रीभगवान् का स्मरण करो। जिन्होंने पार्वती को रचा है, वे ही कल्याण करेंगे।

अब जौ तुम्हहि सुता पर नेहू ❀ तौ अस जाइ सिखावनु देहू
करइ सो तपु जेहि मिलहिं महेसू ❀ आन उपाय न मिटिहि कलेसू

अब जो तुम्हें अपनी पुत्री पर स्नेह है, तो जाकर उसको ऐसी शिक्षा दो कि वह ऐसा तप करे, जिससे शिवजी मिलें। दूसरे उपाय से दुःख दूर नहीं होगा।

नारद बचन सगर्भ सहेतू ❀ सुन्दर सब गुन निधि बृपकेतू
अस बिचारि तुम तजहु असंका ❀ सबहिं भाँति संकरु अकलंका

नारदजी के वचन रहस्य से युक्त और कारण-सहित हैं। शिवजी समस्त सुन्दर गुणों की खान हैं। यह विचारकर तुम मिथ्या भय को दूर करो। शिवजी सब तरह से निष्कलङ्क हैं।

सुनि पति बचन हरषि मन माहीं ❀ गई तुरत उठि गिरिजा पाहीं[2]
उमहि बिलोकि नयन भरि बारी ❀ सहित सनेह गोद बैठारी

पति के वचन सुनकर, मन में प्रसन्न होकर, मैना उठकर तुरन्त पार्वती के पास गईं। पार्वती को देखकर और आँखों में आँसू भरकर, प्यार के साथ उन्होंने उसे गोद में बिठा लिया।

बारहिं बार लेति उर लाई ❀ गदगद कंठ न कछु कहि जाई
जगत मातु सर्बग्य भवानी ❀ मातु सुखद बोलीं मृदु बानी

१. रचा। २. पास।

वह बार बार उसे गले से लगाने लगीं। अधिक प्रेम से उनका गला भर आया, उनसे कुछ कहा नहीं जाता। सब कुछ जानने वाली जगत् की माता भवानी (अपनी) माता को सुख देने के लिये कोमल वाणी से बोलीं—

दो० सुनहि मातु मैं दीख अस सपन सुनावउँ तोहिं।
सुन्दर गौर सुबिप्रवर अस उपदेसेउ मोहिं ॥७२॥

माँ, सुन ! मैं तुझे सुनाती हूँ। मैंने ऐसा स्वप्न देखा है कि मुझे एक सुन्दर गौरवर्ण ब्राह्मण ने ऐसा उपदेश दिया :—

करहि जाइ तपु सैलकुमारी ❀ नारद कहा सो सत्य बिचारी
मातु पितहि पुनि यह मत भावा ❀ तपु सुखप्रद दुख दोष नसावा

"हे पार्वती ! जाकर तप कर। नारदजी ने जो कहा है, उसे सत्य समझ। फिर यह बात तेरे माता-पिता को भी अच्छी लगी है। तप सुख देने वाला, दुःख और दोष को मिटाने वाला है।

तपबल रचइ प्रपंचु बिधाता ❀ तपबल बिष्नु सकल जग त्राता
तपबल संभु करहिं संघारा ❀ तपबल सेषु धरइ महि भारा

तप ही के बल से ब्रह्मा संसार को रचते हैं और तप ही के बल से विष्णु सारे जगत् का पालन करते हैं। तप ही के बल से शंभु जगत् का संहार करते हैं और तप ही के बल से शेषजी पृथ्वी का भार धारण करते हैं।

तप अधार सब सृष्टि भवानी ❀ करहि जाइ तपु अस जिय जानी
सुनत बचन बिसमित महतारी ❀ सपन सुनायउ गिरिहि हँकारी[1]

हे भवानी ! सारी सृष्टि तप ही के सहारे है। ऐसा जी में जानकर तू जा कर तप कर"। यह बात सुनकर पार्वती की माता को बड़ा अचरज हुआ। उसने हिमवान् को बुलाकर वह स्वप्न सुनाया।

मातु पितहि बहु बिधि समुझाई ❀ चली उमा तप हित हरषाई
प्रिय परिवार पिता अरु माता ❀ भए बिकल मुख आव न बाता

माता-पिता को बहुत तरह से समझाकर पार्वती तप करने के लिये हर्ष के साथ चलीं। प्यारे कुटुम्बीजन, माता और पिता सब बहुत विकल हो गये। किसी के मुंह से बात नहीं निकलती।

---

१. बुलाकर।

दो० बेदसिरा मुनि आइ तब सबहिं कहा समुझाइ।
पारबती महिमा सुनत रहे प्रबोधहि पाइ ॥७३॥

तब वेदशिरा मुनि ने आकर सबको समझाकर कहा। पार्वती की महिमा सुनकर सबको समाधान हो गया।

उर धरि उमा प्रानपति चरना ❀ जाइ बिपिन लागीं तपु करना
अति सुकुमार न तनु तप जोगू ❀ पति पद सुमिरि तजेउ सब भोगू

प्राणपति शिवजी के चरणों को हृदय में धारण करके पार्वती वन में जाकर तप करने लगीं। पार्वती का बहुत सुकुमार शरीर तप के योग्य नहीं था; पर तो भी पति के चरणों का स्मरण करके उन्होंने सब भोगों को तज दिया।

नित नव चरन उपज अनुरागा ❀ बिसरी देह तपहि मन लागा
संबत सहस मूल फल खाए ❀ सागु खाइ सत बरष गवाँए

उनके हृदय में पति के चरणों में नित्य नया प्रेम उत्पन्न होने लगा और तप में ऐसा मन लगा कि देह की सारी सुध बिसर गई। एक हज़ार बरस तक उन्होंने मूल और फल खाये और फिर सौ बरस साग-पात खाकर बिताये।

कछु दिन भोजनु बारि बतासा ❀ किए कठिन कछु दिन उपबासा
बेल पाति महि परै सुखाई ❀ तीनि सहस संबत सोइ खाई

कुछ दिन जल और वायु का भोजन किया और फिर कुछ दिन कठिन उपवास किया। बेल-पत्र जो धरती पर गिरकर सूख जाते थे, तीन हज़ार वर्ष तक उन्हीं को खाया।

पुनि परिहरे सुखानेउ परना[1] ❀ उमहि नामु तब भयउ अपरना
देखि उमहिं तप खीन सरीरा ❀ ब्रह्मगिरा भइ गगन गँभीरा

फिर सूखे पत्ते भी छोड़ दिये, तभी से पार्वती का नाम अपर्णा हुआ। तप से उमा का शरीर क्षीण देखकर आकाश से गम्भीर ब्रह्म-वाणी हुई।

दो० भयउ मनोरथ सुफल तव सुनु गिरिराज कुमारि।
परिहरु दुसह कलेस सब अब मिलिहहिं त्रिपुरारि ।७४।

"हे पर्वतराज की पुत्री! सुन। तेरा मनोरथ सफल हुआ। तू अब सब

१. पत्ता।

असह्य क्लेशों को त्याग दे। अब तुझे शिवजी मिलेंगे।

अस तपु काहुँ न कीन्ह भवानी ❀ भए अनेक धीर मुनि ग्यानी
अब उर धरहु ब्रह्म बर बानी ❀ सत्य सदा संतत सुचि जानी

हे भवानी! धीर मुनि और ज्ञानी बहुत हुए, पर ऐसा (कठोर) तप किसी ने नहीं किया। अब तू श्रेष्ठ ब्रह्मा की वाणी को सदा सत्य और निरन्तर पवित्र समझकर अपने हृदय में रख।

आवहिं पिता बुलावन जबहीं ❀ हठ परिहरि घर जायहु तबहीं
मिलहिं तुम्हहिं जब सप्त रिषीसा ❀ जानेहु तब प्रमान बागीसा

जब तुम्हारे पिता तुम्हें बुलाने आयें, तब तुम हठ छोड़कर घर चली जाना। और जब तुमको सप्तर्षि मिलें, तब तुम मेरी वाणी को सत्य समझना।"

सुनत गिरा बिधि गगन बखानी ❀ पुलक गात गिरिजा हरषानी
उमा चरित सुंदर मैं गावा ❀ सुनहु संभु कर चरित सुहावा

आकाश से कही हुई ब्रह्मा की वाणी को सुनते ही पार्वती के रोम खड़े हो गये और वे बहुत प्रसन्न हुईं। याज्ञवल्क्यजी भरद्वाजजी से कहने लगे—मैंने पार्वती का सुन्दर चरित सुना दिया, अब शिवजी का सुहावना चरित सुनो।

जब तें सती जाइ तनु त्यागा ❀ तब तें सिव मन भयउ बिरागा
जपहिं सदा रघुनायक नामा ❀ जहँ तहँ सुनहिं राम गुन ग्रामा

जब से सती ने जाकर शरीर छोड़ा, तब से शिवजी के मन में वैराग्य हो गया। वे सदा राम-नाम जपने लगे और जहाँ-तहाँ रामचन्द्रजी के गुणों के वर्णन सुनने लगे।

दो०— चिदानंद सुखधाम सिव बिगत मोह मद काम।
बिचरहिं महि धरि हृदय हरि सकल लोक अभिराम।७५

चिदानन्द, सुख के धाम, मोह, मद और काम से रहित, सारे लोकों को आनन्द देनेवाले भगवान् को हृदय में धरकर शिवजी पृथ्वी पर विचरने लगे।

कतहुँ मुनिन्ह उपदेसहिं ग्याना ❀ कतहुँ[1] राम गुन करहिं बखाना
जदपि अकाम तदपि भगवाना ❀ भगत बिरह दुख दुखित सुजाना

१. कहीं।

वे कहीं मुनियों को ज्ञान का उपदेश देते और कहीं रामचन्द्रजी के गुणों का वर्णन करते थे। यद्यपि भगवान् शिवजी कामना-रहित हैं, पर तो भी भक्त (पार्वती) के विरह-दुःख से दुःखित हैं।

एहि बिधि गयउ काल बहु बीती ❀ नित नव होइ राम पद प्रीती
नेमु प्रेमु संकर कर देखा ❀ अविचल हृदयँ भगति कै रेखा

इस प्रकार बहुत समय बीत गया। रामचन्द्रजी के चरणों की नित्य-नई प्रीति होने लगी। जब रामचन्द्रजी ने शिवजी का नेम, प्रेम और उनके हृदय में भक्ति की अटल छाप देखी

प्रगटे राम कृतग्य कृपाला ❀ रूप सील निधि तेज बिसाला
बहु प्रकार संकरहिं सराहा ❀ तुम्ह बिनु अस ब्रतु को निरबाहा

तब वे कृपालु और उपकार को मानने वाले, रूप और शील के भण्डार और महान् तेजस्वी रामचन्द्रजी प्रकट हुए। उन्होंने बहुत तरह से शिवजी की बड़ाई की और कहा—तुम्हारे बिना ऐसा व्रत कौन निबाह सकता है?

बहु बिधि राम सिवहिं समुझावा ❀ पारबती कर जनमु सुनावा
अति पुनीत गिरिजा कै करनी ❀ बिस्तर[1] सहित कृपानिधि बरनी

रामचन्द्रजी ने बहुत तरह से शिवजी को समझाया और पार्वती का जन्म सुनाया। कृपानिधि रामचन्द्रजी ने पार्वती की अति पवित्र करनी का वर्णन विस्तारपूर्वक किया।



अब बिनती मम सुनहु सिव जौं मो पर निज नेहु।
जाइ बिबाहहु सैलजहिं यह मोहिं माँगे देहु ॥७६॥

उन्होंने शिवजी से कहा—हे शिव! यदि मुझ पर आपका स्नेह है, तो आप अब मेरी विनती सुनें। आप मुझे यही माँगे दीजिये कि जाकर पार्वती के साथ ब्याह कर लें।

कह सिव जदपि उचित अस नाहीं ❀ नाथ बचन पुनि मेटि न जाहीं
सिर धरि आयसु करिअ तुम्हारा ❀ परम धरमु यह नाथ हमारा

शिवजी ने कहा—यद्यपि ऐसा उचित नहीं है, तो भी प्रभु की बात टाली

---

१. विस्तार।

नहीं जा सकती। आपकी आज्ञा को शिरोधार्य करके पालन करूँ, हे नाथ! मेरा यही परमधर्म है।

मातु पिता गुर प्रभु कै बानी ❁ बिनहिं बिचार करिअ सुभ जानी
तुम्ह सब भाँति परम हितकारी ❁ अग्या सिर पर नाथ तुम्हारी

माता, पिता, गुरु और स्वामी की बात को बिना किसी हिचक के शुभ जानकर करना (मानना) चाहिये। आप तो सब तरह से मेरे परम हितकारी हैं। हे नाथ! आपकी आज्ञा मेरे सिर पर है।

प्रभु तोषेउ सुनि सङ्कर बचना ❁ भगति बिबेक धरम जुत रचना
कह प्रभु हर तुम्हार पन रहेऊ ❁ अब उर राखेहु जो हम कहेऊ

शिवजी की भक्ति, ज्ञान और धर्मयुक्त वचन-रचना सुनकर रामचन्द्रजी बहुत संतुष्ट हुए। प्रभु ने कहा—हे हर! आपका प्रण पूरा हो गया। अब हमने जो कहा है, उसे हृदय में रखना।

अंतरधान भए अस भाखी ❁ संकर सोइ मूरति उर राखी
तबहिं सप्तरिषि[1] सिव पहिं आए ❁ बोले प्रभु अति बचन सुहाए

यों कहकर रामचन्द्रजी अन्तर्द्धान हो गये। शिवजी ने उनकी वही मूर्ति अपने हृदय में रखली। उसी समय सप्तर्षि शिवजी के पास आये और शिवजी ने उनसे अति सुन्दर वचन कहे।

दो०— पारबती पहिं जाइ तुम्ह प्रेम परिच्छा लेहु।
गिरिहिं प्रेरि पठयेहु भवन दूरि करेहु संदेहु ॥७७॥

आप लोग पार्वती के पास जाकर उनके प्रेम की परीक्षा लीजिये और हिमाचल से कह-सुनकर पार्वती को घर भिजवाइये और उनके सन्देह को दूर कीजिये।

तब रिषि तुरत गौरि पहँ गयऊ ❁ देखि दसा मुनि बिस्मय भयऊ
रिषिन्ह गौरि देखी तहँ कैसी ❁ मूरतिवंत तपस्या जैसी

तब वे ऋषि तुरंत ही पार्वती के पास गये। पार्वती की दशा देखकर उनके मन में बड़ा आश्चर्य हुआ। ऋषियों ने वहाँ पार्वती को कैसा देखा, मानो मूर्तिमान तपस्या ही हो।

---

१. सप्तर्षि—कश्यप, अत्रि, वशिष्ठ, विश्वामित्र, गौतम और यमदग्नि।

बोले मुनि सुनु सैलकुमारी ❀ करहु कवन कारन तपु भारी
केहि अवराधहु का तुम्ह चहहू ❀ हम सन सत्य मरमु किन कहहू

मुनि बोले—हे शैलकुमारी सुनो, किस लिये तुम इतना बड़ा तप कर रही हो ? तुम किसकी आराधना कर रही हो ? और क्या चाहती हो ? तुम हमसे अपना भेद सत्य-सत्य क्यों नहीं कहती हो ?

सुनत रिषिन्ह के बचन भवानी ❀ बोली गूढ़ मनोहर बानी
कहत बचन मनु अति सकुचाई ❀ हँसिहहु सुनि हमारि जड़ताई

ऋषियों के वचन सुनकर भवानी मन को हरने वाली मर्मभरी वाणी बोलीं—बात कहते हुए मन बहुत सकुचाता है, आप लोग मेरी मूर्खता की बातें सुनकर हँसेंगे।

मनु हठ परा न सुनइ सिखावा ❀ चहत बारि पर भीति उठावा
नारद कहा सत्य सोइ जाना ❀ बिनु पंखन हम चहहिं उड़ाना
देखहु मुनि अविवेकु हमारा ❀ चाहिअ सदा सिवहिं भरतारा

मन ने हठ पकड़ लिया है। वह उपदेश नहीं सुनता। पानी पर वह दीवार खड़ी करना चाहता है। नारद जी ने जो कहा है, उसको सत्य मानकर मैं बिना पंख के उड़ना चाहती हूँ। हे मुनियो ! मेरा अज्ञान तो देखिये कि मैं सदा शिव ही को पति बनाना चाहती हूँ। [ललित अलंकार]

दो०— सुनत बचन बिहँसे रिषय गिरिसंभव तव देह।
नारद कर उपदेसु सुनि कहहु बसेउ को गेह ॥७८॥

पार्वती की बात सुनकर ऋषि लोग हँसे और बोले—हो तो तुम पर्वत की पुत्री ही। भला, कहो तो नारद का उपदेश सुनकर कौन घर में बसा या किसका घर बसा है ?

दच्छसुतन्ह उपदेसिन्हि जाई ❀ तिन फिरि भवन न देखा आई
चित्रकेतु कर घरु उन घाला ❀ कनककसिपु कर पुनि अस हाला

नारद जी ने दक्ष के पुत्रों को उपदेश दिया था, सो उन्होंने लौटकर घर देखा ही नहीं। उन्हींने चित्रकेतु का घर चौपट किया और हिरण्यकशिपु का भी यही हाल हुआ।

नारद सिख जे सुनहिं नर नारी ❀ अवसि होहिं तजि भवन भिखारी
मन कपटी तन सज्जन चीन्हा ❀ आपु सरिस सब ही चह कीन्हा

जो स्त्री-पुरुष नारद की सीख सुनते हैं, वे घर-बार छोड़कर अवश्य ही भिखारी हो जाते हैं। उनका मन तो कपटी है; पर शरीर पर सज्जनों के-से चिन्ह हैं। वे अपने समान सभी को (आवारा) बनाना चाहते हैं।

[व्याज-स्तुति अलंकार]

तेहि के बचन मानि बिस्वासा ❀ तुम्ह चाहहु पति सहज उदासा
निर्गुन निलज कुबेष कपाली ❀ अकुल अगेह दिगंबर ब्याली

उनके वचनों पर विश्वास करके तुम ऐसा पति चाहती हो, जो स्वभाव ही से उदासीन, गुणहीन, निर्लज्ज, बुरे वेष वाला, कपालों की माला पहनने वाला, कुलहीन, घर-द्वार-हीन, नंगा और साँपों को लपेटे रखने वाला है।

कहहु कवन सुख अस बरु पाएँ ❀ भल भूलिहु ठग के बौराएँ
पंच कहे सिव सती बिबाही ❀ पुनि अवडेरि[1] मरायेन्हि ताही

ऐसे वर के मिलने से कहो, तुमको क्या सुख होगा ? तुम ठग (नारद) के बहकाने में ख़ूब भूलीं। पहले पंचों के कहने से शिव ने सती के साथ ब्याह किया था; पर फिर उसे त्याग कर मरवा डाला।

दो० अब सुख सोवत सोचु नहिं भीख माँगि भव खाहिं।
सहज एकाकिन्ह के भवन कबहुँ कि नारि खटाहिं[2] ७९

अब शिव सुख से सोते हैं; उनको कोई चिन्ता नहीं रही। भीख माँगकर खाते हैं। भला, ऐसे जन्म से अकेले के घर में भी कभी स्त्रियाँ टिक सकती हैं।

[व्याज-स्तुति अलंकार]

अजहूँ मानहु कहा हमारा ❀ हम तुम्ह कह बर नीक बिचारा
अति सुन्दर सुचि सुखद सुसीला ❀ गावहिं बेद जासु जस लीला

अब भी हमारा कहा मानो। हमने तुम्हारे लिये अच्छा वर विचारा है। वह बहुत ही सुन्दर, पवित्र, सुखदाई और सुशील है, जिसके यश की लीला वेद गाते हैं।

---

१. त्यागकर। २. टिक सकती हैं।

दूषन रहित सकल गुन रासी ❀ श्रीपति पुर बैकुण्ठ निवासी
अस बर तुम्हहिं मिलाउब आनी ❀ सुनत बिहँसि कह बचन भवानी

वह दोषों से रहित और सारे गुणों की राशि, लक्ष्मी का स्वामी और बैकुण्ठपुरी का रहने वाला है। ऐसे वर को लाकर हम तुमसे मिलादेंगे। यह सुनकर भवानी हँसकर बोलीं—

सत्य कहेहु गिरिभव तनु एहा ❀ हठ न छूट छूटै बरु देहा
कनकउ पुनि पषान तें होई ❀ जारेहुँ सहजु न परिहर सोई

आपने यह सच ही कहा है कि मेरा यह शरीर पर्वत से उत्पन्न हुआ है। इसलिये हठ तो नहीं छूटेगा, देह भले ही छूट जाय। सोना भी तो पत्थर से उत्पन्न होता है; पर वह तपाने पर भी अपना स्वभाव नहीं छोड़ता।

नारद बचन न मैं परिहरऊँ ❀ बसउ भवन उजरउ नहिं डरऊँ
गुर के बचन प्रतीति न जेही ❀ सपनेहु सुगम न सुख सिधि तेही

मैं नारद मुनि के वचनों को नहीं छोड़ूंगी, चाहे घर बसे, या उजड़े, मैं इससे नहीं डरती। जिसको गुरु के वचनों पर विश्वास नहीं है, उसको सुख और सिद्धि स्वप्न में भी सुगम नहीं होती।

दो०— **महादेव अवगुन भवन बिष्णु सकल गुन धाम।**
जेहि कर मनु रम जाहि सन तेहि तेही सन काम॥८०॥

माना कि महादेवजी अवगुणों के घर हैं और विष्णु भगवान् सारे गुणों की खान हैं। पर जिसका मन जिसमें रम गया है, उसको तो उसी से काम है।

जौं तुम्ह मिलतेहु प्रथम मुनीसा ❀ सुनतिउँ सिख तुम्हारि धरि सीसा
अब मैं जनमु संभु हित हारा ❀ को गुन दूषन करै बिचारा

हे मुनीश्वरो! जो आप पहले मिलते, तो मैं आपका उपदेश सिर चढ़ाकर सुनती। अब तो मैं अपना जन्म शिवजी के लिये हार चुकी। गुण-दोषों का विचार अब कौन करे?

जौं तुम्हरे हठ हृदयँ बिसेषी ❀ रहि न जाइ बिनु किए बरेषी[1]
तौ कौतुकिअन्ह आलसु नाहीं ❀ बर कन्या अनेक जग माहीं

---

१. वर रक्षा (बरच्छा), विवाह की बातचीत।

यदि आपके हृदय में बहुत ही हठ है और विवाह की बातचीत किये बिना रहा नहीं जाता, तो संसार में कन्या और वर बहुत हैं। खेलवाड़ करने वालों को आलस्य भी नहीं होता।

जनम कोटि लगि रगरि हमारी ❀ बरौं संभु न तु रहौं कुआँरी
तजौं न नारद कर उपदेसू ❀ आपु कहहिं सत बार महेसू

मेरा तो करोड़ जन्मों तक यही हठ है कि, "या तो शम्भु को बरूँगी और नहीं तो कुमारी रहूँगी।" स्वयं शिवजी सौ बार कहें, तो भी नारदजी के उपदेश को न छोड़ूंगी।

मैं पा परौं कहै जगदम्बा ❀ तुम्ह गृह गवनहु भयउ बिलंबा
देखि प्रेम बोले मुनि ग्यानी ❀ जय जय जगदम्बिके भवानी

जगन्माता (पार्वती) ने कहा—मैं आपके पाँव पड़ती हूँ। आप अपने घर जाइये, बहुत देर हो गई। (भवानी का शिवजी में ऐसा) प्रेम देखकर ज्ञानी मुनि बोले—हे भवानी! हे जगन्माता! आपकी जय हो! जय हो!!

दो०—तुम्ह माया भगवान सिव सकल जगत पितु मातु।
नाइ चरन सिरु मुनि चले पुनि पुनि हरषतु गातु॥८१॥

आप माया हैं और शिवजी भगवान् हैं। दोनों समस्त जगत् के माता-पिता हो। (इतना कह) पार्वती के चरणों में सिर नवाकर बारम्बार पुलकित होते हुये मुनि चल दिये।

जाइ मुनिन्ह हिमवंत पठाए ❀ करि बिनती गिरिजहिं गृह ल्याए
बहुरि सप्तरिषि सिव पहिं जाई ❀ कथा उमा कै सकल सुनाई

मुनियों ने जाकर हिमवान् को भेजा और वे विनती करके पार्वती को घर ले आये। फिर उन सात ऋषियों ने शिवजी के पास जाकर उमा की सारी कथा कह सुनाई।

भए मगन सिव सुनत सनेहा ❀ हरषि सप्तरिषि गवने गेहा
मनु थिरु करि तब संभु सुजाना ❀ लगे करन रघुनायक ध्याना

पार्वती की प्रीति सुनकर शिवजी बहुत प्रसन्न हुए। सप्तर्षि हर्षित होकर अपने घर चले गये। तब सुजान शिवजी मन को स्थिर करके रघुनाथजी का ध्यान करने लगे।

तारकु असुर भयउ तेहि काला ❀ भुज प्रताप बल तेज बिसाला
तेइ सब लोक लोकपति जीते ❀ भए देव सुख संपति रीते[1]

उन्हीं दिनों तारक नाम का एक असुर हुआ, जिसके भुजाओं का बल, प्रताप और तेज बहुत बड़ा था। उसने सब लोक और लोकपालों को जीत लिया और सारे देवता सुख-सम्पत्ति से रहित हो गये।

अजर अमर सो जीति न जाई ❀ हारे सुर करि बिबिध लराई
तब बिरंचि सन जाइ पुकारे ❀ देखे बिधि सब देव दुखारे

वह अजर-अमर था। किसी से जीता नहीं जाता था। देवता उसके साथ बहुत-सी लड़ाइयाँ लड़कर हार गये। तब सब देवताओं ने ब्रह्मा के पास जाकर पुकार मचाई। ब्रह्मा ने देखा कि सब देवता बहुत दुखी हैं।

दो॰ सब सन कहा बुझाइ बिधि दनुज निधन तब होइ।
संभु सुक्र संभूत सुत एहि जीतै रन सोइ ॥८२॥

ब्रह्मा ने सबको समझाकर कहा—इस दैत्य की मृत्यु तब होगी, जब शिवजी के वीर्य से पुत्र उत्पन्न हो; वही इसे युद्ध में जीतेगा।

मोर कहा सुनि करहु उपाई ❀ होइहि ईस्वर करिहि सहाई
सती जो तजी दच्छ मख देहा ❀ जनमी जाइ हिमाचल गेहा

मेरी बात सुनकर उपाय करो। ईश्वर सहायता करेगा, तो काम बन जायेगा। सती ने जो दक्ष के यज्ञ में शरीर छोड़ा था, वह हिमाचल के घर जाकर जन्मी है।

तेइ तपु कीन्ह सम्भु पति लागी ❀ सिव समाधि बैठे सब त्यागी
जदपि अहइ असमंजस भारी ❀ तदपि बात एक सुनहु हमारी

उसने शिवजी को पति बनाने के लिये तप किया है; पर शिवजी सब छोड़-छाड़कर समाधि लगा बैठे हैं। यद्यपि है तो बड़े असमंजस की बात तथापि मेरी एक बात सुनो।

पठवहु काम जाइ सिव पाहीं ❀ करइ छोभु संकर मन माहीं
तब हम जाइ सिवहिं सिर नाई ❀ करवाउब बिबाह बरिआई

तुम जाकर कामदेव को शिवजी के पास भेजो। वह जाकर उनके मन में

१. रहित, खाली।

छोभ पैदा करे। तब हम जाकर शिवजी के चरणों पर सिर रखकर ज़बरदस्ती उनका विवाह करा देंगे।

एहि विधि भलेहिं देवहित होई ❁ मत अति नीक कहइ सब कोई
अस्तुति सुरन्ह कीन्हि अति हेतू ❁ प्रगटेउ विषमबान झखकेतू

इस तरह से भले ही देवताओं का कल्याण हो सकता है। सबने कहा—यह सम्मति तो बहुत अच्छी है। फिर देवों ने बड़े प्रेम से स्तुति की। तब पाँच बाण धारण करने वाला और मछली के चिन्हयुक्त ध्वजा वाला कामदेव प्रकट हुआ।

दो०—सुरन्ह कही निज बिपति सब सुनि मन कीन्ह बिचार।
संभु बिरोध न कुसल मोहिं बिहँसि कहेउ अस मार[1]।८३

देवताओं ने कामदेव से अपनी सारी विपत्ति कह सुनाई। सुनकर कामदेव ने मन में विचार किया और फिर हँसकर कहा—शिवजी के साथ विरोध करने में मेरी कुशल नहीं है।

तदपि करब मैं काजु तुम्हारा ❁ स्रुति कह परम धरम उपकारा
पर हित लागि तजइ जो देही ❁ संतत[2] संत प्रसंसहिं तेही

तो भी मैं तुम्हारा काम तो करूँगा; क्योंकि वेदों ने कहा है—परोपकार परमधर्म है। जो दूसरे के हित के लिये अपना शरीर छोड़ता है, सज्जन सदा उसकी बड़ाई करते हैं।

अस कहि चलेउ सबहिं सिरु नाई ❁ सुमन धनुष कर सहित सहाई
चलत मार अस हृदय बिचारा ❁ सिव बिरोध ध्रुव[3] मरनु हमारा

इतना कह और सबको सिर नवाकर कामदेव अपना पुष्प का धनुष हाथ में लेकर अपने सहायक वसन्त के साथ चला। चलते समय कामदेव ने अपने मन में यह सोचा कि शिवजी के साथ विरोध करने में मेरा मरण निश्चित है।

तब आपन प्रभाउ बिस्तारा ❁ निज बस कीन्ह सकल संसारा
कोपेउ जबहिं बारिचर केतू ❁ छन महँ मिटे सकल स्रुतिसेतू

तब उसने अपना प्रभाव फैलाया और सारे संसार को अपने वश में कर लिया। जिस समय उस मछली के चिह्न की ध्वजावाले कामदेव ने कोप किया,

---

१. कामदेव। २. सदा। ३. निश्चय।

उस समय एक क्षणभर में वेदों की सारी मर्यादा जाती रही।

ब्रह्मचर्ज ब्रत संजम नाना ❀ धीरज धरम ग्यान बिग्याना
सदाचार जप जोग बिरागा ❀ सभय बिबेक कटकु सबु भागा

ब्रह्मचर्य, व्रत, नाना प्रकार के संयम, धीरज, धर्म, ज्ञान, विज्ञान, सदाचार, जप, योग, वैराग्य आदि विवेक की सारी सेना डरकर भाग गई।

छन्द—भागेउ बिबेकु सहाइ सहित सो सुभट संजुग महि मुरे।
सदग्रंथ पर्बत कंदरन्हि महुँ जाइ तेहि अवसर दुरे॥
होनिहार का करतार को रखवार जग खरभरु परा।
दुइ माथ केहि रतिनाथ जेहि कहुँ कोपि कर धनु सरु धरा॥

विवेक अपने सहायकों-सहित भाग गया। उसके योद्धा रण-भूमि से पीठ दिखा गये। उस समय अच्छे-अच्छे ग्रन्थ पर्वतों की गुफाओं में जा छिपे। सारे जगत् में खलबली मच गई और सब कोई कहने लगे—हे विधाता! अब क्या होने वाला है? हमारी रक्षा कौन करेगा? ऐसा दो सिर वाला वह कौन है, जिसके लिये कामदेव ने कोप करके हाथ में धनुष-बाण उठाया है?

दो०—जे सजीव जग चर अचर नारि पुरुष अस नाम।
ते निज निज मरजाद तजि भए सकल बस काम॥८४॥

संसार में जितने प्रकार के चर, अचर जीव थे और जिनकी स्त्री-पुरुष संज्ञा थी, वे सब अपनी-अपनी मर्यादा छोड़कर काम के वश हो गये।

सबके हृदय मदन अभिलाखा ❀ लता निहारि नवहिं तरु साखा
नदी उमगि अम्बुधि कहुँ धाई ❀ सङ्गम करहिं तलाव तलाई

सबके हृदय में काम की इच्छा हो गई। लता (वेल) को देखकर वृक्षों की डालियाँ झुकने लगीं। नदियाँ उमड़कर समुद्र की ओर दौड़ीं और ताल-तलैयाँ भी आपस में संगम करने (मिलने-जुलने) लगीं।

जहँ असि दसा जड़न कै बरनी ❀ को कहि सकइ सचेतन्ह करनी
पसु पच्छी नभ जल थल चारी ❀ भए कामबस समय बिसारी

जब जड़ (वृक्ष, नदी आदि) की यह दशा कही गई है, तब चेतन जीवों की करनी कौन कह सकता है? आकाश, जल और थल पर रहने वाले सारे

पशु-पक्षी समय को भुलाकर काम के वश में हो गये।

मदन अन्ध व्याकुल सब लोका ❀ निसि दिन नहिं अवलोकहिं कोका
देव दनुज नर किन्नर व्याला ❀ प्रेत पिसाच भूत बेताला

सब लोग कामांध होकर व्याकुल हो गये। चकवा और चकई रात-दिन नहीं देखते। देव, दैत्य, मनुज, किन्नर, साँप, प्रेत, पिशाच, भूत, बेताल—

इन्ह कै दसा न कहेउँ बखानी ❀ सदा काम के चेरे जानी
सिद्ध बिरक्त महा मुनि जोगी ❀ तेपि[1] कामबस भये बियोगी

मैंने इनकी दशा का वर्णन इसलिये नहीं किया कि इनको तो सदा कामदेव का गुलाम ही जानना चाहिये। सिद्ध, विरक्त, महामुनि और योगी भी काम के वश में हो गये और विरही बन गये।

छन्द—भए कामबस जोगीस तापस पामरन्ह की को कहै।
देखहिं चराचर नारिमय जे ब्रह्ममय देखत रहै॥
अबला बिलोकहिं पुरुषमय जगु पुरुष सब अबलामयं।
दुइ दण्ड भरि ब्रह्मांड भीतर काम कृत कौतुक अयं[2]॥

जब योगीश्वर और तपस्वी ही काम के वश हो गये, तब अधमों की कौन कहे? जो सब चराचर को ब्रह्ममय देखते थे, वे अब सबको स्त्रीमय देखने लगे। स्त्रियाँ सारे संसार को पुरुषमय देखने लगीं और पुरुष सबको स्त्रीमय देखने लगे। दो घड़ी तक सारे ब्रह्माण्ड में कामदेव का रचा हुआ यह तमाशा रहा।

सो॰ धरा न काहू धीर सबके मन मनसिज हरे।
जे राखे रघुबीर ते उबरे तेहि काल महुँ॥८५॥

किसी ने भी हृदय में धैर्य नहीं रक्खा। सबके मन कामदेव ने हर लिये। हाँ, जिनकी रघुनाथजी ने रक्षा की, वे ही उस समय बचे रहे।

उभय घरी अस कौतुक भयऊ ❀ जब लगि कामु संभु पहँ गयऊ
सिवहिं बिलोकि ससंकेउ मारू ❀ भयउ जथाथिति सब संसारू

दो घड़ी तक यह तमाशा हुआ, जबतक कामदेव शिवजी के पास गया।

---

१. वे भी। २. यह, ऐसा।

शिवजी को देखकर कामदेव डरा और सारा संसार फिर जैसा का तैसा स्थिर हो गया।

भए तुरत जग जीव सुखारे ❀ जिमि मद उतरि गएँ मतवारे
रुद्रहिं देखि मदन भय माना ❀ दुराधर्ष दुर्गम भगवाना

तुरन्त जग के सब जीव सुखी हो गये, जैसे मतवाले मद उतर जाने पर सुखी हो जाते हैं। रुद्र को देखकर कामदेव भयभीत हो गया; क्योंकि शिवजी बड़े ही दुराधर्ष (अपराजेय) और दुर्गम हैं।

फिरत लाज कछु कहि नहिं जाई ❀ मरन ठानि मन रचेसि उपाई
प्रगटेसि तुरत रुचिर रितुराजा ❀ कुसुमित नव तरु राज बिराजा

लौट जाने में लज्जा है, कुछ कहा नहीं जाता (क्या करे, क्या न करे?) (अन्त में) मनमें मरने का निश्चय करके उसने उपाय रचा। तुरंत ही उसने सुन्दर ऋतुराज वसंत को प्रकट किया। नये फूले हुए वृक्षों की पाँतें सुशोभित हो गईं।

बन उपबन बापिका तड़ागा ❀ परम सुभग सब दिसा बिभागा
जहँ तहँ जनु उमगत अनुरागा ❀ देखि मुएहु मन मनसिज जागा

बन, उपवन, बावली, सरोवर और सब दिशायें बड़ी ही सुन्दर हो गयीं। जहाँ-तहाँ मानो प्रेम उमड़ रहा है, जिसे देखकर मरे मन में भी कामदेव जाग उठा।

छन्द—जागइ मनोभव मुएहु मन बन सुभगता न परै कही।
सीतल सुगंध सुमंद मारुत मदन अनल सखा सही।
बिकसे सरन्हि बहु कंज गुंजत पुंज मंजुल मधुकरा।
कलहंस पिक सुक सरस रव करि गान नाचहिं अपछरा॥

मरे हुए मन में भी कामदेव जागने लगा। वन की शोभा कही नहीं जा सकती। कामरूपी अग्नि का सच्चा मित्र शीतल, मन्द और सुगन्धित पवन चलने लगा। सरोवरों में अनेक प्रकार के कमल खिल गये, जिन पर सुन्दर भौंरों के झुण्ड के झुण्ड गुञ्जार करने लगे। राजहंस, कोयल और तोते रसीली बोली बोलने लगे और अप्सरायें गा-गा कर नाचने लगीं।



सकल कला करि कोटि बिधि हारेउ सेन समेत ।
चली न अचल समाधि सिव कोपेउ हृदय-निकेत ८६

कामदेव अपनी सेना समेत करोड़ों तरह की सब कलायें (उपाय) करके हार गया, पर शिवजी की अचल समाधि न डिगी। तब कामदेव कुपित हो उठा।

देखि रसाल बिटप बर साखा ❀ तेहि पर चढ़ेउ मदन मन माखा
सुमन चाप निज सर सन्धाने ❀ अति रिसि ताकि स्रवन लगि ताने

आम के वृक्ष की एक सुन्दर डाली देखकर कामदेव खिसियाकर उस पर चढ़ गया। उसने फूलों के धनुष पर अपने बाण चढ़ाये और अत्यन्त क्रोध से ताककर उन्हें कान तक तान लिया।

छाँड़ेउ बिषम बान उर लागे ❀ छूटि समाधि सम्भु तब जागे
भयउ ईस मन छोभु बिसेखी ❀ नयन उघारि सकल दिसि देखी

(कामदेव ने) तीक्ष्ण पाँच बाण मारे, वे शिवजी के हृदय में लगे, तब उनकी समाधि भंग हुई और वे जाग पड़े। शिवजी के मन में बहुत क्षोभ हुआ। उन्होंने आँखें खोलकर सब ओर देखा। [द्वितीय विभावना अलंकार]

सौरभ[1] पल्लव मदन[2] बिलोका ❀ भयउ कोप कंपेउ त्रय लोका
तब सिव तीसर नयन उघारा ❀ चितवत काम भयउ जरि छारा

उन्होंने आम के पत्तों में कामदेव को देखा और देखते ही क्रोध हुआ, जिससे तीनों लोक काँप उठे। तब शिवजी ने तीसरा नेत्र खोला और देखते ही कामदेव जलकर भस्म हो गया।

हाहाकार भयउ जग भारी ❀ डरपे सुर भए असुर सुखारी
समुझि कामसुख सोचहिं भोगी ❀ भए अकंटक साधक जोगी

जगत् में बड़ा हाहाकार मच गया। देवता डर गये और दैत्य सुखी हुए। भोगी लोग कामदेव के सुख को याद करके चिन्ता करने लगे और साधक योगी बेखटके हो गये।

छन्द-जोगी अकंटक भए पति गति सुनति रति मुरुछित भई।
रोदति बदति बहु भाँति करुना करति संकर पहिं गई ॥

१. आम। २. कामदेव।

अति प्रेम करि बिनती बिबिध बिधि जोरि कर सनमुख रही
प्रभु आसुतोष कृपाल सिव अबला निरखि बोले सही ॥

योगी अकंटक हो गये, कामदेव की स्त्री रति अपने पति की यह दशा सुनते ही मूर्च्छित हो गई। वह रोती-चिल्लाती, विलाप करती और अनेक प्रकार से करुणा करती शिवजी के पास गई। बड़े ही प्रेम से हाथ जोड़ और अनेक प्रकार से विनती करके वह सामने खड़ी हो गई। शीघ्र प्रसन्न होने वाले, कृपालु शिवजी स्त्री को देखकर सत्य वचन बोले—

दो०— अब तें रति तव नाथ कर होइहि नाम अनंग।
बिनु बपु[1] ब्यापिहि सबहि पुनि सुनु निज मिलन प्रसंग।

हे रति! अब से तेरे पति का नाम अनंग होगा। यह विना शरीर ही के सबको व्यापेगा। अब तू अपने स्वामी से मिलने की बात सुन।

जब जदुबंस कृष्न अवतारा ❀ होइहि हरन महा महिभारा
कृष्नतनय होइहि पति तोरा ❀ बचन अन्यथा होइ न मोरा

जब पृथ्वी के बढ़े हुए भार को हरने के लिये यदुवंश में श्रीकृष्णजी का अवतार होगा, तब उनका पुत्र (प्रद्युम्न) तेरा पति होगा। मेरा वचन मिथ्या नहीं हो सकता।

रति गवनी सुनि संकर बानी ❀ कथा अपर अब कहौं बखानी
देवन्ह समाचार सब पाए ❀ ब्रह्मादिक बैकुण्ठ सिधाए

शिवजी की बात सुनकर रति चली गई। अब आगे की कथा कहता हूँ। जब यह समाचार सब देवताओं को मालूम हुआ, तब ब्रह्मा आदि देवगण वैकुण्ठ को गये।

सब सुर बिष्नु बिरंचि समेता ❀ गए जहाँ सिव कृपानिकेता
पृथक पृथक तिन्ह कीन्ह प्रसंसा ❀ भए प्रसन्न चंद्र अवतंसा

तब वहाँ से विष्णु और ब्रह्मा-सहित सब देवगण वहाँ गये, जहाँ कृपा के घर शिवजी थे। उन्होंने शिवजी की अलग-अलग स्तुति की। चन्द्रशेखर शिवजी प्रसन्न हुए।

---

१. शरीर।

बोले कृपासिंधु बृषकेतू ❀ कहहु अमर¹ आए केहि हेतू
कह बिधि तुम्ह प्रभु अंतरजामी ❀ तदपि भगति बस बिनवौं स्वामी

कृपासागर शिवजी कहने लगे—हे देवताओ ! कहो, किसलिये आये हो ? ब्रह्माजी बोले—हे प्रभु ! आप अन्तर्यामी हैं, तथापि हे स्वामी ! भक्तिवश मैं आपसे विनती करता हूँ।

दो० सकल सुरन्ह के हृदय अस संकर परम उछाहु।
निज नयनन्हि देखा चहहिं नाथ तुम्हार बिबाहु ॥८८॥

हे शंकर ! सब देवताओं के मन में ऐसा उत्साह है कि हे नाथ ! वे अपनी आँखों से आपका विवाह देखना चाहते हैं।

यह उत्सव देखिअ भरि लोचन ❀ सोइ कछु करहु मदन मद मोचन
काम जारि रति कहँ बर दीन्हा ❀ कृपासिंधु यह अति भल कीन्हा

हे कामदेव के मद को चूर करने वाले ! आप ऐसा कीजिये, जिससे हम लोग इस उत्सव को आँख भरकर देख लें। हे कृपासागर ! कामदेव को भस्म करके आपने रति को जो वरदान दिया, सो बहुत ही अच्छा किया।

सासति² करि पुनि करहिं पसाऊ ❀ नाथ प्रभुन्ह कर सहज सुभाऊ
पारवती तपु कीन्ह अपारा ❀ करहु तासु अब अंगीकारा

हे नाथ ! श्रेष्ठ स्वामियों का सहज स्वभाव ही है कि पहले दण्ड देकर फिर वे कृपा किया करते हैं। पार्वती ने अपार तप किया है; अब उन्हें अंगीकार कीजिये।

सुनि बिधि बिनय समुझि प्रभु बानी ❀ ऐसइ होउ कहा सुखु मानी
तब देवन्ह दुंदुभी बजाई ❀ बरषि सुमन जय जय सुर साई³

ब्रह्मा की बात सुनकर और प्रभु (रामचन्द्रजी के वचनों को) याद करके शिवजी ने सुख से कहा—ऐसा ही हो। इतना सुनते ही देवताओं ने नगाड़े बजाये और फूलों की वर्षा करके वे कहने लगे—हे देवताओं के स्वामी ! तुम्हारी जय हो, जय हो।

अवसरु जानि सप्तरिषि आए ❀ तुरतहि बिधि गिरिभवन पठाए
प्रथम गए जहँ रहीं भवानी ❀ बोले मधुर बचन छल सानी

---

१. देवता। २. नाराज़। ३. स्वामी।

उचित अवसर जानकर सप्तर्षि आये और ब्रह्मा ने तुरन्त ही उन्हें हिमाचल के घर भेजा। वे पहले वहाँ गये, जहाँ पार्वती थीं। वे उनसे छल से भरे हुये (दिल्लगी के) मीठे वचन बोले—

दो०- कहा हमार न सुनेहु तब नारद के उपदेस।
अब भा झूठ तुम्हार पन जारेउ काम महेस ॥८९॥

नारद की बातों में आकर तुमने उस समय हमारी बात नहीं सुनी। अब तो तुम्हारा प्रण झूठा हो गया, क्योंकि शिवजी ने काम को जला डाला।

सुनि बोली मुसकाइ भवानी ❁ उचित कहेहु मुनिवर बिग्यानी
तुम्हरे जान काम अब जारा ❁ अब लगि सम्भु रहे सविकारा

यह सुनकर पार्वती मुस्कराकर बोलीं—हे विज्ञानी मुनीवरो! आपने ठीक ही कहा। आपकी समझ में शिवजी ने कामदेव को अब जलाया है और अब तक वे सविकार (कामी) रहे।

हमरे जान सदा सिव जोगी ❁ अज अनवद्य अकाम अभोगी
जौं मैं सिव सेयउँ अस जानी ❁ प्रीति समेत करम मन बानी

पर हमारी समझ से तो शिवजी सदा से योगी, अजन्मा, निन्दा-रहित, कामहीन और भोग-हीन हैं और यदि मैंने यही समझकर मन, वचन और कर्म से प्रेम-सहित शिवजी की सेवा की है,

तौ हमार पन सुनहु मुनीसा ❁ करिहहिं सत्य कृपानिधि ईसा
तुम्ह जो कहा हर जारेउ मारा ❁ सो अति बड़ अबिबेक तुम्हारा

तो हे मुनीश्वरो! सुनिये, कृपासागर शिवजी हमारी प्रतिज्ञा को सत्य करेंगे। आपने जो यह कहा कि शिवजी ने कामदेव को भस्म कर दिया, यह आपका बड़ा भारी अविवेक है।

तात अनल[1] कर सहज सुभाऊ ❁ हिम तेहि निकट जाइ नहिं काऊ
गए समीप सो अवसि नसाई ❁ असि मनमथ[2] महेस की नाई

हे तात! अग्नि का तो यह सहज स्वभाव ही है कि पाला उसके पास कभी जा ही नहीं सकता; और जाने पर तो वह अवश्य ही नष्ट हो जायगा। जिस प्रकार कामदेव महादेवजी के पास जाकर नष्ट हुआ।

---

१. आग। २. कामदेव।



दो०—हियँ हरषे मुनि बचन सुनि देखि प्रीति बिस्वास।
चले भवानिहिं नाइ सिर गए हिमाचल पास ॥९०॥

पार्वती की बात सुनकर और उनका प्रेम तथा विश्वास देखकर मुनि हृदय में बड़े प्रसन्न हुये। फिर वे भवानी को प्रणाम करके चले गये और हिमाचल के पास गये।

सब प्रसंग गिरिपतिहिं सुनावा ❀ मदन दहन सुनि अति दुखु पावा
बहुरि कहेउ रति कर बरदाना ❀ सुनि हिमवंत बहुत सुखु माना

मुनियों ने हिमाचल को सब हाल कह सुनाया। कामदेव के भस्म होने की बात सुनकर हिमाचल बहुत दुःखी हुये। फिर मुनियों ने रति के वरदान की बात कही। उसे सुनकर हिमवन्त ने बहुत सुख माना।

हृदयँ बिचारि सम्भु प्रभुताई ❀ सादर मुनिबर लिए बोलाई
सुदिन सुनखत सुघरी सोचाई ❀ बेगि बेद बिधि लगन धराई

शिवजी की प्रभुता को मन में सोचकर हिमाचल ने मुनियों को आदर-सहित बुला लिया और उनसे शुभ दिन, शुभ नक्षत्र और शुभ घड़ी सोधवाकर जल्दी वेद-रीति से लग्न निश्चय करा लिया।

पत्री सप्तरिषिन्ह सोइ दीन्ही ❀ गहि पद बिनय हिमाचल कीन्ही
जाइ बिधिहि तिन्ह दीन्ह सो पाती ❀ बाँचत प्रीति न हृदय समाती

फिर हिमाचल ने वह लग्न-पत्रिका ऋषियों को दे दी और उनके पाँव पकड़कर विनती की। वह लग्न-पत्रिका उन्होंने ले जाकर ब्रह्मा को दी। उसको पढ़ते समय उनके हृदय में प्रेम समाता न था।

लगन बाँचि अज सबहिं सुनाई ❀ हरषे मुनि मुनि सुर समुदाई
सुमन बृष्टि नभ बाजन बाजे ❀ मंगल कलस दसहुँ दिसि साजे

ब्रह्मा ने सबको लग्न पढ़कर सुनाया, तो उसे सुनकर मुनि तथा देवगण बहुत ही हर्षित हुये। आकाश से फूलों की वर्षा होने लगी, बाजे बजने लगे और दशों दिशाओं में मंगल कलश सजा दिये गये।

---

१. कामदेव।

दो० लगे सँवारन सकल सुर वाहन विविध विमान।
होहिं सगुन मंगल सुभग करहिं अपछरा[1] गान॥९१॥

सब देवता अपने भाँति-भाँति के वाहन (सवारी) और विमान सँवारने लगे, शुभ और सुख देने वाले शकुन होने लगे और अप्सरायें गाने लगीं।

सिवहिं संभु गन करहिं सिंगारा ❀ जटा मुकुट अहि मौरु संवारा
कुंडल कंकन पहिरे व्याला ❀ तन विभूति पट केहरि छाला

शिवजी के गण शिवजी का शृङ्गार करने लगे। जटाओं का मुकुट बना कर उस पर साँपों का मौर सजाया गया। शिवजी ने साँपों के कुण्डल और कंकन पहने। शरीर पर विभूति लगाई और वस्त्र के स्थान पर बाघम्बर लपेट लिया।

ससि ललाट सुन्दर सिर गंगा ❀ नयन तीनि उपवीत[2] भुजंगा
गरल कंठ उर नर सिर माला ❀ असिव वेप सिव धाम कृपाला

शिवजी के सुन्दर माथे पर चन्द्रमा, सिर पर गंगाजी, तीन नेत्र, साँपों का जनेऊ, कण्ठ में विष और छाती पर मुण्डों की माला। शिवजी का वेप अशुभ होने पर भी वे कल्याण के घर और कृपालु हैं।

कर त्रिसूल अरु डँवरू विराजा ❀ चले वसह चढ़ि वाजहिं वाजा
देखि सिवहिं सुरत्रिय मुसुकाहीं ❀ वर लायक दुलहिनि जग नाहीं

एक हाथ में त्रिशूल और दूसरे में डमरू शोभायमान हुआ। वे बैल पर चढ़कर चले। बाजे बज रहे हैं। शिवजी को देखकर देवताओं की स्त्रियाँ मुस्कुराती हैं (और कहती हैं) कि इस वर के योग्य दुलहिन संसार में नहीं है।

बिष्नु विरंचि आदि सुर ब्राता ❀ चढ़ि चढ़ि वाहन चले बराता
सुर समाज सब भाँति अनूपा ❀ नहिं बरात दूलह अनुरूपा

विष्णु और ब्रह्मा आदि सब देवताओं के समूह अपने-अपने वाहनों पर चढ़कर बरात में चले। देवताओं का समाज सब प्रकार से अनुपम था; पर बरात दूलह के योग्य न थी।

दो० बिष्नु कहा अस बिहँसि तब बोलि सकल दिसिराज।
बिलग बिलग होइ चलहु सब निज निज सहित समाज

१. अप्सरा। २. जनेऊ।

तब विष्णु ने सब दिग्पालों को बुलाकर हँसकर कहा—सब लोग अलग-अलग होकर अपने-अपने दल के साथ चलो।

बर अनुहारि बरात न भाई ❀ हँसी करैहहु पर पुर जाई
बिष्नु बचन सुनि सुर मुसुकाने ❀ निज निज सेन सहित बिलगाने

भाई, हम लोगों की यह बरात वर के योग्य नहीं है। पराये गाँव में जा कर क्या हँसी कराओगे? विष्णु की बात सुनकर सब देवगण मुस्कुराये और अपनी-अपनी सेना-सहित अलग-अलग हो गये।

मन ही मन महेस मुसुकाहीं ❀ हरि के ब्यंग बचन नहिं जाहीं
अति प्रिय बचन सुनत प्रिय केरे ❀ भृंगिहिं प्रेरि सकल गन टेरे

शिवजी मन ही मन मुस्कुराते हैं कि हरि की व्यंग्य की बातें (दिल्लगी) नहीं छूटतीं। अपने प्यारे के बहुत मधुर वचन सुनकर उन्होंने भृङ्गी को भेजकर अपने सब गणों को बुलवा लिया।

सिव अनुसासन सुनि सब आए ❀ प्रभु पद जलज सीस तिन्ह नाए
नाना बाहन नाना बेषा ❀ बिहँसे सिव समाज निज देखा

शिवजी की आज्ञा सुनते ही सब चले आये और आकर उन्होंने प्रभु के चरण-कमलों में सिर नवाया। उनकी तरह-तरह की सवारियाँ और तरह-तरह के वेष थे। शिवजी अपने समाज को देखकर हँसे।

कोउ मुख हीन बिपुल[1] मुख काहू ❀ बिनु पद कर कोउ बहु पद बाहू
बिपुल नयन कोउ नयन बिहीना ❀ रिष्टपुष्ट कोउ अति तन खीना

कोई बिना मुख का है और किसी के बहुत-से मुख हैं, कोई बिना हाथ-पाँव का है और किसी के बहुत-से हाथ-पाँव हैं। किसी के बहुत-सी आँखें हैं और किसी के आँखें हैं ही नहीं। कोई बहुत मोटा-ताज़ा है तो कोई बहुत ही दुबला-पतला।

छंद-तन खीन कोउ अति पीन पावन कोउ अपावन गति धरें
भूषन कराल कपाल कर सब सद्य सोनित तन भरें
खर[2] स्वान[3] सुअर सृगाल[4] मुख गन बेष अगनित को गनै
बहु जिनिस[5] प्रेत पिसाच जोगि जमात बरनत नहिं बनै

१. बहुत। २. गधा। ३. कुत्ता। ४. सियार। ५. जाति, क़िस्म।

कोई बहुत दुबला और कोई ख़ूब मोटा, कोई पवित्र, कोई अपवित्र दशा धारण किये हुये है। भयंकर गहने पहने, हाथ में कपाल लिये और सब के सब शरीर में ताज़ा ख़ून लपेटे हुये हैं। किसी का मुंह गधे का-सा, किसी का कुत्ते का-सा, किसी का सुअर का-सा और किसी का सियार का-सा है। उनके असंख्य वेषों को कौन गिने ? बहुत प्रकार के प्रेत, पिशाच और योगियों की जमाते हैं, उनका वर्णन करते नहीं बनता।



नाचहिं गावहिं गीत परम तरंगी भूत सब।
देखत अति बिपरीत बोलहिं बचन बिचित्र बिधि॥९३

सब भूत, प्रेत बड़े मौजी हैं। वे नाचते हैं और गीत गाते हैं। देखने में बहुत ही बेढंगे-से जान पड़ते हैं और विचित्र ढंग से बोलते हैं।

जस दूलह तस बनी बराता ❀ कौतुक बिबिध होहिं मग जाता
इहाँ हिमाचल रचेउ बिताना ❀ अति बिचित्र नहिं जाइ बखाना

जैसा दूलह है, वैसी ही बरात बनी है। मार्ग में चलते हुये तरह-तरह के तमाशे होते जाते हैं। इधर हिमाचल ने ऐसा विचित्र मण्डप बनवाया कि जिस का वर्णन नहीं हो सकता।

सैल सकल जहँ लगि जग माहीं ❀ लघु बिसाल नहिं बरनि सिराहीं
बन सागर सब नदी तलावा ❀ हिमगिरि सब कहुँ नेवति पठावा

जगत् में जितने पहाड़ थे, क्या बड़े और क्या छोटे, जिनका वर्णन करके पार नहीं मिलता, तथा जितने बन, समुद्र, नदियाँ और तालाब थे सबको हिमाचल ने न्योता भेजा।

कामरूप सुन्दर तनु धारी ❀ सहित समाज सोह बर नारी
आए सकल हिमाचल गेहा ❀ गावहिं मंगल सहित सनेहा

वे सब अपनी-अपनी इच्छानुसार रूप धारण करने वाले सुन्दर शरीर धारण किये हुए, सुन्दरी स्त्रियों तथा समाजों के साथ सुशोभित हिमाचल के घर आये। सब स्नेह-सहित मङ्गल गीत गाते हैं।

प्रथमहिं गिरि बहु गृह सँवराए ❀ जथाजोग जहँ तहँ सब छाए
पुर सोभा अवलोकि सुहाई ❀ लागइ लघु बिरंचि निपुनाई

हिमाचल ने पहले ही से बहुत-से घरों को सजवा रक्खा था। उन्हीं में वे

जहाँ-तहाँ यथायोग्य उतर गये। उस पुर की सुन्दर शोभा देखकर ब्रह्मा की रचना-चातुरी भी तुच्छ लगती थी।

छंद—लघु लागि बिधि की निपुनता अवलोकि पुर सोभा सही।
बन बाग कूप तड़ाग सरिता सुभग सब सक को कही॥
मंगल बिपुल तोरन पताका केतु गृह गृह सोहहीं।
बनिता पुरुष सुन्दर चतुर छबि देखि मुनि मन मोहहीं॥

पुर की सुन्दर शोभा देखकर ब्रह्मा की रचना सचमुच तुच्छ लग रही है। वन, बाग, कुएँ, तालाब, नदियाँ सब सुन्दर हैं; उनका वर्णन कौन कर सकता है ? घर-घर बहुत-से मंगल-सूचक बन्दनवार और अनेक ध्वजा-पताका शोभित हो रहे हैं। वहाँ के सुन्दर और चतुर स्त्री-पुरुषों की छवि देखकर मुनियों के भी मन मोहित होते हैं।

दो०—जगदम्बा जहँ अवतरी सो पुर बरनि कि जाइ।
रिद्धि सिद्धि संपत्ति सुख नित नूतन अधिकाइ॥९४॥

जिस पुर में स्वयं जगदम्बा (पार्वती) ने जन्म लिया है, क्या उसकी शोभा का वर्णन किया जा सकता है ? वहाँ नित्य नई-नई ऋद्धि-सिद्धि और संपदा बढ़ती जाती हैं।

नगर निकट बरात सुनि आई ❀ पुर खरभरु सोभा अधिकाई
करि बनाव सजि बाहन नाना ❀ चले लेन सादर अगवाना[1]

जब बरात नगर के पास पहुँची, सुनकर नगर में चहल-पहल मच गई जिससे बड़ी शोभा और बढ़ गई। (पुरवासी लोग) अपनी-अपनी अनेक सवारियों को सजाकर आदर-सहित बरात को लेने के लिये चले।

हियँ हरषे सुर सेन निहारी ❀ हरिहि देखि अति भए सुखारी
सिव समाज जब देखन लागे ❀ बिडरि[2] चले बाहन सब भागे

देवताओं के समाज को देखकर सब लोग प्रसन्न हुए और विष्णु भगवान् को देखकर तो बहुत ही सुखी हुए। किन्तु जब वे शिवजी की मंडली को देखने लगे, तब उनकी सवारियों के हाथी, घोड़े आदि डरकर भाग चले।

---

१. आगे चलकर लेने के लिये। २. डर कर।

धरि धीरज तहँ रहे सयाने ❀ बालक सब लइ जीव पराने
गए भवन पूछहिं पितु माता ❀ कहहिं बचन भय कंपित गाता

कुछ बड़ी उम्र के समझदार लोग वहाँ धीरज धरकर खड़े रहे और लड़के तो अपना प्राण लेकर भाग गये। वे घर पहुँचे, तब उनके माता-पिता पूछते हैं और वे भय से काँपते हुये शरीर से ऐसा वचन कहते हैं।

कहिअ कहा कहि जाइ न बाता ❀ जम कर धारि किधौं बरिआता
बरु बौराह बरद असवारा ❀ ब्याल कपाल बिभूषन छारा

क्या कहें, कोई बात कही नहीं जाती। यह बरात है या यमराज की सेना? दूल्हा-पागल है; बैल पर बैठा हुआ है; साँप, कपाल और राख ही उसके गहने हैं।

छंद—तन छार ब्याल कपाल भूषन नगन जटिल भयंकरा।
सँग भूत प्रेत पिसाच जोगिनि बिकट मुख रजनीचरा॥
जो जिअत रहिहि बरात देखत पुन्य बड़ तेहि कर सही।
देखिहि सो उमा बिबाह घर घर बात असि लरिकन्ह कही॥

दूल्हे के शरीर पर राख लगी हुई है, साँप और कपाल के गहने हैं, वह बिलकुल नंगा, जटाधारी और डरावना है। उसके साथ भयंकर मुँहवाले भूत, प्रेत, पिशाच, योगिनी और राक्षस हैं। जो बरात को देखकर जीता बच रहेगा, सचमुच उसके बड़े ही पुण्य हैं, और वही पार्वती का विवाह देखेगा। लड़कों ने घर-घर यही बात कही।

दो०—समुझि महेस समाज सब जननि जनक मुसुकाहिं।
बाल बुझाए बिबिध बिधि निडर होहु डर नाहिं॥९५॥

महादेवजी का समाज समझकर माता-पिता मुस्कुराते हैं। उन्होंने लड़कों को बहुत तरह से समझाया कि निर्भय होओ; कोई डर नहीं है।

लइ अगवान बरातहि आए ❀ दिए सबहि जनवास सुहाए
मैना सुभ आरती सँवारी ❀ संग सुमंगल गावहिं नारी

अगवान लोग बरात को साथ लिवा लाये और उन्होंने सबको सुन्दर जनवासे में ठहरा दिया। मैना (पार्वती की माता) ने शुभ आरती सजाई और उनके साथ की स्त्रियाँ उत्तम मंगल गीत गाने लगीं।

कंचन थार सोह बर पानी ❁ परिछन[1] चली हरहिं हरषानी
बिकट बेष रुद्रहिं जब देखा ❁ अबलन उर भय भयउ बिसेषा

सुन्दर हाथों में सोने का थाल शोभायमान है, इस प्रकार मैना प्रसन्नता से शिवजी का परछन करने (आरती उतारने) चलीं। जब महादेवजी को भयङ्कर वेष में देखा, तब स्त्रियों के मन में बड़ा भारी भय उत्पन्न हो गया।

भागि भवन पैठीं अति त्रासा ❁ गए महेस जहाँ जनवासा
मैना हृदय भयउ दुख भारी ❁ लीन्ही बोलि गिरीसकुमारी

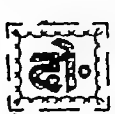
वे बड़े ही डर के मारे भागकर घर में घुस गईं। और शिवजी जहाँ जनवासा था, वहाँ चले गये। मैना (पार्वती की माता) के मन में भारी दुःख हुआ। उन्होंने पार्वती को बुलाया।

अधिक सनेहँ गोद बैठारी ❁ स्याम सरोज नयन भरि बारी
जेहिं बिधि तुमहिं रूप अस दीन्हा ❁ तेहि जड़ बरु बाउर कस कीन्हा

बहुत स्नेह से पार्वती को गोद में बैठाकर और नील-कमल के समान नेत्रों में आँसू भरकर वह कहने लगीं—जिस ब्रह्मा ने तुमको ऐसा सुन्दर रूप दिया है, उस मूर्ख ने तुम्हारे लिये बावला वर कैसे बनाया ?

छंद—कस कीन्ह बर बौराह बिधि जेहिं तुम्हहिं सुंदरता दई।
जो फलु चहिअ सुरतरुहिं सो बरबस[2] बबूरहिं लागई॥
तुम्ह सहित गिरि ते गिरौं पावक जरौं जलनिधि महुँ परौं।
घरु जाउ अपजस होउ जग जीवत बिबाहु न हौं करौं॥

जिस ब्रह्मा ने तुम्हें सुन्दरता दी है, उसने तुम्हारे लिये ऐसा बावला वर कैसे बनाया ? जो फल कल्पवृक्ष में लगना चाहिये, वह ज़बरदस्ती बबूल में लग रहा है। मैं तुम्हें लेकर पहाड़ पर से गिरूँगी, आग में जलूँगी या समुद्र में कूद पड़ूँगी। घर उजड़े, चाहे संसार में अपयश हो, पर मैं जीते-जी तुम्हारा विवाह इस वर से न करूँगी। [ललित अलंकार]



भईं बिकल अबला सकल दुखित देखि गिरिनारि।
करि बिलापु रोदति बदति सुता सनेहु सँभारि॥९६॥

---

१. वर की आरती उतारना। २. जबरदस्ती।

हिमाचल की स्त्री (मैना) को दुःखी देखकर सारी स्त्रियाँ व्याकुल हो गईं। मैना अपनी पुत्री के स्नेह को याद करके विलाप करती, रोती और कहती थीं—

नारद कर मैं काह बिगारा ❀ भवन मोर जिन्ह बसत उजारा
अस उपदेस उमहिं जिन्ह दीन्हा ❀ बौरे[1] बरहिं लागि तपु[2] कीन्हा

मैंने नारद का क्या बिगाड़ा था, जिन्होंने मेरा बसता हुआ घर उजाड़ दिया और जिन्होंने पार्वती को ऐसा उपदेश दिया कि जिससे उसने इस बावले वर के लिये तप किया।

साँचेहु उन्ह कें मोह न माया ❀ उदासीन धनु धामु न जाया
पर घर घालक लाज न भीरा ❀ बाँझ कि जान प्रसव कै पीरा

सचमुच उनको न किसी का मोह है, न माया; न उनके धन है, न घर है और न स्त्री ही है। वे सबसे उदासीन हैं। वे पराये का घर उजाड़ने वाले हैं। उन्हें न किसी की लाज है, न डर है। भला, बाँझ स्त्री प्रसव की पीड़ा को क्या जाने ?

जननिहिं बिकल बिलोकि भवानी ❀ बोली जुत[3] बिवेक मृदु बानी
अस बिचारि सोचहि मति माता ❀ सो न टरइ जो रचइ बिधाता

माता को विकल देखकर पार्वती विवेकयुक्त कोमल वाणी बोलीं—हे माता ! विधाता जो रच देता है, वह टलता नहीं; ऐसा सोचकर तुम शोक मत करो।

करम लिखा जौं बाउर नाहू ❀ तो कत[4] दोष लगाइअ काहू
तुम्ह सन मिटहिं कि बिधि के अंका ❀ मातु ब्यर्थ जनि लेहु कलंका

जो मेरे प्रारब्ध में बावला ही पति लिखा है, तो किसी को दोष क्यों लगाया जाय ? हे माता ! क्या विधाता के अंक तुमसे मिट सकते हैं ? वृथा कलंक मत लो।

छंद—जनि लेहु मातु कलंक करुना परिहरहु अवसर नहीं।
दुख सुख जो लिखा लिलार हमरे जाब जहँ पाउब तहीं॥
सुनि उमा बचन बिनीत कोमल सकल अबला सोचहीं।
बहु भाँति बिधिहि लगाइ दूषन नयन बारि बिमोचहीं॥

---

१. बावले। २. के लिये। ३. युक्त, सहित। ४. क्यों ?

हे माता ! कलंक मत लो, रोना छोड़ो । यह अवसर (शोक करने का) नहीं है । जो दुःख-सुख मेरे करम में लिखा है, उसे मैं जहाँ जाऊँगी, वहीं पाऊँगी । पार्वती के ऐसे नम्र और कोमल वचन सुनकर सब स्त्रियाँ सोच करने लगीं और बहुत तरह से ब्रह्मा को दोष दे-देकर आँखों से आँसू गिराने लगीं । [प्रथम असंगति अलंकार]

दो॰—तेहि अवसर नारद सहित अरु रिषि सप्त समेत ।
समाचार सुनि तुहिनगिरि गवने तुरित निकेत ॥९७॥

इस समाचार को सुनकर हिमाचल उसी समय नारद जी को और सप्त-ऋषियों को साथ लेकर अपने घर गये ।

तब नारद सबही समुझावा ❀ पूरब कथा प्रसंगु सुनावा
मैना सत्य सुनहु मम बानी ❀ जगदम्बा तव सुता भवानी

तब नारद जी ने सबको समझाया और पूर्वजन्म की कथा का प्रसंग सुनाया । उन्होंने कहा—हे मैना ! तुम मेरी सच्ची बात सुनो । तुम्हारी यह पुत्री साक्षात् जगदम्बा भवानी हैं ।

अजा अनादि सक्ति अबिनासिनि ❀ सदा सम्भु अरधंग निवासिनि
जग सम्भव पालन लय कारिनि ❀ निज इच्छा लीला वपु धारिनि

ये कभी जन्म नहीं लेतीं, इनका कभी आरम्भ भी नहीं । ये कभी नाश न होने वाली शक्ति हैं । ये सदा शिवजी के अर्धाङ्ग में रहती हैं । येही जगत् को पैदा करतीं, पालन करतीं और उसका संहार करती हैं । यह अपनी ही इच्छा से लीला-शरीर धारण करती हैं ।

जनमी प्रथम दच्छ गृह जाई ❀ नाम सती सुन्दर तनु पाई
तहँउ सती संकरहि बिवाहीं ❀ कथा प्रसिद्ध सकल जग माहीं

पहले ये दक्ष के घर पैदा हुई थीं । तब इनका नाम सती था और इन्होंने बहुत सुन्दर शरीर पाया था । वहाँ भी सती शिवजी ही को ब्याही गई थीं । यह कथा सारे जगत् में प्रसिद्ध है ।

एक बार आवत सिव संगा ❀ देखेउ रघुकुल कमल पतंगा
भयउ मोहु सिव कहा न कीन्हा ❀ भ्रम बस वेष सीय कर लीन्हा

एक बार इन्होंने शिवजी के साथ आते हुये रघुकुलरूपी कमल के सूर्य

रामचन्द्रजी को देखा, इन्हें मोह हो गया और भ्रम में पड़कर सीताजी का वेष धारण कर लिया।

छन्द—सिय बेषु सती जो कीन्ह तेहि अपराध संकर परिहरीं
हर बिरहँ जाइ बहोरि पितु के जग्य जोगानल जरीं
अब जनमि तुम्हरे भवन निज पति लागि दारुन तपु किया
अस जानि संसय तजहु गिरिजा सर्बदा संकर प्रिया

सती ने सीता का वेष धारण किया, इसी अपराध से शिवजी ने उन्हें त्याग दिया। शिवजी के वियोग में ये अपने पिता के यज्ञ में जाकर वहीं योगाग्नि से भस्म हो गई थीं। अब इन्होंने तुम्हारे घर में जन्म लेकर अपने पति के लिये कठिन तप किया है। ऐसा जानकर सन्देह छोड़ दो। पार्वती जी सदा ही शिवजी की प्रिया हैं।

दो०—सुनि नारद के बचन तब सब कर मिटा बिषाद।
छन महुँ ब्यापेउ सकल पुर घर घर यह संबाद॥९८॥

तब नारद के वचन सुनकर सबका दुःख मिट गया और क्षणभर ही में यह समाचार सारे नगर में घर-घर फैल गया।

तब मैना हिमवन्त अनंदे ❀ पुनि पुनि पारबती पद बंदे
नारि पुरुष सिसु जुबा सयाने ❀ नगर लोग सब अति हरषाने

तब मैना और हिमाचल बहुत आनन्दित हुये और उन्होंने बार-बार पार्वती के चरणों की वंदना की। स्त्री, पुरुष, बालक, युवा, वृद्ध और नगर के सभी लोग बहुत प्रसन्न हुये।

लगे होन पुर मंगल गाना ❀ सजे सबहि हाटक[1] घट नाना
भाँति अनेक भई जेवनारा ❀ सूपसास्त्र जस कछु ब्यवहारा

नगर में आनन्द-मङ्गल के गीत गाये जाने लगे और सबने सुवर्ण के तरह-तरह के कलश सजाये। पाकशास्त्र में जैसा विधान है, उसके अनुसार अनेक भाँति की ज्योनार हुई (रसोई बनी)।

---

१. सोना।

सो जेवनार कि जाइ बखानी ❀ बसहिं भवन जेहि मातु भवानी
सादर बोले सकल बराती ❀ बिष्नु बिरंचि देव सब जाती

भला, जिस घर में स्वयं माता भवानी रहती हों, क्या वहाँ की ज्योनार का वर्णन किया जा सकता है ? हिमाचल ने आदरपूर्वक सब बरातियों को—विष्णु, ब्रह्मा और सब जाति के देवताओं को बुलाया।

बिबिध पाँति बैठी जेवनारा ❀ लगे परोसन निपुन सुआरा
नारिबृन्द सुर जेंवत जानी ❀ लगीं देन गारी मृदु बानी

भोजन करने वालों की बहुत सी पंगतें बैठीं। चतुर रसोइये परोसने लगे। स्त्रियों की मंडलियाँ देवताओं को भोजन करते हुये जानकर कोमल वाणी से गालियाँ देने लगीं।

छन्द—गारी मधुर सुर[1] देहिं सुन्दरि ब्यंग बचन सुनावहीं
भोजन करहिं सुर अति बिलंब बिनोद सुनि सचु पावहीं
जेवँत जो बढ्यौ अनंद सो मुख कोटिहू न परै कह्यौ।
अँचवाइ दीन्हे पान गवने बास जहँ जाको रह्यौ॥

सब सुन्दरी स्त्रियाँ मीठे स्वर में गालियाँ देने लगीं और तरह-तरह के व्यंग्य से भरे वचन सुनाने लगीं। देवगण धीरे-धीरे बड़ी देर तक भोजन करते हैं और विनोद सुनकर सुख अनुभव करते हैं। जेवनार के समय जो आनन्द बढ़ा, वह करोड़ों मुंह से भी नहीं कहा जा सकता। (भोजन कर चुकने पर) सबके हाथ-मुंह धुलवाकर पान दिये गये। फिर सब लोग जो जहाँ ठहरे थे, वहाँ चले गये। [अनुज्ञा अलंकार]

दो०—बहुरि मुनिन्ह हिमवंत कहँ लगन सुनाई आइ।
समय बिलोकि बिबाह कर पठए देव बोलाइ ९९

फिर मुनियों ने लौटकर हिमाचल को लगन (लग्न-पत्रिका) सुनाई और विवाह का समय देखकर देवताओं को बुलौआ भेजा।

बोलि सकल सुर सादर लीन्हे ❀ सबहिं जथोचित आसन दीन्हे
बेदी बेद बिधान सँवारी ❀ सुभग सुमंगल गावहिं नारी

---

१. स्वर।

सब देवताओं को आदर-सहित बुलवा लिया और सबको यथायोग्य आसन दिये। वेद की रीति से वेदी सजाई गई और सुन्दर स्त्रियाँ श्रेष्ठ, मंगल गीत गाने लगीं।

सिंहासनु अति दिव्य सुहावा ❁ जाइ न बरनि बिचित्र बनावा
बैठे सिव बिप्रन्ह सिरु नाई ❁ हृदयँ सुमिरि निज प्रभु रघुराई

वेदी पर दिव्य सुहावना सिंहासन था, जो ऐसा विचित्र बना था कि उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। ब्राह्मणों को प्रणाम करके और हृदय में अपने स्वामी रामचन्द्रजी को स्मरण करके शिवजी उस पर बैठ गये।

बहुरि मुनीसन्ह उमा बोलाई ❁ करि सिंगारु सखीं लेइ आई
देखत रूपु सकल सुर मोहे ❁ बरनै छबि अस जग कबि को[1] है

फिर मुनियों ने पार्वती को बुलवाया। सखियाँ उनका शृङ्गार करके लिवा लाईं। पार्वती के रूप को देखकर सारे देवता मोहित हो गये। संसार में ऐसा कवि कौन है, जो उस सुन्दरता का वर्णन कर सके?

जगदम्बिका जानि भव भामा ❁ सुरन्ह मनहिं मन कीन्ह प्रनामा
सुन्दरता मरजाद भवानी ❁ जाइ न कोटिहुँ बदन बखानी

पार्वती को जगदम्बा और शिवजी की पत्नी समझकर देवताओं ने उन्हें मन ही मन प्रणाम किया। भवानी सुन्दरता की सीमा हैं। उनकी सुन्दरता करोड़ों मुँखों से भी नहीं कही जा सकती।

छंद—कोटिहुँ बदन नहिं बनै बरनत जग जननि सोभा महा।
सकुचहिं कहत श्रुति सेष सारद मंद मति तुलसी कहा॥
छबि खानि मातु भवानि गवनी मध्य मंडप सिव जहाँ।
अवलोकि सकइ न सकुचि पति पद कमल मन मधुकर[2] तहाँ॥

जगत् की जननी पार्वती की महान् शोभा का वर्णन करोड़ मुँह से भी नहीं किया जा सकता। वेद, शेषजी और सरस्वती तक उसे कहते हुए संकोच करते हैं, तब मंद-बुद्धि तुलसी किस गिनती में है? शोभा की खान माता भवानी शिवजी के पास मण्डप में गईं। वे लज्जा के मारे पति के पद-कमलों को देख नहीं सकीं, पर उनका मनरूपी भौंरा वहाँ (लुब्ध हो गया) था।

---

१. कौन। २. भौंरा।

दो०- मुनि अनुसासन गनपतिहिं पूजेउ संभु भवानि।
कोउ सुनि संसय करै जनि सुर अनादि जिय जानि॥

मुनियों की आज्ञा से शिवजी और पार्वतीजी ने गणेशजी का पूजन किया। मन में देवताओं को अनादि समझकर कोई इस बात को सुनकर शङ्का न करे (कि पिता ने पुत्र का पूजन उसके जन्म से पहले ही कैसे कर लिया।)

जसि बिबाह कै बिधि श्रुति गाई ❀ महा मुनिन्ह सो सब करवाई
गहि गिरीस कुस कन्या पानी[1] ❀ भवहिं समरपी जानि भवानी

वेद में विवाह की जैसी रीति कही गई है, वह सब यहाँ मुनियों ने करवाई। हिमाचल ने अपने हाथ में कुश लेकर और कन्या का हाथ पकड़कर भवानी जानकर उन्हें शिवजी को समर्पण किया।

पानि ग्रहन जब कीन्ह महेसा ❀ हिय हरषे तब सकल सुरेसा
बेद मंत्र मुनिबर उच्चरहीं ❀ जय जय जय संकर सुर करहीं

जब शिवजी ने पार्वती का पाणि-ग्रहण किया, तब इन्द्रादि सब देवता मन में बड़े ही प्रसन्न हुए। मुनिवर वेद-मन्त्रों का पाठ करने लगे और देवगण शिवजी का जय-जयकार करने लगे।

बाजहिं बाजन बिबिध बिधाना ❀ सुमन बृष्टि नभ भै बिधि नाना
हर गिरिजा कर भयउ बिबाहू ❀ सकल भुवन भरि रहा उछाहू

तरह-तरह के बाजे बजने लगे और आकाश से नाना प्रकार के फूलों की वर्षा हुई। शिव-पार्वती का विवाह हो गया। सारे ब्रह्माण्ड में आनन्द भर गया।

दासी दास तुरँग रथ नागा ❀ धेनु बसन मनि बस्तु बिभागा
अन्न कनक भाजन भरि जाना[2] ❀ दाइज दीन्ह न जाइ बखाना

हिमाचल ने दास, दासी, घोड़े, रथ, हाथी, गायें, वस्त्र, मणि, अनेक प्रकार की चीजें सुवर्ण के बर्तनों में अन्न भरकर, गाड़ियों में लदवाकर दहेज में दिया, जिनका वर्णन नहीं हो सकता।

छन्द—दाइज दियो बहु भाँति पुनि कर जोरि हिमभूधर कह्यो
का देउँ पूरनकाम संकर चरन पंकज गहि रह्यो॥

---

१. हाथ। २. सवारी।

सिव कृपासागर ससुर कर संतोषु सब भाँतिहि कियो।
पुनि गहे पद पाथोज मैना प्रेम परिपूरन हियो ॥

बहुत प्रकार के दहेज देकर, फिर हाथ जोड़कर हिमाचल ने कहा—हे शङ्कर ! आप पूर्ण-काम हैं, मैं आपको क्या दे सकता हूँ ? यह कहकर उन्होंने शिवजी के पाँव पकड़ लिये। तब कृपा-सागर शिवजी ने अपने ससुर का सभी प्रकार से समाधान किया। फिर प्रेम-पूर्ण हृदय से मैना ने शिवजी के चरण-कमल पकड़े (और कहा)—

दो॰ नाथ उमा मम प्रान सम गृहकिंकरी[1] करेहु ।
छमेहु सकल अपराध अब होइ प्रसन्न बरु देहु ।१०१।

हे नाथ ! यह उमा मुझे मेरे प्राणों के समान (प्यारी) है। आप इसे अपने घर की टहलुनी बनाइये। इसके समस्त अपराधों को क्षमा करते रहियेगा। प्रसन्न होकर मुझे यही वर दीजिए।

बहु बिधि संभु सासु समुझाई ❀ गवनी भवन चरन सिरु नाई
जननी उमा बोलि तब लीन्ही ❀ लै उछङ्ग[2] सुंदर सिख दीन्ही

शिवजी ने बहुत तरह से अपनी सास को समझाया। वह शिवजी के चरणों में प्रणाम करके घर गई। फिर माता ने पार्वती को बुलाया और गोद में बैठाकर सुन्दर सीख दी।

करेहु सदा संकर पद पूजा ❀ नारि धरम पति देव न दूजा
बचन कहत भरि लोचन बारी ❀ बहुरि लाइ उर लीन्हि कुमारी

हे पुत्री ! तू सदा शिवजी के चरणों की सेवा करना। नारियों का यही धर्म है। उनके लिए पति के सिवा कोई दूसरा देवता नहीं है। इस प्रकार की बातें कहते-कहते आँखों में आँसू भर आये। उन्होंने कन्या को फिर अपनी छाती से लगा लिया।

कत[3] बिधि सृजी नारि जग माहीं ❀ पराधीन सपनेहु सुख नाहीं
भै अति प्रेम बिकल महतारी ❀ धीरज कीन्ह कुसमउ बिचारी

(उन्होंने फिर कहा), ब्रह्मा ने संसार में नारी को क्यों पैदा किया ? पराधीन को तो सपने में भी सुख नहीं मिलता। उस समय पार्वती की

१. घर की दासी। २. गोद। ३. क्यों ?

माता प्रेम में अत्यन्त विकल हो गईं, परन्तु कुसमय जानकर उन्होंने धीरज धरा।

पुनि पुनि मिलति परति गहि चरना ❀ परम प्रेम कछु जाइ न बरना
सब नारिन्ह मिलि भेंटि भवानी ❀ जाइ जननि उर पुनि लपटानी

मैना बार-बार पार्वती को भेंटती हैं और उनके चरणों पर पड़ती हैं। अतिशय प्रीति है। कुछ वर्णन नहीं किया जा सकता। पार्वती सब स्त्रियों से मिल-भेंटकर फिर अपनी माता की छाती से जा लगीं।

छन्द—जननी बहुरि मिलि चलीं उचित असीस सब काहू दई
फिरि फिरि बिलोकति मातु तन तब सखी लेइ सिव पहिं गई
जाचक सकल संतोषि संकर उमा सहित भवन चले
सब अमर हरषे सुमन बरषि निसान नभ बाजे भले

फिर माता से मिलकर पार्वती चलीं। सब स्त्रियों ने उन्हें योग्य आशीर्वाद दिये। पार्वती जी फिर-फिरकर माता को देखती थीं। तब सखियाँ उन्हें शिवजी के पास ले गईं। महादेवजी सब मँगतों को संतुष्ट कर पार्वती के साथ घर (कैलाश) को चले। सब देवगण प्रसन्न होकर फूलों की वर्षा करने लगे और आकाश में सुन्दर नगाड़े बजाने लगे।

दो०—चले संग हिमवंतु तब पहुँचावन अति हेतु।
बिबिध भाँति परितोषु करि बिदा कीन्ह बृषकेतु।१०२

तब हिमाचल अत्यन्त प्रेम से शिवजी को पहुँचाने के लिये साथ चले। शिवजी ने बहुत तरह से उन्हें समझा-बुझाकर विदा किया।

तुरत भवन आए गिरिराई ❀ सकल सैल सर लिए बोलाई
आदर दान बिनय बहु माना ❀ सब कर बिदा कीन्ह हिमवाना

पर्वतराज हिमाचल तुरंत घर आये और उन्होंने सब पर्वतों और सरोवरों को बुलाया। हिमवान् ने आदर, दान, विनय और बहुत सम्मानपूर्वक सब को विदा किया।

---

१. पास।

जबहिं संभु कैलासहि आए ❀ सुर सब निज निज लोक सिधाए
जगत मातु पितु संभु भवानी ❀ तेहि सिंगारु न कहउँ बखानी

जब शिवजी कैलाश पर्वत पर पहुँचे, तब सब देवगण अपने-अपने लोकों को चले गये। (तुलसीदासजी कहते हैं कि) पार्वती और महादेवजी जगत् के माता और पिता हैं, इसलिये मैं उनके शृङ्गार का वर्णन नहीं करता।

करहिं बिबिध बिधि भोग बिलासा ❀ गनन्ह समेत बसहिं कैलासा
हर गिरिजा बिहार नित नएऊ ❀ एहि बिधि बिपुल काल चलि गएऊ

शिव और पार्वती तरह-तरह के भोग-विलास करते हुये अपने गणों के साथ कैलाश पर रहने लगे। शिव और पार्वती नित्य नये विहार करते थे। इस प्रकार बहुत समय बीत गया।

तब जनमेउ षटबदन कुमारा ❀ तारकु असुर समर जेहि मारा
आगम निगम प्रसिद्ध पुराना ❀ षन्मुख जनमु सकल जगु जाना

तब छः मुँह वाले (स्वामिकार्तिक) पुत्र का जन्म हुआ, जिन्होंने लड़ाई में तारक नामक असुर को मारा। वेद, शास्त्र और पुराणों में उनके जन्म की कथा प्रसिद्ध है और उस कथा को सारा जगत् जानता है।

छंद—जगु जान षन्मुख जनमु करमु प्रतापु पुरुषारथु महा।
तेहि हेतु मैं बृषकेतु सुत कर चरित संछेपहिं कहा॥
यह उमा संभु बिबाहु जे नर नारि कहहिं जे गावहीं।
कल्यान काज बिबाह मंगल सर्बदा सुखु पावहीं॥

स्वामिकार्तिक के जन्म, कर्म, प्रताप और महा पुरुषार्थ को सारा जगत् जानता है। इसलिये मैंने शिवजी के पुत्र "स्वामिकार्तिक" का चरित्र संक्षेप ही में कहा है। शिव-पार्वती के विवाह की इस कथा को जो स्त्री-पुरुष कहेंगे और गायेंगे, वे सब कल्याण के कामों और विवाहोत्सवों से सदा सुख पायेंगे।

दो०—चरित सिंधु गिरिजा रमन बेद न पावहिं पारु।
बरनै तुलसीदासु किमि अति मतिमंद गवांरु॥१०३॥

गिरिजापति महादेवजी का चरित्र सागर के समान (अपार) है। उसका

पार वेद भी नहीं पाते। तब अत्यन्त मन्दबुद्धि और गँवार तुलसीदास उसका वर्णन कैसे कर सकता है ?

संभु चरित सुनि सरस सुहावा ❁ भरद्वाज मुनि अति सुखु पावा
बहु लालसा कथा पर बाढ़ी ❁ नयनन्हि नीरु रोमावलि ठाढ़ी

महादेवजी के रसीले और सुहावने चरित्र को सुनकर भरद्वाजजी ने बड़ा ही सुख पाया। उनके मन में कथा सुनने की लालसा बहुत बढ़ गई और आँखों में जल भर आया तथा रोमावली खड़ी हो गई।

प्रेम बिवस मुख आव न बानी ❁ दसा देखि हरषे मुनि ग्यानी
अहो धन्य तव जनम मुनीसा ❁ तुम्हहिं प्रान सम प्रिय गौरीसा

वे प्रेम में मुग्ध हो गये। उनके मुख से वाणी तक न निकली। उनकी यह दशा देखकर ज्ञानी मुनि याज्ञवल्क्य बहुत हर्षित हुये। (उन्होंने कहा—) हे मुनीश ! तुम्हारा जन्म धन्य है; तुमको शिवजी प्राण के समान प्रिय हैं।

सिव पद कमल जिन्हहिं रति नाहीं ❁ रामहिं ते सपनेहुँ न सुहाहीं
बिनु छल बिस्वनाथ पद नेहू ❁ राम भगत कर लच्छन एहू

शिवजी के चरण-कमलों में जिनको प्रीति नहीं है, वे रामचन्द्रजी को स्वप्न में भी अच्छे नहीं लगते। राम-भक्त का लक्षण यही है कि उसका विश्वनाथ शिवजी के चरणों में निष्कपट प्रेम हो।

सिव सम को रघुपति ब्रतधारी ❁ बिनु अघ तजी सती असि नारी
पनु करि रघुपति भगति दृढ़ाई ❁ को सिव सम रामहिं प्रिय भाई

शिवजी के समान रामचन्द्रजी (की भक्ति) का व्रत धारण करने वाला और कौन है ? जिन्होंने बिना ही पाप के सती-जैसी स्त्री को त्याग दिया। उन्होंने प्रण करके रामचन्द्रजी की भक्ति की दृढ़ता प्रकट की। हे भाई ! रामचन्द्रजी को शिवजी के समान दूसरा कौन प्यारा है ?

दो०— प्रथमहिं मैं कहि सिव चरित बूझा[1] मरमु तुम्हार।
सुचि सेवक तुम्ह राम के रहित समस्त बिकार॥१०४॥

मैंने पहले शिवजी का चरित्र वर्णन करके तुम्हारा भेद समझ लिया। तुम रामचन्द्रजी के पवित्र सेवक हो और सब दोषों से रहित हो।

---

१. समझ लिया।

मैं जाना तुम्हार गुन सीला ❀ कहउँ सुनहु अब रघुपति लीला
सुनु मुनि आजु समागम तोरें ❀ कहि न जाइ जस सुखु मन मोरें

(याज्ञवल्क्यजी भरद्वाजजी से कहते हैं कि) मैंने तुम्हारा गुण और शील जान लिया। अब मैं रामचन्द्रजी की लीला कहता हूँ, सुनो। हे मुनि! सुनो, तुम्हारे मिलने से आज मेरे मन में जो आनन्द हुआ है, वह कहा नहीं जा सकता।

राम चरित अति अमित मुनीसा ❀ कहि न सकहिं सत कोटि अहीसा[1]
तदपि जथाश्रुत कहउँ बखानी ❀ सुमिरि गिरापति प्रभु धनुपानी

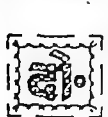
हे मुनीश्वर! रामचरित्र अतिशय अपार है। उसको सौ करोड़ शेषजी भी नहीं कह सकते। तो भी जैसा मैंने सुना है, वैसा वाणी के पति (प्रेरक) और हाथ में धनुष-बाण लिये हुए श्रीरामचन्द्रजी को स्मरण करके कहता हूँ।

सारद दारु[2] नारि सम स्वामी ❀ राम सूत्रधर अंतरजामी
जेहि पर कृपा करहिं जनु जानी ❀ कवि उर अजिर[3] नचावहिं बानी

हे मुनीश! सरस्वती जी कठपुतली के समान और स्वामी अन्तर्यामी रामचन्द्रजी (तागा पकड़कर कठपुतली को नचाने वाले) सूत्रधार हैं। अपना भक्त जानकर जिस कवि पर वे कृपा करते हैं, उसके हृदय-रूपी आँगन में सरस्वती को वे नचाया करते हैं।

प्रनवउँ सोइ कृपाल रघुनाथा ❀ बरनउँ बिसद तासु गुन गाथा
परम रम्य गिरिबर कैलासू ❀ सदा जहाँ सिव उमा निवासू

उन्हीं कृपालु रघुनाथजी को मैं प्रणाम करता हूँ और उन्हीं के निर्मल गुणों की कथा कहता हूँ। गिरिश्रेष्ठ कैलाश बहुत ही रमणीय है, जहाँ शिव-पार्वती सदा निवास करते हैं।



सिद्ध तपोधन जोगिजन सुर किन्नर मुनि बृन्द।
बसहिं तहाँ सुकृती सकल सेवहिं सिव सुख कंद।१०५।

उस पर्वत पर सिद्ध, तपस्वी, योगी, देव, किन्नर, मुनियों के समूह और पुण्यात्मा लोग रहते हैं और सब सुखों के मूल श्रीमहादेवजी की सेवा करते हैं।

१. शेषनाग। २. काठ। ३. आँगन।

हरि हर बिमुख धरम रति नाहीं ❀ ते नर तहँ सपनेहुँ नहिं जाहीं
तेहि गिरि पर बट बिटप बिसाला ❀ नित नूतन सुन्दर सब काला

जो भगवान् विष्णु और महादेवजी से विमुख हैं और जिनकी धर्म में श्रद्धा नहीं है, वे लोग स्वप्न में भी वहाँ नहीं जा सकते। उस पर्वत पर बरगद का एक बड़ा वृक्ष है, जो सदा नया और सुन्दर रहता है।

त्रिबिध समीर सुसीतलि छाया ❀ सिव बिस्राम बिटप स्रुति गाया
एक बार तेहि तर प्रभु गयऊ ❀ तरु बिलोकि उर अति सुखु भयऊ

वहाँ तीन प्रकार का शीतल, मंद और सुगन्धित पवन चला करता है। उसकी छाया बड़ी ही शीतल है। वेदों ने गाया है कि वह वृक्ष शिवजी के विश्राम करने के लिये है। एक बार प्रभु (शिवजी) उस वृक्ष के नीचे गये, उसे देखकर उनके हृदय में बहुत आनन्द हुआ।

निज कर डासि[1] नाग रिपु छाला ❀ बैठे सहजहिं सम्भु कृपाला
कुंद इंदु दर[2] गौर सरीरा ❀ भुज प्रलंब परिधन मुनि चीरा

अपने हाथ से बाघम्बर बिछाकर कृपालु शिवजी स्वाभाविक रीति से उस पर बैठ गये। उनका शरीर कुन्द के फूल, चन्द्रमा और शङ्ख के समान गौर था। भुजायें लम्बी थीं और वे मुनियों का वस्त्र (वल्कल) धारण किये हुये थे।

तरुन अरुन अम्बुज सम चरना ❀ नख दुति भगत हृदय तम हरना
भुजँग भूति भूषन त्रिपुरारी ❀ आननु सरद चंद छबि हारी

उनके चरण नए लाल कमल के समान थे और उनके नखों की ज्योति भक्तों के हृदय का अन्धकार दूर करने वाली थी। साँप और भस्म ही उनके भूषण थे। उन त्रिपुरासुर के शत्रु शिवजी का मुख शरत्काल के चन्द्रमा की छबि को फीका करने वाला था।

दो० जटा मुकुट सुरसरित सिर लोचन नलिन बिसाल।
नीलकंठ लावन्य निधि सोह बाल बिधु भाल ॥१०६॥

उनके सिर पर जटाओं का मुकुट और गंगाजी थीं। उनके बड़े-बड़े नेत्र कमल के समान थे। उनके गले में नीला चिन्ह था और वे सुन्दरता के भण्डार थे। उनके मस्तक पर द्वितीया का चन्द्रमा शोभायमान था।

---

१. बिछाकर। २. शंख।

बैठे सोह कामरिपु कैसे ❀ धरे सरीरु सांत रस जैसे
पारबती भल अवसरु जानी ❀ गईं सम्भु पहिं मातु भवानी

कामदेव के शत्रु शिवजी महाराज वहाँ बैठे हुए ऐसे शोभित हो रहे थे कि मानो शांत-रस ही शरीर धारण करके बैठा हो। सुअवसर समझकर माता पार्वती उनके पास गईं।

जानि प्रिया आदरु अति कीन्हा ❀ बाम भाग आसनु हर दीन्हा
बैठीं सिव समीप हरषाई ❀ पूरब जन्म कथा चितु आई

अपनी प्यारी (अर्धाङ्गिनी) जानकर शिवजी ने उनका बहुत आदर किया और बैठने को अपनी बाईं ओर आसन दिया। पार्वतीजी प्रसन्न होकर शिवजी के पास बैठ गईं। उनके मन में पिछले जन्म की कथा याद आ गई।

पति हियँ हेतु अधिक अनुमानी ❀ बिहँसि उमा बोलीं प्रिय बानी
कथा जो सकल लोक हितकारी ❀ सोइ पूछन चह सैलकुमारी

स्वामी के हृदय में अपने ऊपर बहुत प्रेम समझकर पार्वतीजी हँसकर मीठे वचन बोलीं। जो कथा सब लोगों का हित करने वाली है, उसे ही पार्वती पूछना चाहती हैं।

बिस्वनाथ मम नाथ पुरारी ❀ त्रिभुवन महिमा बिदित तुम्हारी
चर अरु अचर नाग नर देवा ❀ सकल करहिं पद पंकज सेवा

हे मेरे नाथ! हे विश्वनाथ! हे त्रिपुरारी! आपकी महिमा तीनों लोकों में विख्यात है। चर, अचर, नाग, मनुष्य और देवता सब आपके चरणकमलों की सेवा करते हैं।

दो० प्रभु समरथ सर्बग्य सिव सकल कला गुन धाम।
जोग ग्यान बैराग्य निधि प्रनत कलपतरु नाम।१०७।

हे प्रभो! आप समर्थ हैं, सर्वज्ञ हैं, शिव हैं, सब कला और गुणों के धाम हैं और योग, ज्ञान तथा वैराग्य के भण्डार हैं। आपका नाम शरणागतों के लिये कल्पवृक्ष के समान है।

जौं मोपर प्रसन्न सुखरासी ❀ जानिअ सत्य मोहि निज दासी
तौं प्रभु हरहु मोर अग्याना ❀ कहि रघुनाथ कथा बिधि नाना

१. पास।

हे सुख के राशि ! जो आप मुझ पर प्रसन्न हैं और जो सचमुच मुझे अपनी दासी जानते हैं तो हे स्वामी ! आप रामचन्द्रजी की नाना प्रकार की कथा कहकर मेरा अज्ञान दूर कीजिये।

जासु भवन सुरतरु तर[1] होई ❀ सहि कि दरिद्र जनित दुख सोई
ससि भूषन अस हृदय विचारी ❀ हरहु नाथ मम मति भ्रम भारी

जिसका घर कल्प-वृक्ष के नीचे हो, भला, वह दरिद्रता से उत्पन्न दुःख को क्यों सहेगा ? हे चन्द्रभूषण ! हे नाथ ! यही बात मन में विचारकर मेरी बुद्धि के भारी भ्रम को दूर कीजिये।

प्रभु जे मुनि परमारथ वादी ❀ कहहिं राम कहुँ ब्रह्म अनादी
सेष सारदा बेद पुराना ❀ सकल करहिं रघुपति गुन गाना

हे प्रभु ! परमार्थ तत्व के ज्ञाता और वक्ता मुनि रामचन्द्रजी को अनादि ब्रह्म कहते हैं। और शेष, सरस्वती, वेद, और पुराण सब रामचन्द्रजी का गुण गाते हैं।

तुम्ह पुनि राम राम दिन राती ❀ सादर जपहु अनंग अराती
राम सो अवध नृपति सुत सोई ❀ की अज अगुन अलख गति कोई

हे कामदेव के शत्रु ! आप भी दिन-रात आदरपूर्वक राम-राम जपा करते हैं। क्या राम वही हैं, जो अयोध्या के राजा के पुत्र हैं ? या कोई और अजन्मा, निर्गुण और अगोचर है ?

दो० जौं नृप तनय तो ब्रह्म किमि नारि बिरहँ मति भोरि।
देखि चरित महिमा सुनत भ्रमति बुद्धि अति मोरि।

यदि वे राजा के पुत्र हैं तो ब्रह्म कैसे ? जिनकी मति स्त्री के विरह में बावली हो गई थी उनके चरित देखकर और महिमा सुनकर, मेरी बुद्धि अत्यन्त भ्रम में पड़ रही है।

जौं अनीह व्यापक बिभु कोऊ ❀ कहहु बुझाइ नाथ मोहिं सोऊ
अग्य जानि रिस[2] उर जनि धरहू ❀ जेहि बिधि मोह मिटइ सोइ करहू

जो इच्छारहित, व्यापक, समर्थ ब्रह्म कोई और है, तो हे नाथ ! उसे भी मुझे समझाकर कहिये। मुझे नादान समझकर आप मन में क्रोध न लाइयेगा।

१. नीचे, तले। २. क्रोध।

जिस तरह मेरा अज्ञान दूर हो, वही कीजिये।

मैं बन दीख राम प्रभुताई ❀ अति भय बिकल न तुम्हहिं सुनाई
तदपि मलिन मन बोधु न आवा ❀ सो फलु भली भाँति हम पावा

मैंने (पिछले जन्म में) बन में रामचन्द्रजी की प्रभुता देखी है। अत्यन्त भयभीत होने से मैंने वह बात आपको नहीं सुनाई थी। तो भी मेरे मलिन मन को ज्ञान न हुआ। उसका फल मैंने अच्छी तरह पा लिया।

अजहूँ कछु संसउ मन मोरे ❀ करहु कृपा बिनवउँ कर जोरे
प्रभु तब मोहिं बहु भाँति प्रबोधा ❀ नाथ सो समुझि करहु जनि क्रोधा

हे नाथ ! मेरे मन में अब भी कुछ सन्देह है। आप कृपा कीजिए, मैं हाथ जोड़कर विनती करती हूँ। हे प्रभु, आपने उस समय मुझे बहुत तरह से समझाया था। हे नाथ ! उसे याद करके क्रोध न कीजिएगा।

तब कर अस बिमोह अब नाहीं ❀ राम कथा पर रुचि मन माहीं
कहहु पुनीत राम गुन गाथा ❀ भुजँगराज भूषन सुरनाथा

अब मुझे पहले जैसा मोह नहीं है। अब तो मेरे मन में रामकथा सुनने की रुचि है। हे शेषनाग को भूषण रूप में धारण करने वाले ! हे देवों के नाथ (शिवजी) ! आप रामचन्द्रजी के गुणों की पवित्र कथा कहिए।

दो० **बंदउँ पद धरि धरनि सिरु बिनय करउँ कर जोरि।**
बरनहु रघुबर बिसद जसु स्रुति सिद्धांत निचोरि।१०९

मैं धरती में सिर रखकर आपके चरणों को प्रणाम करती हूँ और हाथ जोड़-कर विनती करती हूँ। आप वेदों के सिद्धान्त को निचोड़कर रामचन्द्रजी का निर्मल यश वर्णन कीजिए।

जदपि जोषिता[1] नहिं अधिकारी ❀ दासी मन क्रम बचन तुम्हारी
गूढ़उ तत्व न साधु दुरावहिं[2] ❀ आरत अधिकारी जहँ पावहिं

यद्यपि स्त्री होने के कारण मैं उसे सुनने की अधिकारिणी नहीं हूँ, तथापि मैं मन, कर्म और वचन से आपकी दासी हूँ। साधुजन आर्त्त (सुनने को आतुर) अधिकारी पाते हैं, तो गूढ़ तत्व भी नहीं छिपाते।

---

१. स्त्री। २. छिपाते हैं।



अति आरति पूछउँ सुरराया ❀ रघुपति कथा कहहु करि दाया
प्रथम सो कारन कहहु बिचारी ❀ निर्गुन ब्रह्म सगुन वपु धारी

हे देवताओं के स्वामी ! मैं बड़ी दीनता से पूछती हूँ, आप दया करके रामचन्द्रजी की कथा कहिये। पहले तो वह कारण विचारकर बतलाइये जिससे निर्गुण ब्रह्म सगुण रूप धारण करता है।

पुनि प्रभु कहहु राम अवतारा ❀ बाल चरित पुनि कहहु उदारा
कहहु जथा जानकी बिबाहीं ❀ राज तजा सो दूषन काहीं[1]

फिर हे नाथ ! आप रामचन्द्रजी के अवतार की कथा कहिये; फिर उनका उदार बाल-चरित्र कहिये; फिर जैसे जानकी से विवाह किया, वह कहिये और फिर यह बतलाइये कि उन्होंने राज्य छोड़ा तो किस दोष से ?

बन बसि कीन्हे चरित अपारा ❀ कहहु नाथ जिमि रावन मारा
राज बैठि कीन्ही वहु लीला ❀ सकल कहहु संकर सुख सीला

हे नाथ ! फिर उन्होंने बन में बसकर जो अपार चरित किये तथा जिस तरह रावण को मारा, वह कहिये। हे सुख-स्वरूप शंकर ! आप उन सब अनेक लीलाओं की सब कथा भी कहिये जो उन्होंने राज्य-सिंहासन पर बैठकर की थीं।

दो० बहुरि कहहु करुनायतन कीन्ह जो अचरज राम।
प्रजा सहित रघुबंस मनि किमि गवने निज धाम।११०

हे दयानिधे ! फिर रामचन्द्रजी ने जो अद्भुत काम किये और रघुकुल-भूषण (रामचन्द्रजी) प्रजा सहित अपने धाम (बैकुण्ठ) को कैसे गये ? यह भी कहिये।

पुनि प्रभु कहहु सो तत्व बखानी ❀ जेहि बिग्यान मगन मुनि ग्यानी
भगति ग्यान विग्यान बिरागा ❀ पुनि सब बरनहु सहित बिभागा

हे प्रभु ! फिर आप उस तत्व को समझाकर कहिये, जिसमें ज्ञानी और मुनिजन सदा मग्न रहते हैं। फिर आप भक्ति, ज्ञान, विज्ञान और वैराग्य को विभागों सहित कहिये।

औरउ राम रहस्य अनेका ❀ कहहु नाथ अति बिमल बिबेका
जो प्रभु मैं पूछा नहिं होई ❀ सोउ दयाल राखहु जनि गोई[2]

---

१. क्या ? २. छिपा।

इसके सिवा रामचन्द्रजी के और भी जो छिपे हुये अनेक चरित्र हों, उनका भी वर्णन कीजिये। आप अतिशय निर्मल ज्ञान वाले हैं। हे दयालु! जो बात मैंने न पूछी हो, आप उसे भी गुप्त न रखियेगा।

तुम्ह त्रिभुवन गुर वेद बखाना ❀ आन जीव पाँवर का जाना
प्रस्न उमा कै सहज सुहाई ❀ छल विहीन सुनि सिव मन भाई

वेदों ने आपको तीनों लोकों का गुरु कहा है। दूसरे पामर जीव उस रहस्य को क्या जानें? पार्वती के सहज, सुन्दर और छलरहित (सरल) प्रश्न शिवजी के मन को बहुत अच्छे लगे।

हरि हिअँ रामचरित सब आए ❀ प्रेम पुलक लोचन जल छाए
श्रीरघुनाथ रूप उर आवा ❀ परमानंद अमित सुख पावा

महादेवजी के हृदय में सब रामचरितों का स्मरण हो आया। प्रेम के मारे उनकी रोमावली खड़ी हो गई और आँखों में जल भर आया। श्रीरामचन्द्रजी का रूप उनके हृदय में आ गया, जिससे उन्होंने बड़ा ही आनन्द और अनन्त सुख पाया।

दो०— मगन ध्यानरस दंड जुग[1] पुनि मन बाहेर कीन्ह।
रघुपति चरित महेस तब हरषित बरनै लीन्ह ॥१११॥

शिवजी दो घड़ी तक ध्यान के रस में मग्न रहे; फिर उन्होंने मन को (ध्यान से) बाहर किया। और तब वे प्रसन्न होकर रामचन्द्रजी का चरित वर्णन करने लगे।

झूठउ सत्य जाहि बिनु जानें ❀ जिमि भुजंग[2] बिनु रजु[3] पहिचानें
जेहि जानें जग जाइ हेराई ❀ जागें जथा सपन भ्रम जाई

जिसके बिना जाने झूठ भी सच मालूम होने लगता है, जैसे बिना पहचाने रस्सी में साँप का भ्रम हो जाता है। और जिसके जानने पर संसार इस तरह लोप हो जाता है, जैसे जागने पर स्वप्न का भ्रम जाता रहता है।

बंदउँ बाल रूप सोइ रामू ❀ सब सिधि सुलभ जपत जिसु[4] नामू
मंगल भवन अमंगल हारी ❀ द्रवउ सो दसरथ अजिर बिहारी

मैं उन्हीं रामचन्द्रजी के बालरूप की वन्दना करता हूँ, जिनका नाम

१. दो। २. साँप। ३. रस्सी। ४. जिसका।



जपने से सब सिद्धियाँ सहज ही प्राप्त हो जाती हैं। मंगल के घर, अमंगल के हरने वाले और दशरथ के आँगन में खेलने वाले रामचन्द्रजी मुझ पर कृपा करें।

करि प्रनाम रामहिं त्रिपुरारी ❀ हरषि सुधा सम गिरा उचारी
धन्य धन्य गिरिराज कुमारी ❀ तुम्ह समान नहिं कोउ उपकारी

शिवजी रामचन्द्रजी को प्रणाम करके, हर्षित होकर अमृत के समान (मधुर) वाणी बोले—हे गिरिराज-कुमारी पार्वती! तुम धन्य हो! धन्य हो! तुम्हारे समान कोई उपकारी नहीं है।

पूछेहु रघुपति कथा प्रसंगा ❀ सकल लोक जग पावनि गंगा
तुम्ह रघुबीर चरन अनुरागी ❀ कीन्हिहु प्रस्न जगत हित लागी

जो तुमने रामचन्द्रजी की कथा का प्रसङ्ग पूछा है, जो कथा जगत् में सब लोगों को पवित्र करने के लिये गंगा है। तुमने जगत् के हित के लिये प्रश्न पूछे हैं। तुम रामचन्द्रजी के चरणों में प्रीति रखने वाली हो।

दो०— राम कृपा तें पारबति सपनेहु तव मन माहिं।
सोक मोह संदेह भ्रम मम बिचार कछु नाहिं।११२।

हे पार्वती! मेरे विचार में तो राम की कृपा से स्वप्न में भी तुम्हारे हृदय में शोक, मोह, सन्देह, भ्रम कुछ भी नहीं है।

तदपि असंका[1] कीन्हिहु सोई ❀ कहत सुनत सब कर हित होई
जिन हरि कथा सुनी नहिं काना ❀ स्रवन रंध्र अहि[2] भवन समाना

पर तो भी तुमने आशंका (संदेह) इसलिये की है कि इस प्रसंग के कहने और सुनने से सबका कल्याण होगा। जिन्होंने अपने कानों से भगवान् की कथा नहीं सुनी, उनके कानों के छेद साँप के बिल के समान हैं।

नयनन्हि संत दरस नहिं देखा ❀ लोचन मोर पंख कर लेखा
ते सिर कटु तुम्बरि सम तूला[3] ❀ जे न नमत हरि गुर पद मूला

जिन्होंने अपनी आँखों से सन्तों के दर्शन नहीं किये, उनकी आँखें मोर के पंखों पर की आँखों की गिनती में हैं। वे सिर कड़वी तुम्बी के समान हैं, जो हरि और गुरु के चरणों में नहीं झुकते।

---

१. आशंका, संदेह। २. साँप। ३. तुल्य, बराबर।

जिन्ह हरि भगति हृदय नहिं आनी ❀ जीवत सव समान तेइ प्रानी
जो नहिं करइ राम गुन गाना ❀ जीह सो दादुर जीह समाना

जिन्होंने अपने हृदय में ईश्वर की भक्ति को स्थान नहीं दिया, वे प्राणी जीते हुए ही मुर्दे के समान हैं। जो जीभ रामचन्द्रजी के गुणों का गान नहीं करती, वह मेढक की जीभ के समान है।

कुलिस कठोर निठुर सोइ छाती ❀ सुनि हरिचरित न जो हरषाती
गिरिजा सुनहु राम कै लीला ❀ सुर हित दनुज[1] विमोहन सीला

वह हृदय बज्र के समान कड़ा और निर्दय है, जो हरि-चरित को सुनकर हर्षित नहीं होता। हे पार्वती! रामचन्द्रजी की लीला सुनो, जो देवताओं का कल्याण करने वाली और राक्षसों को मोहित करने वाली है।

दो॰ रामकथा सुरधेनु सम सेवत सब सुख दानि।
सत समाज सुरलोक सब को न सुनै अस जानि।११२

रामचन्द्रजी की कथा कामधेनु के समान है, सेवा करने से सब सुखों को देने वाली है और सत्पुरुषों के समाज ही देवताओं के लोक हैं, ऐसा जानकर इसे कौन न सुनेगा?

रामकथा सुन्दर कर तारी[2] ❀ संसय विहँग उड़ावनि हारी
रामकथा कलि विटप कुठारी[3] ❀ सादर सुनु गिरिराज कुमारी

रामचन्द्रजी की कथा हाथ की सुन्दर ताली है, जो सन्देहरूपी पक्षियों को उड़ा देती है। रामकथा कलियुगरूपी वृक्ष को काटने के लिये कुल्हाड़ी है। हे पार्वती! तुम इसे आदरपूर्वक सुनो। [परंपरित रूपक]

राम नाम गुन चरित सुहाए ❀ जनम करम अगनित स्रुति गाए
जथा अनन्त राम भगवाना ❀ तथा कथा कीरति गुन नाना

वेदों ने रामचन्द्रजी के नाम, गुण, चरित, जन्म और कर्म अनगिनत गाए हैं। जिस तरह भगवान् रामचन्द्रजी अनन्त हैं, उसी तरह उनकी कथा, उनकी कीर्त्ति और उनके गुण भी अनन्त हैं।

तदपि जथास्रुत जसि[4] मति मोरी ❀ कहिहउँ देखि प्रीति अति तोरी
उमा प्रस्न तव सहज सुहाई ❀ सुखद संत संमत मोहि भाई

१. दैत्य। २. ताली। ३. कुल्हाड़ी। ४. जैसी।

तो भी तुम्हारी अत्यन्त प्रीति देखकर जैसा मैंने सुना है और जैसी मेरी बुद्धि है, उसके अनुसार कथा कहूँगा। हे पार्वती ! तुम्हारा प्रश्न स्वाभाविक ही अच्छा सुखदायक और सन्त-सम्मत है और मुझे भी अच्छा लगा है।

एक बात नहिं मोहिं सुहानी ❀ जदपि मोहबस कहेहु भवानी
तुम्ह जो कहा राम कोउ आना ❀ जेहि श्रुति गाव धरहिं मुनि ध्याना

पर हे पार्वती ! एक बात मुझे अच्छी नहीं लगी, यद्यपि वह तुमने मोह के वश होकर ही कही है। तुमने जो कहा कि वे राम कोई और हैं, जिन्हें वेद गाते और मुनिजन जिनका ध्यान करते हैं।

दो०— कहहिं सुनहिं अस अधम नर ग्रसे जे मोह पिसाच।
पाषंडी हरि पद बिमुख जानहिं झूठ न साँच॥११४॥

जिनको मोहरूपी पिशाच ने घेर रक्खा है, जो पाखण्डी हैं, जो भगवान् के चरणों से विमुख हैं और जो सत्य-असत्य कुछ भी नहीं जानते, ऐसे अधम मनुष्य ही इस तरह कहते-सुनते हैं।

अग्य अकोबिद अंध अभागी ❀ काई बिषय मुकुर मन लागी
लम्पट कपटी कुटिल बिसेषी ❀ सपनेहु संत सभा नहिं देखी

जो अज्ञानी, मूर्ख, अन्धे, भाग्यहीन हैं और जिनके मनरूपी दर्पण पर विषयरूपी काई लग रही है, जो व्यभिचारी, छली और बड़े ही दुष्ट हैं और जिन्होंने कभी स्वप्न में भी सन्तों की सभा नहीं देखी

कहहिं ते बेद असंमत बानी ❀ जिन्हके सूझ लाभु नहिं हानी
मुकुर मलिन अरु नयन बिहीना ❀ राम रूप देखहिं किमि दीना

जिन्हें अपने लाभ और हानि का ज्ञान नहीं, वेही वेदों के विरुद्ध बातें कहा करते हैं। एक तो मैला दर्पण और दूसरे आँखों से रहित, भला, वे बेचारे राम का रूप कैसे देख सकते हैं ?

जिन्हके अगुन न सगुन बिबेका ❀ जल्पहिं कल्पित बचन अनेका
हरि माया बस जगत भ्रमाहीं ❀ तिन्हहिं कहत कछु अघटित नाहीं

जिनको निर्गुण और सगुण का कुछ भी ज्ञान नहीं, जो मनमानी गप्पें हाँका करते हैं, जो श्री हरि की माया के वश में होकर जगत् में भ्रमते फिरते हैं, उनके लिये कुछ भी कह डालना असम्भव नहीं है।

वातुल भूत बिबस मतवारे ❀ ते नहिं बोलहिं बचन बिचारे
जिन्ह कृत महा मोह मद पाना ❀ तिन्ह कर कहा करिअ नहिं काना

जिन्हें वायु का रोग (सन्निपात) हो गया हो, भूत लगा हो, और जो नशे में चूर हों, ऐसे लोग विचारकर वचन नहीं बोलते। जिन्होंने महा-मोहरूपी मदिरा पी रक्खी है, ऐसों के कहने पर कान न देना चाहिये।

सो०— अस निज हृदय बिचारि तजु संसय भजु राम पद।
सुनु गिरिराज कुमारि भ्रम तम रबि कर बचन मम॥

ऐसा अपने हृदय में विचारकर सन्देह को छोड़ो और रामचन्द्रजी के चरणों को भजो। हे पार्वती! मेरे वचन सन्देहरूपी अंधकार को नाश करने के लिये सूर्य की किरणों के समान हैं। मेरे वचनों को सुनो।

सगुनहिं अगुनहिं नहिं कछु भेदा ❀ गावहिं मुनि पुरान बुध बेदा
अगुन अरूप अलख अज जोई ❀ भगत प्रेम बस सगुन सो होई

सगुण और निर्गुण में कुछ भी भेद नहीं है, मुनि, पुराण, पण्डित और वेद सभी ऐसा गाते हैं। जो निर्गुण (ब्रह्म) अरूप (निराकार), अलख और अजन्मा है, वही भक्तों के प्रेम-वश सगुण हो जाता है।

जो गुन रहित सगुन सोइ कैसें ❀ जलु हिम उपल बिलग नहिं जैसें
जासु नाम भ्रम तिमिर पतंगा[1] ❀ तेहि किमि कहिअ बिमोह प्रसंगा

जो निर्गुण है, वही सगुण कैसे हो सकता है? (यह वैसे ही है) जैसे जल और ओला भिन्न नहीं। जिसका नाम भ्रमरूपी अन्धकार के लिये सूर्य के समान है, उसके लिये मोह का प्रसङ्ग भी कैसे कहा जा सकता है?

राम सच्चिदानंद दिनेसा ❀ नहिं तहँ मोह निसा लवलेसा
सहज प्रकासरूप भगवाना ❀ नहिं तहँ पुनि बिग्यान बिहाना[2]

रामचन्द्रजी सच्चिदानन्दस्वरूप सूर्य हैं। वहाँ मोहरूपी रात्रि का लेशमात्र भी नहीं है। भगवान् स्वभाव ही से प्रकाशरूप हैं, इसलिये वहाँ विज्ञानरूपी प्रातःकाल होता ही नहीं। (जब रात नहीं, तब प्रातःकाल कैसा?)

हरष बिषाद ग्यान अग्याना ❀ जीव धरम अहमिति अभिमाना
राम ब्रह्म ब्यापक जग जाना ❀ परमानंद परेस पुराना

१. सूर्य। २. सवेरा।

हर्ष और शोक, ज्ञान और अज्ञान, अहंकार और अभिमान ये सब जीव के धर्म हैं। रामचन्द्रजी तो व्यापक ब्रह्म, परम आनन्द-स्वरूप, सबके स्वामी और पुराण-पुरुष हैं। इसे सारा जगत् जानता है।

दो०— पुरुष प्रसिद्ध प्रकास निधि प्रगट परावर नाथ।
रघुकुल मनि मम स्वामि सोइ कहि सिव नायउ माथ

जो प्रसिद्ध (पुराण) पुरुष हैं, प्रकाश के भंडार हैं, सब रूपों में प्रकट हैं, कुल जड़-चेतन के स्वामी हैं, वे ही रघुकुलमणि श्रीरामचन्द्रजी मेरे स्वामी हैं, ऐसा कहकर शिवजी ने उनको मस्तक नवाया।

निज भ्रम नहिं समुझहिं अग्यानी ❀ प्रभु पर मोह धरहिं जड़ प्रानी
जथा गगन घन पटल निहारी ❀ झाँपेउ भानु कहहिं कुबिचारी

अज्ञानी मनुष्य अपने भ्रम को नहीं समझते और वे मूर्ख प्रभु रामचन्द्रजी पर मोह का आरोप करते हैं। जैसे आकाश में बादलों का पर्दा देखकर अज्ञानी लोग कहते हैं कि सूर्य को बादलों ने छिपा लिया।

चितव जो लोचन अंगुलि लाएँ ❀ प्रगट जुगल ससि तेहिके भाएँ[1]
उमा रामविषयक अस मोहा ❀ नभ तम धूम धूरि जिमि सोहा

जो मनुष्य अपनी आँख के आगे उँगली लगाकर देखता है, उसके लिये तो दो चन्द्रमा स्पष्ट दिखाई देते हैं। हे पार्वती! रामचन्द्रजी के विषय में मोह की बात ऐसी ही है जैसे आकाश में अंधकार, धुएँ और धूल का सोहना। अर्थात् आकाश जैसे निर्मल है, उसी तरह रामचन्द्रजी भी हैं। [उदाहरण अलंकार]

विषय करन सुर जीव समेता ❀ सकल एक तें एक सचेता
सब कर परम प्रकासक जोई ❀ राम अनादि अवधपति सोई

विषयों से इन्द्रियाँ, इन्द्रियों से उनके देवता, देवताओं से जीवात्मा, ये सब एक की सहायता से एक चेतन हैं। इन सबका जो परम प्रकाशक है, अर्थात् जिससे यह सब चीज़ें चेतन होती हैं, वही अनादि ब्रह्म अयोध्यानरेश रामचन्द्रजी हैं।

जगत प्रकास्य प्रकासक रामू ❀ मायाधीस ग्यान गुन धामू
जासु सत्यता तें जड़ माया ❀ भास सत्य इव मोह सहाया

---

१. लिये।

जगत् प्रकाश्य है और रामचन्द्रजी प्रकाशक हैं। वे माया के स्वामी और ज्ञान तथा गुणों के धाम हैं। जिनकी सत्ता से, मोह की सहायता पाकर जड़ (अचेतन) माया भी सत्य सी भासित होती है।

दो०—रजत[1] सीप महुँ भास जिमि जथा भानु कर वारि।
जदपि मृषा तिहुँ काल सोइ भ्रम न सकइ कोउ टारि॥

जैसे सीप में चाँदी की और सूर्य की किरणों में पानी की प्रतीति होती है। यद्यपि यह प्रतीति तीनों कालों में झूठी है, पर इस भ्रम को कोई नहीं टाल सकता।

एहि विधि जग हरि आस्रित रहई ❀ जदपि असत्य देत दुखु अहई
जौं सपने सिर काटइ कोई ❀ बिनु जागें न दूरि दुख होई

इस तरह यह संसार भगवान् के आश्रित है। यद्यपि जगत् असत्य है, तो भी दुःख तो देता ही है; जिस तरह स्वप्न में कोई सिर काट ले, तो बिना जागे वह दुःख दूर नहीं होता।

जासु कृपाँ अस भ्रम मिटि जाई ❀ गिरिजा सोइ कृपालु रघुराई
आदि अन्त कोउ जासु न पावा ❀ मति अनुमानि निगम अस गावा

हे पार्वती! जिनकी कृपा से इस तरह का भ्रम मिट जाता है, वही कृपालु रामचन्द्रजी हैं। जिनका आदि और अन्त किसी ने नहीं पाया, वेदों ने अपनी बुद्धि से अनुमान करके (इस प्रकार) गाया है।

बिनु पद चलइ सुनइ बिनु काना ❀ कर बिनु करम करइ विधि नाना
आनन रहित सकल रस भोगी ❀ बिनु बानी वकता बड़ जोगी

वह ब्रह्म पाँवों के बिना ही चलता है, कानों के बिना ही सुनता है, हाथों के बिना ही तरह-तरह के काम करता है, मुंह के बिना ही वह सारे रसों का भोग करता है और वाणी के बिना ही बड़ा योग्य वक्ता तथा योगी है।

तन बिनु परस नयन बिनु देखा ❀ ग्रहइ घ्रान बिनु बास असेखा
असि सब भाँति अलौकिक करनी ❀ महिमा जासु जाइ नहिं बरनी

वह शरीर के बिना ही छूता है और आँखों के बिना ही देखता है। वह नाक के बिना ही सब गंध सूँघ लेता है। इस तरह उस ब्रह्म की करनी सभी

१. चाँदी।

प्रकार से अलौकिक है। उसकी महिमा कही नहीं जा सकती।

दो०—जेहि इमि गावहिं बेद बुध जाहि धरहिं मुनि ध्यान।
सोइ दसरथ सुत भगत हित कोसलपति भगवान॥११८॥

जिसको वेद और पंडित इस तरह गाते हैं और मुनि जिसका ध्यान धरते हैं, वही दशरथ के पुत्र भक्तों के हितकारी अयोध्या के स्वामी भगवान् रामचन्द्रजी हैं।

कासीं मरतु जंतु अवलोकी ❀ जासु नाम बल करउँ बिसोकी
सोइ प्रभु मोर चराचर स्वामी ❀ रघुवर सब उर अंतरजामी

हे पार्वती ! जिसके नाम के बल से काशी में मरते हुए प्राणी को देखकर मैं उसे शोक-रहित कर देता हूँ (अर्थात् मुक्त कर देता हूँ), वही रघुवर (रामचन्द्रजी) सबके हृदय में रहने वाले जड़-चेतन के स्वामी मेरे प्रभु हैं।

बिबसहुँ जासु नाम नर कहहीं ❀ जनम अनेक रचित अघ दहहीं
सादर सुमिरन जे नर करहीं ❀ भव बारिधि गोपद इव तरहीं

विवश होकर (बिना इच्छा के) भी जिनका नाम लेने से मनुष्यों के अनेक जन्मों के किये हुए पाप जल जाते हैं। फिर जो मनुष्य आदर-पूर्वक उन का स्मरण करते हैं, वे तो संसाररूपी समुद्र को गाय के खुर से बने गड्ढे के समान पार कर जाते हैं।

राम सो परमातमा भवानी ❀ तहँ भ्रम अति अबिहित तव बानी
अस संसय आनत उर माहीं ❀ ग्यान बिराग सकल गुन जाहीं

हे पार्वती ! वही परमात्मा रामचन्द्रजी हैं। उनमें भ्रम है, तुम्हारा ऐसा कहना बहुत ही अनुचित है। इस तरह का सन्देह मन में लाते ही (मनुष्य के) ज्ञान-वैराग्य आदि सारे गुण चले जाते हैं।

सुनि सिव के भ्रम भंजन बचना ❀ मिटि गै सब कुतरक कै रचना
भइ रघुपति पद प्रीति प्रतीती ❀ दारुन असंभावना बीती

शिवजी के भ्रम-नाशक वचनों को सुनकर (पार्वती के) सारे कुतर्कों की रचना मिट गई। उनके चित्त में रामचन्द्रजी के चरणों में प्रेम और विश्वास हो गया और कठिन मिथ्या कल्पना जाती रही।



पुनि पुनि प्रभुपद कमल गहि जोरि पंकरुह[1] पानि।
बोलीं गिरिजा बचन बर मनहुँ प्रेमरस सानि ॥११९॥

बार-बार स्वामी के चरण-कमलों को पकड़कर और अपने कमल ऐसे हाथ जोड़कर, पार्वती मानो प्रेम-रस में सानकर सुन्दर वचन बोलीं—

ससि कर सम सुनि गिरा तुम्हारी ❀ मिटा मोह सरदातप भारी
तुम्ह कृपाल सबु संसउ हरेऊ ❀ राम स्वरूप जानि मोहिं परेऊ

चन्द्रमा की किरणों के समान शीतल आपके वचन सुनकर मेरा अज्ञान रूपी भारी ताप शरद-ऋतु की धूप के समान मिट गया। हे कृपालु! आपने मेरे सारे सन्देह हर लिये; अब रामचन्द्रजी का यथार्थ स्वरूप मेरी समझ में आ गया।

नाथ कृपा अब गयेउ विषादा ❀ सुखी भइउँ प्रभु चरन प्रसादा
अब मोहि आपनि किंकरि जानी ❀ जदपि सहज जड़ नारि अयानी

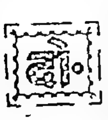
हे नाथ! आपकी कृपा से अब मेरा विषाद जाता रहा और आपके चरणों के अनुग्रह से मैं सुखी हो गई। यद्यपि मैं स्त्री होने के कारण स्वभाव ही से मूर्ख और ज्ञान-हीन हूँ, पर अब आप मुझे अपनी दासी जानकर—

प्रथम जो मैं पूछा सोइ कहहू ❀ जौं मोपर प्रसन्न प्रभु अहहू
राम ब्रह्म चिन्मय अविनासी ❀ सर्व रहित सब उर पुर बासी

हे प्रभो! जो आप मुझ पर प्रसन्न हैं, तो जो बात मैंने पहले आपसे पूछी थी, उसे कहिये। रामचन्द्रजी ब्रह्म हैं, ज्ञानस्वरूप हैं, अविनाशी हैं, सबसे अलग और सबके हृदय-रूपी नगरी में बसते हैं।

नाथ धरेउ नर तनु केहि हेतू ❀ मोहि समुझाइ कहहु बृषकेतू
उमा बचन सुनि परम विनीता ❀ राम कथा पर प्रीति पुनीता

हे वृषभकेतु! आप यह समझाकर कहिये कि उन्होंने मनुष्य का शरीर किस कारण से धारण किया? पार्वती के अत्यन्त नम्र वचन सुनकर और रामचन्द्रजी की कथा में उनका विशुद्ध प्रेम देखकर—



हिय हरषे कामारि तब संकर सहज सुजान।
बहु बिधि उमहि प्रसंसि पुनि बोले कृपानिधान ।१२०।

---

१. कमल।

कामदेव के शत्रु, स्वभाव ही से सुजान, कृपा-निधान शिवजी मन में बहुत ही प्रसन्न हुए और पार्वती की बहुत प्रकार से बड़ाई करके फिर बोले—

सुनु सुभ कथा भवानि रामचरितमानस बिमल।
कहा भुसुण्डि बखानि सुना बिहग नायक गरुड़।१२०

हे पार्वती! निर्मल रामचरित-मानस की उस पवित्र कथा को सुनो, जिसे कागभुशुण्डि ने विस्तार से कहा और पक्षिराज गरुड़जी ने सुना था।

सो संबाद उदार जेहि बिधि भा[1] आगे कहब।
सुनहु राम अवतार चरित परम सुन्दर अनघ॥१२०॥ (३)

वह उत्तम सम्वाद जिस प्रकार हुआ, उसे मैं आगे कहूँगा। अभी तुम रामचन्द्रजी के अवतार का परम सुन्दर और पाप-रहित चरित सुनो।

हरि गुन नाम अपार कथा रूप अगनित अमित।
मैं निज मति अनुसार कहउँ उमा सादर सुनहु।१२०। (४)

हरि के गुण और नाम अपार हैं, उनकी कथा के रूप भी अगणित और असीम हैं। हे पार्वती! मैं अपनी बुद्धि के अनुसार कहता हूँ, आदर-पूर्वक सुनो।

सुनु गिरिजा हरि चरित सुहाए ❀ बिपुल बिसद निगमागम गाए
हरि अवतार हेतु जेहि होई ❀ इदमित्थं[2] कहि जाइ न सोई

हे पार्वती! सुनो, वेद और शास्त्रों ने भगवान् के सुन्दर, विस्तृत और निर्मल चरित का गान किया है। हरि का अवतार जिस कारण से होता है, वह कारण 'बस यही है' ऐसा नहीं कहा जा सकता। (क्योंकि अनेक कारण एकत्र होते हैं, तब अवतार होता है।)

राम अतर्क्य बुद्धि मन बानी ❀ मत हमार अस सुनहि सयानी
तदपि संत मुनि बेद पुराना ❀ जस कछु कहहिं स्वमति अनुमाना

हे सयानी! सुनो, हमारा मत तो यह है कि बुद्धि, मन और वाणी से रामचन्द्रजी की तर्कना नहीं की जा सकती। पर तो भी सन्तजन, मुनि, वेद और पुराणों ने अपनी-अपनी बुद्धि के अनुसार जैसा कुछ कहा है,

---

१. हुआ। २. बस यही है।

तस मैं सुमुखि सुनावौं तोही ❀ समुझि परइ जस कारन मोही
जब जब होइ धरम कै हानी ❀ बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी

और जो कुछ कारण मेरी समझ में आता है, हे सुमुखि! वैसा मैं तुमको सुनाता हूँ। जब-जब धर्म की हानि होती है और नीच अभिमानी राक्षस बढ़ जाते हैं,

करहिं अनीति जाइ नहिं बरनी ❀ सीदहिं बिप्र धेनु सुर धरनी
तब तब प्रभु धरि बिबिध सरीरा ❀ हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा

जब वे ऐसा अन्याय करते हैं कि जिसका वर्णन नहीं हो सकता; ब्राह्मण, गाय, देवता और पृथ्वी दुःखी हो जाते हैं; तब-तब कृपानिधि भगवान् नाना प्रकार के शरीर धारण करके सज्जनों की पीड़ा हरते हैं।

दो०— असुर मारि थापहिं सुरन्ह राखहिं निज स्रुति सेतु।
जग बिस्तारहिं बिसद जस राम जनम कर हेतु॥१२१॥

वे असुरों को मारकर देवों की स्थापना और अपने वेदों की मर्यादा की रक्षा करते हैं और संसार में अपना निर्मल यश फैलाते हैं। रामचन्द्रजी के अवतार का यही कारण है।

सोइ जस गाइ भगत भव तरहीं ❀ कृपासिंधु जन हित तनु धरहीं
राम जनम के हेतु अनेका ❀ परम बिचित्र एक तें एका

उसी यश को गाकर भक्तजन भवसागर से तर जाते हैं। कृपासागर भगवान् भक्तों के हित के लिए शरीर धारण करते हैं। रामचन्द्रजी के जन्म लेने के अनेक कारण हैं जो एक से एक बढ़कर अद्भुत हैं।

जनम एक दुइ कहउँ बखानी ❀ सावधान सुनु सुमति भवानी
द्वारपाल हरि के प्रिय दोऊ ❀ जय अरु बिजय जान सब कोऊ

हे सुन्दर बुद्धिवाली भवानी! तुम सावधान होकर सुनो, मैं उनके दो-एक जन्मों का विस्तार से वर्णन करता हूँ। विष्णु के जय और विजय नाम के दो प्यारे द्वारपाल हैं, जिनको सब कोई जानते हैं।

बिप्र स्राप तें दूनउ भाई ❀ तामस असुर देह तिन्ह पाई
कनककसिपु अरु हाटकलोचन ❀ जगत बिदित सुरपति मद मोचन

उन दोनों भाइयों ने ब्राह्मण के शाप से असुरों का तामसी शरीर पाया।

एक का नाम हिरण्यकशिपु और दूसरे का हिरण्याक्ष था। ये देवताओं के राजा इन्द्र के गर्व को छुड़ाने वाले सारे जगत् में प्रसिद्ध हैं।

बिजई समर बीर बिख्याता ❀ धरि बराह[1] बपु[2] एक निपाता
होइ नरहरि दूसर पुनि मारा ❀ जन प्रहलाद सुजस बिस्तारा

वे युद्ध के जीतने वाले और बड़े विख्यात शूरवीर थे। भगवान् ने वाराह का रूप धारण करके उनमें से एक (हिरण्याक्ष) को मारा; फिर नरसिंह रूप धारण करके दूसरे (हिरण्यकशिपु) का वध किया और अपने भक्त प्रह्लाद का सुयश फैलाया।

दो०— भए निसाचर जाइ तेइ महाबीर बलवान।
कुम्भकरन रावन सुभट सुर बिजयी जग जान।१२२।

वे ही दोनों जाकर बलवान और महावीर राक्षस हुए। देवताओं को जीतने वाले बड़े योद्धा रावण और कुम्भकर्ण को सारा जगत् जानता है।

मुकुत न भए हते भगवाना ❀ तीनि जनम द्विज बचन प्रवाना[3]
एक बार तिन्हके हित लागी ❀ धरेउ सरीर भगत अनुरागी

यद्यपि भगवान् ने उन्हें मारा, पर तो भी वे मुक्त न हुए, क्योंकि ब्राह्मण के वचन (शाप) का प्रमाण तीन जन्म के लिये था। एक बार उनके कल्याण के लिए भक्तों पर प्रेम करने वाले भगवान् ने फिर अवतार लिया।

कस्यप अदिति तहाँ पितु माता ❀ दसरथ कौसिल्या बिख्याता
एक कलप एहि बिधि अवतारा ❀ चरित पवित्र किए संसारा

वहीं (उस अवतार में) उनके पिता और माता कश्यप और अदिति थे, जो दशरथ और कौशल्या के नाम से प्रसिद्ध थे। एक कल्प में इस तरह अवतार लेकर उन्होंने संसार में पवित्र लीलायें कीं।

एक कलप सुर देखि दुखारे ❀ समर जलंधर सन सब हारे
सम्भु कीन्ह संग्राम अपारा ❀ दनुज महाबल मरइ न मारा
परम सती असुराधिप नारी ❀ तेहि बल ताहि न जितहिं पुरारी

एक कल्प में जलन्धर दैत्य से सब देवता युद्ध में हार गये। उनको दुःखी देखकर शिवजी ने उस दैत्य से बड़ा ही घोर युद्ध किया; पर वह महाबली दैत्य

१. शूकर। २. शरीर। ३. प्रमाण।

मारे नहीं मरा। उस दैत्यराज की स्त्री बड़ी ही पतिव्रता थी। उसके प्रताप ही से शिवजी उस दैत्य को जीत न सके।

दो०— छल करि टारेउ तासु ब्रत प्रभु सुर कारज कीन्ह।
जब तेहिं जानेउ मरम तब स्राप कोप करि दीन्ह।१२३

प्रभु ने छल से उस दैत्य की स्त्री का व्रत भंग कर देवताओं का काम किया। जब उस स्त्री ने यह भेद जाना, तब उसने क्रोध करके शाप दिया।

तासु स्राप हरि दीन्ह प्रवाना ❀ कौतुक निधि कृपाल भगवाना
तहाँ जलंधर रावन भयऊ ❀ रन हति राम परम पद दयऊ

बड़े ही कौतुकी और दयालु भगवान् ने उस स्त्री का शाप स्वीकार किया। तब वह दैत्य (जलन्धर) रावण बना, जिसे रामचन्द्रजी ने लड़ाई में मार कर परमपद दिया।

एक जनम कर कारन एहा ❀ जेहि लगि राम धरी नर देहा
प्रति अवतार कथा प्रभु केरी[1] ❀ सुनु मुनि बरनी कबिन्ह घनेरी

एक जन्म का कारण यही था, जिससे रामचन्द्रजी ने मनुष्य-देह धारण किया। हे भरद्वाज मुनि! सुनिये, भगवान् के हरएक अवतार की कथा का वर्णन कवियों ने विस्तार से किया है।

नारद स्राप दीन्ह एक बारा ❀ कलप एक तेहि लगि अवतारा
गिरिजा चकित भईं सुनि बानी ❀ नारद बिष्नुभगत मुनि ग्यानी

एक बार नारदमुनि ने शाप दिया, इसलिए एक कल्प में उसके लिए अवतार हुआ। यह बात सुनकर पार्वती बड़ी चकित हुईं (और बोलीं कि) नारद तो विष्णु-भक्त और ज्ञानी हैं।

कारन कवन स्राप मुनि दीन्हा ❀ का अपराध रमापति कीन्हा
यह प्रसंग मोहि कहहु पुरारी ❀ मुनि मन मोह आचरज भारी

मुनि ने भगवान् को किस कारण से शाप दिया? लक्ष्मीकांत ने उनका क्या अपराध किया था? हे त्रिपुरारि! यह कथा मुझसे कहिये। आश्चर्य की बात है कि मुनि नारद के मन को भी मोह हुआ।

---

१. की।



दो० बोले बिहँसि महेस तब ग्यानी मूढ़ न कोइ ।
जेहि जस रघुपति करहिं जब सो तस तेहि छन होइ ॥

शिवजी ने तब हँसकर कहा—न कोई ज्ञानी है, न मूर्ख । जब भगवान् रामचन्द्रजी जिसको जैसा करते हैं, वह उसी क्षण वैसा ही हो जाता है ।

सो० कहउँ राम गुन गाथ भरद्वाज सादर सुनहु ।
भव भंजन रघुनाथ भजु तुलसी तजि मान मद॥१२४

हे भरद्वाज ! मैं रामचन्द्रजी की गुण-गाथा कहता हूँ, तुम आदर से सुनो । तुलसीदासजी कहते हैं—मान और मद को छोड़कर आवागमन का नाश करने वाले रघुनाथजी को भजो ।

हिमगिरि गुहा एक अति पावनि ❀ बह समीप सुरसरी सुहावनि
आस्रम परम पुनीत सुहावा ❀ देखि देवरिषि मन अति भावा

हिमालय पर्वत पर एक बड़ी पवित्र गुफा थी। उसके पास ही सुन्दर गङ्गाजी बहती थीं। उस परम पवित्र और सुन्दर आश्रम को नारदमुनि ने देखा और वह उनके मन को बहुत सुहावना लगा ।

निरखि सैल सरि बिपिन बिभागा ❀ भयउ रमापति पद अनुरागा
सुमिरत हरिहि साप गति बाधी[1] ❀ सहज बिमल मन लागि समाधी

पर्वत, नदी और बन-प्रदेश को देखकर नारदजी को भगवान् के चरणों में प्रेम उत्पन्न हुआ । भगवान् को स्मरण करते ही नारदमुनि का वह शाप जिसे दक्ष प्रजापति ने दिया था कि तुम एक स्थान पर नहीं टिक सकोगे, रुक गया और स्वभाव ही से निर्मल मन में समाधि लग गयी ।

मुनि गति देखि सुरेस डेराना ❀ कामहिं बोलि कीन्ह सनमाना
सहित सहाय जाहु मम हेतू ❀ चलेउ हरषि हिय जलचर केतू

नारदमुनि की गति (समाधि) देखकर देवराज इन्द्र डरा। उसने कामदेव को बुलाकर उसका आदर किया (और कहा कि) मेरी भलाई के लिये तुम अपने सहायकों-सहित (समाधि भङ्ग करने को) जाओ । (इन्द्र की आज्ञा पाते ही) कामदेव मन में प्रसन्न होकर चला ।

---

१. बँध गई, रुक गई ।

सुनासीर[1] मन महुँ अति त्रासा ❀ चहत देवरिषि मम पुर बासा
जे कामी लोलुप जग माहीं ❀ कुटिल काक इव सबहिं डेराहीं

इन्द्र के मन में यह बड़ा डर था कि देवर्षि नारद मेरे लोक (अमरावती) का निवास (राज्य) चाहते हैं। जो लोग संसार में कामी और लोभी होते हैं, वे कुटिल कौवे की तरह सबसे डरते हैं।

दो॰ सूख हाड़ लै भाग सठ स्वान निरखि मृगराज।
छीनि लेइ जनि जान जड़[2] तिमि[3] सुरपतिहि न लाज॥

जैसे सिंह को देखकर मूर्ख कुत्ता सूखा हाड़ लेकर भागे और वह मूर्ख यह समझे कि कहीं उस हाड़ को वह सिंह छीन न ले, वैसे ही इन्द्र को (नारदजी मेरा इन्द्रलोक छीन लेंगे ऐसा सोचते हुए) लज्जा नहीं आई।

तेहि आस्त्रमहि मदन जब गयऊ ❀ निज माया बसंत निरमयऊ
कुसुमित बिबिध बिटप बहुरंगा ❀ कूजहिं कोकिल गुंजहिं भृङ्गा

जब कामदेव उस आश्रम में गया, तब उसने अपनी माया से वहाँ वसन्त-ऋतु को उत्पन्न किया। तरह-तरह के वृक्षों पर रंग-बिरंगे फूल खिल गये और उन पर कोयलें कूकने लगीं और भौंरे गुञ्जारने लगे।

चली सुहावनि त्रिबिध बयारी ❀ काम कृसानु बढ़ावनिहारी
रंभादिक सुरनारि नबीना ❀ सकल असमसर कला प्रबीना

काम की आग को बढ़ाने वाली त्रिविध अर्थात् शीतल, मन्द और सुगन्धित सुहावनी हवा चलने लगी। देवताओं की रम्भा आदि सब नवयौवना स्त्रियाँ, जो कामदेव की कलाओं में निपुण थीं,

करहिं गान बहु तान तरंगा ❀ बहु बिधि क्रीड़हिं पानि पतंगा[4]
देखि सहाय मदन हरषाना ❀ कीन्हेसि पुनि प्रपंच बिधि नाना

तरह-तरह की तानों की तरंग में वे गाने लगीं और हाथ में गेंद लेकर तरह-तरह की क्रीड़ायें करने लगीं। इस तरह सहायकों को देखकर कामदेव बहुत प्रसन्न हुआ और फिर उसने बहुत प्रकार के मायाजाल रचे।

काम कला कछु मुनिहि न ब्यापी ❀ निज भय डरेउ मनोभव पापी
सीम कि चाँपि[5] सकइ कोउ तासू ❀ बड़ रखवार रमापति जासू

१. इन्द्र। २. मूर्ख। ३. वैसे। ४. गेंद। ५. दवा।

पर कामदेव की कोई कला मुनि पर प्रभाव न डाल सकी, तब पापी काम-देव अपने ही लिये भयभीत हो गया। जिसके बड़े रक्षक लक्ष्मीपति भगवान् हैं, भला, उसकी मर्यादा को कोई दबा सकता है?

दो०— सहित सहाय सभीत अति मानि हारि मन मैन[1]।
गहेसि जाइ मुनि चरन तब कहि सुठि आरत बैन[2]॥१२६॥

फिर अपने सहायकों-समेत कामदेव ने बहुत डरकर और मन में हार मान-कर मुनि के चरणों को जा पकड़ा और वह नम्र और आर्त्त वचन बोलने लगा।

भयउ न नारद मन कछु रोषा ❀ कहि प्रिय बचन काम परितोषा
नाइ चरन सिरु आयसु पाई ❀ गयउ मदन तब सहित सहाई

पर नारद मुनि के मन में कुछ भी क्रोध न आया। उन्होंने प्यार के वचन कहकर कामदेव का समाधान किया। फिर मुनि के चरणों में सिर नवाकर और आज्ञा पाकर कामदेव अपने सहायकों-सहित चला गया।

मुनि सुसीलता आपनि करनी ❀ सुरपति सभा जाइ सब बरनी
सुनि सबके मन अचरज आवा ❀ मुनिहि प्रसंसि हरिहि सिरु नावा

इन्द्र की सभा में जाकर उसने मुनि की सुशीलता और अपनी करतूत सब कही। जिसे सुनकर सबके मन में अचरज हुआ और उन्होंने नारदजी की बड़ाई करके भगवान् को प्रणाम किया।

तब नारद गवने सिव पाहीं ❀ जिता काम अहमिति मन माहीं
मार चरित संकरहि सुनाए ❀ अति प्रिय जानि महेस सिखाए

तब नारदजी शिवजी के पास गये, मुनि के मन में अहङ्कार हो गया कि उन्होंने कामदेव को जीत लिया। उन्होंने कामदेव की सारी लीला शिवजी को सुना दी। शिवजी ने उनको बहुत प्रिय समझकर समझाया—

बार बार बिनवउँ मुनि तोही ❀ जिमि यह कथा सुनायहु मोही
तिमि जनि हरिहि सुनायहु कबहूँ ❀ चलेहु प्रसंग दुरायहु[3] तबहूँ

हे मुनि! मैं बार-बार विनती करता हूँ कि जिस तरह यह कथा तुमने मुझे सुनाई है, उसी तरह विष्णु को कभी मत सुनाना। जो चर्चा चले भी, तो इसको छिपा जाना।

---

१. कामदेव। २. वचन। ३. छिपाना।

दो॰ संभु दीन्ह उपदेस हित नहिं नारदहि सुहान।
भरद्वाज कौतुक सुनहु हरि इच्छा बलवान॥१२७॥

यद्यपि शिवजी ने भले के लिये यह उपदेश दिया, पर नारद मुनि को वह अच्छा न लगा। (याज्ञवल्क्यजी कहते हैं कि) हे भरद्वाज! अब कौतुक (तमाशे की रोचक बात) सुनो। हरि की इच्छा बड़ी बलवती है।

राम कीन्ह चाहहिं सोइ होई ❀ करै अन्यथा अस नहिं कोई
संभु बचन मुनि मन नहिं भाए ❀ तब बिरंचि के लोक सिधाए

रामचन्द्रजी जो किया चाहते हैं, वही होता है। ऐसा कोई नहीं, जो उसके विरुद्ध कर सके। शिवजी के वाक्य नारदजी को न सुहाये; फिर वे वहाँ से ब्रह्मलोक को चले गये।

एक बार करतल बर बीना ❀ गावत हरि गुन गान प्रबीना
छीर सिंधु गवने मुनिनाथा ❀ जहँ बस श्रीनिवास श्रुतिमाथा

एक बार गान-विद्या में निपुण नारदमुनि हाथ में सुन्दर वीणा लिये हुए, हरि-गुण गाते क्षीरसागर को गये, जहाँ वेदों के मस्तक-स्वरूप श्रीनिवास भगवान् रहते हैं।

हरषि मिलेउ उठि रमानिकेता ❀ बैठे आसन रिषिहि समेता
बोले बिहँसि चराचर राया ❀ बहुते दिनन्ह कीन्हि मुनि दाया

लक्ष्मीनिवास भगवान् उठकर बड़े आनन्द से उनसे मिले और ऋषि के साथ आसन पर बैठ गये। चराचर के स्वामी भगवान् हँसकर बोले—हे मुनि! आज आपने बहुत दिनों पर दया की।

काम चरित नारद सब भाखे ❀ जद्यपि प्रथम बरजि सिवँ राखे
अति प्रचंड रघुपति कै माया ❀ जेहि न मोह अस को जग जाया

यद्यपि शिवजी ने पहले ही मना कर रक्खा था, पर तो भी नारदजी ने कामदेव का सारा चरित्र भगवान् को कह सुनाया। रघुनाथजी की माया बड़ी ही प्रबल है। जगत् में ऐसा कौन जन्मा है, जिसे वह मोहित न कर दे।

दो॰ रूख बदन करि बचन मृदु बोले श्रीभगवान।
तुम्हरे सुमिरन तें मिटहिं मोह मार मद मान॥१२८॥

भगवान् ने मुँह रूखा बनाकर कोमल वचन कहा—हे मुनिराज! आपका स्मरण करने से मोह, कामदेव, मद और अभिमान दूर हो जाते हैं; (फिर आपके लिये तो कहना ही क्या?)

सुनु मुनि मोह होइ मन ताकें ❀ ग्यान बिराग हृदय नहिं जाकें
ब्रह्मचरज ब्रत रत मतिधीरा ❀ तुम्हहि कि करइ मनोभव[1] पीरा

हे मुनि! सुनिये, जिसके हृदय में ज्ञान-वैराग्य नहीं है, मोह उसके मन में होता है। आप तो ब्रह्मचर्य-व्रत में तत्पर और बड़े धीर-बुद्धि हैं। भला, कहीं आपको भी कामदेव सता सकता है?

नारद कहेउ सहित अभिमाना ❀ कृपा तुम्हारि सकल भगवाना
करुनानिधि मन दीख बिचारी ❀ उर अंकुरेउ गरब तरु भारी

नारदजी ने अभिमान के साथ कहा—हे भगवान्! यह सब आपकी कृपा है। करुणा-निधान भगवान् ने मन में विचार करके देखा कि इनके मन में अभिमानरूपी भारी वृक्ष का अंकुर उग आया है।

बेगि सो मैं डारिहउँ उखारी ❀ पन हमार सेवक हितकारी
मुनि कर हित मम कौतुक होइ ❀ अवसि उपाय करबि मैं सोई

अब मैं इसे जल्दी ही उखाड़ फेंकूँगा; क्योंकि भक्तों का हित करना हमारा प्रण है। इससे मुनि का कल्याण और मेरा खेल होगा। मैं अवश्य वही उपाय करूँगा।

तब नारद हरिपद सिरु नाई ❀ चले हृदय अहमिति अधिकाई
श्रीपति निज माया तब प्रेरी ❀ सुनहु कठिन करनी तेहि केरी

तब नारदमुनि भगवान् के चरणों में सिर नवाकर चले। उनके मन में अभिमान और भी बढ़ गया। फिर भगवान् ने अपनी माया को प्रेरित किया। अब उसकी कठिन करतूत सुनो।

दो०— बिरचेउ मगु महुँ नगर तेहि सत जोजन बिस्तार।
श्रीनिवास-पुर तें अधिक रचना बिबिध प्रकार॥१२९॥

उसने रास्ते में सौ योजन (चार सौ कोस) का एक बहुत ही सुन्दर नगर रचा। उस नगर की भाँति-भाँति की रचनाएँ लक्ष्मी-निवास (भगवान् के)

---

१. कामदेव।

नगर (बैकुण्ठ) से भी अधिक सुन्दर थीं ।

बसहिं नगर सुंदर नर नारी ❀ जनु वहु मनसिज[1] रति तनुधारी
तेहि पुर बसइ सीलनिधि राजा ❀ अगनित हय गय सेन समाजा

उस नगर में ऐसे सुन्दर नर-नारी बसते थे, मानो अनेक कामदेव और (उसकी स्त्री) रति ही ने शरीर धारण कर रक्खे हों। उस नगर में शीलनिधि नामक राजा रहता था। उसके यहाँ घोड़े, हाथी और सेना के समूह अनगिनत थे।

सत सुरेस सम बिभव बिलासा ❀ रूप तेज बल नीति निवासा
बिस्वमोहनी तासु कुमारी ❀ श्री बिमोह जिसु रूप निहारी

उसका वैभव और विलास सौ इन्द्रों के समान था। रूप, तेज, बल और नीति का वह घर था। उसके विश्वमोहिनी नाम की एक कन्या थी, जिसका रूप देखकर लक्ष्मी भी मोहित हो जायँ।

सोइ हरि माया सब गुन खानी ❀ सोभा तासु कि जाइ बखानी
करइ स्वयंबर सो नृपबाला ❀ आए तहँ अगनित महिपाला

वह सब गुणों की खान भगवान् की माया थी। उसकी शोभा का वर्णन कैसे किया जा सकता है? वह राजकन्या स्वयम्वर करना चाहती थी, इससे वहाँ अनगिनत राजा आये हुये थे।

मुनि कौतुकी नगर तेहिं गयऊ ❀ पुरबासिन्ह सब पूछत भयऊ
सुनि सब चरित भूप गृहँ आए ❀ करि पूजा नृप मुनि बैठाए

मनमौजी नारदजी उस नगर में गये और नगर-निवासियों से उन्होंने सब हाल पूछा। सब समाचार सुनकर (मुनि) राजा के महल में आये। राजा ने सत्कार करके उन्हें आसन पर बैठाया।

दो०— आनि[2] देखाई नारदहि भूपति राजकुमारि ।
कहहु नाथ गुन दोष सब एहि के हृदयँ बिचारि ।१३०।

राजा ने राजकुमारी को लाकर नारदजी को दिखलाया और पूछा—हे नाथ ! आप अपने हृदय में विचार कर इसके सब गुण-दोष कहिये।

देखि रूप मुनि बिरति बिसारी ❀ बड़ी बार[3] लगि रहे निहारी
लच्छन तासु बिलोकि भुलाने ❀ हृदयँ हरष नहिं प्रगट बखाने

१. कामदेव। २. लाकर। ३. देर।



उसके रूप को देखते ही मुनि वैराग्य भूल गये और बड़ी देर तक उसे देखते ही रहे। उसके लक्षण देखकर मुनि अपने आप को भूल गये और हृदय में हर्षित हुए पर उसे प्रगट न होने दिया।

जो एहि बरइ अमर सोइ होई ❀ समर भूमि तेहि जीत न कोई
सेवहिं सकल चराचर ताही ❀ बरइ सीलनिधि कन्या जाही

(वे मन में कहने लगे कि) जो इसे ब्याहेगा, वह अमर होगा और कोई उसे युद्ध में जीत न सकेगा। यह शीलनिधि की कन्या जिसको बरेगी, सारा चराचर जगत् उसकी सेवा करेगा।

लच्छन सब बिचारि उर राखे ❀ कछुक बनाइ भूप सन भाखे
सुता सुलच्छन कहि नृप पाहीं ❀ नारद चले सोच मन माहीं

सब लक्षणों को विचारकर मुनि ने अपने हृदय में रक्खा और राजा से कुछ और अपनी ओर से बनाकर कह दिया। नारदमुनि राजा को यह कहकर चल दिये कि तुम्हारी पुत्री सुलक्षणा (अच्छे लक्षणों वाली) है। पर वे मन में यह सोचते हुये चले—

करउँ जाइ सोइ जतन बिचारी ❀ जेहि प्रकार मोहिं बरइ कुमारी
जप तप कछु न होइ तेहि काला ❀ हे बिधि मिलइ कवन बिधि बाला

मैं जाकर सोच-विचार करके ऐसा उपाय करूँ, जिससे (यह) कन्या मुझे ही बरे। इस समय जप-तप तो कुछ भी नहीं हो सकता। हे विधाता! मुझे यह कन्या किस तरह मिलेगी?

दो॰ एहि अवसर चाहिअ परम सोभा रूप बिसाल।
जो बिलोकि रीझै कुअँरि तब मेलइ जयमाल १३१

इस मौके पर तो बड़ी भारी शोभा और विशाल रूप चाहिये, जिसे देखकर कुमारी मोहित हो और जयमाल मेरे गले में डाल दे।

हरि सन[1] माँगउँ सुन्दरताई ❀ होइहि जात गहरु अति भाई
मोरें हित हरि सम नहिं कोऊ ❀ एहि अवसर सहाय सोइ होऊ

भगवान् से सुन्दरता माँगूँ? पर भाई! उनके पास जाने में बहुत देर लग

१. से।

जायगी। पर मेरे तो हरि के समान दूसरा कोई हितैषी भी नहीं। इस समय वे ही मेरे सहायक हों।

बहु बिधि बिनय कीन्हि तेहि काला ❀ प्रगटेउ प्रभु कौतुकी कृपाला
प्रभु बिलोकि मुनि नयन जुड़ाने ❀ होइहि काजु हिएँ हरषाने

उस समय नारदजी ने भगवान् की बहुत विनती की। कौतुकी और कृपालु प्रभु वहीं प्रकट हो गये। स्वामी को देखकर नारदजी के नेत्र शीतल हो गये और वे मन में बड़े ही प्रसन्न हुए कि अब काम बन ही जायगा।

अति आरत कहि कथा सुनाई ❀ करहु कृपा करि होहु सहाई
आपन रूप देहु प्रभु मोही ❀ आन भाँति नहिं पावउँ ओही

नारदजी ने बड़ी ही दीनता से सब कथा कह सुनाई और कहा—हे नाथ! अब कृपा करके मेरी सहायता कीजिये। हे प्रभो! आप अपना रूप मुझको दीजिए; और किसी तरह मैं उस (राजकन्या) को नहीं पा सकता।

जेहि बिधि नाथ होइ हित मोरा ❀ करहु सो बेगि[1] दास मैं तोरा
निज माया बल देखि बिसाला ❀ हियँ हँसि बोले दीनदयाला

हे नाथ! जिस तरह से मेरा कल्याण हो, आप वही काम जल्दी कीजिए। मैं आपका दास हूँ। अपनी माया का विशाल बल देखकर दीनदयालु भगवान् हृदय में हँसकर बोले—

दो०— जेहि बिधि होइहि परम हित नारद सुनहु तुम्हार।
सोइ हम करब न आन[2] कछु बचन न मृषा हमार १३२

हे नारद! सुनो, जिस तरह आपका परम कल्याण होगा, हम वही करेंगे, दूसरा कुछ नहीं। हमारा वचन असत्य नहीं होता।

कुपथ माँग रुज[3] ब्याकुल रोगी ❀ बैद न देइ सुनहु मुनि जोगी
एहि बिधि हित तुम्हार मैं ठयऊ ❀ कहि अस अंतरहित प्रभु भयऊ

हे योगी मुनि! सुनो। जिस तरह रोगी रोग से व्याकुल होकर कुपथ्य माँगे तो वैद्य उसे नहीं देता; उसी तरह मैंने भी तुम्हारा हित करने की ठान ली है। ऐसा कहकर भगवान् अन्तर्द्धान हो गये।

---

१. जल्द। २. अन्य। ३. रोग।



माया बिबस भये मुनि मूढ़ा ❀ समुझी नहिं हरि गिरा निगूढ़ा[1]
गवने तुरत तहाँ रिषिराई ❀ जहाँ स्वयंबर भूमि बनाई

भगवान् की माया के वश हुये मुनि ऐसे मूढ़ हो गये कि वे भगवान् की अगूढ़ (स्पष्ट) वाणी को भी न समझ सके। नारदजी तत्काल वहाँ गये, जहाँ स्वयंवर की भूमि बनाई गई थी।

निज निज आसन बैठे राजा ❀ बहु बनाव करि सहित समाजा
मुनि मन हरष रूप अति मोरें ❀ मोहि तजि आनहि बरिहि न भोरें

ख़ूब सज-धज कर राजा लोग समाज-सहित अपने-अपने आसन पर बैठे थे। नारद मुनि के मन में बड़ा हर्ष था कि मेरा रूप बहुत ही सुन्दर है। कन्या भूलकर भी मेरे सिवा दूसरे को न बरेगी।

मुनि हित कारन कृपानिधाना ❀ दीन्ह कुरूप न जाइ बखाना
सो चरित्र लखि काहुँ न पावा ❀ नारद जानि सबहिं सिर नावा

मुनि के कल्याण के लिये कृपानिधान ने उनको ऐसा कुरूप बना दिया था, जिसका वर्णन नहीं हो सकता; पर उस रहस्य को किसी ने देखा नहीं। सबने उन्हें नारद ही जानकर प्रणाम किया।

दो०— रहे तहाँ दुइ रुद्र गन ते जानहिं सब भेउ[2]।
बिप्र बेष देखत फिरहिं परम कौतुकी तेउ[3] ॥१३३॥

वहाँ दो शिवजी के गण भी थे। वे सब रहस्य जानते थे। वे ब्राह्मण के वेष में वहाँ का सब कौतुक देखते फिरते थे। वे भी बड़े मौजी थे।

जेहि समाज बैठे मुनि जाई ❀ हृदय रूप अहमिति अधिकाई
तहँ बैठे महेस गन दोऊ ❀ बिप्र बेष गति लखइ न कोऊ

जिस समाज (पंक्ति) में नारदजी हृदय में अपने रूप का बड़ा घमण्ड लेकर जा बैठे थे, वहीं पर शिवजी के वे दोनों गण भी बैठ गये। ब्राह्मण के वेष में होने से कोई उनकी चाल को न जान सका।

करहिं कूटि नारदहिं सुनाई ❀ नीकि दीन्हि हरि सुन्दरताई
रीझिहि राजकुअँरि छबि देखी ❀ इन्हहिं बरिहि हरि जानि बिसेषी

नारदजी को सुना-सुनाकर, वे व्यंग्य वचन कहते थे—भगवान् ने इनको

१. स्पष्ट। २. भेद, रहस्य। ३. वे भी।

अच्छी सुन्दरता दी है। इनकी शोभा देखकर राजकुमारी रीझ ही जायगी और इन्हीं को हरि (वानर) जानकर ख़ास तौर से बरेगी।

मुनिहि मोह मन हाथ पराएँ ❀ हँसहिं संभु गन अति सचु[1] पाएँ
जदपि सुनहिं मुनि अटपटि बानी ❀ समुझि न परइ बुद्धि भ्रम सानी

नारद मुनि को मोह हो रहा था और उनका मन दूसरे के हाथ (माया के वश) में था। शिवजी के गण ख़ूब मज़ा ले-लेकर हँसते थे। यद्यपि मुनि उनकी ऊटपटाँग बातें सुनते थे; पर तो भी वे उनकी समझ में नहीं आती थीं, क्योंकि उनकी बुद्धि भ्रम में सनी हुई थी।

काहु न लखा सो चरित बिसेषा ❀ सो सरूप नृपकन्याँ देखा
मर्कट[2] बदन भयंकर देही ❀ देखत हृदयँ क्रोध भा तेही

इस विशेष चरित को और किसी ने नहीं देखा। केवल उस राजकन्या ने वह रूप देखा। मुनि का मुँह बन्दर का-सा और सारा शरीर डरावना था। उसे देखते ही कन्या के हृदय में क्रोध उत्पन्न हो गया।

दो०— सखी संग लै कुअँरि तब चलि जनु राजमराल।
देखत फिरइ महीप सब कर सरोज जयमाल।१३४।

सखियों को साथ लेकर राजकुमारी इस तरह चली जैसे राज-हंसिनी चल रही हो। वह सब राजाओं को देखती फिरती थी। उसके कमल ऐसे हाथों में जयमाला थी।

जेहि दिसि बैठे नारद फूली ❀ सो दिसि तेहि न बिलोकी भूली
पुनि पुनि मुनि उकसहिं अकुलाहीं ❀ देखि दसा हरगन मुसुकाहीं

जिस ओर नारद (रूप के) गर्व में फूले बैठे थे, उस ओर उसने भूल कर भी नहीं ताका। नारदमुनि बार-बार उचकते और छटपटाते थे। उनकी दशा को देखकर शिवजी के गण मुस्कराते थे।

धरि नृप तनु तहँ गयउ कृपाला ❀ कुअँरि हरषि मेलेउ जयमाला
दुलहिनि लै गे[3] लच्छिनिवासा ❀ नृप समाज सब भयउ निरासा

कृपालु भगवान् राजा का शरीर धारण करके वहाँ जा पहुँचे। राजकुमारी ने प्रसन्न होकर उनके गले में जयमाला डाल दी। लक्ष्मीनिवास भगवान्

---

१. रस ले-लेकर। २. बन्दर। ३. गये।

दुलहिन को ले गये। सारी राज-मंडली निराश हुई।

मुनि अति विकल मोहमति नाँठी ❀ मनि गिरि गई छूटि जनु गाँठी
तब हर गन बोले मुसुकाई ❀ निज मुख मुकुर बिलोकहु जाई

मुनि बहुत विकल थे; मोह ने उनकी बुद्धि को जकड़ लिया था। मानो गाँठ खुल जाने से मणि गिर गई हो। तब शिवजी के गणों ने मुस्कराकर कहा—जाकर दर्पण में अपना मुँह तो देखिये।

अस कहि दोउ भागे भय भारी ❀ बदन दीख मुनि बारि[1] निहारी
बेषु बिलोकि क्रोध अति बाढ़ा ❀ तिन्हहिं सराप दीन्ह अति गाढ़ा

ऐसा कहकर वे दोनों बहुत भयभीत होकर भाग खड़े हुये। मुनि ने पानी में झाँककर अपना मुँह देखा। अपना वेष देखकर उन्हें बहुत क्रोध बढ़ा। उन गणों को उन्होंने बड़ा कठोर शाप दिया।

दो०—होहु निसाचर जाइ तुम्ह कपटी पापी दोउ।
हँसेहु हमहिं सो लेहु फल बहुरि हँसेहु मुनि कोउ।१३५

तुम दोनों कपटी और पापी जाकर राक्षस हो जाओ। मेरी हँसी की, उसका फल लो। अब फिर किसी मुनि की हँसी करना।

पुनि जल दीख रूप निज पावा ❀ तदपि हृदयँ संतोष न आवा
फरकत अधर[2] कोप मन माहीं ❀ सपदि चले कमलापति पाहीं

मुनि ने फिर जल में देखा, तो उन्हें अपना असली रूप प्राप्त हो गया। इतने पर भी उन्हें संतोष नहीं हुआ। उनके होंठ फड़क रहे थे और मन में क्रोध (भरा) था। तुरंत ही वे कमलापति भगवान् के पास चले।

देहउँ स्राप कि मरिहउँ जाई ❀ जगत मोरि उपहास कराई
बीचहि पंथ मिले दनुजारी ❀ संग रमा सोइ राजकुमारी

मन में सोचते जाते थे—जाकर या तो शाप दूंगा या प्राण दे दूंगा। उन्होंने जगत् में मेरी हँसी करा दी। बीच रास्ते ही में उन्हें दैत्यों के शत्रु विष्णु भगवान् मिले। साथ में लक्ष्मी और वही राजकुमारी थीं।

बोले मधुर बचन सुरसाईं ❀ मुनि कहँ चले बिकल की नाईं
सुनत बचन उपजा अति क्रोधा ❀ मायाबस न रहा मन बोधा

---

१. पानी। २. ओंठ।

देवताओं के स्वामी भगवान् ने मीठे वचनों से कहा—हे मुनि! व्याकुल की तरह कहाँ चले? उनका वचन सुनते ही नारद को बड़ा क्रोध आया। माया के वश में होने के कारण मन में चेत नहीं था।

पर संपदा सकहु नहिं देखी ❀ तुम्हरे इरिषा कपट बिसेखी
मथत सिंधु रुद्रहि बौराएहु ❀ सुरन्ह प्रेरि बिष पान कराएहु

मुनि ने कहा—तुम दूसरों का ऐश्वर्य नहीं देख सकते; तुम में ईर्ष्या और कपट अधिक है। सिंधु मथने के समय तुमने शिवजी को बावला बना दिया; और देवताओं को प्रेरित करके उन्हें विष-पान कराया।

दो०—असुर सुरा बिष संकरहि आपु रमा मनि चारु।
स्वारथ साधक कुटिल तुम्ह सदा कपट ब्यवहारु॥१३६॥

असुरों को शराब और शिवजी को विष देकर तुमने स्वयं लक्ष्मी और सुन्दर कौस्तुभ-मणि हथिया ली। तुम बड़े धूर्त और मतलबी हो। तुम सदा कपट का व्यवहार करते हो।

परम स्वतंत्र न सिर पर कोई ❀ भावइ मनहिं करहु तुम्ह सोई
भलेहि मंद मंदेहि भल करहू ❀ बिसमउ हरष न हिअँ कछु धरहू

तुम बड़े स्वाधीन हो; सिर पर तो कोई है नहीं, इससे जब जो जी को भाता है, वही करते हो। भले को बुरा और बुरे को भला कर देते हो। हृदय में न तुम्हें विस्मय होता है, न हर्ष।

डहँकि डहँकि[1] परिचेहु सब काहू ❀ अति असंक मन सदा उछाहू
करम सुभासुभ तुम्हहिं न बाधा ❀ अब लगि तुम्हहिं न काहूँ साधा

सबको ठग-ठगकर परक गये हो; किसी का डर तो है नहीं, इससे (ठगने के काम में) मन में सदा उत्साह रहता है। शुभ और अशुभ कर्मों की भी तुम्हें कोई रुकावट नहीं है। अबतक तुमको किसी ने ठीक नहीं किया था।

भले भवन अब बायन[2] दीन्हा ❀ पावहुगे फल आपन कीन्हा
बंचेहु मोहि जवनि धरि देहा ❀ सोइ तनु धरहु श्राप मम एहा

अब तुमने अच्छे घर में बैना दिया है। अब तुम अपने किये का फल पाओगे। जो शरीर धारण करके तुमने मुझे छला है, वही शरीर धारण करो, यह मेरा शाप है।

---

१. ठग-ठगकर, २. विवाहादि का मिष्ठान्न।

कपि आकृति तुम्ह कीन्हि हमारी ❀ करिहहिं कीस सहाय तुम्हारी
मम अपकार कीन्ह तुम्ह भारी ❀ नारि बिरहँ तुम्ह होब' दुखारी

तुमने मेरी आकृति बंदर की कर दी थी, वही बंदर तुम्हारी सहायता करेंगे। तुमने मेरा बड़ा अपकार किया है; तुम भी स्त्री के वियोग में दुःखी होगे।

दो०- स्राप सीस धरि हरषि हिअँ प्रभु बहु बिनती कीन्हि।
निज माया कै प्रबलता करषि' कृपानिधि लीन्हि॥१३७

शाप को सिर पर चढ़ाकर, हृदय में हर्षित होकर प्रभु ने नारदजी से बहुत विनती की और कृपा के भंडार भगवान् ने अपनी माया की प्रबलता खींच ली।

जब हरि माया दूरि निवारी ❀ नहिं तहँ रमा न राजकुमारी
तब मुनि अति सभीत हरि चरना ❀ गहे पाहि प्रनतारति हरना

जब भगवान् ने माया दूर कर ली, तब न वहाँ लक्ष्मी थी, न राजकुमारी। तब मुनि ने भयभीत होकर प्रभु का चरण पकड़ लिया और कहा—हे शरण में आये हुए का दुःख हरने वाले! मेरी रक्षा करो।

मृषा होउ मम स्राप कृपाला ❀ मम इच्छा कह दीनदयाला
मैं दुर्बचन कहे बहुतेरे ❀ कह मुनि पाप मिटिहि किमि मेरे

हे कृपा करने वाले! मेरा शाप मिथ्या हो जाय। तब दीनों पर दया करने वाले भगवान् ने कहा—यह तो मेरी इच्छा से हुआ है। मुनि ने कहा—मैंने आपको बहुत बुरे वचन कहे। मेरे पाप कैसे मिटेंगे?

भजहु जाय संकर सत नामा ❀ होइहि हृदय तुरत बिस्रामा
कोउ नहिं सिव समान प्रिय मोरें ❀ अति परतीति तजहु जनि भोरें

भगवान् ने कहा—जाकर शंकरजी के शत नाम का जप करो। तब तुरंत ही हृदय में शांति होगी। शिव के समान मुझे कोई प्रिय नहीं है। इस विश्वास को भूलकर भी न छोड़ना।

जेहि पर कृपा न करहिं पुरारी ❀ सो न पाव मुनि भगति हमारी
अस उर धरि महि बिचरहु जाई ❀ अब न तुम्हहि माया निअराई

शिवजी जिस पर कृपा नहीं करते, वह हे मुनि! मेरी भक्ति नहीं पाता।

---

१. होगे। २. खींच।

ऐसा हृदय में धारण करके जाकर पृथ्वी पर विचरो। अब मेरी माया तुम्हारे निकट नहीं आयेगी।

दो० बहु बिधि मुनिहि प्रबोधि प्रभु तब भए अंतरधान।
सत्यलोक नारद चले करत राम गुन गान।१३८।

प्रभु बहुत प्रकार से मुनि को ढाढ़स देकर तब अंतर्ध्यान हुये और नारदजी रामचन्द्रजी के गुणों का गान करते हुये सत्यलोक की ओर चले।

हर गन मुनिहि जात पथ देखी ❀ बिगत मोह मन हर्ष बिसेषी
अति सभीत नारद पहिं आए ❀ गहि पद आरत बचन सुनाये

शिव के गणों ने मुनि को मार्ग में जाते हुये देखा कि वे मोह से रहित हैं और उनके मन में हर्ष बहुत है। वे बहुत डरे हुये नारदजी के पास आये और उनके चरण पकड़कर उन्होंने बड़ी नम्रता के वचन कहे—

हर गन हम न बिप्र मुनिराया ❀ बड़ अपराध कीन्ह फलु पाया
स्राप अनुग्रह करहु कृपाला ❀ बोले नारद दीनदयाला

हे मुनिराज! हम ब्राह्मण नहीं हैं, शिव के गण हैं। हमने बड़ा अपराध किया और उसका फल पा लिया। अब हे कृपालु! आप शाप को दूर कर दीजिये। दीनों पर दया करने वाले नारदजी ने कहा—

निसिचर जाइ होहु तुम्ह दोऊ ❀ बैभव बिपुल तेज बल होऊ
भुज बल बिस्व जितब तुम्ह जहिआ ❀ धरिहहिं बिष्नु मनुज तनु तहिआ

तुम दोनों जाकर राक्षस होओ; तुमको बहुत ऐश्वर्य, तेज और बल प्राप्त हो। तुम जब अपनी भुजाओं के बल से संसार को जीत लोगे, तब भगवान् विष्णु मनुष्य का शरीर धारण करेंगे।

समर मरन हरि हाथ तुम्हारा ❀ होइहहु मुकुत न पुनि संसारा
चले जुगल मुनि पद सिरु नाई ❀ भए निसाचर कालहि पाई

विष्णु भगवान् के हाथ से युद्ध में तुम्हारी मृत्यु होगी। तब तुम मुक्त हो जाओगे और संसार में फिर जन्म नहीं लोगे। वे दोनों मुनि के चरणों में सिर नवाकर चले और समय पाकर राक्षस हुये।

दो०— एक कल्प एहि हेतु प्रभु लीन्ह मनुज अवतार।
सुर रंजन सज्जन सुखद हरि भंजन भुवि भार।१३९

देवताओं को प्रसन्न करने वाले, सज्जनों को सुख देने वाले और पृथ्वी के भार को नष्ट करने वाले भगवान् ने एक कल्प में तो इसी कारण से मनुष्य का अवतार लिया था।

एहि विधि जनम करम हरि केरे[1] ❀ सुन्दर सुखद बिचित्र घनेरे
कलप कलप प्रति प्रभु अवतरहीं ❀ चारु चरित नाना बिधि करहीं

इस प्रकार भगवान् के अनेकों सुन्दर, सुख देने वाले और बहुत विचित्र जन्म और कर्म हैं। प्रत्येक कल्प में भगवान् अवतार लेते हैं और अनेक प्रकार की सुन्दर लीलायें करते हैं।

तब तब कथा मुनीसन्ह गाई ❀ परम पुनीत प्रबंध बनाई
विविध प्रसंग अनूप बखाने ❀ करहिं न सुनि आचरजु सयाने

तब-तब मुनिवरों ने बहुत पवित्र प्रबंध बनाकर कथा का गान किया है और भाँति-भाँति के अनोखे प्रसंगों का वर्णन किया है, जिसको सुनकर समझदार लोग आश्चर्य नहीं करते।

हरि अनंत हरि कथा अनंता ❀ कहहिं सुनहिं बहु बिधि सब संता
रामचंद्र के चरित सुहाए ❀ कलप कोटि लगि जाहिं न गाए

क्योंकि भगवान् अनंत हैं। उनकी कथा भी अनन्त है और सन्त लोग उसे बहुत प्रकार से कहते और सुनते भी हैं। रामचन्द्र के सुन्दर चरित्र करोड़ कल्पों में भी गाये नहीं जा सकते।

यह प्रसंग मैं कहा भवानी ❀ हरिमायाँ मोहहिं मुनि ग्यानी
प्रभु कौतुकी प्रनत हितकारी ❀ सेवत सुलभ सकल दुख हारी

शिवजी पार्वतीजी से कहते हैं—हे पार्वती! मैंने यह प्रसंग यह दिखाने के लिये कहा कि ज्ञानी मुनि भी भगवान् की माया से मोहित हो जाते हैं। भगवान् बड़े ही कौतुकी हैं और शरणागत का हित करने वाले हैं। सेवा करने में बहुत सुलभ और सब दुःखों के हरने वाले हैं।

---

१. के।



सुर नर मुनि कोउ नाहिं जेहि न मोह माया प्रवल।
अस बिचारि मन माहिं भजिअ महामाया पतिहिं॥

देवता, मनुष्य और मुनियों में ऐसा कोई नहीं है, जिसे भगवान् की प्रवल माया न मोह ले। ऐसा मन में विचारकर महामाया के पति विष्णु भगवान् को भजना चाहिये।

अपर[1] हेतु सुनु सैलकुमारी ❀ कहौं विचित्र कथा विस्तारी
जेहि कारन अज अगुन अरूपा ❀ ब्रह्म भयेउ कौसलपुर भूपा

हे पर्वत की कन्या पार्वती! भगवान् के अवतार का दूसरा कारण सुनो। मैं उनकी अनोखी कथा को विस्तार करके कहता हूँ। जिस कारण से जन्म-रहित, निर्गुण और रूप-रहित अनुपम ब्रह्म अयोध्यापुरी के राजा हुये।

जो प्रभु बिपिन फिरत तुम्ह देखा ❀ बन्धु समेत धरे मुनिवेषा
जासु चरित अवलोकि भवानी ❀ सती सरीर रहिहु बौरानी

हे पार्वती! जिस प्रभु को तुमने भाई के साथ मुनि के वेष में वन में फिरते हुये देखा था, जिसका चरित देखकर, सती के शरीर में तुम ऐसी वावली बन गई थी कि—

अजहुँ न छाया मिटति तुम्हारी ❀ तासु चरित सुनु भ्रम रुज हारी
लीला कीन्हि जो तेहि अवतारा ❀ सो सब कहिहौं मति अनुसारा

आज भी उस बावलेपन की छाया नहीं मिटती। उसी का चरित्र सुनो, जो भ्रम रूपी रोग का हरण करने वाला है। उस अवतार में भगवान् ने जो लीलायें की हैं अपनी बुद्धि के अनुसार मैं वे सब कहूँगा।

भरद्वाज सुनि संकर बानी ❀ सकुचि सप्रेम उमा मुसुकानी
लगे बहुरि बरनै बृषकेतू ❀ सो अवतार भयेउ जेहि हेतू

याज्ञवल्क्य ने कहा—हे भरद्वाज! शंकरजी के वचन सुनकर, सकुचाकर, पार्वती प्रेम-सहित मुस्कुराई। शिवजी फिर जिस कारण से भगवान् का वह अवतार हुआ था, उसका वर्णन करने लगे।



सो मैं तुम्ह सन कहउँ सबु सुनु मुनीस मन लाइ।
राम कथा कलिमल हरनि मंगल करनि सुहाइ॥१४१॥

---

१. दूसरा।

हे मुनियों में श्रेष्ठ भरद्वाज! मैं वह सब कथा तुमसे कहता हूँ। सुनो, राम की कथा कलियुग के पापों को हरने वाली, कल्याण करने वाली और बड़ी सुन्दर है।

स्वायंभू मनु अरु संतरूपा ❀ जिन्हते भइ नरसृष्टि अनूपा
दंपति धरम आचरन नीका ❀ अजहुँ गाव श्रुति जिन्ह कै लीका

स्वायंभुव मनु थे, और शतरूपा उनकी स्त्री थीं, जिनसे यह मनुष्यों की अद्भुत सृष्टि हुई। उनके पति-पत्नी धर्म और आचरण पवित्र थे। आज भी वेद उनकी कीर्त्ति का गान करते हैं।

नृप उत्तानपाद सुत तासू ❀ ध्रुव हरिभगत भयेउ सुत जासू
लघु सुत नाम प्रियब्रत ताही ❀ बेद पुरान प्रसंसहिं जाही

उनका पुत्र उत्तानपाद था, जिसका पुत्र हरिभक्त ध्रुव हुआ। उसके छोटे पुत्र का नाम प्रियव्रत था, जिसकी प्रशंसा वेद और पुराण करते हैं।

देवहूति पुनि तासु कुमारी ❀ जो मुनि कर्दम कै प्रिय नारी
आदि देव प्रभु दीनदयाला ❀ जठर धरेउ जेहि कपिल कृपाला

उसकी कन्या का नाम देवहूती था। वह कर्दम मुनि की प्यारी स्त्री थीं। आदिदेव और दीनों पर दया करने वाले प्रभु को जिन्होंने कृपालु कपिल के नाम से गर्भ में धारण किया।

सांख्य सास्त्र जिन्ह प्रगट बखाना ❀ तत्व बिचार निपुन भगवाना
तेहि मनु राज कीन्ह बहु काला ❀ प्रभु आयसु सब बिधि प्रतिपाला

जिन्होंने सांख्य-शास्त्र का प्रकट रूप में वर्णन किया वे कपिल भगवान् तत्व के विचार में बड़े योग्य थे। उन स्वायंभुव मनु ने बहुत समय तक राज किया और सब प्रकार से भगवान् की आज्ञा का पालन किया।

सो० होइ न बिषय बिराग भवन बसत भा चौथपनु।
हृदयँ बहुत दुख लाग जनम गयेउ हरिभगति बिनु॥

विषयों से विरक्ति तो होती नहीं; घर-गृहस्थी में रहते हुये चौथापन (बुढ़ापा) आ गया। यह सोचकर उनके हृदय को बड़ा दुःख हुआ कि भगवान् की भक्ति बिना जन्म ही व्यर्थ गया।

बरबस राज सुतहिं तब दीन्हा ❀ नारि समेत गवन बन कीन्हा
तीरथवर नैमिष बिख्याता ❀ अति पुनीत साधक सिधि दाता

तब मनुजी ने पुत्र को ज़बरदस्ती राज देकर स्वयं स्त्री-सहित वन को प्रस्थान किया। तीर्थों में श्रेष्ठ नैमिषारण्य प्रसिद्ध है। वह बहुत ही पवित्र और साधकों को सिद्धि देने वाला है।

बसहिं तहाँ मुनि सिद्ध समाजा ❀ तहँ हिअँ हरषि चलेउ मनु राजा
पन्थ जात सोहहिं मतिधीरा ❀ ग्यान भगति जनु धरे सरीरा

वहाँ मुनियों और सिद्धों के समूह बसते हैं। राजा मनु हर्षित होकर वहीं चले। वे धीर-बुद्धि वाले राजा-रानी पथ में जाते हुये ऐसे शोभित हो रहे थे, जैसे ज्ञान और भक्ति शरीर धारण किये जा रहे हों।

पहुँचे जाइ धेनुमति तीरा ❀ हरषि नहाने निरमल नीरा
आए मिलन सिद्ध मुनि ग्यानी ❀ धरम धुरन्धर नृप रिषि जानी

चलते-चलते वे गोमती के किनारे जा पहुँचे। निर्मल जल में उन्होंने हर्षित होकर स्नान किया। उनको धर्म की धुरी धारण करने वाला और राजाओं में ऋषि के समान जानकर सिद्ध और ज्ञानी मुनि लोग मिलने आये।

जहँ जहँ तीरथ रहे सुहाए ❀ मुनिन्ह सकल सादर करवाए
कृस सरीर मुनि पट परिधाना ❀ सत समाज नित सुनहिं पुराना

जहाँ-जहाँ सुन्दर तीर्थ थे, मुनियों ने आदरपूर्वक सभी तीर्थ राजा-रानी को करा दिये। राजा-रानी का शरीर दुर्बल हो गया था; वे मुनियों के वस्त्र (वल्कल) पहने हुये थे और संत-महात्माओं के समाज में रोज़ पुराण सुनते थे।



द्वादस अच्छर मंत्र पुनि जपहिं सहित अनुराग।
बासुदेव पद पङ्करुह[1] दम्पति मन अति लाग ॥१४३॥

वे फिर द्वादशाक्षर मंत्र (ओं नमो भगवते वासुदेवाय) का प्रेम-सहित जाप करते थे। भगवान् वासुदेव के चरण-कमलों में राजा-रानी का मन बहुत ही लग गया।

करहिं अहार साक फल कंदा ❀ सुमिरहिं ब्रह्म सच्चिदानंदा
पुनि हरि हेतु करन तप लागे ❀ बारि अधार मूल फल त्यागे

१. कमल।

वे शाक, फूल और कंद का आहार करते थे और सच्चिदानन्द ब्रह्म को सुमिरते थे। फिर भगवान् के लिये वे तप करने लगे और मूल और फल को भी त्यागकर केवल जल के आधार पर रहने लगे।

उर अभिलाष निरन्तर होई ❀ देखिअ नयन परम प्रभु सोई
अगुन अखण्ड अनन्त अनादी ❀ जेहि चिंतहिं परमारथबादी

हृदय में सदा यह अभिलाषा होती रहती थी कि हम कैसे उस परमप्रभु को आँखों से देखें, जो निर्गुण, पूर्ण, अंत-रहित और आदि-रहित है और जिसका चिंतन परमार्थवादी लोग किया करते हैं।

नेति नेति जेहि बेद निरूपा ❀ चिदानंद निरुपाधि अनूपा
संभु बिरञ्चि बिष्णु भगवाना ❀ उपजहिं जासु अंस तें नाना

जिसे वेद 'नेति-नेति' (इतना ही नहीं, इतना ही नहीं) कहकर निरूपण किया करते हैं। जो चिदानन्द, उपाधिहीन और अनुपम है। जिसके अंश से अनेकों शम्भु, ब्रह्मा और भगवान् विष्णु जन्म लेते हैं।

ऐसेउ प्रभु सेवक बस अहई[1] ❀ भगत हेतु लीला तनु गहई
जौं यह बचन सत्य स्रुति भाषा ❀ तौ हमार पूजिहि अभिलाषा

ऐसे महान् प्रभु भी सेवक के वश में हैं और भक्तों के लिये लीला का शरीर धारण करते हैं। यदि वेद का कहा हुआ यह वचन सत्य है तो हमारी अभिलाषा भी पूरी होगी।

दो०—**एहि बिधि बीते बरष षट सहस बारि[2] आहार।**
संबत सप्त सहस्र पुनि रहे समीर अधार ॥१४४॥

इस तरह जल का आहार करके तप करते हुये छः हज़ार वर्ष बीत गये। फिर सात हज़ार वर्ष वे वायु के आधार पर रहे।

बरष सहस दस त्यागेउ सोऊ ❀ ठाढ़े रहे एक पग दोऊ
बिधि हरि हर तप देखि अपारा ❀ मनु समीप आए बहु बारा

दस हज़ार वर्षों तक उन्होंने जल और वायु का आधार भी छोड़ दिया। दोनों एक पग से खड़े रहे। ब्रह्मा, विष्णु और शिवजी उनका अपार तप देखकर बहुत बार उनके पास आये।

---

१. है। २. पानी।

माँगहु वर वहु भाँति लोभाये ❀ परम धीर नहिं चलहिं चलाये
अस्थिमात्र होइ रहे समीरा ❀ तदपि मनाग[1] मनहिं नहिं पीरा

उन्होंने बहुत तरह से ललचाया और कहा कि कुछ वर माँगो; पर वे बड़े धैर्य्यवान् थे, विचलित नहीं हुये। यद्यपि उनका शरीर हड्डियों का केवल ढाँचा-मात्र रह गया था, पर उनके मन को ज़रा भी पीड़ा नहीं थी।

प्रभु सर्वग्य दास निज जानी ❀ गति अनन्य तापस नृप रानी
माँगु माँगु वर भै नभ वानी ❀ परम गँभीर कृपामृत सानी

सर्वज्ञ प्रभु ने तपस्वी राजा-रानी को अपना दास जाना और प्रभु के सिवा उनकी दूसरी कोई गति भी नहीं थी। तब बहुत गंभीर और कृपारूपी अमृत में सनी हुई आकाश-वाणी हुई—वर माँगो, वर माँगो।

मृतक जिआवनि गिरा सुहाई ❀ स्रवन रंध्र होइ उर जव आई
हृष्ट पुष्ट तन भये सुहाए ❀ मानहुँ अवहिं भवन तें आये

वह मरे हुए को भी जिलाने वाली सुन्दर वाणी जब कानों के छेदों से होकर हृदय में आई, तब राजा-रानी के शरीर ऐसे सुन्दर और हृष्ट-पुष्ट (स्वस्थ) हो गये, मानो अभी घर से आये हैं।

दो० — स्रवन सुधा सम वचन सुनि पुलक प्रफुल्लित गात।
बोले मनु करि दण्डवत प्रेम न हृदय समात।१४५।

कानों में अमृत के समान लगने वाले वचन सुनकर पुलकित और प्रफुल्लित शरीर होकर मनु दंडवत करके बोले, उनका प्रेम हृदय में समाता नहीं था।

सुनु सेवक सुरतरु सुरधेनू ❀ विधि हरि हर वंदित पद रेनू
सेवत सुलभ सकल सुखदायक ❀ प्रनतपाल सचराचर नायक

जो सेवकों के लिये कल्पवृक्ष और कामधेनु हैं, जिनके पैरों की धूल ब्रह्मा, विष्णु और शिवजी से वंदित है, जो सेवा करने में सुलभ तथा सब सुखों के देने वाले हैं, जो दीनों के पालने वाले और जड़-चेतन के स्वामी हैं, वे भगवान् सुनिये।

जौं अनाथ हित हम पर नेहू ❀ तौ प्रसन्न होइ यह वर देहू
जो सरूप बस सिव मन माहीं ❀ जेहि कारन मुनि जतन कराहीं[2]

१. ज़रा। २. करते हैं।

हे अनाथों का कल्याण करने वाले ! यदि मुझ पर आपका स्नेह हो, तो प्रसन्न होकर यह वर दीजिये कि आपका जो स्वरूप शिवजी के मन में बसता है और जिसकी प्राप्ति के लिये मुनि उपाय करते रहते हैं,

जो भुसुण्डि मन मानस हंसा ❀ सगुन अगुन जेहि निगम प्रसंसा
देखहिं हम सो रूप भरि लोचन ❀ कृपा करहु प्रनतारति मोचन

जो कागभुशुण्डि के मनरूपी मानसरोवर का हंस है, तथा वेद ने सगुण और निर्गुण बताकर जिसकी प्रशंसा की है, हम उसी रूप को आँख भरकर देखें। हे शरणागत के दुःख मिटाने वाले ! कृपा कीजिये।

दम्पति बचन परम प्रिय लागे ❀ मृदुल बिनीत प्रेमरस पागे
भगत बछल[1] प्रभु कृपानिधाना ❀ बिस्वबास प्रगटे भगवाना

कोमल, विनय-युक्त और प्रेमरस में पगे हुए राजा-रानी के वचन भगवान् को बहुत ही प्रिय लगे। भक्तों के प्रिय, कृपा के घर, सम्पूर्ण विश्व के निवास-स्थान प्रभु, भगवान् प्रकट हुये।

दो॰ नील सरोरुह नील मनि नील नीरधर स्याम।
लाजहिं तनु सोभा निरखि कोटि कोटि सत काम॥

नीले कमल, नील मणि और नीले बादल के समान श्याम वर्ण वाले भगवान् के शरीर की शोभा देखकर कई सौ करोड़ कामदेव भी लज्जित होते हैं।

सरद मयंक बदन छबि सींवा ❀ चारु कपोल चिबुक दर ग्रीवा
अधर अरुन रद सुन्दर नासा ❀ बिधुकर निकर बिनिंदक हासा

उनका मुख शरद-ऋतु के चन्द्रमा के समान छवि की सीमा-स्वरूप था। उनके गाल और ठुड्डी बहुत सुन्दर थे। गरदन शंख की तरह थी। लाल ओंठ, दाँत और नाक सुन्दर थे। उनका हास्य चन्द्रमा की किरणों के समूह को तिरस्कार करने वाला था।

नव अम्बुज अम्बक[2] छबि नीकी ❀ चितवनि ललित भावती जी की
भृकुटि मनोज चाप छबि हारी ❀ तिलक ललाट पटल दुतिकारी

नये कमल के समान आँखों की शोभा बड़ी अच्छी थी। मनोहर चितवन जी को बहुत प्यारी लगती थी। भौंहें कामदेव के धनुष की शोभा को हरण करने

१. वत्सल। २. आँख।

वाली थीं; माथे पर प्रकाशमय तिलक था।

कुण्डल मकर मुकुट सिर भ्राजा ❀ कुटिल केस जनु मधुप समाजा
उर श्रीवत्स रुचिर वनमाला ❀ पदिक हार भूषन मनिजाला

मकर के आकार के कुण्डल और मुकुट से सिर शोभित था। केश घुँघराले थे, मानों भौंरों का समूह। छाती पर कौस्तुभ-मणि और सुन्दर वनमाला तथा पद-चिन्ह और मणियों के हार का भूषण था।

केहरि कंधर चारु जनेऊ ❀ बाहु विभूषन सुन्दर तेऊ
करि[1] कर[2] सरिस सुभग भुजदंडा ❀ कटि निषंग कर सर कोदंडा

सिंह ऐसे कंधों पर सुन्दर जनेऊ था। बाहों में जो गहने थे, वे भी सुन्दर थे। हाथी की सूँड के समान सुन्दर भुज-दंड थे। कमर में तरकस और हाथ में बाण और धनुष थे।

दो० तड़ित बिनिंदक पीत पट उदर रेख वर तीनि।
नाभि मनोहर लेति जनु जमुन भवँर छवि छीनि॥

उनका पीताम्बर बिजली को लजाने वाला था। उनके पेट पर तीन सुन्दर रेखायें थीं। नाभी ऐसी मनोहर थी, मानो यमुना के भौंर (जल-चक्र) की शोभा को छीने लेती थी।

पद राजीव बरनि नहिं जाहीं ❀ मुनि मन मधुप बसहिं जिन्ह माहीं
बाम भाग सोभति अनुकूला ❀ आदिसक्ति छविनिधि जगमूला

कमल ऐसे चरणों का तो वर्णन ही नहीं किया जा सकता है, जिनमें मुनियों के मनरूपी भौंरे बसते हैं। उनके बायें भाग में सदा अनुकूल, शोभा की खान और जगत् की मूल आदिशक्ति श्रीलक्ष्मीजी शोभित हैं। [यह सम्पूर्ण प्रसंग उपमा और प्रतीप अलंकार]।

जासु अंस उपजहिं गुन खानी ❀ अगनित लच्छि उमा ब्रह्मानी
भृकुटि बिलास जासु जग होई ❀ राम बाम दिसि सीता सोई

जिनके अंश से गुणों की खान अनगिनत लक्ष्मी, पार्वती और ब्रह्माणी जन्म लेती हैं; जिनके भ्रू-संचालन से जग की सृष्टि होती है, वही राम के बाईं ओर स्थित सीता हैं।

---

१. हाथी। २. हाथ, सूँड।

छवि समुद्र हरि रूप विलोकी ❀ एकटक रहे नयन पट¹ रोकी
चितवहिं सादर रूप अनूपा ❀ तृप्ति न मानहिं मनु सतरूपा

शोभा के समुद्र भगवान् का रूप देखकर, राजा-रानी पलकें भाँजना रोककर, एकटक देखते रहे। अनुपम रूप को वे आदर-सहित देख रहे थे। वे मनु और सतरूपा अघाते नहीं थे।

हरष विवस तनु दसा भुलानी ❀ परे दण्ड इव गहि पद पानी
सिर परसे प्रभु निज कर कंजा² ❀ तुरत उठाए करुनापुञ्जा

हर्ष के वश में हो जाने से उनको अपने शरीर की सुधि भूल गई। वे हाथों से भगवान् के चरण पकड़कर दंड की तरह भूमि पर पड़ गये। कृपा की राशि प्रभु ने अपने कर-कमलों से उनका सिर छुआ और उन्हें तुरन्त ही उठाया।

दो० बोले कृपानिधान पुनि अति प्रसन्न मोहिं जानि।
माँगहु वर जोइ भाव मन महादानि अनुमानि।१४८।

फिर कृपा के घर भगवान् बोले—मुझे बहुत ही प्रसन्न जानकर और महादानी समझकर, जो मन को भाये, वह वर माँग लो।

सुनि प्रभु वचन जोरि जुग पानी ❀ धरि धीरजु बोले मृदु बानी
नाथ देखि पद कमल तुम्हारे ❀ अब पूरे सब काम हमारे

प्रभु के वचन सुनकर, दोनों हाथ जोड़कर और धैर्य धरकर राजा ने मीठे वचन कहे—हे नाथ! आपके कमल ऐसे चरणों को देखकर अब हमारी सब मनोकामनायें पूरी हो गईं।

एक लालसा बड़ि उर माहीं ❀ सुगम अगम कहि जाति सो नाहीं
तुम्हहिं देत अति सुगम गोसाईं ❀ अगम लाग मोहि निज कृपनाई

फिर भी मन में एक बड़ी लालसा है। वह सहज भी है और कठिन भी। इसी से उसे कहते नहीं बनता। हे स्वामी! आप तो उसे बड़ी सुगमता से दे सकते हैं पर मेरी कृपणता से वह मुझे अगम लग रही है।

जथा दरिद्र विबुधतरु पाई ❀ बहु संपति माँगत सकुचाई
तासु प्रभाउ जान नहिं सोई ❀ तथा हृदयँ मम संसय होई

जैसे कोई दरिद्र कल्पवृक्ष को पाकर भी बहुत सम्पत्ति माँगने में संकोच

१. पलक। २. कमल।

करे; क्योंकि वह उसके प्रभाव को नहीं जानता। उसी प्रकार मेरे हृदय में संशय हो रहा है।

सो तुम्ह जानहु अंतरजामी ❀ पुरवहु मोर मनोरथ स्वामी
सकुच बिहाइ माँगु नृप मोही[1] ❀ मोरें नहिं अदेय कछु तोही

उसे हे मन की बात जानने वाले स्वामी! आप सब जानते हैं। अब मेरा मनोरथ पूरा कीजिये। भगवान् ने कहा—हे राजा! संकोच छोड़कर मुझसे माँगो या मुझे ही माँग लो। मेरे पास ऐसी कोई वस्तु नहीं जो तुम्हें न दूँ।

[मोही में श्लेष अलंकार]

दो०—दानि सिरोमनि कृपानिधि नाथ कहउँ सतभाउ।
चाहउँ तुम्हहिं समान सुत प्रभु सन कवन दुराउ।१४९

राजा ने कहा—हे दानियों के शिरोमणि! कृपा के भण्डार! नाथ! मैं अपने मन का सच्चा भाव कहता हूँ कि आपके जैसा पुत्र चाहता हूँ। स्वामी से भला क्या छिपाऊँ?

देखि प्रीति सुनि बचन अमोले ❀ एवमस्तु करुनानिधि बोले
आपु सरिस खोजौं कहँ जाई ❀ नृप तव तनय होब मैं आई

राजा की प्रीति देखकर और उनके अमूल्य वचन सुनकर दया के भण्डार भगवान् बोले—ऐसा ही हो। मैं अपने समान दूसरा कहाँ जाकर खोजूँ? हे राजन्! मैं स्वयं आकर तुम्हारा पुत्र होऊँगा।

सतरूपहिं बिलोकि कर जोरें ❀ देबि माँगु बरु जो रुचि तोरें
जो बरु नाथ चतुर नृप माँगा ❀ सोइ कृपाल मोहि अति प्रिय लागा

शतरूपा को हाथ जोड़े हुए देखकर भगवान् ने कहा—हे देवि! तुम्हारी जो इच्छा हो, वर माँगो। शतरूपा ने कहा—हे कृपालु स्वामी! चतुर राजा ने जो वर माँगा, वह मुझे बहुत ही प्रिय लगा है।

प्रभु परंतु सुठि होति ढिठाई ❀ जदपि भगत हित तुम्हहिं सुहाई
तुम्ह ब्रह्मादि जनक जग स्वामी ❀ ब्रह्म सकल उर अंतरजामी

तो भी हे स्वामी! बहुत धृष्टता हो रही है; यद्यपि भक्तों का कल्याण आपको प्रिय लगता है और आप ब्रह्मा आदि के उत्पन्न करने वाले, जगत् के

१. मुझे या मुझ से।

स्वामी, सबके हृदय के अन्तर की बात जानने वाले ब्रह्म हैं।

असि समुझत मन संसय होई ❀ कहा जो प्रभु प्रवान पुनि सोई
जेहि निज भगत नाथ तव अहहीं ❀ जो सुख पावहिं जो गति लहहीं

ऐसा समझने पर मन में संशय हो रहा है; फिर भी प्रभु ने जो कुछ कहा, वही प्रमाण है। मैं तो यह माँगती हूँ कि हे नाथ! जो आपके भक्त हैं, वे जो सुख पाते हैं, जिस गति को प्राप्त होते हैं—

दो॰— सोइ सुख सोइ गति सोइ भगति सोइ निज चरन सनेहु।
सोइ बिबेक सोइ रहनि प्रभु हमहि कृपा करि देहु॥

हे प्रभु! वही सुख, वही गति, वही भक्ति, वही आपके चरणों में प्रेम, वही विवेक, वही रहन-सहन कृपा करके हमें दीजिये।

सुनि मृदु गूढ़ रुचिर बर रचना ❀ कृपासिंधु बोले मृदु बचना
जो कछु रुचि तुम्हरे मन माहीं ❀ मैं सो दीन्ह सब संसय नाहीं

रानी की कोमल, गूढ़ और मनोहर वाक्य-रचना सुनकर दया के सागर भगवान् मीठे वचन बोले—तुम्हारे मन में जो कुछ इच्छा है, मैंने सब दिया, इसमें संशय नहीं समझना।

मातु बिबेक अलौकिक तोरें ❀ कबहुँ न मिटिहि अनुग्रह मोरें
बंदि चरन मनु कहेउ बहोरी ❀ अवर एक बिनती प्रभु मोरी

हे माता! मेरी कृपा से तुम्हारा अलौकिक ज्ञान नष्ट न होगा। तब मनु ने भगवान् के चरणों की वन्दना करके कहा—हे प्रभु! मेरी एक विनती और है।

सुत बिषइक तव पद रति होऊ ❀ मोहि बड़ मूढ़ कहै किन कोऊ
मनिबिनु फनि[1] जिमि जल बिनु मीना ❀ मम जीवन तिमि तुम्हहिं अधीना

आपके चरणों में मेरी वैसी ही प्रीति हो, जैसी पुत्र के लिये पिता की होती है, चाहे मुझे कोई बड़ा भारी मूर्ख ही क्यों न कहे। मणि के बिना साँप की और जल के बिना मछली की जो दशा होती है, वैसे ही मेरा जीवन आपके अधीन रहे।

अस बरु माँगि चरन गहि रहेऊ ❀ एवमस्तु करुनानिधि कहेऊ
अब तुम्ह मम अनुसासन[2] मानी ❀ बसहु जाइ सुरपति रजधानी

१. साँप। २. आज्ञा, आदेश।

ऐसा वर माँगकर राजा भगवान् के चरण पकड़े रह गये। करुणा के भण्डार भगवान् ने कहा—एवमस्तु, अर्थात् ऐसा ही हो। अब तुम मेरा आदेश मानकर इन्द्र की राजधानी (अमरावती) में जाकर बसो।

सो० तहँ करि भोग बिलास तात गए कछु काल पुनि।
होइहहु अवध भुआल तब मैं होब तुम्हार सुत।१५१॥

हे तात! वहाँ ख़ूब भोग-विलास करके, कुछ समय बीत जाने पर, तुम अवध के राजा होगे, तब मैं तुम्हारा पुत्र होऊँगा।

इच्छामय नरबेष सवाँरे ❀ होइहउँ प्रगट निकेत तुम्हारे
अंसन्ह सहित देह धरि ताता ❀ करिहउँ चरित भगत सुख दाता

इच्छानिर्मित मनुष्य-रूप धारण किये हुये मैं तुम्हारे घर प्रकट होऊँगा। हे तात! मैं अपने अंशों सहित देह धारण करके भक्तों को सुख देने वाले चरित्र करूँगा।

जेहि सुनि सादर नर बड़भागी ❀ भव तरिहहिं ममता मद त्यागी
आदिसक्ति जेहिं जग उपजाया ❀ सोउ अवतरिहि मोरि यह माया

जिन चरित्रों को बड़े भाग्यशाली मनुष्य आदर-सहित सुनकर ममता और अभिमान त्यागकर भवसागर से तर जायेंगे। आदि-शक्ति यह मेरी माया भी, जिसने संसार को उत्पन्न किया है, अवतार लेगी।

पुरउब मैं अभिलाष तुम्हारा ❀ सत्य सत्य पन सत्य हमारा
पुनि पुनि अस कहि कृपानिधाना ❀ अंतरधान भए भगवाना

मैं तुम्हारी अभिलाषा पूरी करूँगा। मेरा प्रण सत्य है, सत्य है, सत्य है। कृपा के घर भगवान् बार-बार ऐसा कहकर अन्तर्द्धान हो गये।

दंपति उर धरि भगति कृपाला ❀ तेहि आस्रम निवसे[1] कछु काला
समय पाइ तन तजि अनयासा[2] ❀ जाइ कीन्ह अमरावति बासा

स्त्री-पुरुष (राजा-रानी) भक्तों पर कृपा करने वाले भगवान् की भक्ति को हृदय में धारण करके उस आश्रम में कुछ समय तक रहे। समय पाकर, सहज ही में शरीर छोड़कर, उन्होंने अमरावती में जाकर वास किया।

---

१. बसे। २. सहज में।

दो० यह इतिहास पुनीत अति उमहि कही बृषकेतु।
भरद्वाज सुनु अपर पुनि राम जनम कर हेतु॥१५२॥

(याज्ञवल्क्यजी कहते हैं) हे भरद्वाज ! सुनो। इस अत्यन्त पवित्र इतिहास को शिवजी ने पार्वती से कहा था। अब राम के अवतार लेने का दूसरा कारण सुनो।

सुनु मुनि कथा पुनीत पुरानी ❀ जो गिरिजा प्रति संभु बखानी
बिस्व बिदित एक कैकय देसू ❀ सत्यकेतु तहँ बसइ नरेसू

हे मुनि ! वह प्राचीन और पवित्र कथा सुनो, जो शिवजी ने पार्वती से कही थी। संसार में प्रसिद्ध एक कैकय देश है। वहाँ सत्यकेतु नाम का राजा रहता था।

धरम धुरंधर नीति निधाना ❀ तेज प्रताप सील[1] बलवाना
तेहि कें भए जुगल सुत बीरा ❀ सब गुन धाम महा रनधीरा

वह धर्म की धुरी को धारण करने वाला, नीति की खान, तेजस्वी, प्रतापी और बलवान् था। उसके दो वीर पुत्र हुये, जो सब गुणों के भंडार और बड़े ही रणधीर थे।

राज धनी जो जेठ सुत आही ❀ नाम प्रतापभानु अस ताही
अपर सुतहि अरिमर्दन नामा ❀ भुजबल अतुल अचल संग्रामा

राज्य का उत्तराधिकारी जो जेठा पुत्र था, उसका नाम प्रतापभानु था। दूसरे पुत्र का नाम अरिमर्दन था, जिसकी भुजाओं में अपरम्पार बल था और जो रण में अटल था।

भाइहि भाइहि परम समीती[2] ❀ सकल दोष छल बरजित प्रीती
जेठे सुतहि राज नृप दीन्हा ❀ हरिहित आपु गवन बन कीन्हा

भाई-भाई में बड़ी एकता और सब प्रकार के दोषों और छलों से रहित (सच्ची) प्रीति थी। राजा ने जेठे पुत्र को राज्य देकर भगवान् की भक्ति के लिये वन में गमन किया।

---

१. वाला। २. मेल।

दो० — जब प्रतापरबि भयेउ नृप फिरी दोहाई देस।
प्रजा पाल अति बेद बिधि कतहुँ नहीं अघ लेस।१५३।

जब प्रतापभानु राजा हुआ, देश में उसकी दोहाई फिर गई। वह वेद में वर्णित विधि से प्रजा का पालन करने वाला था और पाप का कहीं लेश भी उसके राज्य में नहीं था।

नृप हितकारक सचिव सयाना ❀ नाम धरमरुचि सुक्र समाना
सचिव सयान बंधु बलवीरा ❀ आपु प्रताप पुन्ज रन धीरा

राजा का कल्याण करने वाला उसका एक चतुर मन्त्री था, जिसका नाम धर्मरुचि था और जो शुक्र के समान नीतिज्ञ था। एक तो चतुर मन्त्री, दूसरे बली और वीर भाई, तीसरे स्वयं भी बड़ा प्रतापी और रणधीर था।

सेन संग चतुरंग अपारा ❀ अमित सुभट सब समर जुझारा
सेन बिलोकि राउ हरषाना ❀ अरु बाजे गहगहे निसाना

तथा साथ में अपार चतुरङ्गिणी सेना थी, जिसमें युद्ध में जूझने वाले असंख्य योद्धागण थे। इस प्रकार अपनी सेना को देखकर राजा बहुत प्रसन्न हुआ और घमाघम उसका डङ्का बजने लगा।

विजय हेतु कटकई[1] बनाई ❀ सुदिन साधि नृप चलेउ बजाई
जहँ तहँ परी अनेक लराई ❀ जीते सकल भूप बरिआई

दिग्विजय के लिये सेना सजाकर, वह राजा सुदिन शोधवाकर और डङ्का बजाकर चला। जहाँ-तहाँ अनेक युद्ध हुये; पर उसने सब राजाओं को ज़बरदस्ती जीत लिया।

सप्त दीप भुजबल बस कीन्हे ❀ लेइ लेइ दण्ड छाँड़ि नृप दीन्हे
सकल अवनि मंडल तेहि काला ❀ एक प्रतापभानु महिपाला

अपनी भुजाओं के बल से उसने सातों द्वीपों को वश में कर लिया और राजाओं से अर्थ-दंड ले-लेकर उन्हें छोड़ दिया। सारी पृथ्वी पर उस समय एक प्रतापभानु ही एकमात्र (चक्रवर्ती) राजा था।

---

१. सेना।

दो०— स्ववस बिस्व करि बाहुबल निज पुर कीन्ह प्रबेसु।
अरथ धरम कामादि सुख सेवइ समयँ नरेसु ॥१५४॥

उसने अपनी बाहुओं के बल से संसार को अपने वश में करके, अपने नगर में प्रवेश किया। राजा अर्थ, धर्म और काम आदि सुखों का समयानुसार सेवन करता था।

भूप प्रतापभानु बल पाई ❀ कामधेनु भै[1] भूमि सुहाई
सब दुख बरजित प्रजा सुखारी ❀ धरमसील सुन्दर नर नारी

राजा प्रतापभानु का बल पाकर भूमि सुन्दर कामधेनु हो गई। प्रजा सब दु:खों से रहित और सुखी थी और सब स्त्री-पुरुष सुन्दर और धर्मयुक्त थे।

सचिव धरमरुचि हरि पद प्रीती ❀ नृप हित हेतु सिखव नित नीती
गुर सुर संत पितर महिदेवा[2] ❀ करइ सदा नृप सब कै सेवा

धर्मरुचि मन्त्री के हृदय में भगवान् के चरणों में बड़ी प्रीति थी। वह सदा राजा को उनके कल्याण के लिये राजनीति सिखलाता रहता था। राजा गुरु, देवता, संत, पितर और ब्राह्मणों की सदा सेवा करता रहता था।

भूप धरम जे बेद बखाने ❀ सकल करइ सादर सुख माने
दिन प्रति देइ बिबिध बिधि दाना ❀ सुनइ सास्त्र बर बेद पुराना

वेद में राजाओं के लिये जो धर्म वर्णित है, राजा सबका पालन आदर-पूर्वक और सदा सुख मानकर किया करता था। प्रतिदिन अनेक प्रकार के दान देता था और उत्तम शास्त्र, वेद और पुराण सुनता था।

नाना बापी कूप तड़ागा ❀ सुमन बाटिका सुन्दर बागा
बिप्र भवन सुर भवन सुहाए ❀ सब तीरथन्ह बिचित्र बनाए

उसने बहुत-सी बावड़ियाँ, कुएँ, तालाब, फुलवाड़ियाँ, सुन्दर बाग, ब्राह्मणों के लिये घर, देवताओं के भाँति-भाँति के सुन्दर मन्दिर सब तीर्थों में बनवाये थे।

दो०— जहँ लगि कहे पुरान स्रुति एक एक सब जाग।
बार सहस्र सहस्र नृप किए सहित अनुराग ॥१५५॥

---

१. हुई। २. ब्राह्मण।

वेद और पुराणों में जितने प्रकार के यज्ञ कहे गये हैं, राजा ने प्रत्येक प्रकार के यज्ञ को हज़ार-हज़ार बार प्रेम-सहित किया।

हृदयँ न कछु फल अनुसन्धाना[1] ❀ भूप बिबेकी परम सुजाना
करइ जे धरम करम मन बानी ❀ बासुदेव अरपित नृप ग्यानी

हृदय में किसी फल की कामना नहीं थी। बुद्धिमान् राजा बड़ा ही ज्ञानवान् था। वह ज्ञानी राजा कर्म, मन और वाणी से जो कुछ भी धर्म करता था, सब भगवान् वासुदेव को अर्पित करके करता था।

चढ़ि बर बाजि बार एक राजा ❀ मृगया कर सब साजि समाजा
बिंध्याचल गँभीर बन गयऊ ❀ मृग पुनीत बहु मारत भयऊ

एक बार वह राजा एक अच्छे घोड़े पर चढ़कर शिकार के लिये सब तैयारी करके विन्ध्याचल के घने बन में गया और वहाँ उसने बहुत-से अच्छे-अच्छे हिरन मारे।

फिरत बिपिन नृप दीख बराहू ❀ जनु बन दुरेउ ससिहि ग्रसि राहू
बड़ बिधु नहिं समात मुख माहीं ❀ मनहुँ क्रोधबस उगिलत नाहीं

बन में फिरते हुए राजा ने एक सुअर देखा। (दाँतों के कारण वह ऐसा मालूम होता था) जैसे राहु चन्द्रमा को मुंह में पकड़कर बन में छिपा हुआ है। चन्द्रमा बड़ा होने से उसके मुंह में समाता नहीं और वह भी क्रोध के वश में उसे उगलता नहीं।

कोल[2] कराल दसन छबि गाई ❀ तनु बिसाल पीवर अधिकाई
घुरघुरात हय आरौ[3] पाएँ ❀ चकित बिलोकत कान उठाएँ

यह तो सुअर के भयानक दाँतों की शोभा कही गई। उसका शरीर भी विशाल और मोटा था। घोड़े की आहट पाकर वह घुरघुराता हुआ कान उठाकर चौकन्ना होकर देख रहा था।

दो०: नील महीधर सिखर सम देखि बिसाल बराहु।
चपरि चलेउ हय सुटुकि नृप हाँकि न होइ निबाहु॥

नीले पर्वत की चोटी के समान बड़े डील-डौल वाले सुअर को देखकर

१. कामना। २. सुअर। ३. आहट।

राजा ने घोड़े को चाबुक से मारकर तेज़ी से चलाया। क्योंकि केवल हाँकने से काम नहीं चल सकता था।

आवत देखि अधिक रव बाजी[1] ❀ चलेउ बराह मरुत[2] गति भाजी
तुरत कीन्ह नृप सर संधाना ❀ महि मिलि गयेउ बिलोकत बाना

अधिक शब्द करते हुए घोड़े को निकट आता देखकर सुअर हवा की गति से भाग चला। राजा ने तुरन्त ही धनुष पर बाण चढ़ाया। सुअर बाण देखते ही पृथ्वी से सट गया।

तकि तकि तीर महीस चलावा ❀ करि छल सुअर सरीर बचावा
प्रगटत दुरत जाइ मृग भागा ❀ रिस बस भूप चलेउ सँग लागा

राजा ने ताक-ताककर तीर चलाए; पर सुअर चालाकी से शरीर बचा लेता था। इस प्रकार प्रकट होते और छिपते हुये वह पशु भागा जाता था। राजा भी क्रोध के वश में उसके साथ लगा हुआ चला जाता था।

गयेउ दूरि घन गहन[3] बराहू ❀ जहँ नाहिंन गज बाजि निबाहू
अति अकेल बन बिपुल कलेसू ❀ तदपि न मृग मग तजै नरेसू

सुअर दूर जाकर ऐसे घने जङ्गल में चला गया, जहाँ हाथी, घोड़े का निबाह नहीं। बिल्कुल अकेला होने पर भी, बन के बहुत कष्टों में भी राजा ने उस पशु का पीछा नहीं छोड़ा।

कोल बिलोकि भूप बड़ धीरा ❀ भागि पैठि गिरि गुहा गँभीरा
अगम देखि नृप अति पछिताई ❀ फिरेउ महाबन परेउ भुलाई

बड़े धैर्य वाले राजा को देखकर, सुअर भागकर पहाड़ की गम्भीर गुफा में जा घुसा। उसमें जाना कठिन देखकर राजा बहुत पछताकर लौटा; पर उस बड़े बन में वह रास्ता भूल गया।

दो० **खेद खिन्न छुद्धित[4] तृषित[5] राजा बाजि समेत।**
खोजत ब्याकुल सरित सर जल बिनु भयेउ अचेत॥

पश्चात्ताप से दुःखी राजा घोड़े-सहित भूख और प्यास से विकल होकर नदी और तालाब खोजते हुये पानी बिना बेहाल हो गया।

---

१. घोड़ा। २. वायु। ३. वन। ४. भूखा। ५. प्यासा।

फिरत विपिन आस्रम एक देखा ❀ तहँ बस नृपति कपट मुनि बेषा
जासु देस नृप लीन्ह छड़ाई ❀ समर सेन तजि गयेउ पराई

बन में फिरते हुये उसने एक आश्रम देखा; वहाँ एक राजा कपटी मुनि के भेस में रहता था, जिसका देश राजा प्रतापभानु ने छीन लिया था और जो सेना को छोड़कर युद्ध से भाग गया था।

समय प्रतापभानु कर जानी ❀ आपन अति असमय अनुमानी
गयेउ न गृह मन बहुत गलानी ❀ मिला न राजहि नृप अभिमानी

प्रतापभानु का समय अनुकूल जानकर और अपना समय प्रतिकूल अनुमानकर वह घर नहीं गया। उसके मन में बड़ी ग्लानि हुई। राजा स्वात्माभिमानी था, इससे वह राजा प्रतापभानु से मिला भी नहीं।

रिस उर मारि रंक[1] जिमि राजा ❀ बिपिन बसइ तापस के साजा
तासु समीप गवन नृप कीन्हा ❀ यह प्रतापरबि तेहि तब चीन्हा

मन में क्रोध को मारकर वह राजा तपस्वी के भेस में ग़रीब की तरह वन में बसता था। राजा प्रतापभानु उसी के पास गया। उसने तत्काल पहचान लिया कि यह प्रतापभानु है।

राउ तृषित नहिं सो पहिचाना ❀ देखि सुबेष महामुनि जाना
उतरि तुरँग तें कीन्ह प्रनामा ❀ परम चतुर न कहेउ निज नामा

राजा प्यासा था। उसने उसे नहीं पहचाना। सुन्दर वेष में देखकर राजा ने उसे महामुनि समझा। घोड़े से उतरकर उसने उसे प्रणाम किया। परन्तु बड़ा चतुर होने के कारण प्रतापभानु ने उसे अपना नाम नहीं बतलाया।

दो० भूपति तृषित बिलोकि तेहि सरबरु दीन्ह देखाइ।
मज्जन[2] पान समेत हय कीन्ह नृपति हरषाइ ॥१५८॥

राजा को प्यासा देखकर उसने उसे तालाब दिखला दिया, जिसमें घोड़े-सहित राजा ने हर्षित होकर स्नान और जल-पान किया।

गै स्रम सकल सुखी नृप भयऊ ❀ निज आस्रम तापस लै गयऊ
आसन दीन्ह अस्त रबि जानी ❀ पुनि तापस बोलेउ मृदु बानी

१. ग़रीब। २. स्नान।

सब थकावट मिट गई; राजा सुखी हुआ। तपस्वी उसे अपने आश्रम में ले गया। उसने उसे बैठने के लिये आसन दिया। फिर सूर्यास्त का समय जानकर मधुर वाणी से कहा—

को तुम्ह कस बन फिरहु अकेलें ❀ सुंदर जुवा जीव परहेलें
चक्रवर्त्ति के लच्छन तोरें ❀ देखत दया लागि अति मोरें

तुम कौन हो ? सुन्दर युवक होकर जीवन की परवा न करके, बन में अकेले क्यों फिरते हो ? तुम्हारे लक्षण तो चक्रवर्ती के हैं। तुमको देखकर मुझे बड़ी दया आती है।

नाम प्रतापभानु अवनीसा[1] ❀ तासु सचिव मैं सुनहु मुनीसा
फिरत अहेरे परेउँ भुलाई ❀ बड़े भाग देखेउँ पद आई

राजा ने कहा—हे मुनियों में श्रेष्ठ ! सुनो, प्रतापभानु नाम का एक राजा है, मैं उसका मन्त्री हूँ। शिकार में फिरते हुये राह भूल गया हूँ; बड़े भाग्य से यहाँ आकर मैंने आपके चरणों के दर्शन किये।

हम कहँ दुरलभ दरस तुम्हारा ❀ जानत हौं कछु भल होनिहारा
कह मुनि तात भयेउ अँधियारा ❀ जोजन सत्तरि नगर तुम्हारा

हमें तो आपका दर्शन दुर्लभ है; जान पड़ता है कुछ भला होने वाला है। मुनि ने कहा—हे तात ! अँधेरा हो गया; तुम्हारा नगर यहाँ से सत्तर योजन पर है।

दो०—निसा घोर गंभीर बन पंथ न सुनहु सुजान।
बसहु आजु अस जानि तुम्ह जायेहु होत बिहान[2]।१५९

अँधेरी रात है; जंगल घना है; कोई रास्ता नहीं है; हे बुद्धिमान् ! यह समझकर सुनो, आज यहीं ठहर जाओ, कल सवेरा होते ही चले जाना।

तुलसी जसि भवितव्यता[3] तैसी मिलइ सहाइ।
आपु न आवै ताहि पहिं ताहि तहाँ लै जाइ।१५९। (२)

तुलसीदास कहते हैं—जैसा होनहार होता है, वैसी ही सहायता मिल जाती है। भावी स्वयं पास नहीं आती; मनुष्य ही को वहाँ (घटना-स्थल पर) पहुँचा देती है।

१. राजा। २. सवेरा। ३. होनहार।

भलेहिं नाथ आयसु धरि सीसा ❀ बाँधि तुरँग तरु बैठ महीसा
नृप बहु भाँति प्रसंसेउ ताही ❀ चरन बंदि निज भाग्य सराही

'हे स्वामी! बहुत अच्छा' ऐसा कहकर और उसकी आज्ञा सिर चढ़ाकर, घोड़े को वृक्ष से बाँधकर, राजा बैठ गया। राजा ने मुनि की प्रशंसा बहुत प्रकार से की और उसके चरणों की वन्दना करके अपने भाग्य की सराहना की।

पुनि बोलेउ मृदु गिरा सुहाई ❀ जानि पिता प्रभु करउँ ढिठाई
मोहि मुनीस सुत सेवक जानी ❀ नाथ नाम निज कहहु बखानी

फिर उसने सुन्दर कोमल वाणी से कहा—हे प्रभो! आपको पिता जानकर मैं ढिठाई करता हूँ। हे मुनीश! मुझे अपना पुत्र और सेवक जानकर हे नाथ! अपना नाम (धाम) विस्तार से बताइये।

तेहि न जान नृप नृपहि सो जाना ❀ भूप सुहृद सो कपट सयाना
बैरी पुनि छत्री पुनि राजा ❀ छल बल कीन्ह चहइ निज काजा

राजा उसको नहीं जानता था। पर वह राजा को जानता था। राजा तो शुद्ध हृदय वाला था और वह चतुर कपटी था। एक तो बैरी, फिर क्षत्रिय, फिर राजा; वह छल-बल से अपना काम बनाना चाहता था।

समुझि राजसुख दुखित अराती[1] ❀ अवाँ अनल इव सुलगइ छाती
सरल बचन नृप के सुनि काना ❀ बयर सँभारि[2] हृदय हरषाना

वह शत्रु अपने राज्य-सुख को स्मरण करके दुःखी था; उसकी छाती आवे की आग की तरह (भीतर ही भीतर) सुलग रही थी। राजा के सरल वचन कान से सुनकर, अपने बैर को यादकर, वह हृदय में प्रसन्न हुआ।

दो० कपट बोरि बानी मृदुल बोलेउ जुगुति समेत।
नाम हमार भिखारि अब निर्धन रहित निकेत।१६०

वह कपट में डुबोकर युक्ति-पूर्वक कोमल वाणी बोला—मेरा नाम तो अब भिखारी है, क्योंकि मैं घरबार-विहीन और निर्धन हूँ।

कह नृप जे बिग्यान निधाना ❀ तुम्ह सारिखे[3] गलित अभिमाना
सदा अपनपौ रहहिं दुराएँ ❀ सब विधि कुसल कुबेष बनाएँ

१. शत्रु। २. याद करके। ३. समान।

राजा ने कहा—जो आपके सदृश विज्ञान के निधान और सर्वथा अभिमान से रहित होते हैं, वे अपने स्वरूप को सदा छिपाये रहते हैं। क्योंकि कुवेष बनाकर रहने ही में सब तरह का कल्याण है।

तेहि तें कहहिं संत स्रुति टेरें ❀ परम अकिंचन प्रिय हरि केरें
तुम्ह सम अधन भिखारि अगेहा ❀ होत बिरंचि सिवहि संदेहा

इसी से तो वेद और संत पुकारकर कहते हैं कि परम अकिंचन ही भगवान् को प्रिय होते हैं। आपके समान निर्धन, भिखारी और गृहहीन को देखकर मुझे ब्रह्मा और शिव का संदेह होता है। अर्थात् कहीं आप ब्रह्मा या शिव तो नहीं हो?

जोऽसि सोऽसि तव चरन नमामी ❀ मो पर कृपा करिअ अब स्वामी
सहज प्रीति भूपति कै देखी ❀ आपु बिषय बिस्वास बिसेषी

आप जो हों, सो हों, आपके चरणों को नमस्कार करता हूँ। हे स्वामी! मुझ पर अब कृपा कीजिये। मुनि ने अपने ऊपर राजा की स्वाभाविक प्रीति और अपने सम्बन्ध में उसका अधिक विश्वास देखकर—

सब प्रकार राजहि अपनाई ❀ बोलेउ अधिक सनेह जनाई
सुनु सतिभाउ कहउँ महिपाला ❀ इहाँ बसत बीते बहु काला

सब प्रकार से राजा को अपने वश में करके, अधिक स्नेह प्रकट करते हुये कहा—हे राजन्! मैं तुमसे सच कहता हूँ, सुनो, यहाँ रहते हुए मुझे बहुत समय बीत गया।

दो०— अब लगि मोहि न मिलेउ कोउ मैं न जनावउँ काहु।
लोकमान्यता अनल सम कर तप कानन दाहु।१६१

अब तक न तो कोई मुझसे मिला और न मैं स्वयं किसी पर अपने को प्रकट करता हूँ; क्योंकि लोक में प्रतिष्ठा आग के समान है, जो तप-रूपी बन को जला देती है।

सो०— तुलसी देखि सुबेषु भूलहिं मूढ़ न चतुर नर।
सुन्दर केकिहि पेखु बचन सुधा सम असन[1] अहि।

तुलसीदासजी कहते हैं—सुन्दर वेष देखकर मूढ़ ही नहीं, चतुर मनुष्य

---

१. आहार।

भी धोखा खा जाते हैं। सुन्दर मोर को देखो, उसका वचन तो अमृत के समान और आहार साँप का।

तातें गुपुत रहउँ जग माहीं ❀ हरि तजि किमपि प्रयोजन नाहीं
प्रभु जानत सब बिनहि जनाएँ ❀ कहहु कवन सिधि लोक रिझाएँ

इसी से मैं जगत् में छिपकर रहता हूँ। भगवान् को छोड़कर और किसी से कुछ भी प्रयोजन नहीं रखता। प्रभु तो बिना जनाये ही सब जानते हैं। फिर बताओ, संसार को रिझाने से क्या सिद्धि मिलेगी ?

तुम्ह सुचि सुमति परम प्रिय मोरें ❀ प्रीति प्रतीति मोहि पर तोरें
अब जौं तात दुरावउँ तोहीं ❀ दारुन दोष घटइ अति मोहीं

तुम पवित्र और सुन्दर बुद्धि वाले हो, इससे मुझे बहुत ही प्यारे हो और तुम्हारी भी मुझ पर प्रीति और विश्वास है। हे तात! अब यदि तुमसे कुछ छिपाऊँ, तो मुझे बहुत ही भयानक दोष लगेगा।

जिमि जिमि तापसु कथइ उदासा ❀ तिमि तिमि नृपहि उपज बिस्वासा
देखा स्वबस करम मन बानी ❀ तब बोला तापस बगध्यानी

वह तपस्वी जैसे-जैसे उदासीनता की बातें कहता था, वैसे-वैसे राजा का विश्वास उस पर उत्पन्न होता जाता था। जब उस बगुले की तरह ध्यान लगाने वाले (कपटी) मुनि ने राजा को कर्म, मन और वाणी से अपने वश में जाना, तब वह बोला—

नाम हमार एकतनु भाई ❀ सुनि नृप बोलेउ पुनि सिरु नाई
कहहु नाम कर अरथ बखानी ❀ मोहि सेवक अति आपन जानी

हे भाई! मेरा नाम एकतनु है। यह सुनकर राजा ने फिर सिर नवाकर कहा—मुझे अपना अत्यन्त अनुरागी सेवक जानकर अब अपने नाम का अर्थ मुझे समझाकर कहिये।

दो॰ आदि सृष्टि उपजी जबहिं तब उतपति भै मोरि।
नाम एकतनु हेतु तेहि देह न धरी बहोरि[1] ।१६२।

(मुनि ने कहा—) जब सबसे पहले सृष्टि हुई थी, तभी मेरी उत्पत्ति हुई थी। तब से मैंने फिर दूसरी देह नहीं धारण की, इसी से मेरा नाम एकतनु है।

---

१. फिर।

जनि आचरजु करहु मन माहीं ❀ सुत तप तें दुर्लभ कछु नाहीं
तपबल तें जग सृजइ बिधाता ❀ तपबल बिष्नु भए परित्राता[1]

हे पुत्र ! मन में आश्चर्य मत करो। तप से कुछ भी दुर्लभ नहीं है। तप ही के बल से ब्रह्मा जगत् को रचते हैं; तप ही के बल से विष्णु संसार का पालन करते हैं।

तपबल संभु करहिं संघारा ❀ तप तें अगम न कछु संसारा
भयेउ नृपहि सुनि अति अनुरागा ❀ कथा पुरातन कहइ सो लागा

तप ही के बल से शिव संसार का संहार करते हैं; संसार में कोई वस्तु नहीं जो तप से न मिल सके। यह सुनकर राजा को बड़ा प्रेम हुआ। वह (कपटी मुनि) फिर पुरानी कथा कहने लगा।

करम धरम इतिहास अनेका ❀ करइ निरूपन बिरत बिबेका
उद्भव पालन प्रलय कहानी ❀ कहेसि अमित आचरज बखानी

उसने बहुत-से कर्म, धर्म और अनेक प्रकार के इतिहास कह सुनाये तथा वैराग्य और निवृत्ति-मार्ग की व्याख्या करने लगा। संसार की उत्पत्ति, स्थिति और नाश की कथा उसने बहुत विस्तार से कही।

सुनि महीप तापस बस भयऊ ❀ आपन नाम कहन तब लयऊ
कह तापस नृप जानउँ तोही ❀ कीन्हेहु कपट लाग भल मोही

राजा यह सुनकर उस मुनि के वश में हो गया और तब वह उसे अपना नाम बताने लगा। मुनि ने कहा—हे राजन् ! मैं तुमको जानता हूँ। तुमने छल किया, वह मुझे बहुत प्रिय लगा।

सो॰ सुनु महीस असि[2] नीति जहँ तहँ नाम न कहहिं नृप।
मोहि तोहि पर अति प्रीति सोइ चतुरता बिचारि तव॥

हे राजन् ! सुनो, ऐसी नीति है कि राजा लोग जहाँ-तहाँ अपना नाम नहीं बतलाया करते। तुम्हारी वही चतुराई समझकर तुम पर मेरी बड़ी प्रीति हो गई।

नाम तुम्हार प्रताप दिनेसा ❀ सत्यकेतु तव पिता नरेसा
गुर प्रसाद सब जानिअ राजा ❀ कहिअ न आपन जानि अकाजा

१. रक्षक, पालक। २. ऐसी।

तुम्हारा नाम तो प्रतापभानु है। महाराज सत्यकेतु तुम्हारे पिता थे। हे राजन्! गुरु की कृपा से मैं सब जानता हूँ। पर अपनी हानि समझकर किसी से कहता नहीं।

देखि तात तव सहज सुधाई[1] ❀ प्रीति प्रतीति नीति निपुनाई
उपजि परी ममता मन मोरें ❀ कहउँ कथा निज पूछे तोरें

हे तात! तुम्हारी स्वाभाविक सरलता, प्रीति, विश्वास और नीति-निपुणता देखकर मेरे मन में तुम्हारे लिये बड़ी प्रीति पैदा हो गई है; अब तुम्हारे पूछने पर मैं अपनी कथा कहता हूँ।

अब प्रसन्न मैं संसय नाहीं ❀ माँगु जो भूप भाव मन माहीं
सुनि सुबचन भूपति हरषाना ❀ गहि पद बिनय कीन्ह बिधि नाना

अब मैं प्रसन्न हूँ, इसमें सन्देह नहीं। हे राजा! मन में जो अच्छा लगे माँग लो। सुन्दर वचन सुनकर राजा प्रसन्न हुआ और उसके पैर पकड़कर उसने बहुत प्रकार से विनय किया।

कृपासिंधु मुनि दरसन तोरें ❀ चारि पदारथ करतल मोरें
प्रभुहिं तथापि प्रसन्न बिलोकी ❀ माँगि अगम बरु होउँ असोकी

हे कृपा के समुद्र मुनि! आपका दर्शन करने से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ये चारों फल मेरे हाथ में आ गये। तो भी स्वामी को प्रसन्न देखकर मैं यह दुर्लभ वर माँगकर क्यों न शोक-रहित हो जाऊँ?

दो० जरा[2] मरन दुख रहित तनु समर जितै जनि कोउ।
एकछत्र रिपुहीन महि राज कलप सत होउ ॥१६४॥

मेरा शरीर वृद्धावस्था और मरण के दुःख से रहित हो जाय। मुझे युद्ध में कोई न जीत सके; और शत्रुओं से हीन पृथ्वी पर सौ कल्प तक मेरा एकछत्र राज हो।

कह तापस नृप ऐसेइ होऊ ❀ कारन एक कठिन सुनु सोऊ
कालउ तुअ पद नाइहि सीसा ❀ एक बिप्रकुल छाँड़ि महीसा

मुनि ने कहा—हे राजन्! ऐसा ही होगा। पर एक कारण कठिन है, उसे

---

१. सीधापन। २. वृद्धावस्था।

भी सुनो। हे पृथ्वीपति ! काल भी तुम्हारे चरणों पर सिर नवायेगा, केवल एक ब्राह्मण का कुल नहीं।

तपबल बिप्र सदा बरिआरा ❀ तिन्ह के कोप न कोउ रखवारा
जौं बिप्रन्ह बस करहु नरेसा ❀ तौं तुअ बस बिधि बिष्नु महेसा

तप के बल से ब्राह्मण सदा प्रबल रहते हैं। उनके कोप करने पर कोई रक्षा करने वाला नहीं। हे राजन् ! तुम यदि ब्राह्मणों को वश में कर लो, तो तुम्हारे वश में ब्रह्मा, विष्णु और महेश भी हो जायँगे।

चल न ब्रह्मकुल सन बरिआई ❀ सत्य कहउँ दोउ भुजा उठाई
बिप्रस्राप बिनु सुनु महिपाला ❀ तोर नास नहिं कवनेहुँ काला

ब्राह्मण-कुल से ज़ोर ज़बरदस्ती नहीं चल सकती। मैं दोनों भुजा उठाकर सत्य कहता हूँ। हे राजन् ! सुनो। ब्राह्मण का शाप न होगा, तो तुम्हारा नाश किसी काल में भी नहीं होगा।

हरषेउ राउ बचन सुनि तासू ❀ नाथ न होइ मोर अब नासू
तव प्रसाद प्रभु कृपानिधाना ❀ मो कहुँ सर्ब काल कल्याना

राजा उसके वचन सुनकर प्रसन्न हुआ और कहने लगा—हे स्वामी ! मेरा अब नाश नहीं होगा। हे कृपा के घर ! आपके प्रसाद से मेरा सब समय कल्याण होगा।

दो० एवमस्तु कहि कपट मुनि बोला कुटिल बहोरि।
मिलब हमार भुलाब निज कहहु त हमहिं न खोरि[1]॥

वह दुष्ट कपट-मुनि एवमस्तु (ऐसा ही हो) कहकर फिर बोला—तुम मेरे मिलने और अपनी राह भूल जाने की बात किसी से कहोगे, तो (तुम जानो) मेरा दोष नहीं।

तातें मैं तोहि बरजउँ राजा ❀ कहें कथा तव परम अकाजा
छठें स्रवन यह परत कहानी ❀ नास तुम्हार सत्य मम बानी

इसी से हे राजन् ! मैं तुमको रोकता हूँ कि इस प्रसंग की कथा किसी दूसरे को कहने से तुम्हारा बड़ा अकाज होगा। यदि यह कथा छठे कान में पहुँचेगी, तो तुम्हारा नाश होगा—मेरी यह वाणी सत्य है।

---

१. दोष, अपराध।

यह प्रगटे अथवा द्विज स्रापा ❀ नास तोर सुनु भानुप्रतापा
आन उपाय निधन तव नाहीं ❀ जौं हरि हर कोपहिं मन माहीं

हे भानुप्रताप ! सुनो, यह बात प्रकट होने पर अथवा ब्राह्मण के शाप से तुम्हारा नाश होगा, दूसरे और किसी उपाय से तुम्हारी मृत्यु नहीं होगी। विष्णु और शिव भी मन में कोपें, तब भी।

सत्य नाथ पद गहि नृप भाषा ❀ द्विज गुर कोप कहहु को राखा
राखइ गुर जौं कोप बिधाता ❀ गुर बिरोध नहिं कोउ जगत्राता

राजा ने मुनि का पैर पकड़कर कहा—हे स्वामी ! सत्य ही है। ब्राह्मण और गुरु के कोप से कहिये, कौन रक्षा कर सकता है ? यदि ब्रह्मा कोप करे, तो गुरु बचा सकते हैं; पर गुरु के विरोध से संसार में कोई बचाने वाला नहीं है।

जौं न चलब हम कहे तुम्हारें ❀ होउ नास नहिं सोच हमारें
एकहि डर डरपत मन मोरा ❀ प्रभु महिदेव स्राप अति घोरा

यदि आपके कहने पर मैं नहीं चलूँगा, तो नाश हो ही जायगा; इसकी चिन्ता मुझे नहीं। मेरा मन तो हे स्वामी ! एक ही डर से डरता है कि ब्राह्मण का शाप बड़ा भयानक होता है।

दो० होहिं बिप्र बस कवन बिधि कहहु कृपा करि सोउ।
तुम्ह तजि दीनदयाल निज हितू[1] न देखउँ कोउ १६६

अब कृपा करके यह भी बताइये कि किस युक्ति से ब्राह्मण वश में हो सकते हैं। हे दीनदयाल ! आपको छोड़कर मैं और किसी को अपना हितू नहीं देखता हूँ।

सुनु नृप बिबिध जतन जग माहीं ❀ कष्टसाध्य पुनि होहिं कि नाहीं
अहइ एक अति सुगम उपाई ❀ तहाँ परन्तु एक कठिनाई

मुनि ने कहा—हे राजन् ! सुनो। संसार में तरह-तरह के उपाय हैं; पर वे मुश्किल से होने वाले हैं। फिर भी (संदेह है कि) वे हो सकते हैं या नहीं। हाँ, एक उपाय बहुत सहज है; परन्तु उसमें भी एक कठिनाई है।

मम आधीन जुगुति[2] नृप सोई ❀ मोर जाब तव नगर न होई
आजु लगे अरु जब तें भयऊँ ❀ काहू के गृह ग्राम न गयऊँ

१. हितैषी। २. युक्ति, तरकीब।



वह युक्ति मेरे वश में है; पर हे राजन् ! मेरा जाना तुम्हारे नगर में हो नहीं सकता। जब से हुआ हूँ, तब से आज तक मैं किसी के न घर गया हूँ, न गाँव में।

जौं न जाउँ तव होइ अकाजू ❀ बना आइ असमंजस आजू
सुनि महीस बोलेउ मृदु बानी ❀ नाथ निगम असि नीति बखानी

पर, यदि न जाऊँ, तो तुम्हारा काम बिगड़ता है। आज यह बड़ी दुविधा आ पड़ी है। राजा यह सुनकर कोमल वाणी से बोला—हे नाथ ! शास्त्र में ऐसी नीति कही है—

बड़े सनेह लघुन्ह पर करहीं ❀ गिरि निज सिरन्हि सदा तृन धरहीं
जलधि अगाध मौलि[1] बह फेनू ❀ संतत[2] धरनि धरत सिर रेनू

बड़े लोग छोटों पर स्नेह करते हैं। पर्वत अपनी चोटी पर सदा तृण को धारण किये रहते हैं। अथाह समुद्र के सिर पर फेन बहता रहता है, पृथ्वी अपने सिर पर सदा धूलि धारण किये रहती है।

दो० असि कहि गहे नरेस पद स्वामी होहु कृपाल।
मोहि लागि दुख सहिअ प्रभु सज्जन दीनदयाल।१६७

ऐसा कहकर राजा ने मुनि के पैर पकड़ लिये और कहा—हे स्वामी ! कृपा कीजिये। आप सज्जन हैं, दीनों पर दया करने वाले हैं, मेरे लिये दुःख सहिये।

जानि नृपहि आपन आधीना ❀ बोला तापस कपट प्रबीना
सत्य कहउँ भूपति सुनु तोहीं ❀ जग नाहिंन दुर्लभ कछु मोहीं

राजा को अपने वश में जानकर कपट में प्रवीण तपस्वी बोला—हे राजन् ! सुनो, मैं तुमसे सत्य कहता हूँ, संसार में मुझे कुछ भी दुर्लभ नहीं है।

अवसि काज मैं करिहउँ तोरा ❀ मन तन बचन भगत तैं मोरा
जोग जुगुति तप मंत्र प्रभाऊ ❀ फलइ तबहिं जब करिअ दुराऊ

मैं तुम्हारा काम अवश्य ही करूँगा; क्योंकि तुम मन, वचन और कर्म से मेरे भक्त हो; पर योग, युक्ति, तप और मन्त्र का प्रभाव तभी फल देता है, जब वे छिपाकर किये जाते हैं।

---

१. सिर। २. सदा।

जौं नरेस मैं करौं रसोई ❀ तुम्ह परुसहु मोहि जान न कोई
अन्न सो जोइ जोइ भोजन करई ❀ सोइ सोइ तव आयसु अनुसरई

हे राजन्! मैं यदि रसोई बनाऊँ और तुम उसे परोसो, पर मुझे कोई जानने न पाये, तो उस अन्न को जो-जो खायगा, वह तुम्हारा आज्ञाकारी बन जायगा।

पुनि तिन्हके गृह जेंवइ जोऊ ❀ तव बस होइ भूप सुनु सोऊ
जाइ उपाय रचहु नृप एहू ❀ संबत भरि संकलप करेहू

यही नहीं उनके घर भी जो कोई भोजन करेगा, हे राजन्! सुनो, वह भी तुम्हारे वश में हो जायगा। हे राजन्! जाकर ऐसा उपाय ठीक करो और एक वर्ष तक (भोजन कराने का) संकल्प कर लो।

दो॰ नित नूतन[1] द्विज सहस सत बरेउ सहित परिवार।
मैं तुम्हरे संकलप लगि दिनहिं करबि जेवनार।१६८।

नित्य नये एक लाख ब्राह्मणों को परिवार-सहित वरण करना। मैं तुम्हारे संकल्प तक प्रति दिन भोजन बना दिया करूँगा।

एहि बिधि भूप कष्ट अति थोरें ❀ होइहहिं सकल बिप्र बस तोरें
करिहहिं बिप्र होम मख[2] सेवा ❀ तेहि प्रसंग सहजेहिं बस देवा

इस प्रकार हे राजन्! थोड़े ही कष्ट से सब ब्राह्मण तुम्हारे वश में हो जायँगे। ब्राह्मण लोग हवन और यज्ञ से देवताओं की सेवा करेंगे, तब उस प्रसंग से देवगण भी सहज ही में वश में हो जायँगे।

और एक तोहिं कहउँ लखाऊ[3] ❀ मैं एहि बेष न आवउ काऊ
तुम्हरे उपरोहित कहुँ राया ❀ हरि आनब मैं करि निज माया

मैं एक पहचान और भी तुमको बता देता हूँ कि मैं इस वेष में कभी न आऊँगा। हे राजन्! मैं तुम्हारे पुरोहित को अपनी माया करके उठा लाऊँगा।

तपबल तेहि करि आपु समाना ❀ रखिहउँ इहाँ बरष परवाना[4]
मैं धरि तासु बेषु सुनु राजा ❀ सब बिधि तोर सवाँरब काजा

तप के बल से उसे अपने समान करके एक वर्ष तक उसे यहाँ रक्खूँगा।

१. नया। २. यज्ञ। ३. पहचान। ४. परिमाण, तक।

हे राजन्! सुनो, मैं उसका वेष धारण करके सब प्रकार से तुम्हारा काम सिद्ध करूँगा।

गइ निसि बहुत सयन अब कीजे ❀ मोहि तोहि भूप भेंट दिन तीजे
मैं तपबल तोहि तुरँग समेता ❀ पहुँचैहउँ सोवतहिं निकेता

अब हे राजन्! रात बहुत बीत गई, अब सो जाओ; मुझ से तुम्हारी मुलाकात आज से तीसरे दिन होगी। मैं तप के बल से तुमको घोड़े-सहित सोते ही में घर पहुँचा दूंगा।

दो० **मैं आउब सोइ वेष धरि पहिचानेउ तब मोहि।**
जब एकांत बुलाइ सब कथा सुनावउँ तोहि।१६९।

मैं वही (पुरोहित का) वेष धरकर आऊँगा। जब मैं एकांत में तुमको बुलाकर सब कथा सुनाऊँ, तब तुम मुझे पहचान लेना।

सयन कीन्ह नृप आयसु मानी ❀ आसन जाइ बैठ छल ग्यानी
स्रमित भूप निद्रा अति आई ❀ सो किमि सोव सोच अधिकाई

राजा ने आज्ञा मानकर शयन किया और वह कपटी मुनि आसन पर जा बैठा। राजा थका था, उसे ख़ूब नींद आगई। पर वह मुनि कैसे सोता? उसे तो चिंता अधिक हो रही थी।

कालकेतु निसिचर तहँ आवा ❀ जेहि सूकर होइ नृपहिं भुलावा
परम मित्र तापस नृप केरा ❀ जानै सो अति कपट घनेरा

उसी समय वहाँ कालकेतु नाम का राक्षस आया, जिसने सुअर बनकर राजा को बहकाया था। वह तपस्वी राजा का बड़ा मित्र था, और छल-प्रपञ्च ख़ूब जानता था।

तेहिके सत सुत अरु दस भाई ❀ खल अति अजय देव दुखदाई
प्रथमहिं भूप समर सब मारे ❀ बिप्र सन्त सुर देखि दुखारे

उसके सौ पुत्र और दस भाई थे, जो बड़े ही दुष्ट, किसी से न जीते जाने वाले और देवताओं को दुःख देने वाले थे। राजा (प्रतापभानु) ने ब्राह्मणों, संतों और देवताओं को दुःखी देखकर उन सबको युद्ध में पहले ही मार डाला था।

तेहि खल पाछिल बयरु सँभारा ❀ तापस नृप मिलि मंत्र बिचारा
जेहि रिपुछय सोइ रचेन्हि उपाऊ ❀ भावीबस न जान कछु राऊ

उस दुष्ट ने वही पिछला बैर याद करके, तपस्वी राजा से मिलकर सलाह की और जिस प्रकार शत्रु का नाश हो, वही उपाय रचा। भावी-वश राजा (प्रतापभानु) कुछ समझ न सका।

दो०— रिपु तेजसी अकेल अपि लघु करि गनिअ न ताहु।
अजहुँ देत दुख रबि ससिहि सिर अवसेषित[1] राहु।१७०

तेजस्वी शत्रु अकेला हो, तो उसे छोटा न समझना चाहिये। राहु का सिर ही शेष है, पर आज तक वह सूर्य-चन्द्रमा को दुःख दिया करता है।

तापस नृप निज सखहि निहारी ❀ हरषि मिलेउ उठि भयेउ सुखारी
मित्रहि कहि सब कथा सुनाई ❀ जातुधान[2] बोला सुख पाई

तपस्वी राजा अपने मित्र को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ, उठकर मिला और सुखी हुआ। उसने मित्र को सब कथा कह सुनाई। तब राक्षस आनन्दित होकर बोला—

अब साधेउँ रिपु सुनहु नरेसा ❀ जौं तुम्ह कीन्ह मोर उपदेसा
परिहरि सोचु रहहु तुम्ह सोई ❀ बिनु औषध बिआधि बिधि खोई

हे राजन्! सुनो, तूने मेरे कहने के अनुसार इतना काम कर लिया है, तो मैंने अब शत्रु को निशाने पर ले लिया है। तुम चिन्ता छोड़कर जाकर सो रहो। विधाता ने बिना दवा ही के रोग को नष्ट कर दिया।

कुल समेत रिपु मूल बहाई ❀ चौथे दिवस मिलब मैं आई
तापस नृपहि बहुत परितोषी ❀ चला महाकपटी अति रोषी

कुल सहित शत्रु को जड़-मूल से खोद-बहाकर, मैं चौथे दिन तुमसे आ मिलूँगा। वह महाछली और महाक्रोधी राक्षस तपस्वी राजा को बहुत ढाढ़स देकर चला गया।

भानुप्रतापहि बाजि समेता ❀ पहुँचाएसि छन माँझ निकेता
नृपहि नारि पहिं सैन कराई ❀ हय गृह बाँधेसि बाजि बनाई[3]

उसने राजा भानुप्रताप को घोड़े-सहित क्षणभर में उसके घर पहुँचा दिया। राजा को रानी के पास सुलाकर घोड़े को घुड़साल में ठीक तरह से बाँध दिया।

---

१. बचा हुआ। २. राक्षस। ३. अच्छी तरह से।



दो० — राजा के उपरोहितहि हरि लै गयेउ बहोरि।
लै राखेसि गिरि खोह महँ माया करि मति भोरि १७१

फिर वह राजा के पुरोहित को उठा ले गया, और माया के प्रभाव से उसकी बुद्धि को भ्रम में डालकर उसने उसे पहाड़ की खोह में ले जाकर रक्खा।

आपु बिरंचि उपरोहित रूपा ❀ परेउ जाइ तेहि सेज अनूपा
जागेउ नृप अनभएँ बिहाना ❀ देखि भवन अति अचरजु माना

वह आप पुरोहित का रूप बनाकर उसकी सुन्दर सेज पर जा लेटा। राजा सवेरा होने के पहले ही जागा और अपना घर देखकर उसने बड़ा ही आश्चर्य माना।

मुनि महिमा मन महुँ अनुमानी ❀ उठेउ गवहिं[1] जेहि जान न रानी
कानन गयेउ बाजि चढ़ि तेही ❀ पुर नर नारि न जानेउ केही

मन में मुनि की महिमा का अनुमान करके वह धीरे से उठा, जिससे रानी न जाने। वह उसी घोड़े पर चढ़कर बन को चला गया। नगर के किसी पुरुष या स्त्री ने नहीं जाना।

गयें जाम जुग भूपति आवा ❀ घर घर उत्सव बाजु बधावा
उपरोहितहि देख जब राजा ❀ चकित बिलोक सुमिरि सोइ काजा

दोपहर बीत जाने पर राजा आया। घर-घर में उत्सव होने लगा और बधावा बजने लगा। जब राजा ने पुरोहित को देखा, तब वह आश्चर्य से देखने लगा और उसे वही कार्य स्मरण हो आया।

जुग सम नृपहि गये दिन तीनी ❀ कपटी मुनि पद रहि मति लीनी
समय जानि उपरोहित आवा ❀ नृपहि मते सब कहि समुझावा

तीन दिन राजा को युग के समान बीते। उसकी बुद्धि कपटी मुनि के चरणों में लगी रही। निश्चित समय जानकर पुरोहित आया और राजा के साथ की हुई गुप्त सलाह के अनुसार उसने अपने विचार उसे सब समझाकर कह दिये।

दो० — नृप हरषेउ पहिचानि गुरु भ्रम बस रहा न चेत।
बरे तुरत सत सहस बर बिप्र कुटुम्ब समेत।१७२।

---

१. धीरे से, चुपके से।

राजा गुरु को पहचानकर आनन्दित हुआ। भ्रमवश उसे ज्ञान न रहा। उसने उसी समय सौ हजार (एक लाख) ब्राह्मणों को कुटुम्ब-सहित वरण किया (न्योता दिया)।

उपरोहित जेवनार बनाई ❀ छ रस चारि बिधि जसि स्रुति गाई
मायामय तेहि कीन्ह रसोई ❀ बिंजन बहु गनि सकइ न कोई

पुरोहित ने छः रस और चार प्रकार के भोजन—जैसा वेदों में वर्णन है, बनाये। उसने मायामयी रसोई तैयार की और इतने व्यञ्जन बनाये, जिन्हें कोई गिन नहीं सकता।

बिबिध मृगन्ह कर आमिष राँधा ❀ तेहि महुँ बिप्र माँसु खल साँधा
भोजन कहुँ सब बिप्र बोलाए ❀ पग पखारि सादर बैठाए

अनेक प्रकार के पशुओं का मांस पकाया और उसमें उस दुष्ट ने ब्राह्मण का मांस मिला दिया। भोजन के लिये सब ब्राह्मणों को बुलाया और उनके चरण धोकर उन्हें आदर-सहित बैठाया।

परुसन जबहिं लाग महिपाला ❀ भइ अकासबानी तेहि काला
बिप्रबृन्द उठि उठि गृह जाहू ❀ है बड़ि हानि अन्न जनि खाहू

जब राजा परोसने लगा, तब उसी समय (कालकेतु कृत) आकाशवाणी हुई। हे ब्राह्मणो! उठ-उठकर अपने घर जाओ; यह अन्न मत खाओ। इसके खाने से बड़ी हानि है।

भयेउ रसोईं भूसुर[1] मासू ❀ सब द्विज उठे मानि बिस्वासू
भूप बिकल मति मोह भुलानी ❀ भावीबस न आव मुख बानी

ब्राह्मणों के मांस से यह रसोई हुई है। सब ब्राह्मण आकाश-वाणी का विश्वास मानकर उठ खड़े हुये। राजा व्याकुल हो गया। उसकी बुद्धि मोह में भूल गई थी। होनहार-वश उसके मुँह से एक बात भी नहीं निकली।

दो० **बोले बिप्र सकोप तब नहिं कछु कीन्ह बिचार।**
जाइ निसाचर होहु नृप मूढ़ सहित परिवार ॥१७३॥

तब ब्राह्मण क्रोध-सहित बिना कुछ विचार किये बोले—हे मूर्ख राजा! तू जाकर परिवार-सहित राक्षस हो।

---

१. ब्राह्मण।

छत्रबन्धु तैं बिप्र बोलाई ❀ घालै लिये सहित समुदाई
ईश्वर राखा धरम हमारा ❀ जैहसि¹ तैं समेत परिवारा

रे नीच क्षत्रिय! तूने तो परिवार-सहित ब्राह्मणों को बुलाकर उन्हें नष्ट करना चाहा था। ईश्वर ही ने हमारा धर्म रख लिया। तू परिवार-सहित नष्ट होगा।

संबत मध्य नास तव होऊ ❀ जलदाता न रहिहि कुल कोऊ
नृप सुनि स्राप बिकल अति त्रासा ❀ भै बहोरि बर गिरा अकासा

एक वर्ष के भीतर तेरा नाश हो जाय, तेरे कुल में कोई पानी देने वाला तक न रहेगा। शाप सुनकर भय के मारे राजा अत्यन्त व्याकुल हो गया। फिर आकाश में सुन्दर आकाशवाणी हुई।

बिप्रहु स्राप बिचारि न दीन्हा ❀ नहिं अपराध भूप कछु कीन्हा
चकित बिप्र सब सुनि नभबानी ❀ भूप गयेउ जहँ भोजन खानी

हे ब्राह्मणो! तुमने विचारकर शाप नहीं दिया। राजा ने कुछ अपराध नहीं किया। आकाशवाणी सुनकर सब ब्राह्मण चकित हो गये। तब राजा वहाँ गया, जहाँ भोजन बना था।

तहँ न असन नहिं बिप्र सुआरा² ❀ फिरेउ राउ मन सोच अपारा
सब प्रसंग महिसुरन्ह सुनाई ❀ त्रसित परेउ अवनी अकुलाई

वहाँ न तो भोजन था, न रसोइया ब्राह्मण ही था। राजा लौटा। उसके मन में अपार चिन्ता थी। उसने सब कथा ब्राह्मणों को सुनाई और भयभीत और व्याकुल होकर वह पृथ्वी पर गिर पड़ा।

दो०— भूपति भावी मिटइ नहिं जदपि न दूषन तोर।
किये अन्यथा होइ नहिं बिप्र स्राप अति घोर ॥१७४॥

हे राजन्! यद्यपि तुम्हारा दोष नहीं, पर होनहार नहीं मिट सकता। ब्राह्मण का शाप बहुत ही भयानक होता है। यह किसी प्रयत्न से भी टाले नहीं टल सकता।

अस कहि सब महिदेव सिधाये ❀ समाचार पुरलोगन्ह पाए
सोचहिं दूषन दैवहि देहीं ❀ बिरचत हंस काग किय जेही

१. जायगा। २. रसोइया।

ऐसा कहकर सब ब्राह्मण चले गये। नगर-निवासियों ने जब यह समाचार पाया, तब वे चिन्ता करने और भाग्य को दोष देने लगे, जिसने हंस बनाते-बनाते कौआ कर दिया।

उपरोहितहिं भवन पहुँचाई ❀ असुर तापसहिं खबरि जनाई
तेहि खल जहँ तहँ पत्र पठाए ❀ सजि सजि सेन भूप सब आए

राक्षस कालकेतु ने पुरोहित को उसके घर पहुँचाकर मुनि को ख़बर दी। उस दुष्ट ने जहाँ-तहाँ पत्र भेजे, जिससे (बैरी) राजा लोग सेना सजा-सजाकर दौड़े।

घेरेन्हि नगर निसान[1] बजाई ❀ बिबिध भाँति नित होइ लराई
जूझे सकल सुभट करि करनी ❀ बंधु समेत परेउ नृप धरनी

उन्होंने डंका बजाकर नगर को घेर लिया। रोज़ अनेक तरह से लड़ाइयाँ होने लगीं। सब योद्धा लोग वीरता दिखलाकर काम आये। राजा भी भाई-समेत धरती पर गिर पड़ा अर्थात् मारा गया।

सत्यकेतु कुल कोउ नहिं बाँचा ❀ बिप्र स्राप किमि होइ असाँचा[2]
रिपु जिति सब नृप नगर बसाई ❀ निज पुर गवने जय जसु पाई

सत्यकेतु के कुल में कोई नहीं बचा। ब्राह्मणों का शाप मिथ्या कैसे हो सकता था? शत्रु को जीतकर, नगर को बसाकर, सब राजा लोग विजय और यश पाकर अपने-अपने नगर को चले गये।

दो०—भरद्वाज सुनु जाहि जब होइ बिधाता बाम।
धूरि मेरु सम जनक जम ताहि ब्याल सम दाम।१७५

(याज्ञवल्क्य कहते हैं) हे भरद्वाज! सुनो, ब्रह्मा जब जिसके विपरीत होते हैं, तब उसे धूल सुमेरु पर्वत के समान, पिता यम के समान और रस्सी साँप के समान हो जाती है।

काल पाइ मुनि सुनु सोइ राजा ❀ भयेउ निसाचर सहित समाजा
दस सिर ताहि बीस भुजदंडा ❀ रावन नाम बीर बरिबंडा

हे मुनि! सुनो, वही राजा समय पाकर परिवार-सहित राक्षस हुआ। उसके दस सिर और बीस भुजायें थीं। रावण उसका नाम हुआ और वह बड़ा ही शूरवीर हुआ।

१. डंका। २. मिथ्या, झूठ।

भूप अनुज अरिमर्दन नामा ❀ भयेउ सो कुम्भकरन बलधामा
सचिव जो रहा धरमरुचि जासू ❀ भयेउ बिमात्र[1] बंधु लघु तासू

राजा का छोटा भाई जो अरिमर्दन नाम का था, वही बड़ा बलवान् कुम्भकर्ण हुआ। राजा का मन्त्री जो धर्मरुचि था, वह रावण का सौतेला छोटा भाई हुआ।

नाम विभीषन जेहि जगु जाना ❀ विष्नु भगत विग्यान निधाना
रहे जे सुत सेवक नृप केरे ❀ भये निसाचर घोर घनेरे

उसका नाम विभीषण हुआ; संसार उसे जानता है। वह विष्णु का भक्त और ज्ञान-विज्ञान का भंडार था। और जो राजा के पुत्र और सेवक थे, वे सभी बड़े भयानक राक्षस हुये।

कामरूप खल जिनिस अनेका ❀ कुटिल भयंकर बिगत विवेका
कृपा रहित हिंसक सब पापी ❀ बरनि न जाइ बिस्व परितापी

वे अनेकों जाति के, स्वेच्छापूर्वक मनमाना रूप धारण करने वाले, दुष्ट, प्रपंची, भयानक, विवेक से हीन, कृपा से रहित, हिंसक, पापी और संसार भर को दुःख देने वाले हुये। उनका वर्णन नहीं हो सकता।

दो० उपजे जदपि पुलस्त्य कुल पावन अमल अनूप।
तदपि महीसुर स्राप बस भए सकल अघ रूप ॥१७६॥

यद्यपि वे पुलस्त्य ऋषि के पवित्र, निर्मल और अनुपम कुल में उत्पन्न हुये, तो भी ब्राह्मणों के शाप के कारण वे सब पाप के रूप ही हुये।

कीन्ह विविध तप तीनिहुँ भाई ❀ परम उग्र[2] नहिं बरनि सो जाई
गयेउ निकट तप देखि विधाता ❀ माँगहु बर प्रसन्न मैं ताता

तीनों भाइयों ने अनेक प्रकार के तप किये। बड़ा कठोर तप, जिसका वर्णन नहीं हो सकता। उनका तप देखकर विधाता उनके निकट गये और बोले—हे तात! मैं प्रसन्न हूँ, वर माँगो।

करि विनती पद गहि दससीसा ❀ बोलेउ वचन सुनहु जगदीसा
हम काहूके मरहिं न मारे ❀ बानर मनुज जाति दुइ बारे[3]

रावण ने विनय करके और पैर पकड़कर कहा—हे जगत् के स्वामी!

१. सौतेला। २. कठोर। ३. छोड़कर, बचाकर।

सुनो, बानर और मनुष्य दो जातियों को छोड़कर हम और किसी के मारे न मरें (यह वर दो)।

एवमस्तु तुम्ह बड़ तप कीन्हा ❀ मैं ब्रह्मा मिलि तेहि वर दीन्हा
पुनि प्रभु कुम्भकरन पहिं गयेउ ❀ तेहि बिलोकि मन बिसमय भयेउ

ब्रह्मा ने कहा—ऐसा ही हो, तुमने बड़ा तप किया है। (शिवजी कहते हैं) मैंने और ब्रह्मा ने मिलकर उसे वर दिया। फिर ब्रह्मा कुम्भकर्ण के पास गये। उसे देखकर उनके मन में बड़ा आश्चर्य हुआ।

जौं एहि खल नित करब अहारू ❀ होइहि सब उजारि संसारू
सारद प्रेरि तासु मति फेरी ❀ माँगेसि नींद मास पट केरी

जो यह दुष्ट नित्य आहार करेगा, तो सारा संसार ही उजाड़ हो जायगा। ब्रह्मा ने सरस्वती को प्रेरणा करके उसकी बुद्धि को फेर दिया। उसने छः महीने की नींद माँग ली।

दो०— गए बिभीषन पास पुनि कहेउ पुत्र वर माँगु।
तेहि माँगेउ भगवंत पद कमल अमल अनुरागु।१७७

ब्रह्मा फिर विभीषण के पास गये और बोले—हे पुत्र! वर माँगो। उसने भगवान् के कमल ऐसे चरणों में निर्मल (निष्काम और अनन्य) प्रेम माँगा।

तिन्हहिं देइ बर ब्रह्म सिधाए ❀ हरषित ते अपने गृह आए
मय तनुजा[1] मन्दोदरि नामा ❀ परम सुन्दरी नारि ललामा

उनको वर देकर ब्रह्मा चले गये। वे (तीनों भाई) भी आनंदित होकर अपने घर आये। मय दानव की मंदोदरी नाम की कन्या अत्यन्त रूपवती और सुन्दरी स्त्रियों में शिरोमणि थी।

सोइ मय दीन्ह रावनहि आनी ❀ होइहि जातुधानपति जानी
हरषित भयेउ नारि भलि पाई ❀ पुनि दोउ बंधु बिआहेसि जाई

मय ने उसे लाकर रावण को दिया। वह जानता था कि यह राक्षसों का राजा होगा। अच्छी स्त्री पाकर रावण प्रसन्न हुआ और फिर जाकर उसने दोनों भाइयों का भी विवाह कर दिया।

---

१. पुत्री।

गिरि त्रिकूट एक सिंधु मँझारी[1] ❀ बिधि निर्मित दुर्गम अति भारी
सोइ मय दानव बहुरि सँवारा ❀ कनक रचित मनि भवन अपारा

समुद्र के मध्य में त्रिकूट नाम के पर्वत पर ब्रह्मा का बनाया हुआ एक बड़ा भारी किला था। उसी को मय दानव ने फिर सजा दिया। उसमें सोने के बने हुये और मणियों से जड़े हुये अगणित महल थे।

भोगावति जसि अहि कुल बासा ❀ अमरावति जसि सक्र[2] निवासा
तिन्हतें अधिक रम्य अति बंका ❀ जग बिख्यात नाम तेहि लंका

जैसे नागों के कुल के रहने की पुरी भोगावती और इन्द्र के रहने की पुरी अमरावती है, उनसे भी अधिक सुन्दर और बाँकी नगरी वह थी। संसार में उसका नाम लंका प्रसिद्ध हुआ।

दो०- खाईं सिंधु गँभीर अति चारिहु दिसि फिरि आव।
कनक कोट मनि खचित दृढ़ बरनि न जाइ बनाव १७८

समुद्र गहरी खाई की तरह जिसे चारों ओर से घेरे हुये है; जिसका मणियों से जड़ा हुआ सोने का मज़बूत परकोटा है, जिसकी सुन्दरता का वर्णन नहीं किया जा सकता।

हरि प्रेरित जेहि कलप जोइ जातुधान पति होइ।
सूर प्रतापी अतुल बल दल समेत बस सोइ।१७८। (२)

भगवान् की प्रेरणा से जिस कल्प में जो राक्षसों का राजा होता है, वही शूर, प्रतापी, अतुलित बल वाला अपने दल-सहित उस पुरी में बसता है।

रहे तहाँ निसिचर भट भारे ❀ ते सब सुरन्ह समर संघारे
अब तहँ रहहिं सक्र के प्रेरे ❀ रच्छक कोटि जच्छपति[3] केरे

पहले वहाँ बड़े-बड़े योद्धा राक्षस रहते थे। देवताओं ने उन सब को युद्ध में मार डाला। अब इन्द्र की प्रेरणा से कुबेर के एक करोड़ पहरेदार (यक्ष) वहाँ रहते हैं।

दसमुख कतहुँ खबरि असि पाई ❀ सेन साजि गढ़ घेरेसि जाई
देखि बिकट भट बड़ि कटकाई ❀ जच्छ जीव लै गए पराई

---

१. मध्य में। २. इन्द्र। ३. कुबेर।

रावण ने कहीं ऐसी ख़बर पाई। सेना लेकर उसने क़िले को जा घेरा। उस बड़े विकट योद्धा और उसकी बड़ी सेना को देखकर यक्ष अपना प्राण लेकर भाग गये।

फिरि सब नगर दसानन देखा ❀ गयेउ सोच सुख भयेउ बिसेषा
सुन्दर सहज अगम अनुमानी ❀ कीन्हि तहाँ रावन रजधानी

फिर रावण ने सारा नगर देखा। उसकी चिंता दूर हुई और उसे बहुत ही सुख हुआ। उस पुर को सुन्दर और सहज में प्राप्त तथा शत्रुओं के लिये अगम अनुमान करके रावण ने उसे अपनी राजधानी बनाया।

जेहि जस जोग बाँटि गृह दीन्हे ❀ सुखी सकल रजनीचर कीन्हे
एक बार कुबेर पर धावा ❀ पुष्पक जान[1] जीति लेइ आवा

जो जिस योग्य था, उसे वैसा ही घर बाँटकर रावण ने सब राक्षसों को सुखी किया। एक बार वह कुबेर पर चढ़ दौड़ा और उससे पुष्पक विमान जीत कर ले आया।

दो०— कौतुकहीं कैलास पुनि लीन्हेसि जाइ उठाइ।
मनहुँ तौलि निज बाहु बल चला बहुत सुख पाइ।१७९

फिर उसने जाकर खेल ही खेल में एक बार कैलाश पर्वत को उठा लिया। मानो अपनी भुजाओं का बल तौलकर, बहुत सुख पाकर, वह वहाँ से चला आया।

सुख संपति सुत सेन सहाई ❀ जय प्रताप बल बुद्धि बड़ाई
नित नूतन सब बाढ़त जाई ❀ जिमि प्रतिलाभ लोभ अधिकाई

सुख, सम्पत्ति, पुत्र, सेना, सहायक, जय, प्रताप, बल, बुद्धि और बड़ाई ये सब उसके नित्य नवीन वैसे ही बढ़ते जाते थे, जैसे प्रत्येक लाभ पर लोभ बढ़ता है।

अतिबल कुम्भकरन अस भ्राता ❀ जेहि कहुँ नहिं प्रतिभट जग जाता
करइ पान सोवइ षट मासा ❀ जागत होइ तिहूँ पुर त्रासा

महाबली कुम्भकर्ण जैसा उसका भाई था, जिसके जोड़ का योद्धा संसार में पैदा ही नहीं हुआ। वह शराब पीकर छः महीने सोया करता था। उसके

---

१. यान, विमान।

जागने पर तीनों लोकों में तहलका मच जाता था।

जौं दिन प्रति अहार कर सोई ❀ बिस्व बेगि सब चौपट होई
समर धीर नहिं जाइ बखाना ❀ तेहि सम अमित बीर बलवाना

यदि वह प्रतिदिन आहार करता, तो सारा विश्व शीघ्र ही चौपट हो जाता। वह युद्ध में ऐसा धीर था, जिसका बखान नहीं किया जा सकता। उसी के समान वहाँ असंख्य वीर और बलवान थे।

बारिदनाद जेठ सुत तासू ❀ भट महुँ प्रथम लीक[1] जग जासू
जेहि न होइ रन सनमुख कोई ❀ सुरपुर नितहिं परावन[2] होई

रावण का जो पुत्र मेघनाद था, उसकी गिनती संसार के योद्धाओं में पहले होती थी। रण में उसके सामने कोई खड़ा नहीं हो सकता था। देवलोक में (उसके भय से) रोज़ ही भगदड़ मची रहती थी।

दो० कुमुख अकंपन कुलिसरद धूमकेतु अतिकाय।
एक एक जग जीति सक ऐसे सुभट निकाय।१८०।

दुर्मुख, अकम्पन, बज्रदन्त, धूमकेतु और अतिकाय आदि ये ऐसे योद्धा थे कि अकेले ही सारे जगत् को जीत सकते थे। ऐसे वीर वहाँ भरे हुये थे।

कामरूप जानहिं सब माया ❀ सपनेहुँ जिन्ह कें धरम न दाया
दसमुख बैठ सभाँ एक बारा ❀ देखि अमित आपन परिवारा

सब राक्षस मनमाना रूप बना सकते थे। वे सब (आसुरी) माया जानते थे। उनके दया-धर्म स्वप्न में भी नहीं था। एक बार रावण सभा में बैठा था। अपना असंख्य परिवार देखकर कि—

सुत समूह जन परिजन नाती ❀ गनै को पार निसाचर जाती
सेन बिलोकि सहज अभिमानी ❀ बोला बचन क्रोध मद सानी

पुत्रों का समूह, कुटुम्बी, सम्बन्धी और नाती इतने हैं कि सब राक्षसों की गिनती कौन कर सकता है? स्वभाव ही से वह अभिमानी रावण अपनी सेना देखकर क्रोध और अहंकार में सनी हुई वाणी बोला—

---

१. रेखा, नंबर। २. भागना।

सुनहु सकल रजनीचर जूथा[1] ❀ हमरे बैरी बिबुध बरूथा[2]
ते सनमुख नहिं करहिं लराई ❀ देखि सबल रिपु जाहिं पराई

हे सब राक्षसों के समूह ! सुनो । देवतागण हमारे शत्रु हैं । वे सामने आकर युद्ध नहीं करते । बलवान शत्रु को देखकर भाग जाते हैं ।

तिन्हकर मरन एक बिधि होई ❀ कहउँ बुझाइ सुनहु अब सोई
द्विज भोजन मख[3] होम सराधा[4] ❀ सब कै जाइ करहु तुम्ह बाधा

उनका मरण एक ही उपाय से हो सकता है । मैं समझाकर कहता हूँ । अब उसे सुनो । उनके ब्रह्मभोज, यज्ञ, हवन और श्राद्ध में तुम लोग जाकर बाधा डालो ।

दो०— छुधा हीन बल हीन सुर सहजहिं मिलिहहिं आइ ।
तब मारिहउँ कि छाड़िहउँ भली भाँति अपनाइ ॥१८१

भूख से दुर्बल और बल से हीन देवता तब सहज ही में आ मिलेंगे । तब मैं उन्हें अच्छी तरह वश में करके मारूँगा या छोड़ दूँगा ।

मेघनाद कहुँ पुनि हँकरावा[5] ❀ दीन्ही सिख बलु बयरु बढ़ावा
जे सुर समर धीर बलवाना ❀ जिन्हके लरिबे कर अभिमाना

उसने फिर मेघनाद को बुलवाया और सिखा-पढ़ाकर देवताओं के प्रति उसके बैर-भाव को ओजना दी । फिर कहा—हे पुत्र ! जो देवता युद्ध में धीर और बलवान हैं और जिन्हें लड़ने का अभिमान है—

तिन्हहिं जीति रन आनेसु बाँधी ❀ उठि सुत पितु अनुसासन काँधी[6]
एहि बिधि सबही अग्या दीन्ही ❀ आपुन चलेउ गदा कर लीन्ही

उनको युद्ध में जीतकर बाँध लाना । पुत्र ने उठकर पिता के आदेश को शिरोधार्य किया । इस तरह उसने सबको आज्ञा दी और स्वयं भी हाथ में गदा लेकर चला ।

चलत दसानन डोलति अवनी[7] ❀ गर्जत गर्भ स्रवहिं सुर रवनी
रावन आवत सुनेउ सकोहा ❀ देवन्ह तके मेरु गिरि खोहा

रावण के चलने से पृथ्वी डगमगाती थी । उसकी गर्जना से देवताओं की

१. समूह । २. समूह । ३. यज्ञ । ४. श्राद्ध । ५. बुलवाया । ६. कंधा दिया, माना । ७. पृथ्वी ।

स्त्रियों का गर्भ गिर जाता था। रावण को क्रोध-सहित आता हुआ सुनकर देवताओं ने सुमेरु पर्वत की गुफाओं और खोहों की राह ली।

दिगपालन्ह के लोक सुहाए ❀ सूने सकल दसानन पाए
पुनि पुनि सिंघनाद करि भारी ❀ देइ देवतन्ह गारि प्रचारी

रावण ने दिग्पालों के सारे सुन्दर लोकों को सूना पाया। वह बार-बार भारी सिंहनाद करके देवताओं को ललकार-ललकारकर गालियाँ देता था।

रन मद मत्त फिरइ जग धावा ❀ प्रतिभट खोजत कतहुँ न पावा
रबि ससि पवन बरुन धनधारी ❀ अगिनि काल जम सब अधिकारी

युद्ध के मद में मतवाला होकर वह संसार में दौड़ता फिरा। खोजने पर भी कहीं उसे बराबर का कोई वीर नहीं मिला। सूर्य, चन्द्रमा, वायु, वरुण, कुबेर, अग्नि, काल और यम आदि सब अधिकारी—

किन्नर सिद्ध मनुज सुर नागा ❀ हठि सबही के पंथहि लागा
ब्रह्मसृष्टि जहँ लगि तनुधारी ❀ दसमुख बसबर्ती नर नारी
आयसु करहिं सकल भयभीता ❀ नवहिं आइ नित चरन बिनीता

किन्नर, सिद्ध, मनुष्य, देवता और नाग इन सभी के पीछे वह हठ करके पड़ गया। ब्रह्मा की सृष्टि में जहाँ तक स्त्री-पुरुष शरीरधारी थे, वे सभी रावण के आधीन हो गए थे। सब डर के मारे उसकी आज्ञा का पालन करते थे और नित्य आकर नम्रतापूर्वक उसके चरणों में सिर नवाते थे।

दो०— भुजबल बिस्व बस्य करि राखेसि कोउ न स्वतंत्र।
मंडलीक मनि रावन राज करै निज मंत्र ॥१८२(१)॥

भुजाओं के बल से विश्व को वश में करके उसने किसी को स्वतंत्र नहीं रहने दिया। चक्रवर्त्तियों का शिरोमणि रावण इच्छानुसार राज्य करने लगा।

देव जच्छ गंधर्ब नर किन्नर नाग कुमारि।
जीति बरीं निज बाहु बल बहु सुन्दर बर नारि ॥१८२(२)॥

देवता, यक्ष, गन्धर्व, नर, किन्नर और नाग की कन्याओं और अनेक सुन्दरी और श्रेष्ठ स्त्रियों को उसने अपनी भुजाओं के बल से जीतकर विवाह लिया।

इंद्रजीत सन जो कछु कहेऊ ❀ सो सब जनु पहिलेहु करि रहेऊ
प्रथमहिं जिन्ह कहुँ आयसु दीन्हा ❀ तिन्ह कर चरित सुनहु जो कीन्हा

मेघनाद से उसने जो कुछ कहा, उसे उसने मानों पहले ही से कर रक्खा था। जिनको उसने पहले ही आज्ञा दी थी, उन्होंने जो करतूतें कीं, उन्हें सुनो।

देखत भीमरूप सब पापी ❀ निसिचर निकर देव परितापी[1]
करहिं उपद्रव असुर निकाया ❀ नाना रूप धरहिं करि माया

सब राक्षसों के समूह देखने में भयावने, पापी और देवताओं को कष्ट देने वाले थे। वे राक्षसों के समूह उपद्रव करते थे और माया से तरह-तरह के रूप धरते थे।

जेहि बिधि होइ धरम निर्मूला ❀ सो सब करहिं वेद प्रतिकूला
जेहि जेहि देस धेनु द्विज पावहिं ❀ नगर गाउँ पुर आगि लगावहिं

जिस प्रकार धर्म की जड़ कटे, वे वही सब वेद के विरुद्ध काम करते थे। जिस-जिस स्थान में वे गायों और ब्राह्मणों को पाते थे, उसी नगर, गाँव और पुर में आग लगा देते थे।

सुभ आचरन कतहुँ नहिं होई ❀ देव बिप्र गुर मान न कोई
नहिं हरि भगति जग्य जप दाना ❀ सपनेहुँ सुनिअ न वेद पुराना

कहीं भी शुभ आचरण नहीं हो रहा था। देवता, ब्राह्मण और गुरु को कोई नहीं मानता था। न हरि-भक्ति थी, न यज्ञ, जाप और दान था। वेद और पुराण तो स्वप्न में भी सुनने को नहीं मिलते थे।

छंद—जप जोग बिरागा तप मख भागा स्रवन सुनइ दससीसा।
आपुन उठि धावइ रहै न पावइ धरि सब घालइ खीसा॥
अस भ्रष्ट अचारा भा संसारा धरम सुनिअ नहिं काना।
तेहि बहु बिधि त्रासइ देस निकासइ जो कह वेद पुराना॥

जप, योग, वैराग्य, तप, यज्ञ में भाग पाने की बात रावण कहीं कानों में सुनता, तो स्वयं उठ दौड़ता, कोई रहने नहीं पाता और सबको पकड़कर नष्ट-भ्रष्ट कर डालता था। संसार में ऐसा भ्रष्ट आचार फैल गया कि धर्म तो कहीं

१. कष्ट देने वाले।

कान से भी नहीं सुनाई पड़ता था। जो वेद और पुराण कहते थे, उनको वह सब तरह से भय दिखलाता और देश से निकाल देता था।

सो० बरनि न जाइ अनीति घोर निसाचर जो करहिं।
हिंसा पर अति प्रीति तिन्हके पापहिं कवनि मिति॥

राक्षस लोग जो भयानक अत्याचार करते थे, उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। जिनकी हिंसा ही पर प्रीति है, उनके पापों का क्या ठिकाना है?

बाढ़े खल बहु चोर जुआरा ❀ जे लंपट परधन परदारा
मानहिं मातु पिता नहिं देवा ❀ साधुन्ह सन करवावहिं सेवा

दुष्ट, चोर, जुआरी और पराया धन और पराई स्त्री पर मन चलाने वाले लंपट खूब बढ़ गये। लोग माता, पिता और देवता को नहीं मानते थे और साधुओं से अपनी सेवा करवाते थे।

जिन्हके यह आचरन भवानी ❀ ते जानहु निसिचर सब प्रानी
अतिसय देखि धरम कै ग्लानी ❀ परम सभीत धरा अकुलानी

हे पार्वती! जिनके आचरण ऐसे हैं, उन सब प्राणियों को राक्षस ही समझना। इस प्रकार धर्म के प्रति लोगों की अतिशय ग्लानि देखकर धरती अत्यन्त भयभीत और व्याकुल हो गई।

गिरि सरि सिंधु भार नहिं मोही ❀ जस मोहि गरुअ[1] एक परद्रोही
सकल धरम देखइ बिपरीता ❀ कहि न सकइ रावन भयभीता

(पृथ्वी सोचने लगी)—पर्वत, नदी और समुद्र का भार मुझे उतना भारी नहीं जान पड़ता, जितना भारी मुझे एक परद्रोही लगता है। सब लोग धर्म के विरुद्ध काम होता देखते हैं, पर कोई रावण के डर के मारे कुछ बोल नहीं सकता।

धेनु[2] रूप धरि हृदयँ बिचारी ❀ गई तहाँ जहँ सुर मुनि झारी[3]
निज संताप सुनाएसि रोई ❀ काहू तें कछु काज न होई

हृदय में सोच-विचारकर, गाय का रूप धरकर, धरती वहाँ गई, जहाँ देवताओं और मुनियों का समूह (छिपा) था। उसने रोकर उनको अपना दुःख सुनाया; पर किसी से कुछ काम होता नहीं दिखाई पड़ा।

---

१. भारी। २. गाय। ३. समूह।

छंद—सुर मुनि गंधर्बा मिलि करि सर्बा गे बिरंचि के लोका।
सँग गो तनुधारी भूमि बिचारी परम बिकल भय सोका।
ब्रह्मा सब जाना मन अनुमाना मोर कछू न बसाई।
जा करि तैं दासी सो अबिनासी हमरेउ तोर सहाई॥

तब देवता, मुनि और गंधर्व सब मिलकर ब्रह्मा के लोक को गये। साथ में गाय का शरीर धारण किये हुये, भय और शोक से व्याकुल बेचारी धरती भी थी। ब्रह्मा सब जान गये। उन्होंने मन में अनुमान किया कि इसमें मेरा कुछ भी वश नहीं चलने का। तब उन्होंने धरती से कहा—जिसकी तू दासी है, वही अविनाशी हम दोनों का सहायक है।

सो०—धरनि धरहि मन धीर कह बिरंचि हरि पद सुमिरु।
जानत जन की पीर प्रभु भंजहिं दारुन बिपति।१८४।

ब्रह्मा ने कहा—हे धरती! मन में धीरज धरो। हरि के चरणों को स्मरण करो। प्रभु अपने भक्तों की पीड़ा को जानते हैं। वे तुम्हारी कठिन विपत्ति को नष्ट करेंगे।

बैठे सुर सब करहिं बिचारा ❀ कहँ पाइअ प्रभु करिअ पुकारा
पुर बैकुंठ जान कह कोई ❀ कोउ कह पयनिधि बस प्रभु सोई

सब देवता बैठकर विचार करने लगे कि भगवान् को कहाँ पायें और अपनी पुकार (फ़र्याद) सुनायें। कोई वैकुण्ठपुरी जाने को कहता था, कोई कहता था प्रभु तो क्षीर-समुद्र में बसते हैं।

जाके हृदयँ भगति जसि प्रीती ❀ प्रभु तहँ प्रगट सदा तेहि रीती
तेहि समाज गिरिजा मैं रहेऊँ ❀ अवसर पाइ बचन इक कहेऊँ

जिसके हृदय में जैसी भक्ति और जैसी प्रीति होती है, प्रभु वहाँ सदा उसी के अनुसार प्रकट होते हैं। हे पार्वती उस समाज में मैं भी था। अवसर पाकर मैंने एक बात कही—

हरि ब्यापक सर्बत्र समाना ❀ प्रेम तें प्रगट होहिं मैं जाना
देस काल दिसि बिदिसहु माहीं ❀ कहहु सो कहाँ जहाँ प्रभु नाहीं

मैं तो यह जानता हूँ कि भगवान् सर्वत्र समान रूप से व्यापक हैं। वे

प्रेम से प्रकट होते हैं। देश-काल, दिशा, विदिशा में बताओ वह स्थान कहाँ है, जहाँ प्रभु नहीं हैं ?

अग जगमय सब रहित बिरागी ❀ प्रेम तें प्रभु प्रगटइ जिमि आगी
मोर वचन सबके मन माना ❀ साधु साधु करि ब्रह्म बखाना

वे चर-अचर सब में हैं; पर सब से अलग हैं और किसी में अनुरक्त नहीं हैं। वे प्रेम से प्रकट होते हैं, जैसे आग। मेरी बात सबको प्रिय लगी। ब्रह्मा ने शाबाश-शाबाश कहकर मेरी बड़ाई की।

दो०—**सुनि बिरंचि मन हरष तन पुलकि नयन बह नीर।**
अस्तुति करत सुजोरि कर सावधान मतिधीर १८५

मेरी बात सुनकर ब्रह्मा का मन आनन्दित हुआ, तन पुलकित हुआ, नेत्रों से नीर बहने लगा। वे धीर-बुद्धि ब्रह्मा सावधान होकर, हाथ जोड़कर स्तुति करने लगे।

छंद—जय जय सुरनायक जन सुखदायक प्रनतपाल भगवंता
गो द्विज हितकारी जय असुरारी सिंधुसुता प्रिय कंता
पालन सुर धरनी अद्भुत करनी मरम न जानइ कोई
जो सहज कृपाला दीनदयाला करहु अनुग्रह सोई

हे देवताओं के स्वामी ! सेवकों को सुख देने वाले ! शरणागत को पालने वाले भगवान् ! आपकी जय हो, जय हो। हे गौ, ब्राह्मण का हित करने वाले ! असुरों के शत्रु ! समुद्र की कन्या लक्ष्मी के प्यारे पति ! आपकी जय हो। हे देवता और पृथ्वी को पालने वाले ! आपकी लीला अद्भुत है; कोई आपका भेद नहीं जानता। जो स्वभाव ही से कृपालु और दीनों पर दया करने वाले हैं, वही हम पर कृपा करें।

जय जय अबिनासी सब घट बासी व्यापक परमानन्दा।
अबिगत गोतीतं चरित पुनीतं मायारहित मुकुन्दा॥
जेहि लागि[1] बिरागी अति अनुरागी बिगत मोह मुनिबृन्दा।
निसि बासर ध्यावहिं गुन गन गावहिं जयति सच्चिदानन्दा॥

१. लिये।

हे अविनाशी ! सब के हृदय में बसने वाले (अन्तर्यामी), सर्वव्यापक, परम आनन्द-स्वरूप, अजेय, इन्द्रियों से परे, पवित्र-चरित्र, माया से रहित, मुकुन्द (मोक्षदाता) ! आपकी जय हो। संसार से विरक्त, अति अनुरागी, मोह से रहित, मुनिवृन्द भी जिनका रात-दिन ध्यान करते हैं, और जिनके गुणों के समूह का गान करते हैं, उन सच्चिदानन्द की जय हो।

जेहि सृष्टि उपाई त्रिबिध बनाई संग सहाय न दूजा।
सो करउ अघारी[1] चिंत हमारी जानिअ भगति न पूजा॥
जो भव भय भंजन मुनि मन रंजन गंजन बिपति बरूथा।
मन बच क्रम बानी छाँड़ि सयानी सरन सकल सुर जूथा॥

जिन्होंने अकेले, बिना किसी दूसरे की सहायता के, तीन प्रकार की सृष्टि उत्पन्न की, पापों के शत्रु भगवान् हमारी सुधि लें। हम न भक्ति जानते हैं और न पूजा। जो संसार के भय का नाश करने वाले, मुनियों के मन को आनन्द देने वाले, और विपत्तियों के समूह को नष्ट करने वाले हैं, हम सब देवताओं के समूह मन, वचन और कर्म से, चतुराई करने की बान छोड़कर उनकी शरण आये हैं।

सारद स्रुति सेषा रिषय असेषा[2] जा कहुँ कोउ नहिं जाना।
जेहि दीन पिआरे बेद पुकारे द्रवउ सो श्रीभगवाना॥
भव बारिधि मंदर[3] सब बिधि सुन्दर गुन मंदिर सुख पुञ्जा।
मुनि सिद्ध सकल सुर परम भयातुर नमत नाथ पद कंजा॥

सरस्वती, वेद, शेष और सम्पूर्ण ऋषि, कोई भी जिनको नहीं जानते, जिन्हें दीन प्रिय हैं। ऐसा वेद पुकारकर कहते हैं, वे ही श्री भगवान् हम पर दया करें। हे संसाररूपी समुद्र में (मन्दराचल) पर्वत के समान, सब प्रकार से सुन्दर, गुणों के घर, सुखों की राशि, नाथ ! आपके कमल ऐसे चरणों में मुनि, सिद्ध और सब देवता भय से बहुत विकल होकर नमस्कार करते हैं।

दोहा

जानि सभय सुर भूमि सुनि बचन समेत सनेह।
गगन गिरा गंभीर भइ हरनि सोक संदेह॥१८६॥

१. पापों के शत्रु। २. समस्त। ३. पहाड़।



देवताओं और पृथ्वी को भयभीत जानकर और उनके स्नेह-युक्त वचन सुनकर शोक और संदेह को हरने वाली गंभीर आकाशवाणी हुई।

जनि डरपहु मुनि सिद्ध सुरेसा ❀ तुम्हहि लागि धरिहउँ नर बेसा
अंसन्ह सहित मनुज अवतारा ❀ लेइहउँ दिनकर बंस उदारा

हे मुनि, सिद्ध और देवताओं के स्वामियो ! डरो मत। तुम्हारे लिये मैं मनुष्य का वेष धारण करूँगा और उदार सूर्य-वंश में मैं अंशों-सहित मनुष्य का अवतार लूँगा।

कस्यप अदिति महातप कीन्हा ❀ तिन्ह कहुँ मैं पूरब बर दीन्हा
ते दसरथ कौसल्या रूपा ❀ कोसलपुरीं प्रगट नर भूपा

कस्यप और अदिति ने बड़ा भारी तप किया था। मैंने पहले उनको वर दिया था। वे ही दशरथ और कौशल्या के रूप में मनुष्यों के राजा होकर अयोध्यापुरी में प्रकट हुये हैं।

तिन्हके गृह अवतरिहउँ जाई ❀ रघुकुल तिलक सो चारिउ भाई
नारद बचन सत्य सब करिहउँ ❀ परम सक्ति समेत अवतरिहउँ

उन्हीं के घर में जाकर हम चार भाइयों के रूप में जन्म लेंगे; क्योंकि वे रघुकुल में सब से श्रेष्ठ हैं। नारद के सब वचन मैं सत्य करूँगा और अपनी परमशक्ति के सहित अवतार लूँगा।

हरिहउँ सकल भूमि गरुआई ❀ निर्भय होहु देव समुदाई
गगन ब्रह्मबानी सुनि काना ❀ तुरत फिरे सुर हृदय जुड़ाना
तब ब्रह्माँ धरनिहि समुझावा ❀ अभय भई भरोस जियँ आवा

मैं पृथ्वी का सब भार हर लूँगा। हे देवताओं के समूह ! निर्भय होओ। आकाश में भगवान् (ब्रह्म) की वाणी कान से सुनकर देवता तुरन्त ही लौट गये। उनका हृदय शीतल हो गया। तब ब्रह्मा ने धरती को समझाया। वह भी निर्भय हुई और उसके जी में भरोसा आ गया।

दो०— निज लोकहि बिरंचि गे देवन्ह इहइ सिखाइ।
बानर तनु धरि धरि महि हरि पद सेवहु जाइ।१८७।

ब्रह्मा देवताओं को यह सिखाकर कि बानर का शरीर धरकर पृथ्वी पर जाकर भगवान् के चरणों की सेवा करो, अपने लोक को चले गये।

गए देव सब निज निज धामा ॐ भूमि सहित मन कहुँ बिस्रामा
जो कछु आयसु ब्रह्माँ दीन्हा ॐ हरषे देव बिलम्ब न कीन्हा

सब देवता अपने-अपने लोक को चले गये। धरती सहित सबके मन को शान्ति मिली। ब्रह्मा ने जो आज्ञा दी थी, उससे देवता बहुत आनन्दित हुये और उन्होंने (करने में) देरी नहीं की।

बनचर देह धरी छिति माहीं ॐ अतुलित बल प्रताप तिन्ह पाहीं
गिरि तरु नख आयुध सब बीरा ॐ हरि मारग चितवहिं मतिधीरा

पृथ्वी पर उन्होंने वानर का शरीर धारण किया। उनमें अपार बल और प्रताप था। पर्वत, वृक्ष और नख ही उन सब वीरों के शस्त्र थे। वे धीर बुद्धि वाले भगवान् के आने की राह देखने लगे।

गिरि कानन जहँ तहँ भरि पूरी ॐ रहे निज निज अनीक[1] रुचि रूरी[2]
यह सब रुचिर चरित मैं भाखा ॐ अब सो सुनहु जो बीचहिं राखा

पर्वत और जङ्गल जहाँ-जहाँ थे, वहाँ वे वानर अपनी-अपनी सुन्दर सेना बनाकर अच्छी तरह रहने लगे। यह सब सुन्दर चरित्र मैंने कहा। अब उसे सुनो, जिसे बीच में रख लिया था।

अवधपुरी रघुकुल मनि राऊ ॐ बेद बिदित तेहि दसरथ नाऊँ
धरम धुरंधर गुननिधि ग्यानी ॐ हृदयँ भगति मति सारँगपानी

अवधपुरी में रघु के कुल में मणि के समान राजा दशरथ हुये, जिनका नाम वेदों में विख्यात है। वे बड़े धर्मात्मा, गुणों के भण्डार और ज्ञानी थे और विष्णु भगवान् के लिये हृदय में भक्ति और बुद्धि रखने वाले थे।

दो०— **कौसल्यादि नारि प्रिय सब आचरन पुनीत।**
पति अनुकूल प्रेम दृढ़ हरि पद कमल बिनीत।१८८।

कौशल्या आदि उनकी प्यारी रानियों का आचरण बड़ा पवित्र था। वे पति के अनुकूल थीं और भगवान् के कमल ऐसे चरणों में उनका दृढ़ प्रेम था और वे बड़ी विनीत थीं।

एक बार भूपति मन माहीं ॐ भइ गलानि मोरें सुत नाहीं
गुर गृह गयेउ तुरत महिपाला ॐ चरन लागि करि बिनय बिसाला

---

१. सेना। २. सुन्दर।

एक बार राजा के मन में बड़ी ग्लानि हुई कि मेरे पुत्र नहीं हैं। राजा तुरन्त ही गुरु के घर गये। चरण छूकर, बड़ी विनय करके—

निज दुख सुख सब गुरहि सुनायेउ ❀ कहि बसिष्ठ बहुबिधि समुझायेउ
धरहु धीर होइहहिं सुत चारी ❀ त्रिभुवन बिदित भगत भय हारी

राजा ने अपना सब दुःख-सुख गुरु को सुनाया। वशिष्ठ ने उन्हें बहुत प्रकार से समझाया और कहा—धीरज धरो, तुम्हारे चार पुत्र होंगे। वे तीनों लोकों में प्रसिद्ध और भक्तों के भय को हरने वाले होंगे।

सृङ्गी रिषिहि बसिष्ठ बोलावा ❀ पुत्रकाम सुभ जग्य करावा
भगति सहित मुनि आहुति दीन्हे ❀ प्रगटे अगिनि चरू[1] कर लीन्हे

वशिष्ठ ने शृंगी ऋषि को बुलाया और उनसे शुभ पुत्रकामेष्ठि यज्ञ कराया। मुनि ने भक्ति-सहित आहुतियाँ दीं। तब अग्निदेव हाथ में चरु लिये हुये प्रकट हुये।

जो बसिष्ठ कछु हृदयँ बिचारा ❀ सकल काज भा सिद्ध तुम्हारा
यह हबि बाँटि देहु नृप जाई ❀ जथा जोग जेहि भाग बनाई

(अग्निदेव ने राजा दशरथ से कहा—) वशिष्ठ ने हृदय में जो कुछ विचारा था, तुम्हारा वह सब काम सिद्ध हो गया। अब हे राजा! इस हव्य को ले जाकर जिसको जैसा उचित हो, वैसा भाग बनाकर बाँट दो।

दो०— तब अदृस्य पावक भए सकल सभहि समुझाइ।
परमानंद मगन नृप हरष न हृदय समाइ॥१८९॥

तब अग्निदेव सारी सभा को समझाकर अंतर्द्धान हो गये। राजा परम आनंद में मग्न हो गये। उनका हर्ष हृदय में नहीं समा रहा था।

तबहि राय प्रिय नारि बोलाई ❀ कौसल्यादि तहाँ चलि आई
अरध भाग कौसल्यहि दीन्हा ❀ उभय[2] भाग आधे कर कीन्हा

तब राजा ने अपनी प्यारी रानियों को बुलाया। कौशल्या आदि रानियाँ वहाँ आ गई। राजा ने द्रव्य का आधा भाग कौशल्या को दिया; फिर शेष आधे के दो भाग किये।

---

१. हविष्यान्न, खीर। २. दो।

कैकेई कहँ नृप सो दयऊ ❀ रहेउ सो उभय भाग पुनि भयऊ
कौसल्या कैकेई हाथ धरि ❀ दीन्ह सुमित्रहि मन प्रसन्न करि

उस आधे के आधे भाग को राजा ने कैकेयी को दिया। शेष जो बचा, उसके भी दो भाग किये गए और राजा ने उनको कौशल्या और कैकेयी के हाथ पर धरकर (उनकी अनुमति लेकर) उनका मन प्रसन्न करके, सुमित्रा को दिया।

एहि बिधि गर्भसहित सब नारी ❀ भईं हृदयँ हरषित सुख भारी
जा दिन तें हरि गर्भहिं आए ❀ सकल लोक सुख संपति छाए

इस प्रकार सब स्त्रियाँ गर्भवती हुईं। वे हृदय में बहुत आनंदित हुईं। उन्हें बड़ा सुख मिला। जिस दिन से भगवान् गर्भ में आये, सारे लोकों में सुख और सम्पत्ति छा गये।

मंदिर महुँ सब राजहिं रानीं ❀ सोभा सील तेज की खानीं
सुख जुत कछुक काल चलि गयऊ ❀ जेहि प्रभु प्रगट सो अवसर भयऊ

सब शोभा, शील और तेज की खान रानियाँ रनवास में विराजती थीं। इस प्रकार कुछ समय सुख-सहित बीत गया और प्रभु के प्रकट होने का अवसर आ गया।

दो०— **जोग लगन ग्रह बार तिथि सकल भए अनुकूल।**
चर अरु अचर हरषजुत राम जनम सुखमूल ।१९०।

योग, लग्न, ग्रह, वार और तिथि सब अनुकूल हो गये। चर और अचर सब आनंदमय हो गये; क्योंकि राम का जन्म सुख का मूल है।

नौमी तिथि मधु मास पुनीता ❀ सुकल पच्छ अभिजित हरिप्रीता
मध्य दिवस अति सीत न घामा ❀ पावन काल लोक बिश्रामा

चैत्र का पवित्र महीना था; नवमी तिथि थी। शुक्ल-पक्ष और भगवान् का प्रिय अभिजित मुहूर्त था। दोपहर का समय था। न बहुत सरदी थी न धूप। वह पवित्र समय सब लोकों को शान्ति देने वाला था।

सीतल मंद सुरभि बह बाऊ ❀ हरषित सुर संतन्ह मन चाऊ
बन कुसुमित गिरि गन मनिआरा[१] ❀ स्रवहिं सकल सरिताऽमृतधारा

शीतल, मंद और सुगंधित पवन बह रहा था। देवता आनंदित थे और

१. मणियों से जगमगाते हुये।

संतों के मन में बड़ा चाव था। बन फूले हुये थे। पर्वतों के समूह मणियों से जगमगा रहे थे; और नदियाँ अमृत की धारा बहा रही थीं।

सो अवसर बिरंचि जब जाना ❀ चले सकल सुर साजि बिमाना
गगन बिमल संकुल सुर जूथा ❀ गावहिं गुन गंधर्ब बरूथा

ब्रह्मा ने ऐसा अवसर जब जाना, तब वे और सारे देवता विमान सजा-सजाकर चले। निर्मल आकाश देवताओं के समूहों से भर गया। गंधर्वगण गुण गाने लगे।

बरषहिं सुमन सुअंजलि साजी ❀ गहगहि गगन दुन्दुभी बाजी
अस्तुति करहिं नाग मुनि देवा ❀ बहु बिधि लावहिं निज निज सेवा

और सुंदर अंजलि भर-भरकर फूलों की वर्षा करने लगे। आकाश में घमाघम नगाड़े बजने लगे। नाग, मुनि और देवता स्तुति करने लगे और बहुत प्रकार से अपनी-अपनी सेवायें भेंट (उपहार) करने लगे।

दो०— सुर समूह बिनती करि पहुँचे निज निज धाम।
जगनिवास प्रभु प्रगटे अखिल लोक बिस्राम १९१

देवगण विनती करके अपने-अपने धाम को चले गये। समस्त लोकों को शान्ति देने वाले जग के आधार प्रभु प्रकट हुये।

छंद—भए प्रगट कृपाला परम दयाला कौसल्या हितकारी।
हरषित महतारी मुनि मनहारी अद्भुत रूप बिचारी॥
लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा निज आयुध भुज चारी।
भूषन बनमाला नयन बिसाला सोभासिंधु खरारी॥

परम दयालु और कौशल्या के हितकारी कृपालु (राम) प्रकट हुये। मुनियों के मन को हरने वाला उनका अद्भुत रूप देखकर माता आनन्दित हो गई। नेत्रों को आनन्द देने वाला मेघ की तरह श्याम शरीर, चारों भुजाओं में (शंख, चक्र, गदा, पद्म) शस्त्र धारण किये हुये, गले में पाँव तक लम्बी माला, विशाल नेत्र, शोभा के समुद्र तथा खर राक्षस के शत्रु को देखकर,

कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी केहि बिधि करौं अनंता।
माया गुन ग्यानातीत अमाना बेद पुरान भनंता॥

करुना सुखसागर सब गुन आगर जेहि गावहिं श्रुति संता।
सो मम हित लागी जन अनुरागी भयउ प्रगट श्रीकंता॥

दोनों हाथ जोड़कर माता कहने लगी—हे अनन्त ! मैं किस तरह तुम्हारी स्तुति करूँ ? वेदों और पुराणों ने तुमको माया, गुण और ज्ञान से परे और सीमा-रहित बताया है। वेद और संतजन करुणा और सुखों का समुद्र, सब गुणों का धाम बताकर जिनका गान करते हैं, वही भक्तों के प्रेमी, लक्ष्मी-कान्त मेरे कल्याण के लिये प्रकट हुये हैं।

ब्रह्मांड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति बेद कहै।
मम उर सो बासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै॥
उपजा जब ग्याना प्रभु मुसुकाना चरित बहुत बिधि कीन्ह चहै।
कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै॥

वेद जिसके रोम-रोम में माया से निर्मित अनेकों ब्रह्माण्ड बतलाते हैं, वह मेरे गर्भ में रहे, इस हँसी की बात के सुनने पर धीर पुरुषों की बुद्धि भी स्थिर नहीं रह सकती। जब माता को ज्ञान हुआ, तब प्रभु मुसकुराये। वह बहुत प्रकार के चरित करना चाहते हैं। अतः उन्होंने पिछले जन्म की सुन्दर कथा कहकर समझाया, जिससे वह पुत्र का प्रेम प्राप्त करे।

माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा।
कीजै सिसु लीला अति प्रियसीला यह सुख परम अनूपा॥
सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुरभूपा।
यह चरित जे गावहिं हरिपद पावहिं ते न परहिं भवकूपा॥

माता की बुद्धि बदल गई, तब वह फिर बोली—हे पुत्र ! यह रूप छोड़-कर अत्यन्त प्रिय बाल-लीला करो। (मेरे लिये) यह सुख परम अनुपम है। यह वचन सुनकर देवताओं के स्वामी सुजान राम ने बालक होकर रोना शुरू किया। (तुलसीदास कहते हैं) जो जन इस चरित्र का गान करते हैं, वे भगवान् का पद पाते हैं और फिर संसाररूपी कूप में नहीं गिरते।

दो०- विप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार।
निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गो पार ॥१९२

ब्राह्मण, गाय, देवता और सन्तों के लिये भगवान् ने मनुष्य का अवतार लिया। वे माया, गुण और इन्द्रियों से परे हैं। उन्होंने अपनी इच्छामात्र से शरीर धारण किया है।

सुनि सिसु रुदन परम प्रिय बानी ❀ संभ्रम चलि आईं सब रानी
हरषित जहँ तहँ धाईं दासी ❀ आनँद मगन सकल पुरबासी

बालक के रोने की परम प्यारी ध्वनि सुनकर सब रानियाँ उतावली से वहाँ चली आईं। दासियाँ हर्षित होकर जहाँ-तहाँ दौड़ीं। समस्त नगर-निवासी आनन्द में मग्न हो गये। [अक्रमातिशयोक्ति अलंकार]

दसरथ पुत्र जनम सुनि काना ❀ मानहु ब्रह्मानंद समाना
परम प्रेम मन पुलक सरीरा ❀ चाहत उठन करत मति धीरा

राजा दशरथ कानों से पुत्र का जन्म सुनकर मानो ब्रह्मानन्द में समा गये। उनके मन में बड़ा प्रेम उमड़ आया। शरीर रोमाञ्चित हो आया। बुद्धि को धीरज देकर वे उठना चाहते हैं।

जाकर नाम सुनत सुभ होई ❀ मोरें गृह आवा प्रभु सोई
परमानंद पूरि मन राजा ❀ कहा बुलाइ बजावहु बाजा

(यह सोचकर कि) जिसका नाम सुनने मात्र से कल्याण होता है, वही प्रभु मेरे घर आये हैं राजा का मन परम आनन्द से पूर्ण हो गया। उन्होंने (बाजे वालों को) बुलाकर कहा कि बाजा बजाओ।

गुरु बसिष्ठ कहँ गयेउ हँकारा ❀ आए द्विजन्ह सहित नृप द्वारा
अनुपम बालक देखेन्हि जाई ❀ रूप रासि गुन कहि न सिराई

गुरु वशिष्ठ के पास बुलावा गया। वे ब्राह्मणों को साथ लिये हुये राजद्वार पर आये। उन्होंने जाकर अद्भुत बालक को देखा, जो रूप की राशि है और जिसके गुण कहने से चुकते नहीं।

दो०- तब नंदीमुख स्राद्ध करि जातकरम सब कीन्ह।
हाटक[2] धेनु बसन मनि नृप बिप्रन्ह कहँ दीन्ह १९३॥

१. इंद्रियाँ। २. सोना।

तब राजा ने नान्दीमुख श्राद्ध करके सब जातकर्म आदि किये और ब्राह्मणों को सोना, गाय, वस्त्र और मणियों का दान दिया।

ध्वज पताक तोरन[1] पुर छावा ❀ कहि न जाइ जेहि भाँति बनावा
सुमन बृष्टि अकास तें होई ❀ ब्रह्मानंद मगन सब लोई

ध्वजा, पताका और बन्दनवार से नगर छा गया। जैसा सजाया गया, उसका वर्णन ही नहीं हो सकता। आकाश से फूलों की वर्षा हो रही है। सब लोग ब्रह्मानन्द में मग्न हैं।

बृन्द बृन्द मिलि चलीं लोगाईं ❀ सहज सिंगार किएँ उठि धाईं
कनक कलस मंगल भरि थारा ❀ गावत पैठहिं भूप दुआरा

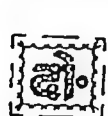
स्त्रियाँ झुण्ड की झुण्ड मिलकर चलीं। जो जैसा सिङ्गार किये थी, वैसी ही उठकर दौड़ी। सोने का कलश लेकर और थालों में मङ्गल द्रव्य भरकर गाती हुई वे राजा की ड्योढ़ी में प्रवेश करती हैं।

करि आरति नेवछावरि करहीं ❀ बार बार सिसु चरनन्हि परहीं
मागध सूत बंदि गन गायक ❀ पावन गुन गावहिं रघुनायक

वे बालक की आरती करके निछावर करती हैं और बारबार बालक के चरणों पर गिरती हैं। मागध, सूत, बन्दीजन और गवैये रामचन्द्रजी के पवित्र गुणों का गान करते हैं।

सरबस दान दीन्ह सब काहू ❀ जेहिं पावा राखा नहिं ताहू
मृगमद चंदन कुंकुम कीचा ❀ मची सकल बीथिन्ह बिच बीचा

सब किसी ने हर्ष के मारे अपना सर्वस्व दान कर दिया। जिसने पाया उसने भी नहीं रक्खा (लुटा दिया)। गली-गली में बीच-बीच में कस्तूरी चन्दन और केसर की कीच मच गई। [पहली चौपाई में अत्युक्ति अलंकार]



गृह गृह बाज बधाव सुभ प्रगटे सुखमाकंद।
हरषवंत सब जहँ तहँ नगर नारि नर बृन्द।१९४।

घर-घर में मंगलमय बधावा बजने लगा। शोभा के मूल भगवान् प्रकट हुये हैं। नगर के स्त्री-पुरुषों के झुण्ड के झुण्ड जहाँ-तहाँ आनन्दमग्न हो रहे हैं।

---

१. बन्दनवार।

कैकय सुता सुमित्रा दोऊ ❀ सुन्दर सुत जनमत भइँ ओऊ[1]
वह सुख संपति समय समाजा ❀ कहि न सकइँ सारद अहिराजा

कैकेयी और सुमित्रा इन दोनों ने भी सुन्दर पुत्रों को जन्म दिया। उस सुख, सम्पत्ति, समय और समाज का वर्णन सरस्वती और शेष भी नहीं कर सकते।

अवधपुरी सोहइ एहि भाँती ❀ प्रभुहि मिलन आई जनु राती
देखि भानु जनु मन सकुचानी ❀ तदपि बनी[2] संध्या अनुमानी

अवधपुरी इस प्रकार शोभित हुई, मानो रात्रि प्रभु से मिलने के लिये आई थी पर सूर्य को देखकर मानो मन में सकुचा गई। फिर भी ऐसा जान पड़ता है कि वह (संकोच के मारे) संध्या बन गई है।

अगर धूप बहु जनु अँधियारी ❀ उड़इ अबीर मनहुँ अरुनारी
मंदिर मनि समूह जनु तारा ❀ नृप गृह कलस सो इंदु उदारा

अगर की धूप का बहुत-सा धुवाँ मानो (संध्या का) अन्धकार है और जो अबीर उड़ रहा है, वह ललाई है। महलों में जो मणियों के समूह हैं, वे मानो तारागण हैं, और राजा के महल का जो कलश है, वही मानो दिव्य चन्द्रमा है।

भवन बेद धुनि अति मृदु बानी ❀ जनु खग मुखर समय जनु सानी
कौतुक देखि पतंग भुलाना ❀ एक मास तेइ जात न जाना

राजभवन में जो अति कोमल वाणी से वेदध्वनि हो रही है, वह मानो पक्षियों की चहचहाहट है, जो (सन्ध्या के) समय में सनी हुई है। यह कौतुक देखकर सूर्य भी भूल गया। एक महीना बीत गया और उसे पता न चला।

दो० मास दिवस कर दिवस भा मरम न जानइ कोइ।
रथ समेत रबि थाकेउ निसा कवन बिधि होइ॥१९५॥

एक महीने का एक दिन हुआ। कोई इस मर्म को नहीं जानता। सूर्य अपने रथ-सहित वहीं रुक गया, तो रात किस प्रकार होती ?

[यहाँ 'मास दिवस' का अर्थ बारह दिन भी हो सकता है। पुत्र-जन्म पर

---

१. वे भी। २. बन गई।

बारह दिन तक उत्सव मनाया जाता है। सो बारह दिनों तक ऐसी चहल-पहल रही कि पता ही न चला, कब रात हुई, कब दिन।]

यह रहस्य काहू नहिं जाना ❁ दिनमनि[1] चले करत गुन गाना
देखि महोत्सव सुर मुनि नागा ❁ चले भवन बरनत निज भागा

यह रहस्य किसी ने नहीं जाना। सूर्य रामचन्द्रजी का गुण-गान करते हुये चले। यह महोत्सव देखकर देवता, मुनि और नाग अपना भाग्य सराहते हुये अपने-अपने घर चले।

औरउ एक कहउँ निज चोरी ❁ सुनु गिरिजा अति दृढ़ मति तोरी
काकभुसुण्डि संग हम दोऊ ❁ मनुज रूप जानइ नहिं कोऊ

हे पार्वती! तुम्हारी बुद्धि बहुत दृढ़ है, सुनो। मैं अपनी एक और चोरी भी कहता हूँ। काकभुशुण्डि और मैं, दोनों मनुष्यरूप में वहाँ साथ-साथ थे, पर इस बात को कोई जान नहीं सका।

परमानंद प्रेम सुख फूले ❁ बीथिन्ह फिरहिं मगन मन भूले
यह सुभ चरित जान पै सोई ❁ कृपा राम कै जापर होई

परम आनन्द और प्रेम के सुख में फूले हुये हम दोनों मन में मगन होकर गलियों में भूले हुये फिरते थे। यह शुभ चरित्र वही जान सकता है, जिस पर राम की कृपा हो।

तेहि अवसर जो जेहि बिधि आवा ❁ दीन्ह भूप जो जेहि मन भावा
गज रथ तुरँग हेम गो हीरा ❁ दीन्हे नृप नाना बिधि चीरा[2]

उस अवसर पर जो जिस प्रकार आया, और जिसके मन को जो अच्छा लगा, राजा ने उसे वही दिया। राजा ने हाथी, रथ, घोड़ा, सोना, गाय, हीरा और भाँति-भाँति के वस्त्र दिये।

दो॰ मन संतोष सबन्हिके जहँ तहँ देहिं असीस।
सकल तनय चिरजीवहु तुलसिदास के ईस ॥१९६॥

राजा ने सबके मन को संतुष्ट किया। सब लोग जहाँ-तहाँ आशीर्वाद दे रहे थे कि सब पुत्रो! चिरंजीव हो; वे तुलसीदास के स्वामी हैं।

---

१. सूर्य। २. वस्त्र।

कछुक दिवस बीते एहि भाँती ❀ जात न जानिअ दिन अरु राती
नामकरन कर अवसरु जानी ❀ भूप बोलि पठए मुनि ग्यानी

इस प्रकार कुछ दिन बीत गये। दिन और रात का जाना मालूम न होता था। नामकरण का अवसर जानकर राजा ने ज्ञानी वशिष्ठ मुनि को बुला भेजा।

करि पूजा भूपति अस भाषा ❀ धरिअ नाम जो मुनि गुनि राखा
इन्हके नाम अनेक अनूपा ❀ मैं नृप कहब स्वमति अनुरूपा

मुनि का सत्कार करके राजा ने ऐसा कहा—हे मुनि! आपने मन में जो विचार रक्खे हों, वह नाम रखिये। मुनि ने कहा—इनके नाम अनेक और अनुपम हैं। हे राजा! मैं अपनी बुद्धि के अनुसार कहूँगा।

जो आनंद सिंधु सुखरासी ❀ सीकर[1] तें त्रैलोक सुपासी
सो सुखधाम राम अस नामा ❀ अखिल लोक दायक बिस्रामा

ये जो आनन्द के समुद्र और सुख की राशि हैं और जिन आनन्द-सिन्धु के एक बूँद से तीनों लोक सुखी होते हैं, उन सुख के धाम का नाम राम है, जो सम्पूर्ण लोकों को शान्ति देने वाले हैं।

बिस्व भरन पोषन कर जोई ❀ ताकर नाम भरत अस होई
जाके सुमिरन तें रिपु नासा ❀ नाम सत्रुहन बेद प्रकासा

जो संसार का भरण-पोषण करता है, उसका नाम भरत होगा। जिसे स्मरण करने से शत्रु का नाश होता है, उनका नाम वेदों में प्रसिद्ध 'शत्रुघ्न' है।

दो० लच्छन[2] धाम राम प्रिय सकल जगत आधार।
गुरु बसिष्ठ तेहि राखयउ लछिमन नाम उदार।१९७

जो शुभ लक्षणों के धाम श्रीराम के प्यारे और सारे जगत् के आधार हैं, उनका श्रेष्ठ नाम गुरु वशिष्ठ ने लक्ष्मण रक्खा।

धरे नाम गुर हृदयँ बिचारी ❀ बेद तत्त्व नृप तव सुत चारी
मुनि धन जन सरबस सिव प्राना ❀ बाल केलि रस तेहिं सुख माना

गुरु ने हृदय में विचारकर ये नाम रक्खे। और कहा—हे राजन्! तुम्हारे चारों पुत्र वेद के तत्त्वरूप हैं। जो मुनियों के धन, भक्तों के सर्वस्व और शिवजी

१. बूँद। २. लक्षण।

के प्राण हैं। वे बाल-लीला के रस में सुख मान रहे हैं।

बारेहि[1] तें निज हित पति जानी ❀ लछिमन राम चरन रति मानी
भरत शत्रुहन दूनउ भाई ❀ प्रभु सेवक जसि प्रीति बड़ाई

बचपन ही से रामचन्द्र को अपना परम हितैषी स्वामी जानकर लक्ष्मण ने उनके चरणों में प्रीति लगाई। भरत और शत्रुघ्न दोनों भाइयों में स्वामी और सेवक की जैसी प्रीति की प्रशंसा है, वैसी प्रीति हुई।

स्याम गौर सुन्दर दोउ जोरी ❀ निरखहिं छवि जननी तृन तोरी
चारिउ सील रूप गुन धामा ❀ तदपि अधिक सुखसागर रामा

श्याम और गोरे शरीर वाली दोनों सुन्दर जोड़ियों की शोभा मातायें तृण तोड़कर (जिसमें दीठ न लग जाय) देखती हैं। यों तो चारों ही पुत्र शील, रूप और गुण के धाम हैं, पर तो भी सुख के समुद्र रामचन्द्रजी सबसे अधिक थे।

हृदयँ अनुग्रह इंदु[2] प्रकासा ❀ सूचत किरन मनोहर हासा
कबहुँ उछंग कबहुँ वर पलना ❀ मातु दुलारइ कहि प्रिय ललना

उनके हृदय में कृपा-रूपी चन्द्रमा प्रकाशित है। उनका मनोहर हास्य उसकी किरणों को सूचित करता है। कभी गोद में, कभी सुन्दर हिंडोले पर बैठाकर माता प्यारे और लाल कहकर दुलार करती हैं।

दो०— ब्यापक ब्रह्म निरंजन निर्गुन बिगत बिनोद।
सो अज प्रेम भगति बस कौसल्या के गोद॥१६८॥

जो सर्वव्यापक, निरंजन, निर्गुण और हर्ष-विषाद से रहित अजन्मा ब्रह्म हैं, वह प्रेम और भक्ति के वश कौशल्या की गोद में खेल रहे हैं।

काम कोटि छवि स्याम सरीरा ❀ नील कंज बारिद गंभीरा
अरुन चरन पंकज नख जोती ❀ कमल दलन्हि बैठे जनु मोती

उनके श्याम शरीर की शोभा करोड़ों कामदेवों के समान, नीले कमल के समान और जल से भरे हुये मेघ के समान है। लाल-लाल चरण-कमलों के नख की ज्योति ऐसी मालूम होती है, जैसे कमल के पत्तों पर मोती बैठे हों।

रेख कुलिस ध्वज अंकुस सोहे ❀ नूपुर धुनि सुनि मुनि मन मोहे
कटि किंकिनी उदर त्रय रेखा ❀ नाभि गँभीर जान जिन्ह देखा

१. बचपन से। २. चन्द्रमा।

उनके पाँवों के तलवों में बज्र, ध्वजा और अंकुश की रेखायें शोभायमान हैं। नूपुर की ध्वनि सुनकर मुनियों का भी मन मोहित हो जाता है। कमर में करधनी और पेट में तीन रेखायें हैं। नाभि की गम्भीरता को तो वही जानता है, जिसने उसे देखा है।

भुज बिसाल भूषन जुत भूरी[1] ❀ हियँ हरि नख अति सोभा रूरी
उर मनिहार पदिक[2] की सोभा ❀ बिप्र चरन देखत मन लोभा

बहुत से गहनों से युक्त उनकी भुजायें बड़ी विशाल हैं। हृदय पर बाघ का नख बहुत शोभा दे रहा है। छाती पर चौकी से युक्त मणियों का हार सुशोभित है, और ब्राह्मण (भृगु) के चरणों की छाप देखते ही मन लुभा जाता है।

कंबु कंठ अति चिबुक सुहाई ❀ आनन अमित मदन[3] छबि छाई
दुइ दुइ दसन अधर अरुनारे ❀ नासा तिलक को बरनै पारे

कंठ शंख के समान और ठुड्डी बहुत ही सुन्दर है। मुँह पर असंख्य कामदेवों की छटा छायी हुई है। मुँह में दो-दो दाँत हैं, लाल-लाल ओंठ हैं। नाक और तिलक का तो वर्णन ही कौन कर सकता है?

सुन्दर स्रवन सुचारु कपोला ❀ अति प्रिय मधुर तोतरे बोला
चिक्कन कच कुञ्चित गभुआरे ❀ बहु प्रकार रचि मातु सँवारे

सुन्दर कान और बहुत ही सुन्दर गाल हैं। मधुर तोतली बोली बहुत ही प्रिय लगती है। चिकने, घुँघराले और घने बाल हैं, जिनको माता ने बहुत प्रकार से सँवार दिया है।

पीत झगुलिआ तनु पहिराई ❀ जानु पानि[4] बिचरनि मोहि भाई
रूप सकहिं नहिं कहि स्रुति सेषा ❀ सो जानहिं सपनेहु जिन्ह देखा

शरीर पर पीली झँगुली पहनाई हुई है। घुटनों और हाथों के बल उनका चलना मुझे बहुत ही अच्छा लगता है। वेद और शेष भी उनके रूप का वर्णन नहीं कर सकते। वही जान सकता है, जिसने कभी स्वप्न में भी देखा हो।

दो० सुख संदोह मोहपर ग्यान गिरा गोतीत।
दम्पति परम प्रेम बस कर सिसु चरित पुनीत।१९९

१. बहुत। २. चौकी, जो हार में लगी होती है। ३. कामदेव। ४. हाथों और घुटनों के बल।

सुख के समूह, मोह से परे, ज्ञान, वाणी, और इन्द्रियों से अतीत होने पर भी वे भगवान् स्त्री-पुरुष (राजा-रानी) के परम प्रेम के वश होकर पवित्र बाल-लीला करते हैं।

एहि बिधि राम जगत पितु माता ❀ कोसलपुर बासिन्ह सुखदाता
जिन्ह रघुनाथ चरन रति मानी ❀ तिन्ह की यह गति प्रगट भवानी

इस प्रकार जगत् के पिता-माता रामचन्द्रजी कोशलपुर-निवासियों को सुख देते हैं। जिन्होंने रामचन्द्रजी के चरणों में प्रीति जोड़ रक्खी है, हे भवानी! उनकी यह प्रत्यक्ष गति है (कि भगवान् उनके प्रेमवश बाल-लीला करके उन्हें आनंद दे रहे हैं।)

रघुपति बिमुख जतन कर कोरी[1] ❀ कवन सकइ भव बन्धन छोरी
जीव चराचर बस कै राखे ❀ सो माया प्रभु सों भय भाखे

रामचन्द्र से विमुख रहकर मनुष्य चाहे करोड़ों उपाय करे, परंतु उसका संसार का बन्धन कौन खोल सकता है? जिस माया ने चराचर जीवों को वश में कर रक्खा है, वह भी भगवान् से भय खाती है।

भृकुटि बिलास नचावइ ताही ❀ अस प्रभु छाँड़ि भजिअ कहु काही
मन क्रम बचन छाँड़ि चतुराई ❀ भजत कृपा करिहहिं रघुराई

भगवान् उस माया को भौंह के इशारे पर नचाते हैं। ऐसे प्रभु को छोड़कर कहो, किसको भजा जाय? मन, कर्म और वचन से चतुराई छोड़कर भजते ही रामचन्द्र कृपा करेंगे।

एहि बिधि सिसु बिनोद प्रभु कीन्हा ❀ सकल नगरबासिन्ह सुख दीन्हा
लेइ उछंग कबहुँक हलरावै ❀ कबहूँ पालने घालि झुलावै

इस प्रकार से प्रभु ने बाल-क्रीड़ा की और सब नगर-निवासियों को सुख दिया। माता कभी उन्हें गोद में लेकर हिलाती-डुलाती थीं, और कभी हिंडोले में डालकर झुलाती थीं।

दो०
प्रेम मगन कौसल्या निसि दिन जात न जान।
सुत सनेह बस माता बालचरित कर गान ॥२००॥

कौशल्या प्रेम में मग्न थीं। रात और दिन बीतना वे नहीं जानती थीं।

---

१. करोड़ों।

पुत्र-प्रेम के वश में कौशल्या उनकी बाल-लीलाओं का गान किया करती थीं।

एक बार जननी अन्हवाए ❀ करि सिंगार पलनाँ पौढ़ाए
निज कुल इष्ट देव भगवाना ❀ पूजा हेतु कीन्ह असनाना

एक बार माता ने रामचन्द्रजी को नहला-धुलाकर, शृङ्गार करके, हिंडोले पर पौढ़ा दिया। फिर अपने कुल के इष्ट-देव भगवान् की पूजा के लिये स्नान किया।

करि पूजा नैवेद्य चढ़ावा ❀ आपु गई जहँ पाक बनावा
बहुरि मातु तहँवाँ चलि आई ❀ भोजन करत देखि सुत जाई

पूजा करके नैवेद्य चढ़ाया। फिर स्वयं वहाँ गई, जहाँ रसोई बनाई गई थी। फिर माता वहीं (पूजा के स्थान में) लौट आई और फिर वहाँ जाने पर पुत्र को भोजन करते देखा।

गै जननी सिसु पहँ भयभीता ❀ देखा बाल तहाँ पुनि सूता
बहुरि आइ देखा सुत सोई ❀ हृदय कंप मन धीर न होई

माता भयभीत होकर पुत्र के पास गई, तो वहाँ बालक को सोया हुआ देखा। फिर लौटकर देखती हैं, तो वही पुत्र वहाँ (भोजन कर रहा) है। उनका हृदय काँपने लगा और मन में धैर्य न रहा।

इहाँ उहाँ दुइ बालक देखा ❀ मतिभ्रम मोरि कि आन बिसेषा
देखि राम जननी अकुलानी ❀ प्रभु हँसि दीन्ह मधुर मुसुकानी

(माता सोचने लगी—) यहाँ और वहाँ मैंने दो बालक देखे। यह मेरी बुद्धि का भ्रम है या और कोई विशेष कारण है। प्रभु राम ने माता को घबड़ाई हुई देखकर मधुर मुसकान से हँस दिया।

दो॰ देखरावा निज मातहीं अदभुत रूप अखंड।
रोम रोम प्रति लागहीं कोटि कोटि ब्रह्मंड।२०१

तब उन्होंने माता को अपना अखंड अद्भुत रूप दिखलाया। एक-एक रोम में करोड़ों ब्रह्मांड लगे थे।

अगनित रबि ससि सिव चतुरानन ❀ बहु गिरि सरित सिंधु महि कानन
काल करम गुन ग्यान सुभाऊ ❀ सोउ देखा जो सुना न काऊ

अगणित सूर्य, चन्द्रमा, शिव, ब्रह्मा, बहुत-से पर्वत, नदियाँ, समुद्र, पृथ्वी,

बन, काल, कर्म, गुण, ज्ञान और स्वभाव आदि के साथ वह भी देखा, जिसे कभी किसी ने सुना भी नहीं था।

देखी माया सब बिधि गाढ़ी ❀ अति सभीत जोरें कर ठाढ़ी
देखा जीव नचावइ जाही ❀ देखी भगति जो छोरइ ताही

सब प्रकार से बलवती माया को देखा जो अत्यन्त भयभीत होकर (भगवान् के सामने) हाथ जोड़े खड़ी है। जीव को भी देखा, जिसे वह माया नचाती है और भक्ति को भी देखा, जो उस जीव को माया से छुड़ा देती है।

तन पुलकित मुख बचन न आवा ❀ नयन मूँदि चरननि्ह सिरु नावा
बिसमय वंति देखि महतारी ❀ भए बहुरि सिसु रूप खरारी

माता का शरीर पुलकित हो आया। मुख से वचन नहीं निकला। आँखें मूँदकर उसने रामचन्द्रजी के चरणों में सिर नवाया। माता को आश्चर्यचकित देखकर खर राक्षस के शत्रु भगवान् फिर बाल-रूप हो गये।

अस्तुति करि न जाइ भय माना ❀ जगत पिता मैं सुत करि जाना
हरि जननी बहु बिधि समुझाई ❀ यह जनि कतहुँ कहसि सुनु माई

माता से स्तुति भी नहीं की जाती। उसे भय लगा कि जगत् के पिता को मैंने पुत्र करके जाना। भगवान् ने माता को बहुत प्रकार से समझाया और कहा—हे माँ! यह बात कहीं पर कहना नहीं।

दो० बार बार कौसल्या बिनय करइ कर जोरि।
अब जनि कबहूँ ब्यापही प्रभु मोहिं माया तोरि।२०२

कौशल्या बार-बार हाथ जोड़कर विनय करती है कि हे प्रभु! तुम्हारी माया अब मुझे कभी न व्यापे।

बालचरित हरि बहु बिधि कीन्हा ❀ अति आनँद दासन्ह कहँ दीन्हा
कछुक काल बीतें सब भाई ❀ बड़े भए परिजन सुखदाई

भगवान् ने बहुत प्रकार से बाल-लीलाएँ कीं; और दासों को बहुत सुख दिया। कुछ समय बीतने पर कुटुम्बियों को सुख देने वाले चारों भाई बड़े हुये।

चूड़ाकरन कीन्ह गुरु जाई ❀ बिप्रन्ह पुनि दछिना बहु पाई
परम मनोहर चरित अपारा ❀ करत फिरत चारिउ सुकुमारा

तब गुरु ने आकर चूड़ाकर्म-संस्कार किया। ब्राह्मणों ने फिर बहुत-सी



दक्षिणा पाई। चारों सुन्दर राजकुमार बड़े मनोहर और अपार चरित करते फिरते हैं।

मन क्रम बचन अगोचर जोई ❀ दसरथ अजिर बिचर प्रभु सोई
भोजन करत बोल जब राजा ❀ नहिं आवत तजि बाल समाजा

जो मन, कर्म और वचन तथा इन्द्रियों से परे हैं, वही प्रभु दशरथ के आँगन में विचरण कर रहे हैं। भोजन करते समय जब राजा बुलाते हैं, तब वे अपने बाल-सखाओं का समाज छोड़कर नहीं आते।

कौसल्या जब बोलन जाई ❀ ठुमुकि ठुमुकि प्रभु चलहिं पराई
निगम नेति सिव अंत न पावा ❀ ताहि धरै जननी हठि धावा
धूसर धूरि भरें तनु आए ❀ भूपति बिहँसि गोद बैठाए

कौशल्या जब बुलाने जाती हैं, तब प्रभु ठुमक-ठुमक भाग चलते हैं। जिसको वेद 'नेति' (इतना ही नहीं) कहते हैं, और शिवजी ने जिसका अन्त नहीं पाया, माता उसे हठपूर्वक पकड़ने दौड़ती हैं। वे शरीर में धूल लपेटे हुये आये और राजा ने हँसकर उन्हें गोद में बैठा लिया।

दो०—भोजन करत चपल चित इत उत अवसरु पाइ।
भाजि चले किलकात मुख दधि ओदन[1] लपटाइ॥२०३॥

भोजन करते हुये, चंचल चित्त से, मुख में दही और भात लगाये किलकारी मारते हुये वे इधर-उधर अवसर पाकर भाग चलते हैं।

बालचरित अति सरल सुहाए ❀ सारद सेष संभु स्रुति गाए
जिन्ह कर मन इन्ह सन नहिं राता ❀ ते जन बंचित किए बिधाता

रामजी की बहुत ही सरल, सुन्दर और भोली बाल-लीलाओं का सरस्वती, शेष, शिवजी और वेदों ने गान किया है। जिनका मन इन चरित्रों में अनुरक्त नहीं हुआ, ब्रह्मा ने उन मनुष्यों को सुख से वंचित कर दिया है।

भए कुमार जबहिं सब भ्राता ❀ दीन्ह जनेऊ गुर पितु माता
गुर गृहँ गए पढ़न रघुराई ❀ अलप काल बिद्या सब आई

सब भाई जब कुमारावस्था के हुये, तब गुरु, पिता और माता ने उनका यज्ञोपवीत-संस्कार कर दिया। रामचन्द्रजी गुरु के घर में विद्या पढ़ने के लिये गये और थोड़े ही समय में उन्हें सब विद्यायें आ गईं।

---

१. भात।

जाकी सहज स्वास स्रुति चारी ❀ सो हरि पढ़ यह कौतुक भारी
बिद्या बिनय निपुन गुन सीला ❀ खेलहिं खेल सकल नृपलीला

चारों वेद जिनकी स्वाभाविक साँस हैं, वे भगवान् पढ़ें, यह बड़े कौतूहल की बात है। वे विद्या, विनय, गुण और शील में बड़े निपुण हैं, और सब राजाओं की लीलाओं ही के खेल हैं।

करतल बान धनुष अति सोहा ❀ देखत रूप चराचर मोहा
जिन्ह बीथिन्ह बिहरहिं सब भाई ❀ थकित होहिं सब लोग लुगाई

हाथों में बाण और धनुष बहुत ही शोभा देते हैं। उनका रूप देखते ही चराचर मोहित हो जाते हैं। वे सब भाई जिन गलियों में खेलते हैं, उनको देख कर उन गलियों के सब स्त्री-पुरुष आनन्द से शिथिल हो जाते हैं।

दो० कोसलपुर बासी नर नारि बृद्ध अरु बाल।
प्रानहुँ तें प्रिय लागहिं सब कहँ राम कृपाल ।२०४॥

अयोध्या के निवासी पुरुष-स्त्री, वृद्ध और बालक सबको कृपालु राम प्राणों से भी अधिक प्यारे लगते हैं।

बंधु सखा सँग लेहिं बुलाई ❀ बन मृगया[1] नित खेलहिं जाई
पावन मृग मारहिं जिय जानी ❀ दिन प्रति नृपहिं देखावहिं आनी

रामचन्द्रजी भाइयों और इष्ट-मित्रों को साथ बुला लेते हैं और नित्य वन में जाकर शिकार खेलते हैं। मन में पवित्र समझ करके मृगों को मारते हैं और प्रतिदिन राजा को लाकर दिखलाते हैं।

जे मृग राम बान के मारे ❀ ते तनु तजि सुरलोक सिधारे
अनुज सखा सँग भोजन करहीं ❀ मातु पिता अग्या[2] अनुसरहीं

जो मृग रामचन्द्रजी के बाणों से मारे जाते थे, वे शरीर छोड़कर देवलोक को चले जाते थे। रामचन्द्रजी अपने छोटे भाइयों और सखाओं के साथ भोजन करते हैं और माता-पिता की आज्ञा का पालन करते हैं।

जेहि बिधि सुखी होंहि पुर लोगा ❀ करहिं कृपानिधि सोइ संजोगा
बेद पुरान सुनहिं मन लाई ❀ आपु कहहिं अनुजन्ह समुझाई

जिस प्रकार नगर के लोग सुखी हों; कृपा के भण्डार रामचन्द्रजी वैसा

१. शिकार। २. आज्ञा।

ही संयोग उपस्थित करते हैं। वे मन लगाकर वेद और पुराण सुनते हैं और फिर स्वयं छोटे भाइयों को सब समझाकर कहते हैं।

प्रातकाल उठि कै रघुनाथा ❀ मातु पिता गुरु नावहिं माथा
आयसु माँगि करहिं पुर काजा ❀ देखि चरित हरषइ मन राजा

रामचन्द्रजी प्रातःकाल उठकर माता-पिता और गुरु को मस्तक नवाते हैं और आज्ञा लेकर नगर का काम करते हैं। उनके चरित्र देख-देखकर राजा मन में हर्षित होते हैं।

दो० व्यापक अकल अनीह अज निर्गुन नाम न रूप।
भगत हेतु नाना बिधि करत चरित्र अनूप ॥२०५॥

जो सर्वव्यापक, अखंड, इच्छारहित, अजन्मा, निराकार और जिसका न नाम है न रूप, वही भगवान् भक्त के लिये तरह-तरह के अनुपम चरित्र करते हैं।

यह सब चरित कहा मैं गाई ❀ आगिलि कथा सुनहु मन लाई
बिस्वामित्र महामुनि ग्यानी ❀ बसहिं बिपिन सुभ आस्रम जानी

यह सब चरित्र मैं (तुलसीदास) ने गाकर कहा। अब आगे की कथा मन लगाकर सुनो। बड़े ज्ञानी मुनि विश्वामित्र बन में शुभ आश्रम जानकर बसते थे।

जहँ जप जग्य जोग मुनि करहीं ❀ अति मारीच सुबाहुहि डरहीं
देखत जग्य निसाचर धावहिं ❀ करहिं उपद्रव मुनि दुख पावहिं

वहाँ वे मुनि जप, यज्ञ और योग-साधन करते थे, परन्तु मारीच और सुबाहु से बहुत डरते थे। यज्ञ देखते ही राक्षस दौड़ पड़ते थे और उपद्रव मचाते थे, जिससे मुनि दुःख पाते थे।

गाधितनय मन चिंता ब्यापी ❀ हरि बिनु मरहिं न निसिचर पापी
तब मुनिबर मन कीन्ह बिचारा ❀ प्रभु अवतरेउ हरन महि भारा

गाधि के पुत्र विश्वामित्र के मन में चिन्ता समाई कि ये पापी राक्षस भगवान् के मारे बिना न मरेंगे। तब श्रेष्ठ मुनि ने मन में विचार किया कि पृथ्वी का भार हरने के लिये भगवान् ने तो अवतार लिया है।

एहूँ मिस देखौं पद जाई ❀ करि बिनती आनउँ दोउ भाई
ग्यान बिराग सकल गुन अयना ❀ सो प्रभु मैं देखब भरि नयना

इसी बहाने चलकर उनके चरणों का दर्शन भी करूँ और विनय करके दोनों भाइयों को ले भी आऊँ। अहा ! ज्ञान, वैराग्य और सब गुणों के घर जो प्रभु भगवान् हैं, उनको मैं आँख भरकर देखूँगा भी।

दो०- बहु बिधि करत मनोरथ जात लागि नहिं बार।
करि मज्जन सरजू जल गए भूप दरबार ॥२०६॥

बहुत प्रकार से मनोरथ करते हुये जाने में देर नहीं लगी। सरयू के जल में स्नान करके वे राजा के दरबार में पहुँचे।

मुनि आगमन सुना जब राजा ❀ मिलन गयउ लेइ बिप्र समाजा
करि दण्डवत मुनिहिं सनमानी ❀ निज आसन बैठारेन्हि आनी[1]

राजा ने जब मुनि का आना सुना, तब वे ब्राह्मणों का समाज साथ लेकर मिलने गये, और दंडवत् करके, मुनि का सत्कार करके, उन्हें लाकर राजा ने अपने आसन पर बैठाया।

चरन पखारि कीन्हि अति पूजा ❀ मो सम आजु धन्य नहिं दूजा
बिबिध भाँति भोजन करवावा ❀ मुनिवर हृदय हरष अति पावा

चरणों को धोकर बहुत पूजा की और कहा—आज मेरे समान धन्य दूसरा नहीं है। फिर तरह-तरह के भोजन करवाये, जिससे श्रेष्ठ मुनि ने हृदय में बड़ा हर्ष प्राप्त किया।

पुनि चरनन्हि मेले[2] सुत चारी ❀ राम देखि मुनि देह बिसारी
भए मगन देखत मुख सोभा ❀ जनु चकोर पूरन ससि लोभा

फिर राजा ने मुनि के चरणों पर चारों पुत्रों को लाकर डाला। रामचन्द्रजी को देखकर मुनि ने अपनी देह की सुधि भुला दी। रामचन्द्रजी के मुख की शोभा देखते हुये वे ऐसे मग्न हो गये, जैसे चकोर पूर्ण चन्द्रमा को देखकर लुभा गया हो।

तब मन हरषि बचन कह राऊ ❀ मुनि अस कृपा न कीन्हेहु काऊ
केहि कारन आगमन तुम्हारा ❀ कहहु सो करत न लावउँ बारा

तब मन में हर्षित होकर राजा ने वचन कहा—हे मुनि ! ऐसी कृपा और

---

१. लाकर। २. गिराया, डाला।



कभी आपने नहीं की। आज किस कारण से आपका आना हुआ? कहिये, मैं उसे पूरा करने में देरी नहीं लगाऊँगा।

असुर समूह सतावहिं मोही ❀ मैं जाचन आयउँ नृप तोही
अनुज समेत देहु रघुनाथा ❀ निसिचर बध मैं होब सनाथा[1]

मुनि ने कहा—हे राजन्! राक्षसों का समूह मुझे दुःख देता है। इसी लिये मैं तुमसे कुछ माँगने आया हूँ। छोटे भाई-सहित रामचन्द्रजी को मुझे दो। राक्षसों का वध होने पर मैं सनाथ हो जाऊँगा।

दो॰ देहु भूप मन हरषित तजहु मोह अग्यान।
धर्म सुजस प्रभु तुम कौं इन्ह कहँ अति कल्यान॥

हे राजन्! प्रसन्न मन से दो। मोह और अज्ञान छोड़ दो। हे स्वामी! तुमको धर्म और सुयश प्राप्त होगा और इनका परम कल्याण होगा।

सुनि राजा अति अप्रिय बानी ❀ हृदय कंप मुख दुति कुम्हिलानी
चौथेपन पायउँ सुत चारी ❀ बिप्र बचन नहिं कहेहु बिचारी

इस अत्यन्त अप्रिय वाणी को सुनकर राजा का हृदय काँप उठा और उनके मुख की कांति फीकी पड़ गई। उन्होंने कहा—हे ब्राह्मण! मैंने चौथेपन में चार पुत्र पाये हैं, आपने विचारकर वचन नहीं कहा।

माँगहु भूमि धेनु धन कोसा ❀ सरबस देउँ आजु सह रोसा[2]
देह प्रान तें प्रिय कछु नाहीं ❀ सोउ मुनि देउँ निमिष एक माहीं

हे मुनि! आप पृथ्वी, गाय, धन और खजाना माँग लीजिये। मैं आज बड़े हर्ष के साथ अपना सर्वस्व दे दूंगा। देह और प्राण से अधिक प्यारा कुछ भी नहीं होता, मैं उसे भी एक पल में दे दूंगा।

सब सुत प्रिय मोहि प्रान की नाईं ❀ राम देत नहिं बनइ गुसाईं
कहँ निसिचर अति घोर कठोरा ❀ कहँ सुंदर सुत परम किसोरा

मुझे सभी पुत्र प्राण की तरह प्यारे हैं; तो भी हे महाराज! राम को देते नहीं बनता। कहाँ अत्यन्त भयानक और क्रूर राक्षस और कहाँ बिलकुल सुकुमार मेरे सुन्दर पुत्र।

---

१. सुरक्षित। २. हर्ष।

सुनि नृप गिरा प्रेम रस सानी ❀ हृदयँ हरष माना मुनि ग्यानी
तब वसिष्ठ बहु बिधि समुझावा ❀ नृप संदेह नास कहँ पावा

प्रेम के रस में सनी हुई राजा की वाणी सुनकर, ज्ञानी मुनि ने हृदय में बड़ा हर्ष माना। तब वशिष्ठ ने बहुत प्रकार से राजा को समझाया, जिससे राजा का संदेह नाश को प्राप्त हुआ।

अति आदर दोउ तनय बोलाए ❀ हृदयँ लाइ बहु भाँति सिखाए
मेरे प्राननाथ सुत दोऊ ❀ तुम्ह मुनि पिता आन नहिं कोऊ

राजा ने बहुत आदर के साथ दोनों पुत्रों को बुलाया और हृदय से लगा कर बहुत तरह से उन्हें शिक्षा दी। फिर कहा—दोनों पुत्र मेरे प्राणों के स्वामी हैं, हे मुनि! आप इनके पिता हैं, दूसरे कोई नहीं।

दो० सौंपे भूपति रिषिहि सुत बहु बिधि देइ असीस।
जननी भवन गए प्रभु चले नाइ पद सीस॥२०८॥(१)

राजा ने बहुत प्रकार से आशीर्वाद देकर ऋषि को अपने पुत्र सौंपे। फिर प्रभु माता के घर में गये और उनके चरणों में सिर नवाकर चले।

सो० पुरुषसिंह दोउ बीर हरषि चले मुनि भय हरन।
कृपासिंधु मतिधीर अखिल बिस्व कारन करन २०८(२)

पुरुषों में सिंह रूप दोनों भाई मुनि का भय हरने के लिये हर्षित होकर चले। वे कृपा के समुद्र, धीर-बुद्धि और सम्पूर्ण जगत् के कारण के भी कारण हैं।

अरुन नयन उर बाहु बिसाला ❀ नील जलज तनु स्याम तमाला
कटि पट पीत कसे बर भाथा ❀ रुचिर चाप सायक दुहुँ हाथा

उनके नेत्र लाल हैं; छाती चौड़ी और भुजायें विशाल हैं; शरीर नीले कमल और तमाल वृक्ष की तरह श्याम है, कमर से पीताम्बर और सुन्दर तरकस कसे हैं। उनके दोनों हाथों में सुन्दर धनुष और बाण हैं।

स्याम गौर सुन्दर दोउ भाई ❀ बिस्वामित्र महानिधि पाई
प्रभु ब्रह्मन्यदेव[1] मैं जाना ❀ मोहि निति[2] पिता तजेउ भगवाना

१. ब्राह्मणों के भक्त। २. लिये।

श्याम और गौर वर्ण के दोनों भाई सुन्दर हैं। विश्वामित्र ने बड़ा भारी ख़जाना पा लिया। वे सोचने लगे—मैं जान गया कि प्रभु ब्रह्मण्यदेव हैं, मेरे लिये भगवान् ने अपने पिता को भी छोड़ दिया है।

चले जात मुनि दीन्हि देखाई ❀ सुनि ताड़का क्रोध करि धाई
एकहि बान प्रान हरि लीन्हा ❀ दीन जानि तेहि निज पद दीन्हा

राह में चले जाते हुये मुनि ने ताड़का को दिखला दिया। वह इनके शब्द सुनते ही क्रोध करके दौड़ी। राम ने एक ही बाण से उसका प्राण हर लिया और उसे दीन जानकर अपना पद (अपना दिव्य स्वरूप) दिया।

तब रिषि निज नाथहि जिय चीन्ही ❀ विद्यानिधि कहुँ विद्या दीन्ही
जातें लाग न छुधा पिपासा ❀ अतुलित बल तनु तेज प्रकासा

तब ऋषि ने मन में अपने स्वामी को पहचाना और विद्या के भण्डार को उन्होंने ऐसी विद्या प्रदान की, जिससे भूख-प्यास न लगे और शरीर में अतुलित बल और तेज का प्रकाश हो।

दो०— आयुध सर्व समर्पि कै प्रभु निज आस्रम आनि।
कंद मूल फल भोजन दीन्ह भगत हित जानि॥२०९॥

सब अस्त्र-शस्त्र समर्पण करके मुनि रामचन्द्रजी को अपने आश्रम में ले आये। और उन्हें भक्तों का हितकारी जानकर कंद, मूल और फल का भोजन दिया।

प्रात कहा मुनि सन रघुराई ❀ निर्भय जग्य करहु तुम्ह जाई
होम करन लागे मुनि झारी ❀ आपु रहे मख की रखवारी

सवेरे राम ने मुनि से कहा—आप जाकर निर्भय होकर यज्ञ कीजिये। यह सुनकर सब मुनि हवन करने लगे। स्वयं यज्ञ की रखवाली पर रहे।

सुनि मारीच निसाचर कोही[1] ❀ लै सहाय धावा मुनि द्रोही
बिनु फर बान राम तेहि मारा ❀ सत जोजन गा[2] सागर पारा

यह समाचार पाकर मुनियों का शत्रु क्रोधी राक्षस मारीच अपने सहायकों को लेकर दौड़ा। राम ने बिना फल वाला बाण उसे मारा। वह समुद्र के पार सौ योजन पर जा गिरा।

---

१. क्रोधी। २. गया।

पावक सर सुबाहु पुनि मारा ❀ अनुज निसाचर कटक सँघारा
मारि असुर द्विज निर्भयकारी ❀ अस्तुति करहिं देव मुनि झारी

फिर राम ने सुबाहु को अग्नि-बाण से मारा। छोटे भाई लक्ष्मण ने राक्षसों की सेना का संहार कर डाला। इस प्रकार राम ने राक्षसों को मारकर ब्राह्मणों को निर्भय कर दिया, तब समस्त देवता और मुनि स्तुति करने लगे।

तहँ पुनि कछुक दिवस रघुराया ❀ रहे कीन्हि बिप्रन्ह पर दाया
भगति हेतु बहु कथा पुराना ❀ कहे बिप्र जद्यपि प्रभु जाना

रामचन्द्रजी ने वहाँ कुछ दिनों तक और रहकर ब्राह्मणों पर दया की। भक्ति के कारण ब्राह्मणों ने बहुत-सी कथायें और पुराण कहे, यद्यपि भगवान् सब जानते थे।

तब मुनि सादर कहा बुझाई ❀ चरित एक प्रभु देखिअ जाई
धनुषजग्य सुनि रघुकुल नाथा ❀ हरषि चले मुनिवर के साथा

तब मुनि ने आदर-सहित समझाकर कहा कि हे प्रभो! चलकर एक चरित्र देखना चाहिये। धनुष-यज्ञ की बात सुनकर रघुकुल के स्वामी रामचन्द्र श्रेष्ठ मुनि के साथ प्रसन्न होकर चले।

आस्रम एक दीख मग माहीं ❀ खग मृग जीव जंतु तहँ नाहीं
पूछा मुनिहिं सिला प्रभु देखी ❀ सकल कथा मुनि कही बिसेषी

राह में एक आश्रम दिखाई पड़ा। पर वहाँ पशु-पक्षी, जीव-जन्तु कोई भी नहीं था। पत्थर की एक शिला को देखकर प्रभु ने पूछा, तब मुनि ने विस्तार-सहित सब कथा कही।

दो०– गौतमनारी सापबस उपल[1] देह धरि धीर।
चरन कमल रज चाहती कृपा करहु रघुबीर ॥२१०॥

हे राम! गौतम मुनि की स्त्री अहल्या शाप के वश में पत्थर का शरीर धारण किये हुए बड़े धीरज से आपके कमलरूपी चरणों की धूलि चाहती है। इस पर कृपा कीजिये।

छंद—परसत पद पावन सोक नसावन प्रगट भई तपपुंज सही
देखत रघुनायक जन सुखदायक सनमुख होइ कर जोरि रही

१. पत्थर।

अति प्रेम अधीरा पुलक सरीरा मुख नहिं आवइ बचन कही
अतिसय बड़भागी चरनन्हि लागी जुगलनयन जलधार बही

राम के पवित्र और शोक को नाश करने वाले चरणों के छूते ही सचमुच वह तपोमूर्ति अहल्या प्रकट हो गई। भक्तों को सुख देने वाले रामचन्द्रजी को देखकर, वह हाथ जोड़कर सामने खड़ी हो गई। अत्यन्त प्रेम के कारण वह अधीर हो गई; उसको रोमाञ्च हो आया; उसके मुख से बात नहीं निकलती थी। वह अत्यन्त बड़भागिनी अहल्या भगवान् के चरणों में लिपट गई और उसके दोनों नेत्रों से जल की धारा बहने लगी।

धीरज मन कीन्हा प्रभु कहँ चीन्हा रघुपति कृपाँ भगति पाई।
अति निर्मल बानी अस्तुति ठानी ग्यान गम्य जय रघुराई॥
मैं नारि अपावन प्रभु जगपावन रावन रिपु जन सुखदाई।
राजीव बिलोचन भव भय मोचन पाहि पाहि सरनहि आई॥

फिर उसने मन को ठिकाने किया; प्रभु को पहचाना और रामचन्द्रजी की कृपा से भक्ति प्राप्त की। अति निर्मल वाणी से उसने स्तुति प्रारम्भ की—हे ज्ञान से जानने योग्य रामचन्द्रजी! आपकी जय हो। मैं (सहज ही) अपवित्र स्त्री हूँ; आप संसार को पवित्र करने वाले, भक्तों को सुख देने वाले और रावण (संसार को रुलाने वाले) के शत्रु हैं। हे कमल ऐसे नेत्र वाले, संसार (जन्म-मरण) के भय से छुड़ाने वाले! मैं शरण आई हूँ, रक्षा कीजिये, रक्षा कीजिये।

मुनि साप जो दीन्हा अति भल कीन्हा परम अनुग्रह मैं माना।
देखेउँ भरि लोचन हरि भव मोचन इहइ लाभ संकर जाना॥
बिनती प्रभु मोरी मैं मतिभोरी नाथ न मागौं बर आना।
पद कमल परागा रस अनुरागा मम मन मधुप करै पाना॥

मुनि ने जो मुझे शाप दिया, वह बहुत ही अच्छा किया, मैं उसे उनकी बड़ी कृपा मानती हूँ। जिसके कारण संसार के दुःख को मिटाने वाले हरि (आप) को मैंने आँख भरकर देखा इस लाभ को शिवजी जानते हैं। हे प्रभो! मैं बड़ी भोली-भाली बुद्धि की हूँ, मेरी एक विनती है, मैं दूसरा वर नहीं माँगती।

केवल यही चाहती हूँ कि मेरा मनरूपी भौंरा आपके चरण-कमलों के पराग का प्रेमरूपी रस पान करता रहे।

जेहि पद सुरसरिता परम पुनीता प्रगट भई सिव सीस धरी।
सोई पद पंकज जेहि पूजत अज मम सिर धरेउ कृपाल हरी॥
एहि भाँति सिधारी गौतम नारी बार बार हरि चरन परी।
जो अति मन भावा सो बरु पावा गइ पति लोक अनंद भरी॥

जिन चरणों से परम पवित्र (देव-नदी) गङ्गाजी प्रकट हुईं, जिन्हें शिवजी ने सिर पर धारण किया, वही चरण-कमल, जिसे ब्रह्मा पूजते हैं, कृपालु भगवान् (आप) ने मेरे सिर पर रक्खा। इस प्रकार स्तुति करके, बार-बार भगवान् के चरणों में गिरकर गौतम की स्त्री अहल्या, जो मन को बहुत ही अच्छा लगा, वह वर पाकर, आनन्द में भरी हुई, पति के लोक को चली गई।

दो० **अस प्रभु दीनबंधु हरि कारन रहित दयाल।**
तुलसिदास सठ ताहि भजु छाँड़ि कपट जंजाल।२११

प्रभु (रामचन्द्रजी) ऐसे दीनबन्धु और बिना ही कारण दया करने वाले हैं। तुलसीदास कहते हैं, हे शठ (मन)! तू कपट का जंजाल छोड़कर उन्हीं का भजन कर।

चले राम लछिमन मुनि संगा ❀ गए जहाँ जग पावनि गंगा
गाधिसूनु सब कथा सुनाई ❀ जेहि प्रकार सुरसरि महि आई

राम और लक्ष्मण मुनि के साथ चले। वे वहाँ गये, जहाँ जगत् को पवित्र करने वाली गङ्गाजी थीं। महाराज गाधि के पुत्र विश्वामित्र ने वह सब कथा कह सुनाई, जिस प्रकार गङ्गाजी पृथ्वी पर आईं।

तब प्रभु रिसिन्ह समेत नहाए ❀ बिबिध दान महिदेवन्हि पाए
हरषि चले मुनि बृन्द सहाया ❀ बेगि बिदेह नगर निअराया[1]

तब प्रभु ने ऋषियों सहित (गंगाजी में) स्नान किया। ब्राह्मणों ने भाँति-भाँति के दान पाये। फिर मुनियों के समूह के साथ वे प्रसन्न होकर चले और शीघ्र ही राजा जनक के नगर के निकट पहुँच गये।

---

१. निकट आया।

पुर रम्यता राम जब देखी ❀ हरषे अनुज समेत बिसेषी
बापी कूप सरित सर नाना ❀ सलिल सुधा सम मनि सोपाना[१]

राम ने जब जनकपुर की शोभा देखी, तब वे छोटे भाई लक्ष्मण-सहित बहुत प्रसन्न हुये। अनेक बावड़ी, कुयें, नदी, तालाब वहाँ हैं, जिनका जल अमृत के समान है और जिनकी सीढ़ियाँ मणियों की हैं।

गुञ्जत मंजु मत्त रस भृङ्गा[२] ❀ कूजत कल बहु बरन बिहंगा
बरन बरन बिकसे बनजाता[३] ❀ त्रिबिध समीर सदा सुखदाता

मकरंद रस में मतवाले सुन्दर भौंरे गूँज रहे हैं। भाँति-भाँति के रंग के सुन्दर पक्षी मधुर शब्द कर रहे हैं। रंग-रंग के कमल खिले हैं; सदा सुख देने वाला शीतल, मन्द और सुगन्धित पवन बह रहा है।

दो॰ सुमन बाटिका बाग बन बिपुल बिहंग निवास।
फूलत फलत सुपल्लवत सोहत पुर चहुँ पास॥२१२॥

फुलवाड़ी, बाग़ और बन जिनमें अनन्त पक्षियों का निवास है, फूलते-फलते हैं और सुन्दर पत्तों से लदे हुये, नगर के चारों ओर शोभा दे रहे हैं।

बनइ न बरनत नगर निकाई ❀ जहाँ जाइ मन तहइँ लोभाई
चारु बजारु बिचित्र अँबारी ❀ मनिमय बिधि जनु स्वकर सँवारी

नगर की सुन्दरता का वर्णन करते नहीं बनता। मन जहाँ जाता है, वहीं लुभा जाता है। सुन्दर बाज़ार है, मणियों से बने हुये विचित्र छज्जे हैं, मानो ब्रह्मा ने अपने हाथों से उन्हें सँवारा है।

धनिक बनिक बर धनद समाना ❀ बैठे सकल बस्तु लै नाना
चौहट सुन्दर गली सुहाई ❀ संतत रहहिं सुगंध सिंचाई

कुबेर के समान श्रेष्ठ धनी व्यापारी सब प्रकार की अनेक वस्तुयें लेकर बैठे हैं। सुन्दर चौराहे, शोभायमान गलियाँ सदा सुगन्ध से सिंची रहती हैं।

मङ्गलमय मन्दिर सब केरे ❀ चित्रित जनु रतिनाथ चितेरे
पुर नर नारि सुभग सुचि संता ❀ धरमसील ग्यानी गुनवन्ता

सबके घर कल्याणमय हैं। सब चित्रित हैं, मानो कामदेवरूपी चित्रकार

१. सीढ़ी। २. भौंरा। ३. कमल।

ने उन्हें चित्रित किया है। नगर के पुरुष-स्त्री सुन्दर, पवित्र, साधु-स्वभाव वाले, धर्मात्मा, ज्ञानी और गुणी हैं।

अति अनूप जहँ जनक निवासू ❀ विथकहिं विबुध बिलोकि विलासू
होत चकित चित कोट बिलोकी ❀ सकल भुवन सोभा जनु रोकी

जहाँ जनक का अत्यन्त अनुपम निवास-स्थान है, वहाँ के भोग-विलास को देखकर देवता भी थकित[1] हो जाते हैं, कोट को देखकर चित्त चकित हो जाता है। ऐसा जान पड़ता है, मानो उसने सब भुवनों की शोभा को रोक रक्खा है।

दो०—धवल धाम मनि पुरट[2] पट सुघटित नाना भाँति।
सिय निवास सुन्दर सदन सोभा किमि कहि जाति॥

उज्ज्वल महलों में मणि-जटित सोने की जरी के पर्दे लगे हैं, जो अनेक प्रकार से सुन्दर रीति से बने हैं। सीता के रहने के सुन्दर महल की शोभा का वर्णन किया ही कैसे जा सकता है।

सुभग द्वार सब कुलिस कपाटा ❀ भूप भीर नट मागध भाटा
बनी बिसाल बाजि गज साला ❀ हय गज रथ संकुल सब काला

राजभवन के सब द्वार सुन्दर हैं, जिनमें वज्र के-से मज़बूत किवाड़े लगे हैं। वहाँ (मातहत) राजाओं, नटों, मागधों और भाटों की भीड़ लगी रहती है। घोड़ों और हाथियों के लिये बड़ी-बड़ी घुड़सालें और फीलखाने बने हुए हैं, जो घोड़े, हाथी और रथों से सब समय भरे रहते हैं।

सूर सचिव सेनप बहुतेरे ❀ नृप गृह सरिस सदन सब केरे
पुर बाहिर सर सरित समीपा ❀ उतरे जहँ तहँ विपुल महीपा

बहुत से योद्धा, मन्त्री और सेनापति हैं। उन सब के घर भी राजमहल ही सरीखे हैं। पुर के बाहर तालाब और नदियों के निकट जहाँ-तहाँ बहुत-से राजा लोग उतरे हुये (डेरा डाले) हैं।

देखि अनूप एक अँवराई ❀ सब सुपास[3] सब भाँति सुहाई
कौसिक कहेउ मोर मनु माना ❀ इहाँ रहिअ रघुबीर सुजाना

आमों का एक अनुपम बाग़, जहाँ सब प्रकार के सुभीते थे और जो सब

१. थक जाते हैं, स्तम्भित होते हैं। २. सोना। ३. सुभीता।

तरह से सुहावना था, देखकर विश्वामित्र ने कहा—हे सुजान रामचन्द्र! मेरा मन कहता है कि यहीं रहा जाय।

भलेहिं नाथ कहि कृपानिकेता ❀ उतरे तहँ मुनि बृन्द समेता
बिस्वामित्र महामुनि आए ❀ समाचार मिथिलापति पाए

कृपा के धाम राम 'बहुत अच्छा' कहकर, वहीं मुनियों के समूह के साथ ठहर गये। मिथिलापति जनक ने जब यह समाचार पाया कि मुनियों में श्रेष्ठ विश्वामित्र आये हैं,

दो०—संग सचिव सुचि भूरि भट भूसुर बर गुर ग्याति।
चले मिलन मुनिनायकहि मुदित राउ एहि भाँति॥२१४॥

तब विश्वासपात्र मन्त्री, बहुत-से योद्धा, श्रेष्ठ ब्राह्मण, गुरु (शतानन्द) और सजातीय लोगों को साथ लेकर इस प्रकार आनन्दित राजा मुनियों के स्वामी विश्वामित्र को मिलने चले।

कीन्ह प्रनाम चरन धरि माथा ❀ दीन्हि असीस मुदित मुनि नाथा
बिप्रबृन्द सब सादर बंदे ❀ जानि भाग्य बड़ राउ अनंदे

राजा ने मुनि के चरणों पर मस्तक रखकर प्रणाम किया। मुनियों के स्वामी विश्वामित्र ने प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिया। राजा ने सब ब्राह्मणों को भी आदर-सहित प्रणाम किया और अपना बड़ा भाग्य जानकर आनन्दित हुये।

कुसल प्रस्न कहि बारहिं बारा ❀ बिस्वामित्र नृपहि बैठारा
तेहि अवसर आए दोउ भाई ❀ गए रहे देखन फुलवाई

बार-बार कुशल-प्रश्न करके विश्वामित्र ने राजा को बैठाया। उसी समय दोनों भाई आ गये, जो फुलवाड़ी देखने चले गये थे।

स्याम गौर मृदु बयस[1] किसोरा ❀ लोचन सुखद बिस्व चित चोरा
उठे सकल जब रघुपति आए ❀ बिस्वामित्र निकट बैठाए

सुकुमार किशोर अवस्था वाले श्याम और गौर वर्ण के दोनों कुमार नेत्रों को सुख देने वाले और सारे विश्व के चित्त के चुराने वाले हैं। राम जब आये, तब सब उठकर खड़े हो गये। विश्वामित्र ने उन्हें अपने पास बैठा लिया।

---

१. उम्र।

भए सब सुखी देखि दोउ भ्राता ❀ बारि बिलोचन पुलकित गाता
मूरति मधुर मनोहर देखी ❀ भयेउ बिदेहु बिदेहु बिसेषी

दोनों भाइयों को देखकर सभी सुखी हुये। सब के नेत्रों में (हर्ष के) आँसू आ गये और शरीर रोमाञ्चित हो उठे। राम की मधुर और मनोहर मूर्ति देखकर विदेह (जनक) सचमुच विदेह (देह की सुध-बुध से रहित) हो गये।

दो॰ प्रेम मगन मनु जानि नृप करि बिबेक धरि धीर।
बोलेउ मुनि पद नाइ सिरु गदगद गिरा गँभीर।२१५।

मन को प्रेम में मग्न जानकर राजा जनक सावधान होकर, धैर्य धारण करके, मुनि के चरणों में सिर नवाकर गद्गद् और गम्भीर वाणी बोले—

कहहु नाथ सुन्दर दोउ बालक ❀ मुनि कुल तिलक कि नृप कुल पालक
ब्रह्म जो निगम नेति कहि गावा ❀ उभय[1] बेष धरि की सोइ आवा

हे नाथ! बताइये, ये दोनों सुन्दर बालक मुनि के कुल के तिलक हैं, या किसी राज-वंश के पालक? अथवा वेदों ने जिस ब्रह्म को 'नेति' कहकर गान किया है, कहीं वही तो युगल रूप धरकर नहीं आया?

सहज बिराग रूप मन मोरा ❀ थकित होत जिमि चंद चकोरा
तातें प्रभु पूछउँ सतिभाऊ ❀ कहहु नाथ जनि करहु दुराऊ

स्वभाव ही से वैराग्य रूप मेरा मन (इन्हें देखकर) इस तरह मुग्ध हो रहा है, जैसे चन्द्रमा को देखकर चकोर। इसलिये हे स्वामी! मैं आपसे सत्यभाव से पूछता हूँ, बताइये, छिपाव न कीजिये।

इन्हहिं बिलोकत अति अनुरागा ❀ बरबस ब्रह्मसुखहि मन त्यागा
कह मुनि बिहँसि कहेहु नृप नीका ❀ बचन तुम्हार न होइ अलीका

इनको देखते हुये अत्यन्त प्रेम के वश होकर मेरे मन ने आग्रह करके ब्रह्म-सुख को छोड़ दिया है। मुनि ने हँसकर कहा—हे राजा! आपने ठीक ही कहा। आपका वचन मिथ्या नहीं हो सकता।

ये प्रिय सबहिं जहाँ लगि प्रानी ❀ मन मुसुकाहिं रामु सुनि बानी
रघुकुल मनि दसरथ के जाए ❀ मम हित लागि[2] नरेस पठाए

जगत् में जहाँ तक प्राणी हैं, ये सभी को प्रिय हैं। राम मुनि की बात सुन

१. दो। २. लिये।

कर मन-ही-मन मुसकुराते हैं। मुनि ने कहा—ये रघुकुल के शिरोमणि महाराज दशरथ के पुत्र हैं। मेरे हित के लिये राजा ने इन्हें मेरे साथ भेजा है।

दो०—रामु लखनु दोउ बंधु बर रूप सील बल धाम।
मख राखेउ सबु साखि[1] जगु जिते असुर संग्राम॥२१६॥

ये दोनों श्रेष्ठ भाई राम और लक्ष्मण रूप, शील और बल के धाम हैं। सारा जगत् साक्षी है कि इन्होंने असुरों को युद्ध में जीता और मेरे यज्ञ की रक्षा की है।

मुनि तव चरन देखि कह राऊ ❀ कहि न सकउँ निज पुन्य प्रभाऊ
सुन्दर स्याम गौर दोउ भ्राता ❀ आनँदहू के आनँद दाता

राजा जनक ने कहा—हे मुनि! आपके चरणों को देखकर मैं अपना पुण्य-प्रभाव कह नहीं सकता। ये श्याम और गौर वर्ण के दोनों भाई आनन्द को भी आनन्द देने वाले हैं।

इन्ह कै प्रीति परसपर पावनि ❀ कहि न जाइ मन भाव सुहावनि
सुनहु नाथ कह मुदित बिदेहू ❀ ब्रह्म जीव इव सहज सनेहू

इनकी आपस की सुहावनी पवित्र प्रीति मन को ऐसी भाती है कि उसका वर्णन नहीं हो सकता। विदेह (जनक) आनंदित होकर कहते हैं—हे नाथ! सुनो, ब्रह्म और जीव की तरह इनमें स्वाभाविक प्रेम है।

पुनि पुनि प्रभुहि चितव नरनाहू ❀ पुलक गात उर अधिक उछाहू
मुनिहिं प्रसंसि नाइ पद सीसू ❀ चलेउ लिवाइ नगर अवनीसू

राजा बारबार प्रभु को देखते हैं। उनका शरीर रोमाञ्चित हो रहा है। और हृदय में बड़ा उत्साह है। फिर मुनि की प्रशंसा करके और उनके चरणों में सिर नवाकर राजा उनको नगर में लिवा चले।

सुन्दर सदन सुखद सब काला ❀ तहाँ बासु लै दीन्ह भुआला
करि पूजा सब बिधि सेवकाई ❀ गयउ राउ गृह बिदा कराई

एक सुन्दर महल, जो सब ऋतुओं में सुख देने वाला था, वहाँ राजा ने उनको ले जाकर ठहराया। उनका सत्कार और सब प्रकार से सेवा करके राजा विदा माँग कर अपने महल को गये।

---

१. साक्षी।

दो० रिषय संग रघुबंस मनि करि भोजनु बिस्रामु।
बैठे प्रभु भ्राता सहित दिवसु रहा भरि जामु॥२१७॥

ऋषि विश्वामित्र के साथ रघुकुल के शिरोमणि प्रभु रामचन्द्रजी भोजन और विश्राम करके भाई-सहित बैठे। उस समय पहर भर दिन शेष रह गया था।

लषन हृदय लालसा बिसेषी ❀ जाइ जनकपुर आइअ देखी
प्रभु भय बहुरि मुनिहि सकुचाहीं ❀ प्रगट न कहहिं मनहिं मुसुकाहीं

लक्ष्मण के हृदय में विशेष लालसा है कि जाकर जनकपुर देख आना चाहिये। एक तो प्रभु रामचन्द्र का भय है, दूसरे वे मुनि से भी सकुचाते हैं। प्रकट में कुछ नहीं कहते हैं, मन-ही-मन मुसकुरा रहे हैं।

राम अनुज मन की गति जानी ❀ भगत बछलता हियँ हुलसानी
परम बिनीत सकुचि मुसुकाई ❀ बोले गुर अनुसासन पाई

राम ने छोटे भाई (लक्ष्मण) के मन की दशा जान ली, तब उनके हृदय में भक्त-वत्सलता उमड़ आई। तब गुरु का आदेश पाकर अत्यन्त विनम्र राम सकुचाते हुये मुसकुराकर बोले—

नाथ लषनु पुर देखन चहहीं ❀ प्रभु सकोच डर प्रगट न कहहीं
जौं राउर आयसु मैं पावौं ❀ नगर देखाइ तुरत लै आवौं

हे नाथ! लक्ष्मण जनकपुर देखना चाहते हैं। किन्तु आपके डर और संकोच के कारण प्रकट नहीं कहते हैं। यदि आपकी आज्ञा पाऊँ, तो मैं इनको नगर दिखलाकर तुरन्त ही वापस ले आऊँ।

सुनि मुनीस कह बचन सप्रीती ❀ कस न राम तुम्ह राखहु नीती
धरम सेतु पालक तुम्ह ताता ❀ प्रेम बिबस सेवक सुखदाता

यह सुनकर मुनिवर ने प्रेम-सहित वचन कहा—हे राम! तुम नीति की रक्षा कैसे न करोगे। हे तात! तुम धर्म की मर्यादा का पालन करने वाले और प्रेम के वशीभूत होकर सेवकों को सुख देने वाले हो।

दो० जाइ देखि आवहु नगरु सुख निधान दोउ भाइ॥
करहु सुफल सबके नयन सुन्दर बदन देखाइ॥२१८॥

सुख के निधान तुम दोनों भाई जाकर नगर देख आओ। अपने सुन्दर मुख दिखलाकर समस्त नगर-निवासियों के नेत्रों को सफल करो।

मुनि पद कमल बंदि दोउ भ्राता ❀ चले लोक लोचन सुखदाता
बालक बृन्द देखि अति सोभा ❀ लगे संग लोचन मनु लोभा

सब लोगों के नेत्रों को सुख देने वाले दोनों भाई मुनि के कमल ऐसे चरणों की वन्दना करके चले। बालकों के समूह अत्यन्त शोभा देखकर साथ लग गये। उनके नेत्र और मन लुभाये हुये हैं।

पीत बसन परिकर कटि भाथा ❀ चारु चाप सर सोहत हाथा
तन अनुहरत सुचंदन खोरी ❀ स्यामल गौर मनोहर जोरी

दोनों भाइयों के वस्त्र पीले हैं; कमर में फेंटा और तरकस बँधा है और हाथों में सुन्दर धनुष-बाण सुशोभित हैं। सुन्दर चन्दन की खौर (श्याम और गौर वर्ण के) शरीरों के अनुकूल है। श्याम और गोरे की जोड़ी मनोहर है।

केहरि कंधर बाहु बिसाला ❀ उर अति रुचिर नाग[1] मनि माला
सुभग सोन[2] सरसीरुह लोचन ❀ बदन मयंक ताप त्रय मोचन

सिंह के समान कंधा है, विशाल भुजायें हैं, छाती पर बहुत सुन्दर गज-मुक्ता की माला है, सुन्दर लाल-कमल ऐसे नेत्र हैं, तापों का हरण करने वाले चन्द्रमा के समान उनके मुख हैं।

कानन्हि कनक फूल छबि देहीं ❀ चितवत चितहि चोरि जनु लेहीं
चितवनि चारु भृकुटि बर बाँकी ❀ तिलक रेख सोभा जनु चाकी[3]

कानों में सोने के कर्णफूल शोभा देते हैं। देखते ही चित्त को वे मानो चुरा लेते हैं। उनकी चितवन मनोहर और भौंहें उत्तम और बांकी हैं। माथे पर तिलक की रेखाओं की शोभा मानो बिजली है।

दो० रुचिर चौतनीं सुभग सिर मेचक[4] कुञ्चित केस।
नख सिख सुन्दर बंधु दोउ सोभा सकल सुदेस॥२१९॥

सिर पर सुन्दर चौकोनी टोपियाँ दिये हैं; बाल काले और घुँघराले हैं। दोनों भाई नख से लेकर शिखा तक सुन्दर हैं और उनके शरीर के सब सुन्दर

१. हाथी। २. लाल। ३. बिजली, अवधी बोली में चाकी और चिर्री बिजली के पर्यायवाची हैं। ४. काला।



अङ्गों में शोभा जहाँ जैसी चाहिये, वहाँ वैसी ही है।

देखन नगर भूप सुत आए ❀ समाचार पुरबासिन्ह पाए
धाए धाम काम सब त्यागी ❀ मनहुँ रंक निधि लूटन लागी

नगर देखने के लिये दो राजकुमार आये हैं; यह समाचार जब पुरवासियों ने पाया तब वे घर का सब काम-काज छोड़कर ऐसे दौड़े, मानो ग़रीब लोग ख़ज़ाना लूटने दौड़े हैं।

निरखि सहज सुन्दर दोउ भाई ❀ होहिं सुखी लोचन फल पाई
जुवती भवन झरोखन्हि लागीं ❀ निरखहिं राम रूप अनुरागीं

स्वभाव ही से सुन्दर दोनों भाइयों को देखकर वे लोग आँखों का फल पाकर सुखी हो रहे हैं। युवती स्त्रियाँ घर के झरोखों से लगी हुई प्रेम-सहित राम के रूप को देख रही हैं।

कहहिं परसपर बचन सप्रीती ❀ सखि इन्ह कोटि काम छवि जीती
सुर नर असुर नाग मुनि माहीं ❀ सोभा असि कहुँ सुनि अति नाहीं

वे आपस में बड़े प्रेम से बातें कर रही हैं—हे सखि! इन्होंने करोड़ों कामदेवों की छवि को जीत लिया है। सुर, नर, असुर, नाग और मुनियों में ऐसी शोभा तो कहीं सुनाई नहीं पड़ती।

बिष्नु चारि भुज बिधि मुख चारी ❀ बिकट बेष मुख पंच पुरारी
अपर देव अस कोउ न आही ❀ यह छवि सखी पटतरिअ जाही

विष्णु के चार हाथ हैं, ब्रह्मा के चार मुख हैं; शिवजी का वेष भयानक और उनके पाँच मुख हैं। हे सखी! दूसरा और कोई देवता नहीं, जिससे इस शोभा की तुलना की जाय।

दो॰ **बय किसोर सुखमा सदन स्याम गौर सुख धाम।**
अंग अंग पर वारिअहि कोटि कोटि सत काम।२२०।

इनकी किशोर अवस्था है, ये सौन्दर्य के घर, श्याम और गौर वर्ण के सुख के धाम हैं। इनके अङ्ग-अङ्ग पर सैकड़ों-करोड़ों कामदेवों को निछावर कर देना चाहिये।

कहहु सखी अस को तनु धारी ❀ जो न मोह यह रूप निहारी
कोउ सप्रेम बोली मृदु बानी ❀ जो मैं सुना सो सुनहु सयानी

हे सखी ! ऐसा शरीरधारी कौन होगा, जो यह रूप देखकर मोहित न हो जाय ? तब कोई दूसरी सखी प्रेम-सहित कोमल वाणी से बोली—हे सयानी ! मैंने जो सुना है, उसे सुनो ।

ए दोऊ दसरथ के ढोटा ❀ बाल मरालन्हि के कल[1] जोटा[2]
मुनि कौसिक मख के रखवारे ❀ जिन्ह रन अजिर निसाचर मारे

ये दोनों राजकुमार महाराज दशरथ के पुत्र हैं। बाल राजहंसों के सुन्दर जोड़े हैं। ये विश्वामित्र मुनि के यज्ञ के रखवाले हैं। इन्होंने रण के मैदान में राक्षसों को मारा है।

स्याम गात कल कंज बिलोचन ❀ जो मारीच सुभुज मद मोचन
कौसल्या सुत सो सुखखानी ❀ नाम राम धनु सायक पानी

श्याम शरीर वाले, जिनके सुन्दर कमल-जैसे नेत्र हैं, जो मारीच और सुबाहु के मद को चूर करने वाले और सुख की खान हैं और जो हाथ में धनुष-बाण लिये हुए हैं, वे रानी कौशल्या के पुत्र हैं, उनका नाम राम है।

गौर किसोर बेष बर काछें ❀ कर सर चाप राम के पाछें
लछिमनु नाम राम लघु भ्राता ❀ सुनु सखि तासु सुमित्रा माता

जिनका रंग गोरा और अवस्था किशोर है; जो सुन्दर वेष बनाये, हाथ में धनुष बाण लिये राम के पीछे हैं, वे राम के छोटे भाई हैं; उनका नाम लक्ष्मण है। हे सखी ! सुनो, उनकी माता सुमित्रा हैं।

दो॰ बिप्र काजु करि बंधु दोउ मग मुनि बधू उधारि।
आये देखन चाप मख सुनि हरषीं सब नारि।२२१।

ब्राह्मण विश्वामित्र का काम करके और रास्ते में मुनि (गौतम) की स्त्री (अहल्या) का उद्धार करके दोनों भाई यहाँ धनुष-यज्ञ देखने आये हैं। यह सुनकर सब स्त्रियाँ प्रसन्न हुईं।

देखि राम छबि कोउ एक कहई ❀ जोगु जानकिहि एह बरु अहई
जौं सखि इन्हहिं देख नरनाहू ❀ पन परिहरि हठि करइ बिबाहू

कोई एक अन्य सखी राम की छवि देखकर कहने लगी—यह वर जानकी के योग्य है। हे सखी ! यदि कहीं राजा इन्हें देख ले, तो प्रतिज्ञा छोड़कर

१. सुन्दर। २. जोड़ा।

वह आग्रहपूर्वक इन्हीं से विवाह कर देगा।

कोउ कह ए भूपति पहिचाने ❀ मुनि समेत सादर सनमाने
सखि परंतु पन राउ न तजई ❀ बिधि बस हठि अबिबेकहि भजई

किसी ने कहा—राजा ने इन्हें पहचान लिया है। उन्होंने मुनि के सहित इनका आदरपूर्वक सम्मान किया है। हे सखी! पर राजा प्रण नहीं छोड़ेगा। वह होनहार के वश में हठ करके अविवेक ही को महत्व देगा।

कोउ कह जौं भल अहइ बिधाता ❀ सब कहँ सुनिअ उचित फल दाता
तौ जानकिहि मिलिहि बरु एहू ❀ नाहिंन आलि इहाँ संदेहू

कोई कहती है—यदि विधाता भले हैं और सुना जाता है कि वह सबको उचित फल देते हैं, तो जानकी को यही वर मिलेगा। हे सखी! इसमें संदेह नहीं है।

जौं बिधि बस अस बनै सँजोगू ❀ तौ कृतकृत्य[1] होइँ सब लोगू
सखि हमरे आरति अति तातें ❀ कबहुँक ए आवहिं एहि नाते

यदि दैवयोग से ऐसा संयोग बन जाय तो हम सब लोग कृतार्थ हो जायँ। हे सखी! मेरे तो इसी से इतनी आतुरता हो रही है कि ये इसी नाते कभी यहाँ आयेंगे।

दो०—नाहिं त हम कहुँ सुनहु सखि इन्ह कर दरसनु दूरि।
एहु संघटु तब होइ जब पुन्य पुराकृत भूरि।२२२।

नहीं तो हे सखी! सुनो, हमें इनके दर्शन दुर्लभ हैं। यह संयोग तभी हो सकता है, जब हमारे पूर्व जन्मों के पुण्य अधिक हों।

बोली अपर कहेहु सखि नीका ❀ एहि बिआह अति हित सबही का
कोउ कह संकर चाप कठोरा ❀ ए स्यामल मृदु गात किसोरा

दूसरी ने कहा—हे सखी! तुमने बहुत अच्छा कहा। इस विवाह से सभी का परम हित है। किसी ने कहा—शिवजी का धनुष कठोर है, ये साँवले राजकुमार अभी कोमल शरीर के बालक हैं।

सबु असमंजस अहइ सयानी ❀ यह सुनि अपर कहइ मृदु बानी
सखि इन्ह कहँ कोउ कोउ अस कहहीं ❀ बड़ प्रभाउ देखत लघु अहहीं

---

१. कृतार्थ।



यह सुनकर दूसरी सखी कोमल वाणी से कहने लगी—हे सयानी ! सब असमंजस ही है, पर इनके संबन्ध में कोई-कोई ऐसा कहते हैं कि ये देखने ही में छोटे हैं; इनका प्रभाव बहुत बड़ा है।

परसि जासु पद पंकज धूरी ❀ तरी अहल्या कृत अघ भूरी
सो कि रहिहि बिनु सिवधनु तोरें ❀ यह प्रतीति परिहरिअ न भोरें

जिनके कमल ऐसे चरणों की धूल छूकर अहल्या तर गई, जिसने बड़ा भारी पाप किया था, वे क्या शिवजी का धनुष बिना तोड़े रहेंगे ? इस विश्वास को भूलकर भी न छोड़ना चाहिये।

जेहि बिरंचि रचि सीय सँवारी ❀ तेहि स्यामल बरु रचेउ बिचारी
तासु बचन सुनि सब हरषानी ❀ ऐसेइ होउ कहहिं मृदु बानी

जिस विधाता ने सीता को सँवारकर रचा है, उसी ने विचारकर साँवला वर भी रच रक्खा है। उसके वचन सुनकर सब हर्षित हुईं। सब कोमल वाणी से कहने लगीं—ऐसा ही हो।

दो०— हिय हरषहिं बरषहिं सुमन सुमुखि सुलोचनि बृन्द।
जाहिं जहाँ जहँ बंधु दोउ तहँ तहँ परमानंद ॥२२३॥

सुन्दर मुख और सुन्दर नेत्रों वाली स्त्रियाँ समूह-की-समूह हृदय में हर्षित होकर फूल बरसा रही हैं। जहाँ-जहाँ दोनों भाई जाते हैं, वहाँ-वहाँ परम आनन्द छा जाता है।

पुर पूरब दिसि गे दोउ भाई ❀ जहँ धनु मख हित भूमि बनाई
अति बिस्तार चारु गच[1] ढारी ❀ बिमल बेदिका रुचिर सँवारी

दोनों भाई नगर के पूरब ओर गये, जहाँ धनुष-यज्ञ के लिये (रंग) भूमि बनाई गई थी। बहुत लम्बा-चौड़ा सुन्दर ढाला हुआ पक्का आँगन था, जिस पर सुन्दर और पवित्र वेदी सँवारी हुई थी।

चहुँ दिसि कंचन मंच बिसाला ❀ रचे जहाँ बैठहिं महिपाला
तेहि पाछें समीप चहुँ पासा ❀ अपर[2] मञ्च मण्डली बिलासा

चारों ओर सोने के बड़े-बड़े मञ्च बने थे, जिनपर राजा लोग बैठेंगे। उसके पीछे समीप ही चारों ओर दूसरे मञ्चों का घेरा सुशोभित था।

---

१. फर्श। २. दूसरी।

कछुक ऊँचि सब भाँति सुहाई ❀ बैठहिं नगर लोग जहँ जाई
तिन्हके निकट बिसाल सुहाए ❀ धवल धाम बहु बरन बनाए

वह कुछ ऊँचा था और सब प्रकार से सुन्दर था, जहाँ जाकर नगर के लोग बैठेंगे। उन्हीं के पास बड़े-बड़े सफ़ेद सुन्दर घर अनेक रंगों के बनाये गये हैं।

जहँ बैठे देखहिं सब नारी ❀ जथाजोगु निज कुल अनुहारी[1]
पुर बालक कहि कहि मृदु बचना ❀ सादर प्रभुहि देखावहिं रचना

जहाँ अपने-अपने कुल के अनुसार सब स्त्रियाँ बैठकर देखेंगी। नगर के बालक कोमल वचन कह-कहकर आदरपूर्वक प्रभु को यज्ञशाला की रचना दिखलाते हैं।

दो॰ सब सिसु एहि मिसु प्रेमबस परसि मनोहर गात।
तनु पुलकहिं अति हरषु हियँ देखि देखि दोउ भ्रात॥

इसी बहाने प्रेम के वश होकर राम के सुन्दर शरीर को छूकर सब बच्चों का शरीर पुलकित हो रहा है और दोनों भाइयों को देखकर उनके हृदय में अत्यन्त हर्ष हो रहा है।

सिसु सब राम प्रेम बस जाने ❀ प्रीति समेत निकेत बखाने
निज निज रुचि सब लेहिं बोलाई ❀ सहित सनेह जाहिं दोउ भाई

सब बालकों को राम ने प्रेम के वश में जानकर प्रीति-सहित यज्ञभूमि के स्थानों की प्रशंसा की। वे सब अपनी-अपनी रुचि के अनुसार उन्हें बुला लेते हैं और दोनों भाई स्नेह के साथ उनके पास चले जाते हैं।

राम देखावहिं अनुजहि रचना ❀ कहि मृदु मधुर मनोहर बचना
लव निमेष महँ भुवननिकाया ❀ रचै जासु अनुसासन माया

कोमल और मधुर वचन कहकर राम अपने छोटे भाई लक्ष्मण को यज्ञ-भूमि की रचना दिखलाते हैं। जिसकी आज्ञा पाकर माया क्षणभर में ब्रह्मांडों के समूह रच डालती है।

भगति हेतु सोइ दीनदयाला ❀ चितवत चकित धनुप मख साला
कौतुक देखि चले गुरु पाहीं ❀ जानि बिलंब त्रास मन माहीं

१. अनुसार।

वही दीनों पर दया करने वाले राम भक्ति के कारण चकित होकर धनुष-यज्ञशाला देख रहे हैं। इस प्रकार सब कौतुक देखकर वे गुरु के पास चले। देर हुई जानकर उनके मन में डर था।

जासु त्रास डर कहुँ डर होई ❁ भजन प्रभाउ देखावत सोई
कहि बातें मृदु मधुर सुहाई ❁ किए बिदा बालक बरिआई

जिसके भय से डर को भी डर लगता है, वही प्रभु भजन का प्रभाव दिखला रहे हैं। उन्होंने कोमल, मधुर और सुन्दर बातें कहकर बालकों को ज़बरदस्ती विदा किया।

दो०: **सभय सप्रेम बिनीत अति सकुच सहित दोउ भाइ।**
गुर पद पंकज नाइ सिर बैठे आयसु पाइ ॥२२५॥

भय, प्रेम और संकोच-सहित दोनों अत्यन्त विनयी भाई गुरु के कमल ऐसे चरणों पर सिर नवाकर, आज्ञा पाकर बैठे।

निसि प्रबेस मुनि आयसु दीन्हा ❁ सबही संध्याबंदनु कीन्हा
कहत कथा इतिहास पुरानी ❁ रुचिर रजनि जुग जाम[1] सिरानी

रात्रि का प्रवेश होते ही मुनि ने आज्ञा दी, तब सबने संध्या-वंदन किया। पुरानी कथा और इतिहास कहते-कहते सुन्दर रात्रि दो पहर बीत गई।

मुनिवर सैन कीन्ह तब जाई ❁ लगे चरन चापन दोउ भाई
जिन्ह के चरन सरोरुह लागी ❁ करत बिबिध जप जोग बिरागी

तब श्रेष्ठ मुनि ने जाकर शयन किया। दोनों भाई उनके पैर दाबने लगे। जिनके कमल ऐसे चरणों के लिये विरक्त लोग भाँति-भाँति के जप और योग करते हैं,

तेइ दोउ बंधु प्रेम जनु जीते ❁ गुर पद कमल पलोटत प्रीते[2]
बार बार मुनि अग्या दीन्ही ❁ रघुबर जाइ सैन तब कीन्ही

उन्हीं दोनों भाइयों को मानो प्रेम ने जीत लिया है। वे प्रीति-सहित गुरु के कमल ऐसे पदों को दबा रहे हैं। मुनि ने बार-बार आज्ञा दी, तब रामचन्द्रजी ने जाकर शयन किया।

---

१. पहर। २. प्रीतिपूर्वक।

चापत चरन लषनु उर लाएँ ❀ सभय सप्रेम परम सचुपाएँ
पुनि पुनि प्रभु कह सोवहु ताता ❀ पौढ़े धरि उर पद जलजाता

राम के चरणों को हृदय से लगाकर भय और प्रेम-सहित बहुत आनन्दित होकर लक्ष्मण उसे दबा रहे हैं। प्रभु राम ने फिर-फिर कहा—हे तात! अब सो जाओ। तब वे राम के कमल ऐसे चरणों को हृदय में धरकर लेट रहे।

दो० उठे लषनु निसि बिगत सुनि अरुन सिखा धुनि कान।
गुर तें पहिलेहि जगतपति जागे रामु सुजान ॥२२६॥

रात बीतने पर, मुर्गे का शब्द कानों से सुनकर लक्ष्मण उठे। जगत् के स्वामी सुजान राम भी गुरु से पहले ही जाग गये।

सकल सौच करि जाइ नहाए ❀ नित्य निबाहि मुनिहि सिर नाए
समय जानि गुरु आयसु पाई ❀ लेन प्रसून चले दोउ भाई

सब शौच आदि प्रातः कृत्य करके वे जाकर नहाये। और नित्यकर्म पूरा करके उन्होंने मुनि को मस्तक नवाया। पूजा का समय जानकर, गुरु की आज्ञा पाकर दोनों भाई फूल लेने चले।

भूप बागु बर देखेउ जाई ❀ जहँ बसन्त रितु रही लोभाई
लागे बिटप मनोहर नाना ❀ बरन बरन बर बेलि बिताना

उन्होंने जाकर राजा जनक का उत्तम बाग देखा, जहाँ वसंत-ऋतु लुभा रही है। उसमें भाँति-भाँति के मनोहर वृक्ष लगे हैं। रंग-बिरंगी उत्तम लताओं के अनेक रूपों के चँदोवे बने हैं।

नव पल्लव फल सुमन सुहाए ❀ निज सम्पति सुर रूख[2] लजाए
चातक कोकिल कीर चकोरा ❀ कूजत बिहँग नटत[3] कल मोरा

वृक्ष नये पत्ते, फल और फूल से सुशोभित हैं और अपने विभव से वे कल्पवृक्ष को लज्जित कर रहे हैं। पपीहा, कोयल, सुआ, चकोर आदि पक्षी कलरव कर रहे हैं और सुन्दर मोर नाच रहे हैं।

मध्य बाग सरु सोह सुहावा ❀ मनि सोपान बिचित्र बनावा
बिमल सलिल सरसिज बहुरंगा ❀ जल खग कूजत गुंजत भृङ्गा

१. दुर्गा। २. कल्पवृक्ष। ३. नाचते हैं।

बाग के मध्य में सुहावना सरोवर शोभित है। जिसमें सीढ़ियाँ मणियों की हैं और अद्भुत दृश्य है। जल निर्मल है, और उसमें अनेक रंग के कमल हैं। जल के पक्षी कलरव कर रहे हैं और भौंरे गुञ्जार कर रहे हैं।

दो०— बागु तड़ाग बिलोकि प्रभु हरषे बंधु समेत।
परम रम्य आरामु[1] यहु जो रामहिं सुख देत।२२७।

बाग और सरोवर को देखकर प्रभु रामचन्द्रजी भाई-सहित हर्षित हुये। वह बाग वास्तव में बहुत ही रमणीय है, जो राम को भी सुख दे रहा है।

चहुँ दिसि चितइ पूँछि मालीगन ❀ लगे लेन दल फूल मुदितमन
तेहि अवसर सीता तहँ आई ❀ गिरिजा पूजन जननि पठाई

चारों ओर दृष्टि दौड़ाकर और मालियों से पूछकर वे प्रसन्न मन से पत्र-पुष्प लेने लगे। उसी समय सीता वहाँ आईं। माता ने उन्हें पार्वतीजी की पूजा करने के लिये भेजा था।

संग सखीं सब सुभग सयानी ❀ गावहिं गीत मनोहर बानी
सर समीप गिरिजा गृह सोहा ❀ बरनि न जाइ देखि मन मोहा

साथ में सब सुन्दरी और सयानी सखियाँ मनोहर वाणी से गीत गा रही हैं। सरोवर के निकट पार्वतीजी का मन्दिर सुशोभित है। उसका वर्णन नहीं किया जा सकता; देखकर मन मोहित हो जाता है।

मज्जनु करि सर सखिन्ह समेता ❀ गई मुदित मन गौरि[2] निकेता
पूजा कीन्हि अधिक अनुरागा ❀ निज अनुरूप सुभग बरु माँगा

सखियों-सहित सरोवर में स्नान करके सीता प्रसन्न मन से पार्वतीजी के मन्दिर में गईं। बड़े प्रेम से उन्होंने पूजन किया और अपने योग्य सुन्दर वर माँगा।

एक सखी सिय संगु बिहाई ❀ गई रही देखन फुलवाई
तेइ दोउ बंधु बिलोके जाई ❀ प्रेम बिबस सीता पहिं आई

एक सखी, सीता का साथ छोड़कर फुलवाड़ी देखने चली गई थी। उसने वहाँ जाकर दोनों भाइयों को देखा और वह प्रेम से विह्वल होकर सीता के पास आई।

---

१. बाग। २. पार्वती।

दो०— तासु दसा देखी सखिन्ह पुलक गात जलु नैन ।
कहु कारनु निज हरष कर पूछहिं सब मृदु बैन ॥२२८॥

सखियों ने उसकी दशा देखी कि उसका शरीर पुलकित है और नेत्रों में जल भरा है। सब कोमल वचनों से पूछने लगीं कि अपनी प्रसन्नता का कारण बता।

देखन बागु कुँअर दुइ आए ❀ बय किसोर सब भाँति सुहाए
स्याम गौर किमि कहौं बखानी ❀ गिरा अनयन नयन बिनु बानी

उसने कहा—दो राजकुमार बाग देखने आये हैं। वे किशोर अवस्था के हैं और सब प्रकार से सुन्दर हैं। वे साँवले और गोरे रंग के हैं। मैं उनकी सुन्दरता को कैसे बखान कर कहूँ ? मेरी वाणी के तो नेत्र नहीं और नेत्रों के वाणी नहीं।

सुनि हरषीं सब सखीं सयानी ❀ सिय हियँ अति उतकंठा जानी
एक कहइ नृप सुत तेइ आली ❀ सुने जे मुनि सँग आए काली

सब सयानी सखियाँ यह सुनकर और सीता के हृदय में बड़ी उत्कण्ठा जानकर प्रसन्न हुईं। तब एक सखी कहने लगी—हे सखी ! ये वेही राजकुमार हैं, जो सुना है कि कल विश्वामित्र मुनि के साथ आये हैं।

जिन्ह निज रूप मोहनी डारी ❀ कीन्हे स्वबस नगर नर नारी
बरनत छबि जहँ तहँ सब लोगू ❀ अवसि देखिअहिं देखन जोगू

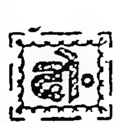
जिन्होंने अपने रूप की मोहिनी डालकर नगर के स्त्री-पुरुषों को अपने वश में कर लिया। जहाँ-तहाँ सब लोग उन्हीं की शोभा का बखान कर रहे हैं। वे देखने योग्य हैं, अवश्य उन्हें देखना चाहिये।

तासु बचन अति सियहि सुहाने ❀ दरस लागि लोचन अकुलाने
चली अग्र[1] करि प्रिय सखि सोई ❀ प्रीति पुरातन लखइ न कोई

उसके वचन सीता को अत्यन्त ही प्रिय लगे, और दर्शन के लिये उनके नेत्र अकुला उठे। उसी प्यारी सखी को आगे करके सीता चलीं। पुरातन प्रीति को कोई देख नहीं रहा है।

---

१. आगे।



सुमिरि सीय नारद बचन उपजी प्रीति पुनीत।
चकित बिलोकति सकल दिसि जनु सिसु मृगी सभीत

नारदजी के वचनों का स्मरण करके सीता के हृदय में पवित्र प्रीति उत्पन्न हुई। वह चकित होकर सब ओर इस तरह देखती हैं, जैसे डरी हुई मृगछौनी देखती है। [उक्तविषया वस्तुत्प्रेक्षा अलंकार]

कंकन किंकिनि नूपुर धुनि सुनि ❀ कहत लषन सन राम हृदय गुनि
मानहुँ मदन दुंदुभी दीन्ही ❀ मनसा[1] बिस्व बिजय कहँ कीन्ही

कंकण, करधनी और पाज़ेब की झनकार सुनकर राम हृदय में विचारकर लक्ष्मण से कह रहे हैं—मानो कामदेव ने डंका बजाया है और विश्व को जीतने का इरादा किया है।

अस कहि फिरि चितए तेहि ओरा ❀ सिय मुख ससि भए नयन चकोरा
भए बिलोचन चारु अचंचल ❀ मनहुँ सकुचि निमि[2] तजे दृगंचल

ऐसा कहकर राम ने फिर उस ओर देखा। सीता के मुखरूपी चंद्रमा के लिये राम के नेत्र चकोर हो गये। सुन्दर नेत्र स्थिर हो गये। मानो निमि ने सकुचाकर पलकें छोड़ दीं। (लड़की-दामाद का मिलन-प्रसंग देखना उचित न जानकर महाराज जनक के पूर्वज निमि पलकों पर से उतर गये। ऐसा माना जाता है कि सबकी पलकों पर निमि का निवास है।)

देखि सीय सोभा सुखु पावा ❀ हृदय सराहत बचनु न आवा
जनु बिरंचि सब निज निपुनाई ❀ बिरचि बिस्व कहँ प्रगटि देखाई

सीता की शोभा देखकर राम ने बड़ा सुख पाया। मन ही मन वे उसकी सराहना करते हैं, किन्तु मुख से वचन नहीं निकलते। मानो ब्रह्मा ने अपनी सारी निपुणता को मूर्तिमान् कर संसार को प्रकट करके दिखा दिया है।

सुन्दरता कहुँ सुन्दर करई ❀ छबि गृह दीप सिखा जनु बरई[3]
सब उपमा कबि रहे जुठारी ❀ केहि पटतरउँ बिदेह कुमारी

(यह शोभा) सुन्दरता को भी सुन्दर करने वाली है। मानो शोभा के घर में दीप की शिखा जल रही हो। (तुलसीदास कहते हैं) सारी उपमाओं को तो कवियों ने जूठा कर दिया है। मैं जनक की पुत्री की उपमा किससे दूं ?

---

१. मन्शा, इरादा। २. जनक महाराज के पूर्वज। ३. जल रही है।

दो॰ सिय सोभा हियँ बरनि प्रभु आपनि दसा बिचारि।
बोले सुचि मन अनुज सन बचन समय अनुहारि।२३०

प्रभु रामचन्द्रजी हृदय में सीता की शोभा को वर्णन करके और अपनी दशा को विचारकर पवित्र मन से अपने छोटे भाई से समय के अनुसार वचन बोले—

तात जनक तनया यह सोई ❀ धनुष जग्य जेहि कारन होई
पूजन गौरि सखी लइ आई ❀ करत प्रकास फिरइ फुलवाई

हे तात ! यह वही जनक की कन्या है, जिसके लिये धनुष-यज्ञ हो रहा है। सखियाँ पार्वतीजी की पूजा के लिये इसे ले आई हैं। यह फुलवाड़ी में प्रकाश करती हुई फिर रही है।

जासु बिलोकि अलौकिक सोभा ❀ सहज पुनीत मोर मनु छोभा
सो सब कारन जान बिधाता ❀ फरकहिं सुभग अंग सुनु भ्राता

जिसका अलौकिक सौन्दर्य देखकर स्वभाव ही से पवित्र मेरा मन क्षुब्ध हो गया है। उस सब कारण को विधाता ही जानते हैं। किन्तु हे भाई ! सुनो, मेरा सुन्दर (दाहिना) अंग फड़क रहा है।

रघुवंसिन्ह कर सहज सुभाऊ ❀ मन कुपंथ पगु धरइ न काऊ
मोहि अतिसय प्रतीति मन केरी ❀ जेहि सपनेहु पर नारि न हेरी

रघु के वंश वालों का यह सहज (वंशगत) स्वभाव होता है कि उनका मन कभी बुरे रास्ते पर पैर नहीं रखता। मुझे तो अपने मन का अत्यन्त ही विश्वास है कि उसने स्वप्न में भी पराई स्त्री की इच्छा नहीं की।

जिन्ह कै लहहिं न रिपु रन पीठी ❀ नहिं पावहिं परतिय मन डीठी
मंगन लहहिं न जिन्ह कै नाहीं ❀ ते नरबर थोरे जग माहीं

रण में शत्रु जिनकी पीठ नहीं देख पाते, पराई स्त्रियाँ जिनके मन और दृष्टि को नहीं खींच पातीं और भिक्षुक जिनकी 'नाहीं' नहीं पाते, ऐसे श्रेष्ठ पुरुष संसार में थोड़े हैं।

दो॰ करत बतकही अनुज सन मन सिय रूप लोभान।
मुख सरोज मकरंद छबि करइ मधुप इव पान ॥२३१॥



राम छोटे भाई से बातें कर रहे हैं, पर सीता के रूप में लुभाया हुआ उनका मन सीता के कमल ऐसे मुख की मकरंदरूपी छवि को भौंरे की तरह पी रहा है।

चितवति चकित चहूँ दिसि सीता ❀ कहँ गए नृप किसोर मन चिंता
जहँ बिलोकि मृग सावक नयनी ❀ जनु तहँ बरिस कमल सित स्रे नी[1]

सीता चारों ओर चकित होकर देख रही हैं। उनके मन में चिन्ता है कि राजपुत्र कहाँ गये। वह मृग के बच्चे की-सी आँख वाली सीता जहाँ दृष्टि डालती हैं वहाँ मानो सफ़ेद कमलों की पंक्ति बरस पड़ती है। [अनुक्तविषया वस्तूत्प्रेक्षा अलंकार]

लता ओट तब सखिन लखाए ❀ स्यामल गौर किसोर सुहाए
देखि रूप लोचन ललचाने ❀ हरषे जनु निज निधि पहिचाने

तब सखियों ने लता की आड़ में साँवले और गोरे सुन्दर कुमारों को दिखलाया। उनके रूप को देखकर नेत्र ललचा उठे। ऐसे हर्षित हुये, मानो उन्होंने अपना ख़जाना ही पहचान लिया।

थके नयन रघुपति छवि देखें ❀ पलकन्हिहू परिहरीं निमेषें
अधिक सनेह देह भै भोरी ❀ सरद ससिहि जनु चितव चकोरी

रामचन्द्रजी की छवि देखकर नेत्र निश्चल हो गये। पलकों ने भी गिरना छोड़ दिया। अधिक स्नेह से देह की सुध-बुध जाती रही। मानो शरद-ऋतु के चन्द्रमा को चकोरी देख रही हो।

लोचन मग रामहिं उर आनी ❀ दीन्हे पलक कपाट सयानी
जब सिय सखिन्ह प्रेमबस जानीं ❀ कहि न सकहिं कछु मन सकुचानीं

नेत्र के मार्ग से राम को हृदय में लाकर सयानी सीता ने पलकों के कपाट बन्द कर लिये। जब सखियों ने सीता को प्रेम के वश में जाना, तब वे मन में सकुचा गईं; कुछ कह नहीं सकती थीं।

दो०— **लताभवन तें प्रगट भे तेहि अवसर दोउ भाइ।**
निकसे जनु जुग बिमल बिधु जलद पटल बिलगाइ॥

उसी समय दोनों भाई लता-कुंज में से प्रकट हुये। मानो दो निर्मल

१. पाँती, कतार।

चन्द्रमा बादलों के पर्दे को हटाकर निकले हों।

सोभा सीवँ सुभग दोउ बीरा ❀ नील पीत जलजाभ सरीरा
मोरपंख सिर सोहत नीके ❀ गुच्छे बीच बिच कुसुम कली के

दोनों सुन्दर भाई शोभा की सीमा हैं। उनके शरीर नीले और पीले कमल की आभा वाले हैं। सिर पर सुन्दर मोर-पंख सुशोभित है। उनके बीच-बीच में फूलों की कलियों के गुच्छे लगे हैं।

भाल तिलक स्रमबिंदु सुहाये ❀ स्रवन सुभग भूषन छवि छाये
बिकट भृकुटि कच घूँघरवारे ❀ नव सरोज लोचन रतनारे

माथे पर तिलक और पसीने की बूँदें सुशोभित हैं। कानों में सुन्दर भूषण शोभा दे रहे हैं। भौंहें टेढ़ी और बाल घुँघराले हैं। नेत्र नवीन कमल के समान रतनारे हैं।

चारु चिबुक नासिका कपोला ❀ हास बिलास लेत मनु मोला
मुख छबि कहि न जाइ मोहि पाहीं ❀ जो बिलोकि बहु काम लजाहीं

ठुड्डी, नाक और गाल बड़े सुन्दर हैं। और हँसने का माधुर्य तो मानो मन को खरीद ही तो रहा है। (तुलसीदास कहते हैं—) मुझसे उनके मुख की छवि का वर्णन नहीं हो सकता, जिसे देखकर बहुत-से कामदेव लजा जाते हैं।

उर मनि माल कंबु कल ग्रीवाँ ❀ काम कलभ कर भुज बल सींवाँ
सुमन समेत बाम कर दोना ❀ साँवर कुँवर सखी सुठि लोना

छाती पर मणियों की माला है। गला शंख की तरह सुन्दर है। कामदेव के हाथी के बच्चे के सूँड़ की तरह बलवान् भुजायें हैं। बायें हाथ में फूलों-सहित दोना है। हे सखी! साँवला कुमार तो बहुत ही सलोना है।

दो० केहरि कटि पट पीत धर सुखमा सील निधान।
देखि भानुकुल भूषनहि बिसरा[1] सखिन्ह अपान[2] २३३

सिंह की-सी (पतली-लचीली) कमर वाले पीताम्बर धारण किये हुये सुन्दरता और शील के घर सूर्यकुल के भूषण रामचन्द्रजी को देखकर सखियों को अपनी सुध भूल गई।

१. भूल गया। २. अपनापन।

धरि धीरजु एक आलि सयानी ❀ सीता सन बोली गहि पानी
बहुरि गौरि कर ध्यान करेहू ❀ भूप किसोर देखि किन लेहू

एक चतुर सखी धीरज धरकर, सीता का हाथ पकड़कर बोली—पार्वतीजी का ध्यान फिर कर लेना। राजकुमार को देख क्यों नहीं लेती ?

सकुचि सीय तब नयन उघारे ❀ सनमुख दोउ रघुसिंह निहारे
नख सिख देखि राम कै सोभा ❀ सुमिरि पिता पनु मनु अति छोभा

तब सीता ने सकुचाकर नेत्र खोले और उन्होंने रघुकुल के दोनों सिंहों को सामने देखा। सिर से पैर तक राम की शोभा देखकर और फिर पिता का प्रण याद करके उनका मन बहुत क्षुब्ध हो गया।

परबस सखिन्ह लखी जब सीता ❀ भयउ गहरु सब कहहिं सभीता
पुनि आउब एहि बरियाँ काली ❀ अस कहि मन बिहँसी एक आली

जब सखियों ने सीता को पर-वश (प्रेम के वश) देखा, तब सब भयभीत होकर कहने लगीं—बड़ी देर हो रही है, कल इसी समय फिर आयेंगी। ऐसा कहकर एक सखी मन में हँसी।

गूढ़ गिरा सुनि सिय सकुचानी ❀ भयउ बिलंबु मातु भय मानी
धरि बड़ि धीर रामु उर आने ❀ फिरी अपनपउ पितुबस जाने

सखी की मर्म-भरी वाणी सुनकर सीता सकुचा गईं। देर हो गई, यह सोचकर उन्हें माता का भय लगा। बहुत धीरज धरकर, राम को हृदय में ले आकर और अपने को पिता के वश में जानकर वे लौट चलीं।

दो०—देखन मिस[1] मृग बिहँग तरु फिरइ बहोरि बहोरि।
निरखि निरखि रघुबीर छबि बाढ़इ प्रीति न थोरि॥

सीता मृग, पक्षी और वृक्षों को देखने के बहाने बार-बार घूम लेती हैं। राम की छवि देख-देखकर उनकी प्रीति कम नहीं बढ़ रही है।

जानि कठिन सिव चाप बिसूरति ❀ चली राखि उर स्यामल मूरति
प्रभु जब जात जानकी जानी ❀ सुख सनेह सोभा गुन खानी

शिवजी के धनुष को कठोर जानकर बिसूरती (मन में विलाप करती) हुई हृदय में राम की साँवली मूर्ति को रखकर चलीं। प्रभु राम ने जब सुख,

१. बहाना।

स्नेह, शोभा और गुणों की खान जानकी को जाती हुई जाना,

परम प्रेममय मृदु मसि कीन्हीं ❀ चारु चित्त भीतीं लिखि लीन्हीं
गई भवानी भवन बहोरी ❀ बन्दि चरन बोली कर जोरी

तब परम प्रेम की कोमल स्याही बनाकर उनके स्वरूप को सुन्दर चित्तरूपी भीत पर चित्रित कर लिया। सीता फिर पार्वतीजी के मन्दिर में गईं और उनके चरणों की वन्दना करके हाथ जोड़कर बोलीं—

जय जय गिरिवर राज किसोरी ❀ जय महेस मुख चन्द चकोरी
जय गजबदन षड़ानन माता ❀ जगत जननि दामिनि दुति गाता

हे पर्वतराज हिमाचल की कन्या पार्वतीजी ! आपकी जय हो, जय हो ! हे शिवजी के चन्द्रमा ऐसे मुख की चकोरी ! आपकी जय हो ! हे हाथी ऐसे मुखवाले गणेश और छः मुंह वाले स्वामि कार्तिक की माता ! हे जगत् की माता ! विद्युत की-सी प्रभा-युक्त शरीर वाली, आपकी जय हो !

नहिं तव आदि मध्य अवगाना ❀ अमित प्रभाव बेद नहिं जाना
भव[1] भव[2] बिभव पराभव कारिनि ❀ बिस्व बिमोहनि स्वबस बिहारिनि

हे पार्वतीजी ! आपका न आदि है, न मध्य है और न अन्त है। आपके अमित प्रभाव को वेद भी नहीं जानते। आप संसार को उत्पन्न, पालन और नाश करने वाली हैं। आप संसार को मोहित करने वाली और स्वतन्त्र रूप से विहार करने वाली हैं।

दो०— पतिदेवता सुतीय महुँ मातु प्रथम तव रेख।
महिमा अमित न सकहिं कहि सहस सारदा सेख॥

पति को इष्टदेव मानने वाली श्रेष्ठ स्त्रियों में, हे माता ! आपकी प्रथम गणना है। आपकी अपार महिमा को हजारों सरस्वती और शेष भी नहीं कह सकते।

सेवत तोहिं सुलभ फल चारी ❀ बरदायिनी पुरारि पियारी
देबि पूजि पद कमल तुम्हारे ❀ सुर नर मुनि सब होहिं सुखारे

हे वर देने वाली, हे त्रिपुर के शत्रु शिवजी की प्रिय पत्नी पार्वतीजी ! आपकी सेवा करने से चारों फल सुलभ हो जाते हैं। हे देवि ! आपके कमल ऐसे

१. संसार। २. उत्पन्न।



चरणों की पूजा करके देवता, मनुष्य और मुनि सभी सुखी हो जाते हैं।

मोर मनोरथु जानहु नीकें ❀ बसहु सदा उर पुर सबही कें
कीन्हेउँ प्रगट न कारन तेहीं ❀ अस कहि चरन गहे बैदेहीं

मेरे मनोरथ को आप भली-भाँति जानती हैं; क्योंकि आप सदा सबके हृदय-रूपी नगर में निवास करती हैं। इसी से मैंने उसको प्रकट नहीं किया। ऐसा कहकर सीता ने पार्वतीजी के चरण पकड़ लिये।

विनय प्रेम बस भई भवानी ❀ खसी माल मूरति मुसुकानी
सादर सिय प्रसाद सिर धरेऊ ❀ बोली गौरि हरषु हिय भरेऊ

पार्वतीजी सीता के विनय और प्रेम के वश में हो गईं। उनके गले की माला सरक पड़ी और मूर्त्ति मुसकुराई। सीता ने आदर-सहित प्रसाद (माला) को सिर पर धारण किया। तब पार्वती का हृदय हर्ष से भर गया और वे बोलीं—
[सूक्ष्म अलंकार]

सुनु सिय सत्य असीस हमारी ❀ पूजिहि मन कामना तुम्हारी
नारद बचन सदा सुचि साँचा ❀ सो बर मिलिहि जाहि मन राँचा

हे सीता! मेरी सच्ची आसीस सुनो—तुम्हारी मनोकामना पूरी होगी। नारदजी का वचन सदा पवित्र और सत्य होता है। जिसमें तुम्हारा मन लगा है, तुमको वही वर मिलेगा।

छंद—मन जाहिं राचेउ मिलिहि सो बरु सहज सुन्दर साँवरो
करुना निधान सुजान सील सनेहु जानत रावरो॥
एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हिय हरषीं अली।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली॥

जिसमें तुम्हारा मन अनुरक्त होगया है, वही स्वभाव ही से सुन्दर साँवला वर तुमको मिलेगा। वह करुणा के घर और सुजान हैं। तुम्हारे शील और स्नेह को जानते हैं। इस प्रकार पार्वती का आशीर्वाद सुनकर सीता सखियों समेत हृदय में आनन्दित हुईं। तुलसीदासजी कहते हैं—सीता पार्वती को बार-बार पूजकर प्रसन्न मन से राजभवन को गईं।

सो॰ जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जात कहि।
मंजुल मङ्गल मूल बाम अंग फरकन लगे ॥२३६॥

पार्वती को अनुकूल जानकर सीता के हृदय को जो हर्ष हुआ, वह कहा नहीं जा सकता। सुन्दर कल्याण के मूल उनके बायें अंग फड़कने लगे।

हृदय सराहत सीय लोनाई[1] ❀ गुर समीप गवने दोउ भाई
राम कहा सब कौसिक[2] पाहीं ❀ सरल सुभाव छुआ छल नाहीं

हृदय में सीता के सौन्दर्य की प्रशंसा करते हुये दोनों भाई गुरु के पास गये। राम ने विश्वामित्र से सब कुछ कह दिया। क्योंकि उनका स्वभाव सरल है; छल उसे छू भी नहीं गया है।

सुमन पाइ मुनि पूजा कीन्ही ❀ पुनि असीस दुहु भाइन्ह दीन्ही
सुफल मनोरथ होहिं तुम्हारे ❀ राम लषनु सुनि भये सुखारे

फूल पाकर मुनि ने पूजा की। फिर दोनों भाइयों को आशीर्वाद दिया— तुम्हारे मनोरथ सफल हों! यह सुनकर राम-लक्ष्मण सुखी हुये।

करि भोजन मुनिवर बिग्यानी ❀ लगे कहन कछु कथा पुरानी
विगत दिवस गुर आयसु पाई ❀ संध्या करन चले दोउ भाई

श्रेष्ठ विज्ञानी मुनि विश्वामित्र भोजन करके कुछ प्राचीन कथायें कहने लगे। दिन बीत जाने पर, गुरु की आज्ञा पाकर दोनों भाई संध्या करने चले।

प्राची दिसि ससि उगेउ सुहावा ❀ सिय मुख सरिस देखि सुखु पावा
बहुरि विचारु कीन्ह मन माहीं ❀ सीय वदन सम हिमकर नाहीं

पूर्व दिशा में सुन्दर चन्द्रमा उदय हुआ। उसे सीता के मुख के समान देखकर राम ने सुख पाया। फिर उन्होंने मन में विचार किया कि सीता के मुख के समान चन्द्रमा नहीं है।

दो॰ जनम सिन्धु पुनि बन्धु बिष दिन मलीन सकलंक।
सिय मुख समता पाव किमि चन्द बापुरो रंक।२३७।

एक तो उसका जन्म (खारे) समुद्र से हुआ, दूसरे विष उसका भाई; तीसरे वह दिन में मलिन रहता है, चौथे कलङ्क (काले धब्बे) वाला है। भला,

१. लावण्य, सुन्दरता। २. विश्वामित्र।

वह ग़रीब बेचारा चन्द्रमा सीता के मुख की बराबरी कैसे पा सकता है ?

घटइ बढ़इ बिरहिनि दुखदाई ❀ ग्रसइ राहु निज सन्धिहिं पाई
कोक सोकप्रद पंकज द्रोही ❀ अवगुन बहुत चन्द्रमा तोही

फिर वह घटता-बढ़ता है और विरहिणियों को दुख देता है; अपनी संधि में पाकर राहु उसे ग्रस लेता है। वह चकवे को शोक देने वाला और कमल का द्रोही भी है। हे चन्द्रमा! तुममें बहुत से अवगुण हैं। [आक्षेपालङ्कार]

बैदेही मुख पटतर दीन्हे ❀ होइ दोषु बड़ अनुचित कीन्हे
सिय मुख छबि बिधु ब्याज[1] बखानी ❀ गुरु पहँ चले निसा बड़ि जानी

सीता के मुख से तेरी उपमा देने में बड़ा अनुचित करने का दोष लगेगा, चन्द्रमा के बहाने सीता के मुख की छवि का वर्णन करके, रात अधिक हुई जान कर, वे गुरु के पास चले।

करि मुनि चरन सरोज प्रनामा ❀ आयसु पाइ कीन्ह बिस्रामा
बिगत निसा रघुनायक जागे ❀ बन्धु बिलोकि कहन अस लागे

मुनि के कमल ऐसे चरणों को प्रणाम करके, आज्ञा पाकर उन्होंने विश्राम किया। रात बीतने पर रामचन्द्रजी जागे और भाई को देखकर ऐसा कहने लगे—

उयउ अरुन अवलोकहु ताता ❀ पंकज कोक लोक सुखदाता
बोले लषन जोरि जुग पानी ❀ प्रभु प्रभाव सूचक मृदु बानी

हे तात! देखो, सूर्य उदय हुआ है, जो कमल, चक्रवाक और समस्त संसार को सुख देने वाला है। लक्ष्मण दोनों हाथ जोड़कर प्रभु (रामचन्द्र) के प्रभाव को सूचित करने वाली कोमल वाणी बोले—

दो०— **अरुनोदयँ सकुचे कुमुद उडुगन जोति मलीन।**
जिमि तुम्हार आगमन सुनि भये नृपति बलहीन २३८

जिस प्रकार सूर्य के उदय होने से कुई सकुचा गई, तारागणों की ज्योति फीकी पड़ गई; इसी प्रकार आपका आना सुनकर सब राजा बलहीन हो गये हैं।

नृप सब नखत करहिं उँजियारी ❀ टारि न सकहिं चाप तम भारी
कमल कोक मधुकर खग नाना ❀ हरषे सकल निसा अवसाना

सब राजा लोग तारों की तरह टिमटिमा रहे हैं, पर वे धनुष रूपी भारी

---

१. बहाना।

अन्धकार को नहीं टाल सकते। रात बीती हुई जानकर जैसे कमल, चक्रवाक, भौंरा और तरह-तरह के पक्षी हर्षित हो रहे हैं—

ऐसेहिं प्रभु सब भगत तुम्हारे ❀ होइहहिं टूटे धनुष सुखारे
उयउ भानु बिनु स्रम तम नासा ❀ दुरे नखत जग तेजु प्रकासा

हे प्रभो ! इसी प्रकार आपके सब भक्त धनुष टूटने पर सुखी होंगे। सूर्य उदय हुआ; अन्धकार बिना परिश्रम ही के नष्ट हो गया; तारे छिप गये, संसार में तेज का प्रकाश हो गया।

रबि निज उदय ब्याज रघुराया ❀ प्रभु प्रतापु सब नृपन्ह दिखाया
तव भुज बल महिमा उदघाटी[1] ❀ प्रगटी धनु बिघटन परिपाटी

हे रामचन्द्र ! सूर्य ने अपने उदय के बहाने सब राजाओं को प्रभु (आप) का प्रताप दिखलाया है। आपकी भुजाओं के बल की महिमा को खोलकर दिखाने के लिये ही धनुष तोड़ने की प्रथा प्रकट हुई है।

बंधु बचन सुनि प्रभु मुसुकाने ❀ होइ सुचि सहज पुनीत नहाने
नित्य क्रिया करि गुरु पहँ आये ❀ चरन सरोज सुभग सिर नाये

भाई का वचन सुनकर प्रभु रामचन्द्रजी मुसकुराये। फिर स्वभाव ही से पवित्र राम ने शौच से निवृत्त होकर स्नान किया। नित्य-कर्म करके वे गुरु के पास आये। और उन्होंने गुरु के सुन्दर चरण-कमलों में सिर नवाया।

सतानंद तब जनक बोलाये ❀ कौशिक मुनि पहिं तुरत पठाये
जनक बिनय तिन आनि सुनाई ❀ हरषे बोलि लिये दोउ भाई

तब जनक ने शतानन्द को बुलाया और उन्हें तुरन्त ही विश्वामित्र मुनि के पास भेजा। उन्होंने आकर जनक का निवेदन कह सुनाया। विश्वामित्र आनन्दित हुये और उन्होंने दोनों भाइयों को बुलाया।

दो०— सतानन्द पद बन्दि प्रभु बैठे गुरु पहिं जाइ।
चलहु तात मुनि कहेउ तब पठवा जनक बोलाइ।२३९

शतानन्द के पद की वन्दना करके प्रभु रामचन्द्रजी गुरु के पास जा बैठे। तब मुनि ने कहा—हे तात ! चलो, जनक ने बुला भेजा है।

---

१. खोलकर।

सीय स्वयंवरु देखिय जाई ❀ ईस काहि धौं[1] देइ बड़ाई
लषन कहा जस भाजन सोई ❀ नाथ कृपा तव जापर होई

चलकर सीता का स्वयंवर देखना चाहिये। देखें, ईश्वर किसे बड़ाई देते हैं। लक्ष्मण ने कहा—हे नाथ! जिस पर आपकी कृपा होगी, वही यश का पात्र होगा।

हरषे मुनि सब सुनि बर बानी ❀ दीन्हि असीस सबहिं सुख मानी
पुनि मुनिबृन्द समेत कृपाला ❀ देखन चले धनुष मख साला

इस श्रेष्ठ वाणी को सुनकर सब मुनि आनन्दित हुये। सब ने सुख मानकर आशीर्वाद दिया। तब कृपालु रामचंद्रजी मुनियों के समूह-सहित धनुष-यज्ञ का स्थान देखने चले।

रंग भूमि आये दोउ भाई ❀ असि सुधि सब पुरबासिन्ह पाई
चले सकल गृह काज बिसारी ❀ बाल जुबान जरठ नर नारी

जब दोनों भाई रङ्गभूमि में आये और नगर के सब निवासियों ने ऐसी खबर पाई, तब वे बालक, जवान और बूढ़े सभी स्त्री-पुरुष घर का काम-काज छोड़कर दौड़ पड़े।

देखी जनक भीर भइ भारी ❀ सुचि सेवक सब लिये हँकारी
तुरत सकल लोगन्ह पहिं जाहू ❀ आसन उचित देहु सब काहू

जब जनक ने देखा कि बड़ी भीड़ हो गई है, तब उन्होंने सब कुशल सेवकों को बुलवा लिया और कहा—तुम लोग जल्दी ही सब लोगों के पास जाओ और सबको यथायोग्य आसन दो।

दो०— कहि मृदु बचन बिनीत तिन्ह बैठारे नर नारि।
उत्तम मध्यम नीच लघु निज निज थल अनुहारि॥

उन सेवकों ने कोमल और नम्र वचन कहकर उत्तम, मध्यम, नीच और लघु सब श्रेणी के पुरुष-स्त्रियों को अपने-अपने योग्य स्थान पर बैठाया।

राजकुँअर तेहि अवसर आये ❀ मनहुँ मनोहरता छबि छाये
गुन सागर नागर बर बीरा ❀ सुन्दर स्यामल गौर सरीरा

उसी अवसर में राजकुमार आये। मानो सौन्दर्य ही का शरीर शोभित है।

---

१. न जाने।

सुन्दर साँवले और गोरे शरीर वाले वे दोनों गुण के समुद्र, सुसभ्य और बड़े वीर थे।

राज समाज विराजत रूरे ❀ उडुगन महुँ जनु जुग विधु पूरे
जिन्ह कें रही भावना जैसी ❀ प्रभु मूरति तिन्ह देखी तैसी

वे राज-समाज में ऐसे सुशोभित हो रहे हैं, जैसे तारागणों के समूह में दो पूर्ण चन्द्रमा हों। जिनकी जैसी भावना थी, प्रभु की मूर्त्ति को उन्होंने वैसी ही देखा।

देखहिं भूप महा रनधीरा ❀ मनहुँ वीर रस धरे सरीरा
डरे कुटिल नृप प्रभुहि निहारी ❀ मनहुँ भयानक मूरति भारी

राजा लोग उन्हें महा रणधीर देख रहे हैं। मानो वीर-रस स्वयं शरीर धारण किये हुये है। दुष्ट राजा प्रभु को देखकर डर गये। मानो बड़ी भयानक मूर्त्ति हो।

रहे असुर छल छोनिप[1] वेषा ❀ तिन्ह प्रभु प्रगट काल सम देखा
पुरबासिन्ह देखे दोउ भाई ❀ नरभूषन लोचन सुखदाई

छल से जो राक्षस वहाँ राजाओं के वेष में बैठे थे, उन्होंने प्रभु को प्रत्यक्ष काल के समान देखा। नगर-निवासियों ने दोनों भाइयों को मनुष्यों के भूषण रूप और नेत्रों को सुख देने वाला देखा।

दो० नारि बिलोकहिं हरषि हिय निज निज रुचि अनुरूप।
जनु सोहत शृंगार धरि मूरति परम अनूप ॥२४१॥

स्त्रियाँ हृदय में हर्षित होकर अपनी-अपनी रुचि के अनुसार देख रही हैं। मानो शृङ्गार रस ही परम अनुपम मूर्त्ति धरकर सुशोभित हो रहा है।

बिदुषन्ह[2] प्रभु बिराटमय दीसा ❀ बहु मुख कर पग लोचन सीसा
जनक जाति अवलोकहिं कैसें ❀ सजन सगे प्रिय लागहिं जैसें

विद्वानों को प्रभु विराट रूप में दिखाई दिये, जिसके बहुत-से मुख, हाथ, पैर, नेत्र और शिर हैं। जनक के सजातीय (कुटुम्बी) लोग प्रभु को किस प्रकार देखते हैं, जैसे सगे सजन (सम्बन्धी) प्रिय लगते हैं।

---

१. राजा। २. विद्वानों को।



सहित विदेह बिलोकहिं रानी ❀ सिसु सम प्रीति न जाति बखानी
जोगिन्ह परम तत्त्वमय भासा ❀ सांत सुद्ध सम सहज प्रकासा

जनक-सहित रानियाँ प्रभु को शिशु के समान देख रही हैं। उनकी प्रीति का बखान नहीं हो सकता। योगियों को वे शान्त, शुद्ध, सम और स्वतः प्रकाशमान परम तत्त्व के रूप में दिखाई पड़े।

हरि भगतन्ह देखे दोउ भ्राता ❀ इष्टदेव इव सब सुख दाता
रामहिं चितव भाव जेहि सीया ❀ सो सनेहु सुखु नहिं कथनीया

हरि-भक्तों ने दोनों भाइयों को सब सुखों के देने वाले इष्टदेव के समान देखा। सीता राम को जिस भाव से देख रही हैं, वह स्नेह और सुख तो कहने ही में नहीं आता।

उर अनुभवति न कहि सक सोऊ ❀ कवन प्रकार कहइ कबि कोऊ
जेहि बिधि रहा जाहि जस भाऊ ❀ तेहिं तस देखेउ कोसलराऊ

उस स्नेह और सुख को वे मन ही मन अनुभव कर रही हैं, पर वे भी उसे कह नहीं सकतीं। फिर भला, कवि उसे किस प्रकार कहे? इस प्रकार जिसका जैसा भाव था, उसने रामचन्द्रजी को वैसा ही देखा। [प्रथम उल्लेख अलंकार]

दो०—राजत राज समाज महँ कोसलराज किसोर।
सुन्दर स्यामल गौर तनु बिस्व बिलोचन चोर २४२

सुन्दर साँवले और गोरे शरीर वाले तथा विश्व-भर की आँखों को चुराने वाले अयोध्या के राजकुमार इस प्रकार राजसभा में सुशोभित हो रहे हैं।

सहज मनोहर मूरति दोऊ ❀ कोटि काम उपमा लघु सोऊ
सरद चन्द निन्दक मुख नीके ❀ नीरज नयन भावते[1] जी के

दोनों मूर्त्तियाँ स्वभाव ही से मनोहर हैं। उनके लिये करोड़ों कामदेव की उपमा भी तुच्छ है। उनके सुन्दर मुँह शरद-ऋतु के चन्द्रमा का भी उपहास करने वाले हैं। और कमल ऐसे नेत्र जी के प्यारे हैं।

चितवनि चारु मार मनु हरनी ❀ भावति हृदय जाति नहिं बरनी
कल कपोल स्रुति कुण्डल लोला[2] ❀ चिबुक अधर सुन्दर मृदु बोला

राम की सुन्दर चितवन कामदेव के मन को भी हरने वाली है। वह हृदय

१. प्यारे। २. चंचल।

को बहुत ही प्रिय लगती है। उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। सुन्दर गाल हैं, कानों में चञ्चल कुण्डल हैं। ठुड्डी और ओंठ सुन्दर हैं। वाणी कोमल है।

कुमुद बन्धु कर निन्दक हाँसा ❀ भृकुटी विकट मनोहर नासा
भाल बिसाल तिलक झलकाहीं ❀ कच[1] बिलोकि अलि अवलि लजाहीं

हँसी चन्द्रमा की किरणों का उपहास करने वाली है। भौंहें टेढ़ी और नासिका मनोहर है। चौड़े माथे पर तिलक झलक रहा है। बालों को देखकर भौरों की पंक्तियाँ भी लजा जाती हैं।

पीत चौतनी सिरन्हि सुहाई ❀ कुसुम कली बिच बीच बनाई
रेखा रुचिर कम्बु कल ग्रीवाँ ❀ जनु त्रिभुवन सुषमा की सीवाँ

पीले रंग की चौकोनी टोपी सिरों पर सुशोभित हैं। उसमें बीच-बीच में फूल की कलियाँ काढ़ी हुई हैं। शंख के समान सुन्दर गले में सुन्दर तीन रेखायें हैं। जो मानो तीनों भुवनों की सुन्दरता की सीमा ही हैं।

दो॰ कुञर मनि कंठा कलित उरन्हि तुलसिका माल।
वृषभ कंध केहरि ठवनि बल निधि बाहुबिसाल।२४३।

छाती पर गजमुक्ताओं के सुन्दर कंठे और तुलसी की मालायें हैं। उनके कंधे बैलों के कंधों की तरह और ऐंड़ (खड़े होने की शान) सिंह के समान है, वे बल के भंडार हैं, और उनकी भुजायें लम्बी हैं।

कटि तूनीर पीत पट बाँधे ❀ कर सर धनुष बाम वर काँधे
पीत जग्य उपबीत सोहाए ❀ नख सिख मंजु महाछवि छाए

कमर में वे तरकस और पीताम्बर बाँधे हैं। हाथों में बाण और बाँयें सुन्दर कंधों पर श्रेष्ठ धनुष तथा पीले यज्ञोपवीत शोभायमान हैं। नख से लेकर शिखा तक उनके सारे अंग सुन्दर हैं और उन पर बड़ी छवि छाई हुई है।

देखि लोग सब भये सुखारे ❀ एकटक लोचन टरत न टारे
हरषे जनकु देखि दोऊ भाई ❀ मुनि पद कमल गहे तब जाई

उनको देखकर सब लोग सुखी हुये। एकटक देखते हुये नेत्र टालने से भी नहीं टलते हैं। जनक दोनों भाइयों को देखकर हर्षित हुये। और उन्होंने जाकर मुनि के कमल ऐसे चरण पकड़ लिये।

---

१. बाल।

करि बिनती निज कथा सुनाई ❀ रंगअवनि सब मुनिहि देखाई
जहँ जहँ जाहिं कुअँर बर दोऊ ❀ तहँ तहँ चकित चितव सब कोऊ

विनती करके उन्होंने अपनी कथा कह सुनाई और मुनि को सारी रंगभूमि दिखलाई। मुनि के साथ जहाँ-जहाँ दोनों श्रेष्ठ राजकुमार जाते हैं, वहाँ-वहाँ सब लोग आश्चर्य-चकित होकर देखने लगते हैं।

निज निज रुख रामहिं सब देखा ❀ कोउ न जान कछु मरमु बिसेखा
भलि रचना मुनि नृप सन कहेऊ ❀ राजा मुदित महासुख लहेऊ

सबने राम को अपनी ही ओर रुख (मुख) किये हुये देखा, परंतु इसके विशेष रहस्य कोई न जान सका। मुनि ने राजा से कहा—रचना अच्छी है। सुनकर राजा ने हर्षित होकर अत्यन्त सुख पाया।

दो०—सब मंचन्ह तें मंचु एक सुन्दर बिसद बिसाल।
मुनि समेत दोउ बंधु तहँ बैठारे महिपाल ॥२४४॥

सब मञ्चों से एक मञ्च अधिक सुन्दर, लम्बा-चौड़ा और बड़ा था। स्वयं राजा ने मुनि-सहित दोनों भाइयों को वहाँ ले जाकर बैठाया।

प्रभुहि देखि सब नृप हियँ हारे ❀ जनु राकेस उदय भयें तारे
अस प्रतीति सबके मन माहीं ❀ राम चाप तोरब सक[1] नाहीं

प्रभु रामचन्द्रजी को देखकर सब राजा हृदय में ऐसे हार मान गये, जैसे पूर्ण चन्द्रमा के उदय होने पर तारे (प्रभाहीन) हो जाते हैं। सबके मन में ऐसा विश्वास हो गया कि राम धनुष को तोड़ेंगे, इसमें संदेह नहीं।

बिनु भंजेहु भव धनुष बिसाला ❀ मेलिहि सीय राम उर माला
अस बिचारि गवनहु घर भाई ❀ जसु प्रतापु बलु तेजु गँवाई

और शिवजी के विशाल धनुष को बिना तोड़े भी सीता राम ही के गले में जयमाला डाल देंगी। हे भाई! ऐसा समझकर यश, प्रताप, बल और तेज गँवाकर चलो, अपने-अपने घर चलें।

बिहँसे अपर भूप सुनि बानी ❀ जे अबिबेक अंध अभिमानी
तोरेहुँ धनुषु ब्याहु अवगाहा ❀ बिनु तोरें को कुअँरि बिआहा

दूसरे राजा जो अविवेक से अंधे हो रहे थे और अभिमानी थे, यह बात

१. शक, संदेह।

सुनकर बहुत हँसे। उन्होंने कहा—धनुष तोड़ने पर भी विवाह होना अथाह (कठिन) है। फिर बिना तोड़े कौन राजकुमारी को व्याह सकता है।

एक बार कालउ किन होऊ ❀ सिय हित समर जितब हम सोऊ
यह सुनि अपर भूप मुसुकाने ❀ धरमसील हरिभगत सयाने

एक बार तो काल ही क्यों न हो, सीता के लिये हम उसे भी युद्ध में जीतेंगे। यह सुनकर दूसरे राजा, जो धर्मात्मा, हरि-भक्त और सयाने थे, मुसकुराये।

सो०— सीय बिआहबि राम गरब दूरि करि नृपन्ह के।
जीति को सक संग्राम दसरथ के रन बाँकुरे॥२३५॥

उन्होंने कहा—राजाओं के गर्व को दूर करके राम सीता को व्याहेंगे। महाराज दशरथ के रण में बाँके वीरों को युद्ध में कौन जीत सकता है?

बृथा मरहु जनि गाल बजाई ❀ मन मोदकन्हि[1] कि भूख बुताई
सिख हमार सुनि परम पुनीता ❀ जगदम्बा जानहु जियँ सीता

गाल बजाकर (बकबक करके) व्यर्थ ही मत मरो। मन के लड्डुओं से भी कहीं भूख बुझती है? हमारी परम पवित्र सीख को सुनकर जी में सीता को जगत् की माता समझो।

जगत पिता रघुपतिहि बिचारी ❀ भरि लोचन छबि लेहु निहारी
सुन्दर सुखद सकल गुनरासी ❀ ए दोउ बंधु संभु उर बासी

तथा रामचन्द्रजी को जगत् का पिता विचारकर, आँखें भरकर उनकी शोभा देख लो। सुन्दर सुख देने वाले और सब गुणों की राशि ये दोनों भाई शिवजी के हृदय में बसने वाले हैं।

सुधा समुद्र समीप बिहाई ❀ मृग जलु निरखि मरहु कत धाई
करहु जाइ जा कहँ जोइ भावा ❀ हम तौ आजु जनम फल पावा

समीप आये हुये अमृत के समुद्र को छोड़कर तुम मृगजल देखकर दौड़-कर क्यों मरते हो? फिर भाई जिसे जो अच्छा लगे, वही जाकर वह करे; हमने तो आज जन्म लेने का फल पा लिया।

अस कहि भले भूप अनुरागे ❀ रूप अनूप बिलोकन लागे
देखहिं सुर नभ चढ़े बिमाना ❀ बरषहिं सुमन करहिं कल गाना

---

१. लड्डू।



ऐसा कहकर अच्छे राजा प्रेम-मग्न हो गये और राम का अनुपम रूप देखने लगे। देवता आकाश में विमानों पर चढ़े हुये दर्शन कर रहे हैं, फूल बरसा रहे हैं और सुन्दर गान कर रहे हैं।

दो०—जानि सुअवसरु सीय तब पठई जनक बोलाइ।
चतुर सखीं सुन्दर सकल सादर चलीं लवाइ ॥२४६॥

तब सुअवसर जानकर जनक ने सीता को बुला भेजा। सब चतुर और सुन्दर सखियाँ आदर-सहित उन्हें लिवा चलीं।

सिय सोभा नहिं जाइ बखानी ❀ जगदंबिका रूप गुन खानी
उपमा सकल मोहि लघु लागीं ❀ प्राकृत नारि अंग अनुरागीं

सीता की शोभा का वर्णन नहीं हो सकता। वे जगत् की माता और रूप और गुणों की खान हैं। मुझे उनके लिये सब उपमायें तुच्छ लगती हैं, क्योंकि वे लौकिक स्त्रियों के अङ्गों से अनुराग रखने वाली हैं।

सिय बरनिअ तेइ उपमा देई ❀ कुकबि कहाइ अजसु को लेई
जौं पटतरिअ तीय महँ सीया ❀ जग असि जुबति कहाँ कमनीया

सीता के वर्णन में उन्हीं उपमाओं को देकर कौन कुकवि कहलाये और अपयश ले। यदि साधारण स्त्रियों से सीता की तुलना की जाय, तो संसार में ऐसी सुन्दर युवती हैं ही कहाँ? [काव्यलिङ्ग अलङ्कार]

गिरा मुखर तनु अरध भवानी ❀ रति अति दुखित अतनु पति जानी
बिष बारुनी[1] बंधु प्रिय जेही ❀ कहिअ रमा सम किमि बैदेही

सरस्वती तो बकवादिनी हैं, पार्वती अर्द्धाङ्गिनी हैं, कामदेव की स्त्री रति पति को विना शरीर का जानकर बहुत दुःखित रहती है। और जिसे विष और शराव ऐसे भाई प्रिय हैं, उन लक्ष्मी के समान सीता को कैसे कह सकते हैं?

जौं छबि सुधा पयोनिधि होई ❀ परम रूप मय कच्छप सोई
सोभा रजु मंदरु सिंगारू ❀ मथइ पानि पंकज निज मारू

यदि छविरूपी अमृत का समुद्र हो, अत्यन्त रूप ही कच्छप हो, शोभा-रूपी रस्सी और शृङ्गार पर्वत हो और स्वयं कामदेव अपने कर-कमल से मथे—

१. शराव।

दो० एहि बिधि उपजै लच्छि[1] जब सुंदरता सुख मूल ।
तदपि सकोच समेत कबि कहहिं सीय सम तूल[2] ।२४७

इस प्रकार से जब सुन्दरता और सुख की मूल लक्ष्मी उत्पन्न हो, तो भी उसे संकोच के साथ कवि लोग सीता के समान कहेंगे । [दूसरा उल्लेख अलंकार]

चलीं संग लै सखी सयानी ❀ गावत गीत मनोहर बानी
सोह नवल तनु सुंदर सारी ❀ जगत जननि अतुलित छबि भारी

सयानी सखियाँ सीता को साथ लेकर मनोहर वाणी से गीत गाती हुई चलीं । सीता के नवल शरीर पर सुन्दर साड़ी सुशोभित है । जगत्-जननी की महान् छवि अतुलनीय है ।

भूषन सकल सुदेस सुहाए ❀ अंग अंग रचि सखिन्ह बनाए
रंगभूमि जब सिय पगु धारी ❀ देखि रूप मोहे नर नारी

सब आभूषण अपने-अपने स्थान पर शोभित हैं । सखियों ने अंग-अंग में भली-भाँति सजाकर पहनाया है । जब सीता ने रंगभूमि में पैर रक्खा, तब उनका रूप देखकर स्त्री-पुरुष सभी मोहित हो गये ।

हरषि सुरन्ह दुंदुभी बजाई ❀ बरषि प्रसून अपछरा गाई
पानि सरोज सोह जयमाला ❀ अवचट चितए सकल भुआला

देवताओं ने हर्षित होकर नगाड़े बजाये और फूल बरसाकर अप्सरायें गाने लगीं । सीता के कमल ऐसे हाथों में जयमाला शोभित है । सब राजा चकित होकर अचानक उनकी ओर देखने लगे ।

सीय चकित चित रामहि चाहा ❀ भये मोहबस सब नरनाहा
मुनि समीप देखे दोउ भाई ❀ लगे ललकि लोचन निधि पाई

सीता का चकित चित्त तो राम को चाहता है । सब राजा लोग मोह के वश हो गये । सीता ने मुनि के पास दोनों भाइयों को देखा, तो उनके नेत्र अपना खजाना पाकर ललककर वहीं जा लगे ।

दो० गुर जन लाज समाज बड़ देखि सीय सकुचानि ।
लगीं बिलोकन सखीन्ह तन रघुबीरहिं उर आनि ।२४८

१. लक्ष्मी । २. तुल्य ।

गुरुजनों की लाज से और बड़े समाज को देखकर सीता सकुचा गईं। वे रामचन्द्रजी को हृदय में लाकर सखियों की ओर देखने लगीं।

राम रूपु अरु सिय छवि देखें ❀ नर नारिन्ह परिहरीं निमेषें[1]
सोचहिं सकल कहत सकुचाहीं ❀ बिधि सन बिनय करहिं मन माहीं

राम का रूप और सीता की छवि देखकर स्त्री-पुरुषों ने पलक भाँजना छोड़ दिया। सब मन ही मन सोचते हैं, पर कहते हुये सकुचाते हैं। मन में वे ब्रह्मा से विनय करते हैं—

हरु बिधि बेगि जनक जड़ताई ❀ मति हमारि असि देहि सुहाई
बिनु बिचार पनु तजि नरनाहू ❀ सीय राम कर करै बिबाहू

हे ब्रह्मा! शीघ्र ही जनक की जड़ता को हर लो और हमारी ऐसी सुहावनी बुद्धि उन्हें दो कि बिना ही विचार किये, प्रण छोड़कर, वे सीता का विवाह राम से कर दें।

जगु भल कहिहि भाव सब काहू ❀ हठ कीन्हे अन्तहु उर दाहू
एहि लालसा मगन सब लोगू ❀ बरु साँवरो जानकी जोगू

संसार उन्हें अच्छा कहेगा, क्योंकि सबको अच्छा लग रहा है। हठ करने से अन्त में हृदय में जलन ही होगी। सब लोग इसी लालसा में मग्न हो रहे हैं कि जानकी के योग्य वर यह साँवला ही है।

तब बंदीजन जनक बोलाए ❀ बिरदावली कहत चलि आये
कह नृपु जाइ कहहु पन मोरा ❀ चले भाँट हियँ हरष न थोरा

तब राजा जनक ने बन्दीजनों (भाटों) को बुलाया। वे वंश की कीर्ति गाते हुये चले आये। राजा ने कहा—जाकर मेरा प्रण कहो। भाट चले। उनके हृदय में कम आनन्द नहीं था।

दो० बोले बंदी[2] बचन बर सुनहु सकल महिपाल।
पन बिदेह कर कहहिं हम भुजा उठाइ बिसाल।२४९

भाटों ने श्रेष्ठ वचन कहा—हे सब राजागण! सुनिये। हम अपनी विशाल भुजा उठाकर महाराज जनक का प्रण कहते हैं।

---

१ पलक गिराना। २. भाट।

नृप भुजबल बिधु सिव धनु राहू ❀ गरुअ कठोर बिदित सब काहू
रावन बान महाभट भारे ❀ देखि सरासन गवहिं सिधारे

राजाओं की भुजाओं का बल चन्द्रमा है, शिवजी का धनुष राहु है; बड़ा भारी है, कठोर है यह सबको मालूम है। रावण और बाणासुर बड़े भारी योद्धा भी इस धनुष को देखकर चुपके-से चलते बने।

सोइ पुरारि कोदण्ड[1] कठोरा ❀ राज समाज आजु जोइ तोरा
त्रिभुवन जय समेत बैदेही ❀ बिनहिं बिचार बरइ हठि तेही

शिवजी के उसी कठोर धनुष को आज राजसभा में जो तोड़ेगा, तीनों लोकों की विजय के साथ ही सीता उसको बिना किसी विचार के, हठपूर्वक वरण करेंगी।

सुनि पन सकल भूप अभिलाषे ❀ भट मानी अतिसय मन माषे
परिकर बाँधि उठे अकुलाई ❀ चले इष्टदेवन्ह सिरु नाई

प्रण सुनकर सब राजा ललचा उठे। जो अभिमानी योद्धा थे, वे मन में बहुत ही जोश में आये। सब कमर कसकर, अकुलाकर उठे और अपने इष्टदेवों को प्रणाम करके चले।

तमकि ताकि तकि सिव धनु धरहीं ❀ उठइ न कोटि भाँति बल करहीं
जिन्ह के कछु बिचार मन माहीं ❀ चाप समीप महीप न जाहीं

वे किचकिचाकर और दृष्टि जमाकर शिवजी के धनुष को पकड़ते हैं; पर करोड़ों भाँति से ज़ोर लगाने पर भी वह उठता नहीं है। जिन राजाओं के मन में कुछ विवेक है, वे धनुष के पास ही नहीं जाते।

दो० तमकि धरहिं धनु मूढ़ नृप उठइ न चलहिं लजाइ।
मनहुँ पाइ भट बाहु बल अधिक अधिक गरुआइ॥२५०

मूढ़ राजा किचकिचाकर धनुष को पकड़ते हैं, परंतु जब वह नहीं उठता तो लजाकर चले जाते हैं। मानो वीरों की भुजाओं का बल पाकर वह धनुष और भी भारी हो जाता है।

भूप सहस दस एकहि बारा ❀ लगे उठावन टरइ न टारा
डगइ न संभु सरासन कैसें ❀ कामी बचन सती मनु जैसें

---

१. धनुष।



तब दस हज़ार राजा एक ही बार धनुष को उठाने लगे, तौ भी वह टालने से नहीं टलता। शंभु का वह धनुष इस प्रकार नहीं डिगता था, जैसे कामी पुरुष के वचन से सती का मन नहीं चलायमान होता।

सब नृप भये जोगु उपहासी ❀ जैसें बिनु बिराग संन्यासी
कीरति बिजय बीरता भारी ❀ चले चाप कर बरबस हारी

सब राजा उपहास के योग्य हो गये, जैसे वैराग्य के बिना संन्यासी हँसी के योग्य हो जाता है। कीर्ति, विजय, बड़ी वीरता इन सबको वे धनुष के हाथों बरबस हारकर चले गये।

स्रीहत भये हारि हियँ राजा ❀ बैठे निज निज जाइ समाजा
नृपन्ह बिलोकि जनकु अकुलाने ❀ बोले बचन रोष जनु साने

राजा लोग हृदय में हार मानकर श्रीहीन हो गये, और अपने-अपने समाज में जा बैठे। राजाओं को देखकर जनक अकुला उठे और क्रोध में सने हुये-से वचन बोले—

दीप दीप के भूपति नाना ❀ आये सुनि हम जो पन ठाना
देव दनुज धरि मनुज सरीरा ❀ बिपुल बीर आये रनधीरा

मैंने जो प्रण ठाना था, उसे सुनकर द्वीप-द्वीप के अनेकों राजा आये। देवता और राक्षस भी मनुष्य का शरीर धारण करके तथा और भी बहुत-से रणधीर वीर आये।

दो०— कुँअरि मनोहर बिजय बड़ि कीरति अति कमनीय।
पावनिहार बिरंचि जनु रचेउ न धनु दमनीय॥२५१॥

मन को हरने वाली कन्या, बड़ी विजय और अत्यन्त सुन्दर कीर्ति को पाने वाला, धनुष को तोड़ने वाला मानो ब्रह्मा ने किसी को रचा ही नहीं।

कहहु काहि यह लाभु न भावा ❀ काहुँ न संकर चाप चढ़ावा
रहउ चढ़ाउब तोरब भाई ❀ तिलु भरि भूमि न सकेउ छुड़ाई

कहिये, यह लाभ किसे नहीं रुचता था ? किसी ने भी शिवजी का धनुष नहीं चढ़ाया। अरे भाई ! चढ़ाना और तोड़ना तो अलग रहा, कोई तिल भर भूमि भी छुड़ा न सका।

अब जनि कोउ माषइ भट मानी ❀ वीर विहीन मही मैं जानी
तजहु आस निज निज गृह जाहू ❀ लिखा न विधि वैदेहि विवाहू

अब कोई वीरता का अभिमानी बुरा न माने। मैंने पृथ्वी को विना वीर की जान लिया। अब आशा छोड़कर अपने-अपने घर जाओ; ब्रह्मा ने सीता का विवाह लिखा ही नहीं।

सुकृत जाइ जौं पन परिहरऊँ ❀ कुअँरि कुआँरि रहइ का करऊँ
जौ जनतेउँ बिनु भट[1] भुइँ भाई ❀ तौ पन करि होतेउँ न हँसाई

प्रण छोड़ता हूँ, तो पुण्य जाता है; कन्या कुमारी रहे, तो अब क्या करूँ? यदि मैं जानता कि पृथ्वी बिना वीर की है, तो प्रण करके उपहास का पात्र न बनता।

जनक बचन सुनि सब नर नारी ❀ देखि जानकिहि भये दुखारी
माषे लखन कुटिल भइँ भौंहें ❀ रदपट[2] फरकत नयन रिसौंहें

जनकजी की बात सुनकर सब स्त्री-पुरुष जानकी की ओर देखकर खिन्न हुये। परन्तु लक्ष्मण जोश में आये, उनकी भौंहें टेढ़ी हो गईं। ओंठ फड़कने लगे और नेत्र क्रोधित हो गये।

दो० कहि न सकत रघुबीर डर लगे बचन जनु बान।
नाइ राम पद कमल सिरु बोले गिरा प्रमान ॥२५२॥

राम के डर से कुछ कह नहीं सकते हैं, पर जनक के वचन उन्हें बाण की तरह लगे। फिर भी राम के कमल ऐसे चरणों में सिर नवाकर वे ज़ोरदार वचन बोले—

रघुबंसिन्ह महँ जहँ कोउ होई ❀ तेहिं समाज अस कहइ न कोई
कही जनक जसि अनुचित बानी ❀ बिद्यमान रघुकुलमनि जानी

रघुवंशियों में जहाँ कहीं कोई होता है, उस समाज में ऐसा कोई कह नहीं सकता—जैसे अनुचित वचन रघुकुल के शिरोमणि राम को मौजूद जानते हुये भी जनकजी ने कहे हैं।

सुनहु भानुकुल पंकज भानू ❀ कहउँ सुभाव न कछु अभिमानू
जौं तुम्हारि अनुसासन पावौं ❀ कंदुक इव ब्रह्मांड उठावौं

१. वीर। २. ओंठ।



हे सूर्य-कुलरूपी कमल के सूर्य ! सुनिये। मैं स्वभाव ही से कहता हूँ, कुछ अभिमान करके नहीं; यदि आपकी आज्ञा पाऊँ, तो मैं ब्रह्मांड को गेंद की तरह उठा लूँ।

काँचे घट जिमि डारौं फोरी ❀ सकउँ मेरु मूलक[1] इव तोरी
तव प्रताप महिमा भगवाना ❀ का बापुरो पिनाक पुराना

और उसे कच्चे घड़े की तरह फोड़ डालूँ। मैं सुमेरु पर्वत को मूली की तरह तोड़ सकता हूँ। हे भगवान् ! आपके प्रताप की महिमा से यह बेचारा पुराना धनुष क्या है ?

नाथ जानि अस आयसु होऊ ❀ कौतुक करौं बिलोकिअ सोऊ
कमल नाल जिमि चाप चढ़ावौं ❀ जोजन सत प्रमान लै धावौं

ऐसा जानकर हे नाथ ! आज्ञा हो, तो कुछ खेल करूँ। उसे भी देखिये। धनुष को कमल की डंडी की तरह चढ़ाकर उसे सौ योजन तक लेकर दौड़ूँ।

दो॰ तोरौं छत्रक दण्ड जिमि तव प्रताप बल नाथ।
जौं न करौं प्रभु पद सपथ कर न धरौं धनु भाथ।२५३

हे नाथ ! आपके प्रताप के बल से धनुष को कुकर-मुत्ते की डंठल की तरह तोड़ दूं। यदि ऐसा न करूँ, तो प्रभु के चरणों की शपथ है, फिर मैं धनुष और तरकस को कभी हाथ में भी न लूँगा।

लषन सकोप बचन जब बोले ❀ डगमगानि महि दिग्गज डोले
सकल लोक सब भूप डेराने ❀ सिय हियँ हरष जनकु सकुचाने

जब लक्ष्मण क्रोध-सहित वचन बोले, तब पृथ्वी डगमगा उठी और दिशाओं के हाथी काँप उठे। सब लोकों के सब राजा लोग डर गये; सीता के हृदय में आनन्द आ गया और जनक भी लजा गये। [प्रथम व्याघात अलंकार]

गुर रघुपति सब मुनि मन माहीं ❀ मुदित भये पुनि पुनि पुलकाहीं
सयनहिं रघुपति लषनु निवारे ❀ प्रेम समेत निकट बैठारे

गुरु विश्वामित्रजी राम और सब मुनि मन में हर्षित हुये और बार-बार पुलकित होने लगे। राम ने इशारे से लक्ष्मण को रोका और प्रेम-सहित उनको पास बैठा लिया।

---

१. मूली।

विस्वामित्र समय सुभ जानी ❀ बोले अति सनेह मय बानी
उठहु राम भंजहु भव चापा ❀ मेटहु तात जनक परितापा

विश्वामित्र अच्छा समय जानकर बहुत स्नेह से युक्त वाणी बोले—हे राम ! उठो, शिव का धनुष तोड़ो और हे तात ! जनक का दुःख मिटाओ ।

सुनि गुरु बचन चरन सिरु नावा ❀ हरष बिषाद न कछु उर आवा
ठाढ़ भये उठि सहज सुभायें ❀ ठवनि जुआ मृगराजु[1] लजायें

गुरु के वचन सुनकर राम ने उनके चरणों में सिर नवाया। उनके मन में न हर्ष हुआ न विषाद। सहज स्वभाव ही से वे उठकर खड़े हो गये। उनकी ऐंड (खड़े होने की शान) से जवान सिंह भी लज्जित हो जाय।

दो॰— उदित उदय गिरि मंच पर रघुबर बाल पतंग ।
बिकसे संत सरोज सब हरषे लोचन भृङ्ग ॥२५४॥

मंचरूपी उदयाचल पर रामरूपी बाल-सूर्य को उदित देखकर सब संतरूपी कमल विकसित हुये और नेत्ररूपी भौंरे हर्षित हो गये। [रूपक अलंकार]

नृपन्ह केरि आसा निसि नासी ❀ बचन नखत अवली न प्रकासी
मानी महिप कुमुद सकुचाने ❀ कपटी भूप उलूक लुकाने

राजाओं की आशारूपी रात नष्ट हो गई। उनके वचनरूपी तारों के समूह का चमकना भी बंद हो गया। अभिमानी राजारूपी कुमुद मुँद गये और कपटी राजारूपी उल्लू छिप गये।

भये बिसोक कोक मुनि देवा ❀ बरषहिं सुमन जनावहिं सेवा
गुर पद बन्दि सहित अनुरागा ❀ राम मुनिन्ह सन आयसु माँगा

मुनि और देवतारूपी चकवे शोकरहित हो गये। देवता फूल बरसा रहे हैं और अपना सेवा-भाव प्रकट कर रहे हैं। प्रेम-सहित गुरु के चरणों की वन्दना करके राम ने मुनियों से आज्ञा माँगी। [ऊपर के दोहे से 'भये बिसोक कोक मुनि देवा' तक साङ्ग रूपक।]

सहजहि चले सकल जग स्वामी ❀ मत्त मंजु वर कुञ्जर गामी
चलत राम सब पुर नर नारी ❀ पुलक पूरि तन भए सुखारी

सारे संसार के स्वामी और सुन्दर मतवाले श्रेष्ठ हाथी की तरह चलने वाले

---

१. सिंह ।

राम अपनी स्वाभाविक गति से चले। राम के चलते समय जनकपुर के सब स्त्री-पुरुषों के शरीर पुलकायमान हो गये और वे सुखी हुये।

बंदि पितर सब सुकृत सँभारे ❀ जौं कछु पुन्य प्रभाउ हमारे
तौं सिव धनु मृनाल[1] की नाईं[2] ❀ तोरहिं रामु गनेस गोसाईं

उन्होंने पितरों की वन्दना की और सब पुण्यों का स्मरण किया कि जो हमारे पुण्यों का कुछ भी प्रभाव हो, तो हे गणेश गोसाईं! राम शिवजी के धनुष को कमल के नाल की तरह तोड़ डालें।

दो०—**रामहिं प्रेम समेत लखि सखिन्ह समीप बोलाइ।**
सीता मातु सनेह बस बचन कहै बिलखाइ।२५५।

राम को प्रेम-सहित देखकर और सखियों को समीप बुलाकर सीता की माता स्नेह के वश होकर, विलाप करती हुई-सी, कहने लगीं—

सखि सब कौतुक देखनिहारे ❀ जेउ कहावत हितू हमारे
कोउ न बुझाइ कहइ गुर पाहीं ❀ ए बालक असि हठ भलि नाहीं

हे सखि! ये जो हमारे हितू कहलाते हैं, वे भी सब तमाशा देखने वाले ही हैं। कोई भी इनके गुरु (विश्वामित्रजी) को समझाकर नहीं कहता कि ये (राम) बालक हैं, इनके लिये ऐसा हठ अच्छा नहीं।

रावन बान[3] छुआ नहिं चापा ❀ हारे सकल भूप करि दापा
सो धनु राजकुअँर कर देहीं ❀ बाल मराल कि मंदर लेहीं

रावण और बाणासुर ने जिस धनुष को छुआ तक नहीं और सब राजा रोष दिखाकर हार गये, वही धनुष राजकुमार के हाथ में दिया जा रहा है। हंस का बच्चा भी कहीं मंदराचल को उठा सकता है? [वक्रोक्ति अलंकार]

भूप सयानप सकल सिरानी ❀ सखि बिधि गति कछु जाति न जानी
बोली चतुर सखी मृदु बानी ❀ तेजवंत लघु गनिअ न रानी

और राजा का तो सारा सयानापन समाप्त हो गया है। हे सखी! ब्रह्मा की गति कुछ जानी नहीं जा सकती। तब दूसरी सखी कोमल वाणी से बोली—हे रानी! तेजस्वी को छोटा नहीं गिनना चाहिये।

---

१. कमल की डंडी। २. तरह। ३. बाणासुर।

कहँ कुम्भज[1] कहँ सिंधु अपारा ❀ सोखेउ सुजसु सकल संसारा
रबि मंडल देखत लघु लागा ❀ उदय तासु त्रिभुवन तम भागा

कहाँ घड़े से उत्पन्न होने वाले छोटे-से मुनि अगस्त्य और कहाँ अपार समुद्र; किन्तु अगस्त्य ने उसे सोख लिया; जिसका सुयश सारे संसार में फैला हुआ है। सूर्यमंडल देखने में तो छोटा लगता है, पर उसके उदय होते ही तीनों लोकों का अन्धकार भाग जाता है।

दो० मंत्र परम लघु जासु बस बिधि हरि हर सुर सर्ब।
महामत्त गजराज कहुँ बस कर अंकुस खर्ब[2] ॥२५६॥

मन्त्र बहुत छोटा होता है, पर उसके वश में ब्रह्मा, विष्णु, शिव और सभी देवता हैं। इसी तरह बड़े मतवाले हाथी को छोटा-सा अंकुश वश में कर लेता है। [प्रमाण अलङ्कार]

काम कुसुम धनु सायक लीन्हे ❀ सकल भुवन अपने बस कीन्हे
देबि तजिअ संसय अस जानी ❀ भंजब धनुषु राम सुनु रानी

कामदेव ने फूलों ही का धनुष-बाण लेकर समस्त लोकों को अपने वश में कर रक्खा है। हे देवी! ऐसा जानकर सन्देह छोड़ दीजिये। हे रानी! सुनिये, राम धनुष को अवश्य ही तोड़ेंगे। [भ्रान्त्यापन्हुति अलङ्कार]

सखी बचन सुनि भइ परतीती ❀ मिटा बिषाद बढ़ी अति प्रीती
तब रामहिं बिलोकि बैदेही ❀ सभय हृदय बिनवति जेहि तेही

सखी की बात सुनकर रानी को विश्वास हो गया, खेद मिट गया और राम में अत्यन्त प्रीति बढ़ गई। उस समय राम को देखकर सीता भयभीत हृदय से जिस-तिस (देवता) से विनती कर रही हैं।

मनहीं मन मनाव अकुलानी ❀ होहु प्रसन्न महेस भवानी
करहु सुफल आपनि सेवकाई ❀ करि हितु हरहु चाप गरुआई

व्याकुल होकर सीता मन ही मन (देवताओं को) मना रही हैं—हे शिव-पार्वती! मुझ पर प्रसन्न होइये और मैंने जो आपकी सेवा की है, उसका सुन्दर फल दीजिये। मुझ पर स्नेह करके धनुष के भारीपन को हर लीजिये।

---

१. अगस्त्य मुनि। २. छोटा।

गननायक बर दायक देवा ❀ आजु लगें कीन्हिउँ तुअ सेवा
बार बार बिनती सुनि मोरी ❀ करहु चाप गरुता अति थोरी

हे गणों के नायक वर देने वाले देवता गणेशजी ! आज ही के लिये मैंने आपकी सेवा की है। बार-बार मेरी विनती सुनकर धनुष का भारीपन बहुत ही कम कर दीजिये।

दो० देखि देखि रघुबीर तन सुर मनाव धरि धीर।
भरे बिलोचन प्रेम जल पुलकावली सरीर ॥२५७॥

रामचन्द्रजी की ओर बार-बार देखकर सीता धीरज धरकर देवताओं को मना रही हैं। उनके नेत्रों में प्रेम के आँसू भरे हैं और शरीर में रोमांच हो आया है।

नीकें निरखि नयन भरि सोभा ❀ पितु पनु सुमिरि बहुरि मनु छोभा
अहह तात दारुनि हठ ठानी ❀ समुझत नहिं कछु लाभु न हानी

अच्छी तरह आँख भरकर राम की शोभा को देखकर, फिर पिता के प्रण का स्मरण करके सीता का मन क्षुब्ध हो उठा। अहो ! पिताजी ने बड़ा ही कठिन हठ ठाना है। वे लाभ-हानि कुछ भी नहीं समझ रहे हैं।

सचिव सभय सिख देइ न कोई ❀ बुध समाज बड़ अनुचित होई
कहँ धनु कुलिसहु चाहि[1] कठोरा ❀ कहँ स्यामल मृदुगात किसोरा

मन्त्रि डरते हैं, इससे कोई उन्हें सीख भी नहीं देता; बुद्धिमानों के समाज में यह बहुत ही अनुचित काम हो रहा है। कहाँ तो बज्र से भी बढ़कर कठोर धनुष है और कहाँ ये साँवले सुकुमार किशोर।

बिधि केहि भाँति धरउँ उर धीरा ❀ सिरिस सुमन कन बेधिअ हीरा
सकल सभा कै मति भै भोरी ❀ अब मोहिं संभु चाप गति तोरी

हे ब्रह्मा ! हृदय में किस भाँति धीरज धरूँ ? सिरस के फूल के कण से कहीं हीरा छेदा जाता है ? सारी सभा की बुद्धि भोली (बावली) हो गई है। हे शिवजी के धनुष ! अब तो मुझे तुम्हारा ही भरोसा है।

निज जड़ता लोगन्ह पर डारी ❀ होहु हरुअ[2] रघुपतिहि निहारी
अति परिताप सीय मन माहीं ❀ लव निमेष जुग सय सम जाहीं

---

१. अपेक्षा। २. हलका।

तुम अपनी जड़ता लोगों पर डालकर, रामचन्द्रजी को देखकर हलके हो जाओ। इस प्रकार सीता के मन में बड़ा ही संताप हो रहा है। पलक भाँजने का एक लव भी सौ युगों के समान बीत रहा है।



प्रभुहि चितइ पुनि चितव महि राजत लोचन लोल[1]।
खेलत मनसिज मीन जुग जनु बिधु मंडल डोल॥

प्रभु रामचन्द्रजी को देखकर फिर पृथ्वी की ओर देखती हुई सीता के चंचल नेत्र इस प्रकार शोभित हो रहे हैं, जैसे चन्द्र-मंडलरूपी डोल में कामदेव की दो मछलियाँ खेल रही हों। [अनुक्तविषया वस्तूत्प्रेक्षालंकार]

गिरा अलिनि[2] मुख पंकज रोकी ❀ प्रगट न लाज निसा अवलोकी
लोचन जलु रह लोचन कोना ❀ जैसें परम कृपन कर सोना

वाणीरूपी भौंरी सीता के कमलरूपी मुख में वन्द है, जो लाजरूपी रात्रि को देखकर प्रकट नहीं होती है। सीता के नेत्रों का जल नेत्रों के कोने में ही रह रहा है, जैसे बड़े भारी कंजूस का सोना (कोने में ही गड़ा रह जाता है)। [उदाहरण अलंकार]

सकुची व्याकुलता बड़ि जानी ❀ धरि धीरजु प्रतीति उर आनी
तन मन बचन मोर पन साँचा ❀ रघुपति पद सरोज चितु राँचा

सीता अपनी बढ़ी हुई व्याकुलता जानकर सकुचा गईं। फिर धीरज धरकर वे हृदय में विश्वास ले आईं कि यदि तन, मन और वचन से मेरा प्रण सच्चा है और रामचन्द्रजी के कमल ऐसे चरणों में मेरा चित्त सचमुच अनुरक्त है,

तौ भगवानु सकल उर बासी ❀ करिहहिं मोहि रघुबर कै दासी
जेहि कें जेहि पर सत्य सनेहू ❀ सो तेहि मिलइ न कछु संदेहू

तो सबके हृदय में बसने वाले भगवान् मुझे रघुश्रेष्ठ राम की दासी वनायेंगे। जिसका जिस पर सच्चा स्नेह होता है, वह उसे अवश्य ही मिलता है, इसमें सन्देह नहीं है।

प्रभु तन चितइ प्रेमपन ठाना ❀ कृपानिधान राम सबु जाना
सियहि बिलोकि तकेउ धनु कैसें ❀ चितव गरुड़ लघु ब्यालहि जैसें

प्रभु की ओर देखकर सीता ने प्रेम का प्रण ठान लिया। कृपा के भण्डार

---

१. चंचल। २. भौंरी।

राम ने सब जान लिया। सीता को देखकर उन्होंने धनुष की ओर कैसे ताका, जैसे गरुड़ छोटे साँप की ओर देखता है।

दो० लषन लखेउ रघुबंसमनि ताकेउ हर कोदंडु।
पुलकि गात बोले बचन चरन चापि[1] ब्रह्मांडु।२५९

लक्ष्मण ने देखा कि रघुवंश के शिरोमणि रामचन्द्रजी ने शिवजी के धनुष की ओर ताका है, तो वे पुलकित होकर ब्रह्मांड को पैरों से दबाकर वचन बोले—

दिसि कुंजरहु कमठ अहि कोला ❀ धरहु धरनि धरि धीर न डोला
राम चहहिं संकर धनु तोरा ❀ होहु सजग सुनि आयसु मोरा

हे दिग्गजो! हे कच्छप! हे शेष! हे वाराह! धीरज धरकर पृथ्वी को थामे रहो, जिससे यह हिले नहीं। क्योंकि राम शिवजी का धनुष तोड़ना चाहते हैं; मेरी आज्ञा सुनकर सब सावधान हो जाओ।

चाप समीप रामु जब आए ❀ नर नारिन्ह सुर सुकृत मनाए
सब कर संसउ अरु अग्यानू ❀ मंद महीपन्ह कर अभिमानू

राम जब धनुष के पास आये, तब सब पुरुष-स्त्रियों ने देवताओं और अपने-अपने पुण्यों को मनाया। सब का संदेह और अज्ञान, नीच राजाओं का अभिमान,

भृगुपति केरि गरब गरुआई ❀ सुर मुनिबरन्ह केरि कदराई
सिय कर सोच जनक पछितावा ❀ रानिन्ह कर दारुन दुख दावा

परशुराम के गर्व की गुरुता, देवताओं और बड़े-बड़े मुनियों की कातरता, सीता का सोच, जनक का पश्चात्ताप, रानियों के दारुण दुःख का दावानल,

संभु चाप बड़ बोहितु[2] पाई ❀ चढ़े जाइ सब संगु बनाई
राम बाहु बल सिंधु अपारू ❀ चहत पारु नहिं कोउ कनहारू[3]

ये सब शिवजी के धनुषरूपी बड़े जहाज़ को पाकर, सब संग बनाकर उस पर जा चढ़े। ये राम की भुजाओं के बल के अपार समुद्र के पार जाना चाहते हैं, पर कोई केवट नहीं है। [प्रथम तुल्ययोगिता अलंकार]

दो० राम बिलोके लोग सब चित्र लिखे से देखि।
चितई सीय कृपायतन जानी बिकल बिसेखि।२६०

१. दबाकर। २. जहाज। ३. केवट, कर्णधार।

राम ने सब लोगों की ओर देखा, तो वे चित्र में लिखे हुये-से दिखाई पड़े। फिर कृपा के घर राम ने सीता की ओर देखा और उन्हें विशेष व्याकुल जाना।

देखी विपुल विकल बैदेही ❀ निमिष बिहात[1] कलप सम तेही
तृषित बारि बिनु जो तनु त्यागा ❀ मुए करइ का सुधा तड़ागा

सीता को राम ने बहुत ही विकल देखा; उनका एक-एक पल कल्प के समान बीत रहा था। यदि प्यासा आदमी पानी के विना शरीर छोड़ दे, तो उसके मर जाने पर अमृत का तालाब भी क्या करेगा ?

का बरषा जब कृषि सुखानें ❀ समय चुकें पुनि का पछितानें
अस जिय जानि जानकी देखी ❀ प्रभु पुलके लखि प्रीति बिसेषी

खेती के सूख जाने पर वर्षा किस काम की ? समय बीत जाने पर फिर पछताने से क्या लाभ ? जी में ऐसा जानकर राम ने जानकी की ओर देखा और उनकी विशेष प्रीति देखकर वे पुलकित हो गये।

गुरहि प्रनाम मनहिं मन कीन्हा ❀ अति लाघवँ[2] उठाइ धनु लीन्हा
दमकेउ दामिनि जिमि जब लयेऊ ❀ पुनि धनु नभ मंडल सम भयेऊ

मन ही मन उन्होंने गुरु को प्रणाम किया, और बड़ी फुरती से धनुष को उठा लिया। जब उन्होंने धनुष को हाथ में लिया, तब मानो बिजली-सी चमकी और फिर धनुष आकाश-मंडल की तरह मंडलाकार हो गया।

लेत चढ़ावत खैंचत गाढ़ें ❀ काहुँ न लखा देख सबु ठाढ़ें
तेहि छन राम मध्य धनु तोरा ❀ भरेउ भुवन धुनि घोर कठोरा

लेते हुये, चढ़ाते हुये और ज़ोर से खींचते हुये किसी ने नहीं देखा; सबने उनको केवल खड़ा देखा। उसी क्षण में राम ने धनुष को बीच से तोड़ डाला। घोर कठोर ध्वनि से सब लोक भर गये।

छंद—भरे भुवन घोर कठोर रव रबि बाजि तजि मारग चले।
चिक्करहिं दिग्गज डोल महि अहि कोल कूरम कलमले॥
सुर असुर मुनि कर कान दीन्हें सकल बिकल बिचारहीं।
कोदन्ड खन्डेउ राम तुलसी जयति बचन उचारहीं॥

---

१. बीतता है। २. जल्दी।

घोर कठोर शब्द से सब लोक भर गये; सूर्य के घोड़े मार्ग छोड़कर चलने लगे; दिशाओं के हाथी चिग्घाड़ करने लगे; पृथ्वी डोल उठी; शेष, वाराह और कच्छप चलायमान हो गये; देवता, राक्षस और मुनियों ने कानों पर हाथ दे लिये, सब व्याकुल होकर विचारने लगे। तुलसीदासजी कहते हैं—राम ने धनुष को तोड़ डाला, तब सब रामचन्द्रजी की जय बोलने लगे।

सो० संकर चापु जहाजु सागरु रघुबर बाहुबलु।
बूड़ सो सकल समाजु चढ़ा जो प्रथमहिं मोह बस॥

शिवजी का धनुष जहाज है और रामचन्द्रजी की भुजाओं का बल समुद्र है, वह सारा समाज, जो मोहवश पहले इस जहाज पर चढ़ा था, डूब गया।

प्रभु दोउ चाप खंड महि डारे ❀ देखि लोग सब भये सुखारे
कौसिकरूप पयोनिधि पावन ❀ प्रेम बारि अवगाहु सुहावन

प्रभु ने धनुष के दोनों टुकड़ों को पृथ्वी पर फेंक दिया। यह देखकर सब लोग सुखी हुये। विश्वामित्ररूपी पवित्र समुद्र जिसमें प्रेमरूपी सुन्दर अथाह जल भरा है

राम रूप राकेस निहारी ❀ बढ़त बीचि[1] पुलकावलि भारी
बाजे नभ गहगहे निसाना ❀ देवबधू नाचहिं करि गाना

राम रूपी पूर्ण चन्द्र को देखकर पुलकावली रूपी भारी लहरें बढ़ने लगीं। आकाश में गहगह शब्द करके बड़े ज़ोर से नगाड़े बज उठे और देवताओं की स्त्रियाँ गान करके नाचने लगीं।

ब्रह्मादिक सुर सिद्ध मुनीसा ❀ प्रभुहिं प्रसंसहिं देहिं असीसा
बरिसहिं सुमन रंग बहु माला ❀ गावहिं किन्नर गीत रसाला

ब्रह्मा आदि देवता, सिद्ध और मुनीश्वर लोग प्रभु की प्रशंसा कर रहे हैं और आशीर्वाद दे रहे हैं। वे रंग-बिरंगे फूल और मालायें बरसा रहे हैं। किन्नर लोग रसीले गीत गा रहे हैं।

रही भुवन भरि जय जय बानी ❀ धनुष भङ्ग धुनि जात न जानी
मुदित कहहिं जहँ तहँ नरनारी ❀ भंजेउ[2] राम संभु धनु भारी

१. लहर। २. तोड़ा।

'जय-जय की ध्वनि' सारे ब्रह्मांड में ऐसी भर गई जिसमें धनुष के टूटने की ध्वनि जान ही नहीं पड़ती। जहाँ-तहाँ पुरुष-स्त्री प्रसन्न होकर कह रहे हैं कि राम ने शिवजी के भारी धनुष को तोड़ डाला।

दो० बन्दी मागध सूतगन बिरुद बदहिं मतिधीर।
करहिं निछावरि लोग सब हय गय धन मनि चीर २६२

गम्भीर मति वाले बन्दीजन, मागध और सूत लोग सुयश का बखान कर रहे हैं और सब लोग घोड़े, हाथी, धन, मणि और वस्त्र न्योछावर कर रहे हैं।

झाँझ मृदंग संख सहनाई ❀ भेरि ढोल दुंदुभी सुहाई
बाजहिं बहु बाजने सुहाये ❀ जहँ तहँ जुवतिन्ह मंगल गाये

झाँझ, मृदंग, शंख, शहनाई, भेरी, ढोल और सुहावने नगाड़े आदि बहुत प्रकार के सुन्दर बाजे बज रहे हैं। जहाँ-तहाँ युवतियाँ मंगल के गीत गा रही हैं।

सखिन्ह सहित हरषीं अति रानी ❀ सूखत धान परा जनु पानी
जनक लहेउ सुखु सोच बिहाई ❀ पैरत थके थाह जनु पाई

सखियों-सहित रानी अत्यंत हर्षित हुई। मानो सूखते हुये धान पर पानी पड़ गया हो। जनक ने सुख पाया; उनकी चिन्ता दूर हुई। मानो तैरते-तैरते थके पुरुष ने थाह पा ली।

स्रीहत भए भूप धनु टूटे ❀ जैसे दिवस दीप छबि छूटे
सीय सुखहि बरनिअ केहि भाँती ❀ जनु चातकी पाइ जलु स्वाती

धनुष टूटने पर राजा लोग ऐसे श्रीहीन हो गये, जैसे दिन में दीपक की शोभा जाती रहती है। सीता का सुख किस प्रकार वर्णन किया जाय, जैसे चातकी स्वाती का जल पा गई हो।

रामहिं लषनु बिलोकत कैसें ❀ ससिहि चकोर किसोरकु जैसें
सतानंद तब आयसु दीन्हा ❀ सीता गमनु राम पहिं कीन्हा

राम को लक्ष्मण किस प्रकार देख रहे हैं, जैसे चन्द्रमा को चकोर का बच्चा देख रहा हो। तब शतानन्दजी ने आज्ञा दी और सीता राम के पास गईं।

दो० संग सखीं सुन्दर सकल गावहिं मंगलचार।
गवनी बाल मराल गति सुखमा अंग अपार २६३

सीता के साथ में सुन्दर सखियाँ मंगल गीत गा रही हैं। सीता हंस के बच्चे की गति से चलीं। उनके अंगों में अपार शोभा है।

सखिन्ह मध्य सिय सोहति कैसें ❀ छबिगन मध्य महाछबि जैसें
कर सरोज जयमाल सुहाई ❀ बिस्व बिजय सोभा जेहिं छाई

सखियों के बीच में सीता किस प्रकार शोभित हो रही हैं, जैसे बहुत सी छवियों के बीच में महाछवि। कमल ऐसे हाथों में जयमाला शोभा दे रही हैं, जिसमें विश्व के विजय की शोभा छाई हुई है।

तन सकोचु मन परम उछाहू ❀ गूढ़ प्रेम लखि परइ न काहू
जाइ समीप राम छबि देखी ❀ रहि जनु कुअँरि चित्र अवरेखी

सीता के शरीर में संकोच है पर मन में परम उत्साह है। उनका यह गूढ़ प्रेम किसी को जान नहीं पड़ रहा है। राम के पास जाकर, राम की शोभा देख कर, राजकुमारी चित्र में लिखी हुई-सी रह गईं।

चतुर सखीं लखि कहा बुझाई ❀ पहिरावहु जयमाल सुहाई
सुनत जुगल कर माल उठाई ❀ प्रेम बिबस पहिराइ न जाई

चतुर सखी ने यह दशा देखकर समझाकर कहा—सुन्दर जयमाला पहनाओ। यह सुनकर सीता ने दोनों हाथों से जयमाला उठाई, पर प्रेम की विवशता से पहराई नहीं जाती।

सोहत जनु जुग जलज सनाला ❀ ससिहि सभीत देत जयमाला
गावहिं छबि अवलोकि सहेली ❀ सियँ जयमाल राम उर मेली

मानो मृणाल-सहित दो कमल चन्द्रमा को भय के साथ जयमाला दे रहे हैं। इस छबि को देखकर सखियाँ गाने लगीं। इतने में सीता ने राम के गले में जयमाला डाल दी।

सो॰ रघुबर उर जयमाल देखि देव बरिसहिं सुमन।
सकुचे सकल भुआल जनु बिलोकि रबि कुमुद गन॥

राम के गले में जयमाला देखकर देवता फूल बरसाने लगे। सब राजा लोग ऐसे लजा गये, जैसे सूर्य को देखकर कुमुदों का समूह सिकुड़ गया हो।

पुर अरु ब्योम बाजने बाजे ❀ खल भए मलिन साधु सब राजे
सुर किंनर नर नाग मुनीसा ❀ जय जय जय कहि देहिं असीसा

नगर और आकाश में बाजे बजने लगे। दुष्ट लोग उदास हो गये और सब सज्जन प्रसन्न हो गये। देवता, किन्नर, नर, नाग और मुनीश्वर जय-जयकार करके आशीर्वाद दे रहे हैं।

नाचहिं गावहिं बिबुध बधूटी ❀ बार बार कुसुमाञ्जलि छूटी
जहँ तहँ बिप्र बेद धुनि करहीं ❀ बंदी बिरिदावलि उच्चरहीं

देवताओं की स्त्रियाँ नाचती गाती हैं। बारम्बार अँजुली में भर-भरकर फूल छोड़े जा रहे हैं। जहाँ-तहाँ ब्राह्मण वेद-ध्वनि कर रहे हैं और भाट लोग बिरदावली (कुल-कीर्ति) बखान रहे हैं।

महि पाताल नाक जसु ब्यापा ❀ राम बरी सिय भंजेउ चापा
करहिं आरती पुर नर नारी ❀ देहिं निछावरि बित्त बिसारी

पृथ्वी, पाताल और स्वर्ग तीनों लोकों में यश फैल गया कि राम ने धनुष तोड़ दिया और सीता को वरण कर लिया। नगर के पुरुष-स्त्री आरती कर रहे हैं और अपनी पूँजी (हैसियत) को भुलाकर अर्थात् सामर्थ्य से अधिक न्योछावर कर रहे हैं।

सोहति सीय राम कै जोरी ❀ छबि सिंगारु मनहुँ एक ठोरी
सखीं कहहिं प्रभु पद गहु सीता ❀ करति न चरन परस अति भीता

सीता राम की जोड़ी ऐसी सोहती है, जैसे छवि और शृङ्गार-रस एकत्र हो गये हों। सखियाँ कह रही हैं—सीता ! स्वामी के पैर छुओ। सीता बहुत डरी हुई हैं और चरण नहीं छूतीं।

दो० गौतम तिय गति सुरति करि नहिं परसति पग पानि।
मन बिहँसे रघुबंसमनि प्रीति अलौकिक जानि।२६५

गौतम की स्त्री अहल्या की गति का स्मरण करके सीता राम का चरण हाथ से नहीं छू रही हैं। तब रघुकुल के शिरोमणि रामचन्द्रजी सीता की अलौकिक प्रीति जानकर मन में हँसे।

तब सिय देखि भूप अभिलाषे ❀ कूर कपूत मूढ़ मन माखे
उठि उठि पहिरि सनाह अभागे ❀ जहँ तहँ गाल बजावन लागे

तब सीता को देखकर कुछ राजा लोग ललचा उठे। वे दुष्ट, कपूत और मूढ़ राजा बहुत उत्तेजित हुये। वे अभागे उठ-उठकर, कवच पहनकर, जहाँ-तहाँ गाल बजाने लगे।

लेहु छड़ाय सीय कह कोऊ ❀ धरि बाँधहु नृप बालक दोऊ
तोरें धनुष चाड़ नहिं सरई ❀ जीवत हमहिं कुअँरि को बरई

कोई कहता है अरे, कोई सीता को छीन लो और दोनों राजपुत्रों को पकड़कर बाँध लो। केवल धनुष तोड़ने ही से काम न सरेगा। हमारे जीते-जी राजकुमारी को कौन वरण कर सकता है?

जौं बिदेहु कछु करै सहाई ❀ जीतहु समर सहित दोउ भाई
साधु भूप बोले सुनि बानी ❀ राज समाजहिं लाज लजानी

यदि जनक कुछ सहायता करें, तो उसे भी दोनों भाइयों-सहित युद्ध में जीत लो। यह वचन सुनकर सज्जन राजा बोले—इस राजसमाज को देखकर तो लज्जा को भी लज्जा आती है।

बलु प्रतापु बीरता बड़ाई ❀ नाक पिनाकहि संग सिधाई
सोइ सूरता कि अब कहुँ पाई ❀ असि बुधि तौ बिधि मुँह मसि लाई

अरे, तुम्हारा बल, प्रताप, वीरता, बड़ाई और नाक (प्रतिष्ठा) तो धनुष के साथ ही चली गई। वही वीरता है कि अब कहीं से और मिली है? ऐसी ही बुद्धि है, तभी तो ब्रह्मा ने मुँह में कालिख पोत दिया। [लोकोक्ति अलंकार]

दो०—देखहु रामहि नयन भरि तजि इरिषा मदु कोहु।
लषन रोषु पावकु प्रबल जानि सलभ जनि होहु॥२६६

ईर्ष्या, अहंकार और क्रोध को छोड़कर राम को आँख भरकर देखो। जान-बूझकर लक्ष्मण की क्रोधरूपी प्रबल अग्नि में पतंगे मत बनो।

बैनतेय बलि जिमि चह कागू ❀ जिमि सस चहै नाग[1] अरि भागू
जिमि चह कुसल अकारन कोही ❀ सुख संपदा चहै सिव द्रोही

जैसे गरुड़ का भाग कौआ चाहे, हाथी का अंश खरहा चाहे, बिना कारण ही क्रोध करने वाला कुशल चाहे, शिव से द्रोह करने वाला सुख और वैभव चाहे,

लोभी लोलुप कीरति चहई ❀ अकलंकता कि कामी लहई
हरिपद बिमुख परम गति चाहा ❀ तस तुम्हार लालचु नरनाहा

लोभी और चंचल आदमी कीर्त्ति चाहे; कामी कलंक से वचना चाहे और

१. हाथी।

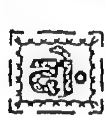
भगवान् के चरणों से विमुख रहने वाला परम गति चाहे, हे राजाओ! तुम्हारा लोभ उसी तरह व्यर्थ है।

कोलाहलु सुनि सीय सकानी ❀ सखीं लेवाइ गईं जहँ रानी
राम सुभायँ चले गुरु पाहीं ❀ सिय सनेहु बरनत मन माहीं

हल्ला सुनकर सीता डर गईं; तब सखियाँ उन्हें वहाँ ले गईं, जहाँ रानी थीं। राम मन में सीता के प्रेम का बखान करते हुये स्वाभाविक चाल से गुरु के पास चले।

रानिन्ह सहित सोचबस सीया ❀ अब धौं बिधिहि काह करनीया
भूप बचन सुनि इत उत तकहीं ❀ लषनु राम डर बोलि न सकहीं

रानियों-सहित सीता चिंता के वश में हैं कि न जाने ब्रह्मा अब क्या करने वाले हैं। राजाओं के वचन सुनकर लक्ष्मण इधर-उधर ताकते हैं किंतु राम के डर से कुछ बोल नहीं सकते।



अरुन नयन भृकुटी कुटिल चितवत नृपन्ह सकोप।
मनहुँ मत्त गज गन निरखि सिंघ किसोरहिं चोप।२६७

लक्ष्मण के नेत्र लाल और भौंहें टेढ़ी हो गईं, वे राजाओं को क्रोध से देखने लगे। मानो मतवाले हाथियों का झुण्ड देखकर सिंह के बच्चे को जोश आया हो।

खरभरु देखि बिकल पुरनारीं ❀ सब मिलि देहिं महीपन्ह गारीं
तेहि अवसर सुनि सिवधनु भङ्गा ❀ आये भृगुकुल कमल पतंगा

खलबली देखकर नगर की स्त्रियाँ व्याकुल हो गईं। सब मिलकर राजाओं को गालियाँ देने लगीं। उसी मौके पर शिवजी के धनुष का टूटना सुनकर भृगुकुल रूपी कमल के सूर्य परशुराम आये।

देखि महीप सकल सकुचाने ❀ बाज झपट जनु लवा लुकाने
गोरें सरीर भूति भलि भ्राजा ❀ भाल बिसाल त्रिपुंड बिराजा

उन्हें देखकर सब राजा सकुचा गये, जैसे बाज के झपटने पर बटेर लुक गये हों। परशुराम के गोरे शरीर पर विभूति ख़ूब सज रही है। विशाल ललाट पर त्रिपुण्ड (तिलक) शोभित है।

सीस जटा ससि बदनु सुहावा ❀ रिस बस कछुक अरुन होइ आवा
भृकुटी कुटिल नयन रिस राते ❀ सहजहुँ चितवत मनहुँ रिसाते

सिर पर जटा है; मुख चन्द्रमा की तरह सुन्दर है, पर क्रोध के मारे कुछ लाल हो आया है। भौंहें टेढ़ी और नेत्र क्रोध से लाल हैं। साधारण रीति से देखते हैं तो भी ऐसा जान पड़ता है मानो क्रोध कर रहे हैं।

वृषभ कंध उर बाहु बिसाला ❀ चारु जनेउ माल मृगछाला
कटि मुनि वसन तून दुइ बाँधें ❀ धनु सर कर कुठारु कल काँधें

बैल की तरह उनके कंधे हैं, छाती और भुजायें विशाल हैं। सुन्दर यज्ञोपवीत और माला पहने और मृगचर्म लिये हैं। कमर में वल्कल और दो तरकस बँधे हुये हैं, हाथ में धनुष-बाण और सुन्दर कंधे पर फरसा लिये हुये हैं।

दो० सांत वेष करनी कठिन बरनि न जाइ सरूप।
धरि मुनि तनु जनु बीर रसु आयेउ जहँ सब भूप।२६८

वेश तो शांत, पर कर्म भयानक; उनके स्वरूप का वर्णन किया ही नहीं जा सकता। मानो वीर-रस ही मुनि का शरीर धारण करके जहाँ सब राजा लोग हैं, आ गया हो।

देखत भृगुपति बेषु कराला ❀ उठे सकल भय बिकल भुआला
पितु समेत कहि निज निज नामा ❀ लगे करन सब दंड प्रनामा

परशुराम का भयानक वेष देखकर सब राजा लोग भय से व्याकुल होकर उठ खड़े हुये, और पिता-सहित अपना नाम बता-बताकर वे सब दंडवत् प्रणाम करने लगे।

जेहि सुभायँ चितवहिं हितु जानी ❀ सो जानइ जनु आइ[1] खुटानी
जनक बहोरि आइ सिरु नावा ❀ सीय बोलाइ प्रनाम करावा

परशुराम हित जानकर सहज भी जिसकी ओर देख लेते हैं, वह समझता है मानो उसकी आयु ही क्षीण हो गई। फिर जनक ने आकर सिर नवाया और सीता को बुलाकर प्रणाम कराया।

आसिष दीन्हि सखीं हरषानी ❀ निज समाज लै गईं सयानी
बिस्वामित्रु मिले पुनि आई ❀ पद सरोज मेले दोउ भाई

१. आयु, उम्र।

परशुराम ने सीता को आशीर्वाद दिया। सखियाँ प्रसन्न हुईं। वे सयानी सखियाँ सीता को अपनी मण्डली में ले गईं। फिर विश्वामित्र आकर मिले और दोनों भाइयों को परशुराम के चरण-कमलों पर गिराया।

रामु लषनु दसरथ के ढोटा ❀ दीन्हि असीस देखि भल जोटा[1]
रामहिं चितइ रहे भरि लोचन ❀ रूप अपार मार मद मोचन

विश्वामित्र ने कहा—ये राम और लक्ष्मण राजा दशरथ के पुत्र हैं। उनकी सुन्दर जोड़ी देखकर परशुराम ने आशीर्वाद दिया। राम को वे नेत्र भरकर देखते रहे। राम का रूप अपार और कामदेव के घमंड को चूर करने वाला था।

दो० बहुरि बिलोकि बिदेह सन कहहु काह अति भीर।
पूँछत जानि अजान जिमि ब्यापेउ कोपु सरीर।२६९

फिर जनक की ओर देखकर परशुराम ने कहा—कहो, इतनी बड़ी भीड़ कैसी ? वे जानते हुये भी अनजान की तरह पूछते हैं। उनके सारे शरीर में क्रोध छा गया है।

समाचार कहि जनक सुनाये ❀ जेहि कारन महीप सब आये
सुनत बचन फिरि अनत[2] निहारे ❀ देखे चाप खंड महि डारे

जिस कारण सब राजा आये थे, जनक ने सब समाचार उन्हें कह सुनाये। जनक के वचन सुनकर परशुराम ने फिरकर दूसरी ओर देखा तो, धनुष के टुकड़े पृथ्वी पर पड़े हुये दिखाई दिये।

अति रिस बोले बचन कठोरा ❀ कहु जड़ जनक धनुष कै तोरा
बेगि देखाउ मूढ़ न त आजू ❀ उलटउँ महि जहँ लहि तव राजू

अत्यंत क्रोध में भरकर वे कठोर वचन बोले—अरे, मूढ़ जनक! बता, धनुष किसने तोड़ा ? उसे शीघ्र दिखा, नहीं तो ऐ मूढ़! आज मैं जहाँ तक तेरा राज्य है, वहाँ तक की पृथ्वी उलट दूँगा।

अति डरु उतर देत नृपु नाहीं ❀ कुटिल भूप हरषे मन माहीं
सुर मुनि नाग नगर नर नारी ❀ सोचहिं सकल त्रास उर भारी

राजा जनक अत्यंत डर के मारे उत्तर नहीं देते। यह देखकर दुष्ट राजा मन में बड़े प्रसन्न हुये। देवता, मुनि, नाग और नगर के पुरुष-स्त्री सभी चिन्ता

१. जोड़ा। २. अन्यत्र, दूसरी जगह।

करने लगे। सब के हृदय में बड़ा भय है।

मन पछिताति सीय महतारी ❀ बिधि अब सँवरी बात बिगारी
भृगुपति कर सुभाउ सुनि सीता ❀ अरध निमेष कलप सम बीता

सीता की माता मन में पछता रही हैं कि हाय! विधाता ने अब बनी-बनाई बात बिगाड़ दी। सीता ने परशुराम का स्वभाव सुना, तब तो उनको आधा क्षण भी एक कल्प के समान बीतने लगा।

दो॰ सभय बिलोके लोग सब जानि जानकी भीरु।
हृदयँ न हरषु बिषादु कछु बोले श्रीरघुबीरु ॥२७०॥

तब रामचन्द्रजी सब लोगों को भयभीत और सीता को डरी हुई जानकर बोले। उनके हृदय में न कुछ हर्ष था, न विषाद।

नाथ संभु धनु भंजनिहारा ❀ होइहि केउ एक दास तुम्हारा
आयसु काह कहिअ किन मोही ❀ सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही

राम ने कहा—हे नाथ! शिव के धनुष का तोड़ने वाला आपका ही कोई एक दास होगा। क्या आज्ञा है, मुझसे कहिये न? यह सुनकर क्रोधी मुनि चिढ़कर बोले—

सेवक सो जो करइ सेवकाई ❀ अरि करनी करि करिअ लराई
सुनहु राम जेहिं सिव धनु तोरा ❀ सहसबाहु सम सो रिपु मोरा

सेवक वह है, जो सेवा का काम करे। शत्रु का काम करके तो लड़ाई ही करनी चाहिये। हे राम! सुनो, जिसने यह शिव का धनुष तोड़ा है, वह सहस्रबाहु के समान मेरा शत्रु है।

सो बिलगाउ[1] बिहाइ[2] समाजा ❀ न तु मारे जैहहिं सब राजा
सुनि मुनिबचन लषन मुसुकाने ❀ बोले परसुधरहि अपमाने

वह इस समाज को छोड़कर अलग खड़ा हो, नहीं तो (उसके साथ) सभी राजा मारे जायँगे। मुनि का वचन सुनकर लक्ष्मण मुसकुराये और परशुराम का अपमान करते हुये बोले—

बहु धनुहीं तोरीं लरिकाईं ❀ कबहुँ न असि रिस कीन्हि गोसाईं
एहि धनु पर ममता केहि हेतू ❀ सुनि रिसाइ कह भृगुकुल केतू

१. अलग हो। २. छोड़कर।

मैंने तो लड़कपन में बहुत-सी धनुहियाँ तोड़ फेंकी थीं। आपने कभी ऐसा क्रोध नहीं किया। इसी धनुष पर इतना मोह किस कारण से है? यह सुनकर भृगुवंश के ध्वजा-स्वरूप परशुराम चिढ़कर कहने लगे—

दो०—रे नृप बालक काल बस बोलत तोहि न सँभार।
धनुही सम त्रिपुरारि धनु बिदित सकल संसार।२७१

अरे राजपुत्र! काल के वश होने से तुझे बोलने में कुछ भी होश नहीं है। सारे संसार में विख्यात शिव का यह धनुष क्या धनुही के समान है?

लषन कहा हँसि हमरें जाना ❀ सुनहु देव सब धनुष समाना
का छति लाभु जून[1] धनु तोरें ❀ देखा राम नयन के भोरें

लक्ष्मण ने हँसकर कहा—हे देव! सुनिये। हमारी समझ में तो सभी धनुष समान हैं। पुराने धनुष के तोड़ने में क्या हानि-लाभ? राम ने इसे नये के धोखे से देखा था।

छुअत टूट रघुपतिहु न दोषू ❀ मुनि बिनु काज करिअ कत रोषू
बोले चितइ परसु की ओरा ❀ रे सठ सुनेसि सुभाउ न मोरा

यह तो छूते ही टूट गया; राम का इसमें कोई दोष नहीं। हे मुनि! आप बिना ही कारण क्रोध क्यों करते हैं? परशुराम अपने फरसे की ओर देखकर बोले—अरे दुष्ट! तूने मेरा स्वभाव नहीं सुना?

बालक बोलि बधउँ नहिं तोही ❀ केवल मुनि जड़ जानहि मोही
बालब्रह्मचारी अति कोही ❀ बिस्व बिदित छत्रिय कुल द्रोही

तुझे बालक जानकर नहीं मारता हूँ। अरे मूर्ख! क्या तू मुझे निरा मुनि ही समझता है? मैं बाल-ब्रह्मचारी हूँ। बड़ा क्रोधी हूँ। क्षत्रियों के वंश का शत्रु तो विश्व-भर में विख्यात हूँ।

भुज बल भूमि भूप बिनु कीन्ही ❀ बिपुल बार महिदेवन्ह दीन्ही
सहसबाहु भुज छेदनिहारा ❀ परसु बिलोकि महीप कुमारा

अपनी भुजाओं के बल से मैंने पृथ्वी को राजाओं से रहित कर दिया और कितनी ही बार उसे ब्राह्मणों को दे डाला। सहस्रबाहु की भुजाओं को काटने वाले मेरे इस फरसे को ऐ राजा के लड़के! देख।

---

१. पुराना, सड़ा हुआ।

दो०— मातु पितहि जनि सोच वस करसि महीस किसोर।
गरभन के अरभक[1] दलन परसु मोर अति घोर॥

अरे राजा के बालक ! तू अपने माता-पिता को सोच के वश न कर। मेरा फरसा गर्भ के भीतर के बच्चे का भी नाश करने वाला बड़ा भयानक है।

बिहँसि लषनु बोले मृदु बानी ❀ अहो मुनीसु महा भट मानी
पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारू ❀ चहत उड़ावनि फूँकि पहारू

लक्ष्मण हँसकर कोमल वाणी से बोले—अहो, मुनीश्वर तो अपने को बड़ा भारी योद्धा समझते हैं। बार-बार मुझे फरसा दिखला रहे हैं। फूँक से पहाड़ उड़ाना चाहते हैं।

इहाँ कुम्हड़ बतिया कोउ नाहीं ❀ जे तरजनी देखि मरि जाहीं
देखि कुठारु सरासन बाना ❀ मैं कछु कहा सहित अभिमाना

यहाँ कोई कुम्हड़े की बतिया (छोटा कच्चा फल) नहीं है, जो तर्जनी उँगली को देखते ही मर जाते हैं। फरसा और धनुष-बाण देखकर ही मैंने कुछ अभिमान-सहित कहा था।

भृगुकुल समुझि जनेउ बिलोकी ❀ जो कछु कहहु सहउँ रिस रोकी
सुर महिसुर हरिजन अरु गाई ❀ हमरें कुल इन्ह पर न सुराई

आपको भृगुवंशी समझकर और आपका यज्ञोपवीत देखकर, जो कुछ आप कहते हैं, उसे मैं क्रोध को रोककर सब सह लेता हूँ। देवता, ब्राह्मण, भगवान् के भक्त और गौ इन पर हमारे कुल में वीरता नहीं दिखाई जाती।

बधे पाप अपकीरति हारे ❀ मारतहू पा[2] परिअ तुम्हारे
कोटि कुलिस सम बचन तुम्हारा ❀ ब्यर्थ धरहु धनु बान कुठारा

क्योंकि इनको मारने में पाप लगता है, और इनसे हारने में अपकीर्त्ति होती है। इससे आप मारें तो भी आपके पैर ही पड़ना चाहिये। करोड़ों वज्र के समान तो आपका वचन ही है। आप तो व्यर्थ ही धनुष-बाण और फरसा धारण करते हैं।

दो०— जो बिलोकि अनुचित कहेउँ छमहु महामुनि धीर।
सुनि सरोष भृगुबंसमनि बोले गिरा गँभीर॥२७३॥

१. गर्भ के भीतर का बच्चा। २. पाँव।

इन्हें (धनुष-बाण आदि को) देखकर मैंने कुछ अनुचित कहा हो, तो हे धैर्यवान् महामुनि! उसे क्षमा कीजिये। यह सुनकर भृगुवंश के शिरोमणि परशुराम क्रोध के साथ गम्भीर वाणी बोले—

कौसिक सुनहु मंद यह बालकु ❀ कुटिल काल बस निज कुल घालकु
भानु बंस राकेस कलंकू ❀ निपट निरंकुस अबुध असंकू

हे विश्वामित्र! सुनो। यह बालक बड़ा ही कुबुद्धि है। यह दुष्ट मृत्यु के वश होकर अपने कुल का नाश करने वाला हो रहा है। यह सूर्य-वंशरूपी पूर्ण-चंद्र का कलंक है। बिल्कुल उद्दण्ड, मूर्ख और निडर है।

काल कवलु[1] होइहि छन माहीं ❀ कहउँ पुकारि खोरि मोहि नाहीं
तुम्ह हटकहु जौं चहहु उबारा ❀ कहि प्रतापु बलु रोषु हमारा

अभी क्षणभर में यह मृत्यु का ग्रास हो जायगा। मैं पुकारकर कहे देता हूँ, फिर मुझे दोष न देना। यदि तुम इसे बचाना चाहते हो, तो मेरा प्रताप, बल और क्रोध बतलाकर इसे रोको।

लषन कहेउ मुनि सुजसु तुम्हारा ❀ तुम्हहिं अछत को बरनै पारा
अपने मुँह तुम्ह आपन करनी ❀ बार अनेक भाँति बहु बरनी

लक्ष्मण ने कहा—हे मुनि! आपका सुयश आपके मौजूद रहते दूसरा और कौन वर्णन कर सकता है? आपने अपने ही मुँह से अपनी करनी का बखान अनेक बार और बहुत प्रकार से किया है।

नहिं संतोषु त पुनि कछु कहहू ❀ जनि रिसि रोकि दुसह दुख सहहू
बीरब्रती तुम्ह धीर अछोभा ❀ गारी देत न पावहु सोभा

इतने पर भी तृप्ति न हुई हो, तो फिर कुछ और कह डालिये। क्रोध को रोककर असहनीय दुःख न सहिये। आप वीरों के व्रत वाले, धीर और शान्त पुरुष हैं, गाली देते आप शोभा न पायेंगे।

दो०—**सूर समर करनी करहिं कहि न जनावहिं आपु।**
बिद्यमान[2] रिपु पाइ रन कायर कथहिं प्रतापु ॥२७४॥

शूरवीर तो युद्ध में कुछ करके दिखलाते हैं, वे कहकर अपने को नहीं जनाते। शत्रु को युद्ध में उपस्थित पाकर कायर ही अपने प्रताप की डींग मारा करते हैं।

---

१. कौर, ग्रास। २. उपस्थित, मौजूद।



तुम्ह तौ कालु हाँक जनु लावा ❀ वार वार मोहिं लागि बोलावा
सुनत लपन के वचन कठोरा ❀ परसु सुधारि धरेउ कर घोरा

आप तो मालूम होता है काल को हाँक देकर उसे वार-वार मेरे लिये बुलाते हैं। लक्ष्मण के कठोर वचन सुनकर परशुराम ने भयानक फरसे को सँभालकर हाथ में ले लिया।

अव जनि देइ दोपु मोहि लोगू ❀ कटुवादी वालकु वध जोगू
वाल विलोकि वहुत मैं वाँचा ❀ अव यह मरनहार भा साँचा

और कहा—अव लोग मुझे दोष न दें। यह अप्रिय वोलने वाला वालक वध किये जाने ही योग्य है। इसे वालक देखकर मैंने वहुत वचाया; पर अव यह सचमुच मरने पर आ गया है।

कौसिक कहा छमिअ अपराधू ❀ वाल दोप गुन गनहिं न साधू
कर कुठार मैं अकरुन कोही ❀ आगें अपराधी गुरुद्रोही

विश्वामित्र ने कहा—अपराध क्षमा कीजिये। वालकों के दोष और गुण को साधुजन नहीं गिनते। (परशुराम ने कहा—) एक तो मेरे हाथ में फरसा है, दूसरे मैं दयारहित क्रोधी हूँ, तीसरे यह गुरु-द्रोही अपरावी सामने है।

उतर देत छाँड़उँ विनु मारें ❀ केवल कौसिक सील तुम्हारें
न तु एहि काटि कुठार कठोरें ❀ गुरहिं उरिन होतेउँ स्रम थोरें

यह उत्तर दे रहा है फिर भी इसे विना मारे मैं छोड़ता हूँ, यह हे विश्वामित्र! केवल तुम्हारे शील (मुलाहिजे) से। नहीं तो इसे इस कठोर फरसे से काट कर थोड़े ही परिश्रम से गुरु (के ऋण) से उऋण हो जाता।

दो० गाधिसूनु कह हृदय हँसि मुनिहि हरिअरइ सूझ।
अयमय[1] खाँड न ऊखमय अजहुँ न बूझ अबूझ॥२७५॥

विश्वामित्र ने हृदय में हँसकर कहा—मुनि को हरा ही हरा सूझ रहा है। किंतु यह फौलाद की वनी खाँड (खाँडा, खड्ग) है, ऊख की खाँड नहीं है। मुनि अव भी नासमझ वने हुये हैं। इनको सूझ नहीं रहा है।

कहेउ लपन मुनि सीलु तुम्हारा ❀ को नहिं जान विदित संसारा
माता पितहिं उरिन भये नीकें ❀ गुर रिनु रहा सोचु वड़ जीकें

१. लोह।

लक्ष्मण ने कहा—हे मुनि ! आपके शील को कौन नहीं जानता ? वह संसार भर में विख्यात है। आप माता और पिता से तो अच्छी तरह उऋण हो ही गये थे। गुरु का ऋण शेष था, जी में उसकी बड़ी चिंता है।

सो जनु हमरेहि माथे काढ़ा ❀ दिन चलि गयेउ व्याज बड़ बाढ़ा
अब आनिअ व्यवहारिआ बोली ❀ तुरत देउँ मैं थैली खोली

उसे मानो मेरे ही मत्थे मढ़ा है। बहुत दिन हो गये; इससे ब्याज भी बहुत बढ़ गया होगा। अब किसी हिसाब करने वाले को बुला लाइये; मैं तुरन्त ही थैली खोलकर दे दूं।

सुनि कटु बचन कुठार सुधारा ❀ हाय हाय सब सभा पुकारा
भृगुवर परसु देखावहु मोही ❀ विप्र विचारि बचउ नृप द्रोही

लक्ष्मण के कड़ुवे वचन सुनकर परशुराम ने फरसा उठाया। सारी सभा हाय ! हाय ! करके पुकार उठी। लक्ष्मण ने कहा—हे भृगुश्रेष्ठ ! आप मुझे फरसा दिखाते हैं, पर हे राजाओं के शत्रु ! आप अभी तक ब्राह्मण समझे जाकर बच रहे हैं।

मिले न कबहुँ सुभट रन गाढ़े ❀ द्विज देवता घरहीं के बाढ़े
अनुचित कहि सब लोग पुकारे ❀ रघुपति सैनहिं[1] लषनु नेवारे

आपको कभी युद्ध में वीर योद्धा नहीं मिले। ब्राह्मण और देवता घर ही में बड़े हैं। (यह सुनकर) सब लोग पुकार उठे—अनुचित है, अनुचित है। तब राम ने लक्ष्मण को इशारे से रोका।

दो० लषन उतर आहुति सरिस भृगुवर कोप कृसानु।
बढ़त देखि जल सम बचन बोले रघुकुल भानु॥२७६॥

लक्ष्मण का उत्तर आहुति के समान था और परशुराम का क्रोध अग्नि के समान। उसे बढ़ते देखकर सूर्यकुल के सूर्य रामचन्द्र जल के समान (शीतल) वचन बोले—

नाथ करहु बालक पर छोहू ❀ सूध दूधमुख करिअ न कोहू
जौं पै प्रभु प्रभाउ कछु जाना ❀ तौ कि बराबरि करत अयाना

हे नाथ ! बालक पर कृपा कीजिये। इस सीधे और दुधमुँहे बच्चे पर क्रोध

१. इशारे से।



न कीजिये। यदि यह आपका प्रभाव कुछ भी जानता, तो क्या यह बेसमझ आपकी बराबरी करता ?

जौं लरिका कछु अचगरि करहीं ❀ गुरु पितु मातु मोद मन भरहीं
करिअ कृपा सिसु सेवक जानी ❀ तुम्ह सम सील धीर मुनि ज्ञानी

यदि बालक कुछ अनुचित करते हैं, तो भी गुरु, पिता और माता मन में आनन्द से भर जाते हैं। इससे इसे छोटा बच्चा और सेवक जानकर कृपा कीजिये। आप तो समदर्शी, सुशील और ज्ञानी मुनि हैं।

राम बचन सुनि कछुक जुड़ाने ❀ कहि कछु लषनु बहुरि मुसुकाने
हँसत देखि नखसिख रिस व्यापी ❀ राम तोर भ्राता बड़ पापी

राम के वचन सुनकर वे कुछ ठंडे पड़े। इतने में लक्ष्मण कुछ कहकर फिर मुसकुरा दिये। उनको हँसता देखकर परशुराम के सिर से पैर तक क्रोध व्याप्त हो गया। (उन्होंने कहा—) हे राम ! तेरा भाई बड़ा पापी है।

गौर सरीर स्याम मन माहीं ❀ कालकूट मुख पयमुख नाहीं
सहज टेढ़ अनुहरइ न तोही ❀ नीचु मीचु सम देख न मोही

यह शरीर से गोरा है पर मन में काला है। यह दुधमुँहा नहीं, हलाहल मुँह वाला है। स्वभाव ही से यह कुटिल है, तेरा अनुसरण नहीं करता। यह नीच मुझे मृत्यु के समान नहीं देखता।

दो० लषन कहेउ हँसि सुनहु मुनि क्रोध पाप कर मूल।
जेहि बस जन अनुचित करहिं चरहिं बिस्व प्रतिकूल॥

लक्ष्मण ने हँसकर कहा—हे मुनि! सुनिये। क्रोध पाप का मूल है, जिसके वश में होकर मनुष्य अनुचित कर्म करते हैं और विश्व-भर के प्रतिकूल चलते हैं।

मैं तुम्हार अनुचर मुनिराया ❀ परिहरि कोपु करिअ अब दाया
टूट चाप नहिं जुरिहि रिसाने ❀ बैठिअ होइहिं पाय[1] पिराने

हे मुनिराज ! मैं आपका सेवक हूँ। अब क्रोध त्यागकर दया कीजिये। टूटा हुआ धनुष अब क्रोध करने से नहीं जुड़ेगा। बैठ जाइये, खड़े-खड़े पाँव दुखने लगे होंगे।

---

१. पैर।

जौं अति प्रिय तौ करिअ उपाई ❀ जोरिय कोउ बड़ गुनी बोलाई
बोलत लषनहिं जनकु डेराहीं ❀ मष्ट¹ करहु अनुचित भल नाहीं

यदि (धनुष) अधिक प्रिय हो, तो उपाय किया जाय और किसी बड़े गुणी को बुलवाकर जुड़वा दिया जाय। लक्ष्मण के बोलने से जनक डरते हैं। और कहते हैं—बस, चुप रहिये; अनुचित बोलना अच्छा नहीं।

थर थर काँपहिं पुर नर नारी ❀ छोट कुमार खोट बड़ भारी
भृगुपति सुनि सुनि निरभय बानी ❀ रिस तन जरइ होइ बल हानी

जनकपुर के स्त्री-पुरुष थर-थर काँप रहे हैं (और कहते हैं कि) छोटा कुमार बड़ा ही खोटा है। लक्ष्मण की निर्भय वाणी सुन-सुनकर परशुराम का शरीर क्रोध से जला जा रहा है; और उनके बल का ह्रास हो रहा है।

बोले रामहिं देइ निहोरा² ❀ बचउँ बिचारि बंधु लघु तोरा
मन मलीन तनु सुंदर कैसें ❀ बिष रस भरा कनक घटु जैसें

राम पर एहसान जताकर वे बोले—तेरा छोटा भाई समझकर मैं इसे बचा रहा हूँ। यह मन का तो मैला है और शरीर कैसा सुन्दर है, जैसे विष के रस से भरा हुआ सोने का घड़ा।

दो॰ सुनि लछिमन बिहँसे बहुरि नयन तरेरे राम।
गुर समीप गवने सकुचि परिहरि बानी बाम³ ॥२७८॥

यह सुनकर लक्ष्मण फिर हँसे। तब राम ने कड़ी नज़र से उनकी ओर देखा, जिससे लक्ष्मण सकुचाकर, विपरीत बोलना छोड़कर, गुरु के पास चले गये।

अति बिनीत मृदु सीतलि बानी ❀ बोले रामु जोरि जुग पानी
सुनहु नाथ तुम्ह सहज सुजाना ❀ बालक बचनु करिअ नहिं काना

राम दोनों हाथ जोड़कर बहुत नम्रता से कोमल और शीतल वाणी बोले—हे नाथ! सुनिये। आप तो स्वभाव ही से सुजान हैं। आप बालक के वचन पर कान न दीजिये।

बररै बालकु एकु सुभाऊ ❀ इन्हहिं न संत बिदूषहिं काऊ
तेहिं नाहीं कछु काज बिगारा ❀ अपराधी मैं नाथ तुम्हारा

---

१. चुप। २. एहसान। ३. विपरीत।

बरं और बालक का एक स्वभाव है, संतजन इनको कभी दोष नहीं लगाते। उसने (लक्ष्मण ने), कुछ काम नहीं बिगाड़ा है; हे नाथ! आपका अपराधी तो मैं हूँ।

कृपा कोपु बँधव गोसाईं ❀ मो पर करिअ दास की नाईं
कहिअ बेगि जेहि बिधि रिस जाई ❀ मुनि नायक सोइ करौं उपाई

हे स्वामी! मुझे दास की तरह समझकर कृपा, क्रोध, वध और बन्धन जो कुछ करना हो, मुझ पर कीजिये। जिस तरह क्रोध जाय, वह उपाय शीघ्र बताइये। हे मुनिराज! मैं वही उपाय करूँ।

कह मुनि राम जाय रिस कैसें ❀ अजहुँ अनुज तव चितव अनैसें
एहि के कंठ कुठारु न दीन्हा ❀ तौ मैं काह कोपु करि कीन्हा

मुनि ने कहा—हे राम! क्रोध कैसे शान्त हो, अब भी तेरा छोटा भाई टेढ़ा ही ताक रहा है। इसके कंठ पर मैंने फरसा न चलाया तो, मैंने क्रोध करके किया ही क्या?

दो० **गर्भ स्रवहिं अवनिप रवनि सुनि कुठार गति घोर।**
परसु अछत[1] देखउँ जिअत बैरी भूप किसोर॥२७९॥

मेरे फरसे की भयानक करनी सुनकर राजाओं की स्त्रियाँ गर्भ गिरा देती हैं। उसी फरसे के रहते हुये मैं इस शत्रु राजपुत्र को जीता हुआ देख रहा हूँ।

बहइ न हाथु दहइ रिस छाती ❀ भा कुठार कुण्ठित नृपघाती
भयेउ बाम बिधि फिरेउ सुभाऊ ❀ मोरे हृदय कृपा कसि काऊ

हाथ नहीं चलता, छाती क्रोध से जल रही है, राजाओं का वध करने वाला यह फरसा कुण्ठित हो गया। विधाता विपरीत हो गया, इससे मेरा स्वभाव बदल गया, नहीं तो मेरे हृदय में किसी के लिये कृपा कैसी?

आजु दया दुखु दुसह सहावा ❀ सुनि सौमित्रि[2] बहुरि सिर नावा
बाउ कृपा मूरति अनुकूला ❀ बोलत बचन झरत जनु फूला

आज दया मुझसे यह कठिनता से सहने योग्य दुःख सहा रही है। यह सुनकर लक्ष्मण ने फिर प्रणाम किया, और कहा—वाह वा! आपकी कृपा की मूर्त्ति बहुत सुन्दर है, वचन बोलते हैं, तो मालूम होता है कि फूल झड़ रहे हैं।

---

१. होते हुये। २. लक्ष्मण।

जौं पै कृपा जरहिं मुनि गाता ❀ क्रोध भए तनु राखु बिधाता
देखु जनक हठि बालक एहू ❀ कीन्ह चहत जड़ जमपुर गेहू

हे मुनि ! यदि कृपा करने से आपका शरीर जला जा रहा है, तो क्रोध होने पर तो ब्रह्मा ही आपके शरीर की रक्षा करें। परशुराम ने कहा—जनक ! देखो, यह मूर्ख बालक हठ करके यमपुर घर करना चाहता है।

बेगि करहु किन आँखिन्ह ओटा ❀ देखत छोट खोट नृपढोटा
बिहँसे लषन कहा मुनि पाहीं ❀ मूँदे आँखि कतहुँ कोउ नाहीं

इसे शीघ्र ही आँखों की ओझल क्यों नहीं करते ? यह राजपुत्र देखने ही में छोटा है पर है बड़ा खोटा। लक्ष्मण हँसे और उन्होंने मुनि से कहा—आँख मूँद लीजिये, तो कहीं कोई नहीं।

दो॰ परसुराम तब राम प्रति बोले उर अति क्रोधु।
संभु सरासनु तोरि सठ करसि हमार प्रबोधु ॥२८०॥

तब हृदय में अत्यन्त क्रोध भरे हुये परशुराम राम से बोले—अरे शठ ! तू शिव का धनुष तोड़कर उलटा मुझी को ज्ञान सिखाता है।

बंधु कहइ कटु संमत तोरें ❀ तू छल बिनय करसि कर जोरें
करु परितोषु मोर संग्रामा ❀ नाहिं त छाड़ु कहाउब रामा

तेरी ही सम्मति से तेरा भाई कटु वचन बोलता है और तू छल से हाथ जोड़कर विनय करता है। या तो युद्ध करके मुझे संतुष्ट कर, नहीं तो राम कहलाना छोड़ दे।

छलु तजि करहि समरु सिवद्रोही ❀ बंधु सहित न त मारउँ तोही
भृगुपति बकहिं कुठार उठाएँ ❀ मन मुसुकाहिं रामु सिर नाएँ

अरे शिव-द्रोही ! या तो छल छोड़कर युद्ध कर, नहीं तो भाई-सहित मैं तुझे मार डालूँगा। इस प्रकार परशुराम फरसा उठाये बक-झक रहे हैं और राम सिर झुकाये मन ही मन मुसकुरा रहे हैं।

गुनह[1] लषन कर हम पर रोषू ❀ कतहुँ सुधाइहु ते बड़ दोषू
टेढ़ जानि संका सब काहू ❀ बक्र चंद्रमहि ग्रसइ न राहू

राम मन ही मन सोचने लगे—अपराध तो लक्ष्मण का है और क्रोध मुझ

१. गुनाह, अपराध।

पर करते हैं। कहीं-कहीं सीधेपन में भी बड़ा दोष होता है। टेढ़ा जानकर सभी को डर लगता है। जैसे टेढ़े चन्द्रमा को राहु नहीं ग्रसता।

राम कहेउ रिस तजिअ मुनीसा ❀ कर कुठारु आगें यह सीसा
जेहि रिस जाइ करिअ सोइ स्वामी ❀ मोहि जानिअ आपन अनुगामी

राम ने कहा—हे मुनीश्वर! क्रोध छोड़िये। आपके हाथ में फरसा है और मेरा यह सिर आगे है। जिस प्रकार आपका क्रोध जाय, हे स्वामी! वही कीजिये। मुझे आप अपना दास समझिये।

दो०— प्रभु सेवकहिं समरु कस तजहु बिप्रबर रोसु।
बेष बिलोकें कहेसि कछु बालकहू नहिं दोसु।२८१।

स्वामी और सेवक में युद्ध कैसा? हे ब्राह्मण-श्रेष्ठ! क्रोध छोड़िये। आपका वीर-वेष देखकर ही बालक (लक्ष्मण) ने कुछ कह डाला। उसका भी कुछ दोष नहीं।

देखि कुठार बान धनु धारी ❀ भै लरिकहि रिस बीरु बिचारी
नाम जान पै तुम्हहि न चीन्हा ❀ बंस सुभाव उतरु तेइ दीन्हा

आपको फरसा, बाण और धनुष धारण किये देखकर और वीर समझकर बालक को क्रोध आ गया। वह आपका नाम तो जानता था, पर उसने आपको पहचाना नहीं; अपने वंश के स्वभाव के अनुसार उसने उत्तर दिया।

जौं तुम्ह औतेहु मुनि की नाईं ❀ पद रज सिर सिसु धरत गोसाईं
छमहु चूक अनजानत केरी ❀ चहिअ बिप्र उर कृपा घनेरी

यदि आप मुनि की तरह आते, तो हे स्वामी! वह बालक आपके चरणों की धूल सिर पर रखता। अनजाने की भूल को क्षमा कर दीजिये। ब्राह्मण के हृदय में बहुत अधिक दया होनी चाहिये।

हमहिं तुम्हहिं सरबरि कसि नाथा ❀ कहहु न कहाँ चरन कहँ माथा
राम मात्र लघु नाम हमारा ❀ परसु सहित बड़ नाम तोहारा

हे नाथ! हममें और आपमें बराबरी कैसी? कहिये न, कहाँ चरण और कहाँ मस्तक? कहाँ मेरा राम मात्र एक छोटा-सा नाम, और कहाँ आपका परशु-सहित बड़ा नाम।

देव एकु गुनु धनुष हमारें ❀ नव गुन परम पुनीत तुम्हारें
सब प्रकार हम तुम्ह सन हारे ❀ छमहु बिप्र अपराध हमारे

हे देव! हमारे तो एक ही गुण धनुष है और आपके पास परम पवित्र नौ गुण[1] हैं। हम तो सब प्रकार से आपसे हारे हुये हैं। हे ब्राह्मण! हमारे अपराधों को क्षमा कीजिये।

दो०— बार बार मुनि बिप्रबर कहा राम सन राम।
बोले भृगुपति सरुष हसि तहूँ बन्धु सम बाम।२८२।

राम ने बार-बार परशुराम को 'मुनि' और 'विप्रवर' कहा। तब परशुराम क्रोध की हँसी हँसकर बोले—तू भी अपने भाई के समान ही कुटिल है।

निपटहिं द्विजकरि जानहि मोही ❀ मैं जस बिप्र सुनावउँ तोही
चाप स्रुवा सर आहुति जानू ❀ कोप मोर अति घोर कृसानू

तू मुझे निरा ब्राह्मण ही समझता है? मैं जैसा ब्राह्मण हूँ, तुझे सुनाता हूँ। तू मेरे धनुष को श्रुवा, बाण को आहुति और मेरे क्रोध को अत्यंत भयानक अग्नि जान।

समिध सेन चतुरंग सुहाई ❀ महा महीप भये पसु आई
मैं यहि परसु काटि बलि दीन्हे ❀ समरजग्य जग कोटिन्ह कीन्हे

चतुरंगिणी सेना सुन्दर यज्ञ की लकड़ियाँ हैं। और बड़े-बड़े राजा लोग उसमें आकर बलि के पशु हुये, जिनको मैंने इसी फरसे से काटकर बलि दिया है। मैंने संसार में ऐसे करोड़ों रण-यज्ञ किये हैं।

मोर प्रभाउ बिदित नहिं तोरें ❀ बोलसि निदरि बिप्र के भोरें
भंजेउ चापु दापु बड़ बाढ़ा ❀ अहमिति मनहुँ जीति जगु ठाढ़ा

तुझे मेरा प्रभाव नहीं मालूम है, इसीसे तू ब्राह्मण के धोखे में मेरा निरादर करके बोलता है। धनुष तोड़ डाला, इससे तेरा घमंड बहुत बढ़ गया है। अहङ्कार ऐसा है, मानो संसार को जीतकर खड़ा है।

राम कहा मुनि कहहु बिचारी ❀ रिस अति बड़ि लघु चूक हमारी
छुवतहिं टूट पिनाक पुराना ❀ मैं केहि हेतु करौं अभिमाना

---

१. नौ गुण—शम, दम, तप, शौच, क्षमा, सरलता, ज्ञान, विज्ञान और आस्तिकता।



राम ने कहा—हे मुनि! विचार करके बोलिये। आपका क्रोध बहुत बड़ा है और मेरी भूल बहुत छोटी है। पुराना धनुष था छूते ही टूट गया; भला मैं किस लिये अभिमान करूँ?

दो० जौं हम निदरहिं बिप्र बदि सत्य सुनहु भृगुनाथ।
तौ अस को जग सुभट जेहि भय बस नावहिं माथ॥

हे भृगुवंश के स्वामी! यह सच समझिये कि यदि हम ब्राह्मण कहकर निरादर करें, तो सत्य जानिये कि संसार में ऐसा कौन योद्धा है, जिसे हम डर के मारे मस्तक नवायें?

देव दनुज भूपति भट नाना ❁ समबल अधिक होउ बलवाना
जौं रन हमहिं पचारै कोऊ ❁ लरहिं सुखेन कालु किन होऊ

देवता, राक्षस और राजा या और भी अनेक योद्धा लोग, वे चाहे बराबर बल वाले हों, चाहे अधिक बलवान्, कोई भी हमें युद्ध में ललकारे, तो वे काल ही क्यों न हों, हम उनसे सुख से लड़ते हैं।

छत्रिय तनु धरि समर सकाना ❁ कुल कलंकु तेहि पाँवर जाना
कहउँ सुभाउ न कुलहि प्रसंसी ❁ कालहु डरहिं न रन रघुबंसी

क्षत्रिय का शरीर धरकर जो युद्ध में डर गया, उसे कुल का कलंक और अधम जानना चाहिये। मैं स्वभाव ही से कहता हूँ, कुल की प्रशंसा करके नहीं, कि रघुवंशी लोग रण में काल से भी नहीं डरते।

बिप्रबंस कै असि प्रभुताई ❁ अभय होइ जो तुम्हहिं डेराई
सुनि मृदु बचन गूढ़ रघुपति के ❁ उघरे पटल[1] परसुधर मति[2] के

ब्राह्मण-वंश की ऐसी प्रभुता है कि जो आपसे डरता है, वह सबसे निर्भय हो जाता है। रामचन्द्र के कोमल और रहस्य-पूर्ण वचन सुनकर परशुराम की बुद्धि के परदे खुल गये।

राम रमापति कर धनु लेहू ❁ खैंचहु मिटइ मोर संदेहू
देत चापु आपुहि चढ़ि गयऊ ❁ परसुराम मन बिसमय भयऊ

परशुराम ने कहा—हे राम! विष्णु का यह धनुष हाथ में लो। इसे चढ़ा दो, जिससे मेरा संदेह मिट जाय। जैसे ही परशुराम ने धनुष दिया, वैसे ही

१. परदा। २. बुद्धि।

वह आप ही चढ़ गया, तब परशुराम के मन में बड़ा आश्चर्य हुआ।

दो० जाना राम प्रभाउ तब पुलक प्रफुल्लित गात।
जोरि पानि बोले बचन हृदयँ न प्रेमु समात ॥२८४

तब उन्होंने राम का प्रभाव समझा। उनका शरीर पुलकित और प्रफुल्लित हो गया। वे हाथ जोड़कर वचन बोले। प्रेम उनके हृदय में अँटता नहीं था।

जय रघुबंस बनज[१] बन भानू ॥ गहन[२] दनुज कुल दहन कृसानू
जय सुर बिप्र धेनु हितकारी ॥ जय मद मोह कोह भ्रम हारी

हे रघुकुलरूपी कमल-बन के सूर्य! आपकी जय हो! हे राक्षसों के कुल-रूपी घने बन को भस्म करने वाले अग्नि! आपकी जय हो! हे देवता, ब्राह्मण और गौ के हित करने वाले! आपकी जय हो! हे मद, मोह, क्रोध, और भ्रम के हरण करने वाले! आपकी जय हो!

बिनय सील करुना गुन सागर ॥ जयति बचन रचना अति नागर[३]
सेवक सुखद सुभग सब अंगा ॥ जय सरीर छबि कोटि अनंगा

हे विनम्र, शील और गुणों के समुद्र और वचन की रचना में बड़े निपुण! आपकी जय हो! हे सेवक को सुख देने वाले, सब अङ्गों में सुन्दर और शरीर में करोड़ों कामदेव की शोभा धारण करने वाले! आपकी जय हो!

करउँ काह मुख एक प्रसंसा ॥ जय महेस मन मानस हंसा
अनुचित बहुत कहेउँ अग्याता ॥ छमहु छमामंदिर दोउ भ्राता

मैं एक मुख से आपकी क्या प्रशंसा करूँ? हे शिवजी के मनरूपी मान-सरोवर के हंस! आपकी जय हो! मैंने अनजान में आपको बहुत-से अनुचित वचन कहे। हे क्षमा के मन्दिर! आप दोनों भाई मुझे क्षमा कीजिये।

कहि जय जय जय रघुकुल केतू ॥ भृगुपति गये बनहिं तप हेतू
अपभयँ[४] कुटिल महीप डेराने ॥ जहँ तहँ कायर गवहिं पराने

रघुकुल के पताका-स्वरूप रामचन्द्रजी की जय हो, जय हो, जय हो! ऐसा कहकर परशुराम तप के लिये बन को चले गये। दुष्ट राजा लोग अकारण ही बहुत डर गये थे, वे डरपोक चुपके से इधर-उधर खिसक गये।

१. कमल। २. जंगल। ३. चतुर, निपुण। ४. कल्पित भय।

दो०— देवन्ह दीन्हीं दुंदुभी प्रभु पर बरषहिं फूल ।
हरषे पुर नर नारि सब मिटा मोह मय सूल ॥२८५॥

देवताओं ने नगाड़े बजाये। वे प्रभु के ऊपर फूल बरसाने लगे। जनकपुर के पुरुष-स्त्री सब हर्षित हो गये और अज्ञान से उत्पन्न उनकी पीड़ा मिट गई।

अति गहगहे बाजने बाजे ❀ सबहिं मनोहर मंगल साजे
जूथ जूथ मिलि सुमुखि सुनयनीं ❀ करहिं गान कल कोकिल बयनीं

बड़े ज़ोर से बाजे बजने लगे। सबने मनोहर मंगल साज साजे। सुन्दर मुँह वाली, सुन्दर नेत्रों वाली और कोयल के समान मधुर बोलने वाली स्त्रियाँ झुण्ड की झुण्ड मिलकर सुन्दर गान करने लगीं।

सुखु बिदेह कर बरनि न जाई ❀ जनम दरिद्र मनहुँ निधि[1] पाई
बिगत त्रास भइ सीय सुखारी ❀ जनु बिधु उदयँ चकोर कुमारी

जनक के सुख का वर्णन नहीं किया जा सकता। मानो जन्म से दरिद्र ने खज़ाना पा लिया हो। सीता का भय जाता रहा। वे ऐसी सुखी हुईं, जैसे चन्द्रमा के उदय होने से चकोर की कन्या सुखी होती है।

जनक कीन्ह कौसिकहि प्रनामा ❀ प्रभु प्रसाद धनु भंजेउ रामा
मोहि कृतकृत्य कीन्ह दुहुँ भाईं ❀ अब जो उचित सो कहिअ गोसाईं

जनक ने विश्वामित्र को प्रणाम किया (और कहा—) आप ही की कृपा से राम ने धनुष तोड़ा है। दोनों भाइयों ने मुझे कृतार्थ कर दिया। हे स्वामी! अब जो उचित हो, सो कहिये।

कह मुनि सुनु नरनाथ प्रबीना ❀ रहा बिबाहु चाप आधीना
टूटतहीं धनु भयेउ बिबाहू ❀ सुर नर नाग बिदित सब काहू

मुनि ने कहा—हे बुद्धिमान राजा! सुनो। विवाह का होना तो धनुष के अधीन था। धनुष के टूटते ही विवाह हो गया। देवता, नर और नाग सबको यह मालूम है।

दो०— तदपि जाइ तुम्ह करहु अब जथा बंस ब्यवहारु ।
बूझि बिप्र कुलबृद्ध गुरु बेद बिदित आचारु ॥२८६॥

---

१. खजाना।

तथापि तुम जाकर अपने कुल की जैसी रीति हो, ब्राह्मणों, कुल के वृद्धों और गुरुओं से पूछकर और वेदों में वर्णित जैसा आचार हो वैसा करो।

दूत अवधपुर पठवहु जाई ❀ आनहिं नृप दसरथहि बोलाई
मुदित राउ कहि भलेहि कृपाला ❀ पठए दूत बोलि तेहि काला

जाकर अयोध्या को दूत भेजो। वे राजा दशरथ को बुला लावें। राजा ने आनन्दित होकर कहा—हे कृपालु! बहुत अच्छा। उन्होंने उसी समय दूतों को बुलाकर भेज दिया।

बहुरि महाजन सकल बोलाए ❀ आइ सबन्हि सादर सिरु नाए
हाट बाट मन्दिर सुरबासा ❀ नगर सवाँरहु चारिहुँ पासा

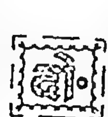
फिर जनक ने सब महाजनों को बुलाया। सबने आकर राजा को आदर-सहित सिर नवाया। राजा ने कहा—बाज़ार, रास्ते, घर, देवस्थान और सारे नगर को चारों ओर से सजाओ।

हरषि चले निज निज गृह आये ❀ पुनि परिचारक[2] बोलि पठाये
रचहु विचित्र बितान बनाई ❀ सिर धरि बचन चले सचुपाई

महाजन लोग हर्षित होकर चले और अपने-अपने घर आये। फिर राजा ने नौकरों को बुला भेजा, और कहा—सुन्दर मंडप बनाकर तैयार करो। यह सुनकर, वे राजा का वचन सिर पर धरकर और सुख पाकर चले।

पठये बोलि गुनी[3] तिन्ह नाना ❀ जे बितान बिधि कुसल सुजाना
बिधिहि बंदि तिन्ह कीन्ह अरंभा ❀ बिरचे कनक कदलि के खंभा

उन्होंने अनेक कारीगरों को बुला भेजा, जो मंडप छाने में बड़े कुशल और चतुर थे। उन्होंने ब्रह्मा की वन्दना करके कार्य आरम्भ किया और पहले उन्होंने सोने के केले के खम्भे बनाये।



हरित मनिन्ह के पत्र फल पदुम राग के फूल।
रचना देखि बिचित्र अति मन बिरंचि कर भूल ॥२८७॥

हरे मणियों के पत्र और फल और पद्मराग (माणिक) मणियों के फूल बनाये। मंडप की अति विचित्र रचना देखकर ब्रह्मा का मन भी चकित हो गया।

---

१. लावें। २. नौकर-चाकर। ३. कारीगर।

वेनु[1] हरित मनि मय सब कीन्हे ❀ सरल सपरब[2] परहिं नहिं चीन्हे
कनक कलित अहिबेलि बनाई ❀ लखि नहिं परइ सपर्न[3] सुहाई

बाँस हरे मणियों (पन्ने) से सीधे और गाँठों से युक्त ऐसे बनाये जो पहचाने नहीं जाते थे। सोने की सुन्दर नागबेलि (पान की लता) बनाई, जो पत्तों सहित ऐसी सुन्दर लगती थी कि पहचानी नहीं जाती थी।

तेहि के रचि पचि बंध बनाए ❀ बिच बिच मुकुता दाम सुहाये
मानिक मरकत कुलिस पिरोजा ❀ चीरि कोरि पचि[4] रचे सरोजा

उसी नागबेलि के रचकर और पच्चीकारी करके बन्धन (बाँधने की रस्सी) बनाये, जिनके बीच-बीच में मोतियों की सुन्दर झालरें हैं। माणिक्य, नीलम, हीरा और फ़ीरोजे को चीर करके, कोर करके और पच्चीकारी करके, उन्होंने (लाल, नीले, सफेद और फ़ीरोज़ी रंग के) कमल बनाये।

किए भृङ्ग बहुरंग बिहंगा ❀ गुञ्जहिं कूजहिं पवन प्रसंगा
सुर प्रतिमा खंभन्हि गढ़ि काढ़ीं ❀ मंगल द्रव्य लिएँ सब ठाढ़ीं
चौकें भाँति अनेक पुराईं ❀ सिंधुर मनिमय सहज सुहाई

भौंरे और बहुत रंगों के पक्षी बनाये, जो हवा लगने पर गूँजते और कूजते थे। खंभों पर देवताओं की मूर्त्तियाँ गढ़कर निकालीं, जो सब मंगल द्रव्य लिये खड़ी थीं। सहज सुहावने गजमुक्ताओं के अनेकों तरह के चौके उन्होंने पुराये।

दो० सौरभ पल्लव सुभग सुठि किए नीलमनि कोरि।
हेम बौर मरकत घवरि लसत पाटमय डोरि॥२८८

नीलमणि को कोरकर उन्होंने आम के सुन्दर पत्ते बनाये। सोने के बौर और रेशम की डोरी में बँधे हुये पन्ने के बने फलों के गुच्छे सुशोभित हैं।

रचे रुचिर बर बंदनिवारे ❀ मनहुँ मनोभवँ फंद सँवारे
मंगल कलस अनेक बनाए ❀ ध्वज पताक पट चँवर सुहाए

उन्होंने ऐसे सुन्दर और उत्तम बन्दनवार बनाये, मानो कामदेव ने फन्दे सजाये हों। अनेकों मंगल-कलश, ध्वजा, पताका, परदे और सुन्दर चँवर बनाये।

---

१. बाँस। २. गाँठदार। ३. पत्ते सहित। ४. पच्चीकारी करके।

दीप मनोहर मनिमय नाना ❀ जाइ न बरनि बिचित्र बिताना
जेहि मंडप दुलहिनि बैदेही ❀ सो बरनै असि मति कबि केही

मंडप में मणियों के अनेकों सुन्दर दीपक हैं। उस विचित्र मण्डप का तो वर्णन ही नहीं हो सकता। जिस मण्डप में सीता दुलहिन होंगी, उसका वर्णन करने की बुद्धि किस कवि में हो सकती है?

दूलह राम रूप गुन सागर ❀ सो बितान तिहुँ लोक उजागर[1]
जनक भवन कै सोभा जैसी ❀ गृह गृह प्रति पुर देखिअ तैसी

जिसमें रूप और गुणों के समुद्र राम दूल्हा होंगे, उस मंडप को तीनों लोकों में प्रसिद्ध होना ही चाहिये। जनक के महल की जैसी शोभा है, वैसी ही शोभा नगर के प्रत्येक घर की दिखाई देती है।

जेइ तिरहुति तेहि समय निहारी ❀ तेहि लघु लाग भुवन दस चारी
जो सम्पदा नीच गृह सोहा ❀ सो बिलोकि सुरनायक मोहा

उस समय जिसने तिरहुत को देखा था, उसे चौदहों भुवन छोटे जान पड़े। जनकपुर में नीच के घर भी उस समय जो सम्पदा सुशोभित थी, उसे देखकर इन्द्र भी मोहित हो जाता था।

दो०—बसइ नगर जेहिं लच्छि करि कपट नारि बर बेषु।
तेहि पुर कै सोभा कहत सकुचहिं सारद सेषु ।२८९।

जिस नगर में साक्षात् लक्ष्मी कपट से स्त्री का सुन्दर वेष बनाकर बसती हैं, उस पुर की शोभा का बखान करने में सरस्वती और शेष भी सकुचाते हैं।

पहुँचे दूत राम पुर पावन ❀ हरषे नगर बिलोकि सुहावन
भूप द्वार तिन्ह खबरि जनाई ❀ दसरथ नृप सुनि लिए बोलाई

जनक के दूत पवित्र राम की पवित्र पुरी अयोध्या में पहुँचे। सुन्दर नगर देखकर वे हर्षित हुये। उन्होंने राजद्वार पर जाकर ख़बर भेजी; राजा दशरथ ने सुनकर उन्हें बुला लिया।

करि प्रनामु तिन्ह पाती[2] दीन्ही ❀ मुदित महीप आपु उठि लीन्ही
बारि बिलोचन बाँचत पाती ❀ पुलक गात आई भरि छाती

उन्होंने प्रणाम करके चिट्ठी दी। प्रसन्न होकर राजा ने स्वयं उठकर उसे

---

१. प्रसिद्ध। २. चिट्ठी।

लिया। चिट्ठी बाँचते समय उनके नेत्रों में आँसू आ गये; शरीर में रोमाञ्च हो आया, और छाती भर आई।

रामु लषनु उर कर बर चीठी ❀ रहि गए कहत न खाटी मीठी
पुनि धरि धीर पत्रिका बाँची ❀ हरषी सभा बात सुनि साँची

हृदय में राम और लक्ष्मण, और हाथ में वह सुन्दर चिट्ठी है, राजा उसे लिये ही रह गये, कह न सके कि वह खट्टी है या मीठी। फिर धीरज धरकर उन्होंने चिट्ठी बाँची। सारी सभा सच्ची बात सुनकर हर्षित हो गई।

खेलत रहे तहाँ सुधि पाई ❀ आए भरत सहित हित[1] भाई
पूछत अति सनेह सकुचाई ❀ तात कहाँ तें पाती आई

भरत अपने मित्रों और भाई शत्रुघ्न के साथ जहाँ खेलते थे, वहीं समाचार पाकर वे आ गये। वे बहुत प्रेम से सकुचाते हुये पूछते हैं—पिताजी! चिट्ठी कहाँ से आई है?

दो०— कुसल प्रानप्रिय बंधु दोउ अहहिं कहहु केहि देस।
सुनि सनेह साने बचन बाँची बहुरि नरेस ॥२९०॥

हमारे प्राणों से प्यारे दोनों भाई कुशल से तो हैं? और वे किस देश में हैं? स्नेह से सने हुये ये वचन सुनकर राजा ने फिर से चिट्ठी बाँची।

सुनि पाती पुलके दोउ भ्राता ❀ अधिक सनेहु समात न गाता
प्रीति पुनीत भरत कै देखी ❀ सकल सभाँ सुखु लहेउ बिसेखी

चिट्ठी सुनकर दोनों भाई पुलकित हो गये। स्नेह इतना अधिक हो गया कि वह उनके शरीर में समाता नहीं। भरत का पवित्र प्रेम देखकर सारी सभा ने विशेष सुख पाया।

तब नृप दूत निकट बैठारे ❀ मधुर मनोहर बचन उचारे
भैआ कहहु कुसल दोउ बारे[2] ❀ तुम्ह नीकें निज नयन निहारे

तब राजा ने दूतों को पास बैठाया और मन को हरने वाले मीठे वचन बोले—हे भैया! कहो, दोनों बच्चे कुशल से तो हैं? तुमने अपनी आँखों से उन्हें अच्छी तरह देखा है न?

---

१. मित्र। २. बच्चे।

स्यामल गौर धरे धनु भाथा[1] ❀ बय किसोर कौसिक मुनि साथा
पहिचानहु तुम्ह कहहु सुभाऊ ❀ प्रेम बिबस पुनि पुनि कह राऊ

वे साँवले और गोरे शरीर के हैं, हाथों में धनुष और तरकस लिये रहते हैं, किशोर अवस्था है, विश्वामित्र मुनि के साथ हैं। तुम उनको पहचानते हो तो उनका स्वभाव बताओ। राजा प्रेम के वश बार-बार यही कह रहे हैं।

जा दिन तें मुनि गए लेवाई ❀ तब तें आजु साँचि सुधि पाई
कहहु बिदेह कवन बिधि जाने ❀ सुनि प्रिय बचन दूत मुसुकाने

जिस दिन से मुनि उन्हें लिवा ले गये, तब से आज ही हमने सच्ची खुशी पाई है। कहो तो, महाराज जनक ने उनको किस प्रकार पहचाना? यह प्रिय वचन सुनकर दूत मुसकुराये।

दो॰ सुनहु महीपति मुकुट मनि तुम्ह सम धन्य न कोउ।
रामु लषनु जिन्हके तनय बिस्व बिभूषन दोउ॥२९१॥

दूतों ने कहा—हे राजाओं के मुकुट-मणि, महाराज! सुनिये। आपके समान धन्य और कोई नहीं है, जिनके राम-लक्ष्मण जैसे पुत्र हैं, जो विश्व के भूषण हैं।

पूछन जोगु न तनय तुम्हारे ❀ पुरुषसिंघ तिहुँ पुर उँजियारे
जिन्ह के जस प्रताप कें आगे ❀ ससि मलीन रबि सीतल लागे

आपके पुत्र पूछने योग्य नहीं हैं वे पुरुषों में सिंह के समान और तीनों लोकों के प्रकाश-स्वरूप हैं। जिनके यश के आगे चन्द्रमा मलिन और प्रताप के आगे सूर्य शीतल लगता है।

तिन्ह कहँ कहिअ नाथ किमि चीन्हे ❀ देखिअ रबि कि दीप कर लीन्हे
सीय स्वयम्बर भूप अनेका ❀ सिमिटे[2] सुभट एक तें एका

हे नाथ! उनके लिये आप कहते हैं कि उन्हें कैसे पहचाना? क्या सूर्य को हाथ में दीपक लेकर देखा जाता है? सीता के स्वयंवर में अनेकों राजा और एक से एक बढ़कर वीर योद्धा एकत्र हुये थे।

संभु सरासनु काहु न टारा ❀ हारे सकल बीर बरिआरा
तीनि लोक महँ जे भट मानी ❀ सभ कै सकति संभु धनु भानी[3]

१. तरकस। २. एकत्र हुये। ३. तोड़ दी, कह दी।

शिवजी के धनुष को कोई भी हटा न सका। सब बली योद्धा हार गये। तीनों लोकों में प्रसिद्ध जो अभिमानी वीर थे, सबकी शक्ति शिवजी के धनुष ने तोड़ दी, या बता दी।

सकइ उठाइ सरासुर मेरू ❀ सोउ हिय हारि गयउ करि फेरू
जेइ कौतुक सिव सैलु उठावा ❀ सोउ तेहि सभाँ पराभव पावा

वाणासुर, जो सुमेरु को भी उठा सकता था, वह भी हृदय में हारकर परिक्रमा करके चला गया। और जिसने खेलवाड़ की तरह कैलाश को उठा लिया था, वह रावण भी उस सभा में पराजय को प्राप्त हुआ।

दो०- तहाँ राम रघुबंसमनि सुनिअ महा महिपाल।
भंजेउ चाप प्रयास बिनु जिमि गज पंकज नाल॥२९२

हे महाराज! सुनिये, वहाँ रघुवंश-मणि रामचन्द्रजी ने बिना प्रयास ही के शिव के धनुष को वैसे ही तोड़ डाला, जैसे हाथी कमल की डंडी को तोड़ डालता है।

सुनि सरोष भृगुनायकु आये ❀ बहुत भाँति तिन्ह आँखि देखाये
देखि राम बलु निज धनु दीन्हा ❀ करि बहु बिनय गवनु बन कीन्हा

धनुष टूटने का समाचार पाकर क्रोध में भरे परशुराम आये और उन्होंने बहुत प्रकार से आँखें दिखलाईं। अन्त में उन्होंने भी राम का बल देखकर अपना धनुष दे दिया और बहुत प्रकार से विनती करके बन को गमन किया।

राजन राम अतुल बल जैसें ❀ तेज निधान लषन पुनि तैसें
कंपहिं भूप बिलोकत जाकें ❀ जिमि गज हरि किसोर के ताकें

हे राजन्! जैसे रामजी अतुलित बली हैं, वैसे ही तेजस्वी लक्ष्मणजी भी हैं। उनके देखने मात्र से राजा लोग काँप उठते थे, जैसे हाथी सिंह के बच्चे के ताकने से काँप उठते हैं।

देव देखि तव बालक दोऊ ❀ अब न आँखि तर आवत कोऊ
दूत बचन रचना प्रिय लागी ❀ प्रेम प्रताप बीर रस पागी

हे देव! आपके दोनों बालकों को देखने के बाद अब आँखों के नीचे कोई आता ही नहीं; अर्थात् दृष्टि में कोई चढ़ता ही नहीं। प्रेम, प्रताप और वीर-रस में पगी हुई दूतों की वचन-रचना राजा को बहुत ही प्रिय लगी।

सभा समेत राउ अनुरागे ❀ दूतन्ह देन निछावरि लागे
कहि अनीति ते मूँदहिं काना ❀ धरमु विचारि सबहि सुखु माना

सभा-सहित राजा प्रेम में मग्न हो गये और दूतों को निछावर देने लगे। दूत 'यह उचित नहीं' ऐसा कहकर हाथों से कान मूँदने लगे। उनके धर्म का विचार करके (उनका धर्मयुक्त व्यवहार देखकर) सभी ने सुख माना।

दो॰— तब उठि भूप बसिष्ठ कहँ दीन्हि पत्रिका जाइ।
कथा सुनाई गुरहि सब सादर दूत बोलाइ॥२९३॥

तब राजा ने उठकर वशिष्ठ को जाकर चिट्ठी दी। और आदर-सहित दूतों को बुलाकर उन्होंने सारी कथा गुरुजी को कह सुनाई।

सुनि बोले गुर अति सुखु पाई ❀ पुन्य पुरुष कहुँ महि सुख छाई
जिमि सरिता सागर महुँ जाहीं ❀ जद्यपि ताहि कामना नाहीं

सुनकर और बहुत सुख पाकर गुरु बोले—पुण्यात्मा पुरुषों के लिये पृथ्वी सुखों से छाई हुई है। जैसे नदी समुद्र के पास जाती है, यद्यपि समुद्र को नदी की कामना नहीं होती

तिमि सुख संपति बिनहिं बोलाये ❀ धरमसील पहिं जाहिं सुभाये
तुम्ह गुर बिप्र धेनु सुर सेबी ❀ तसि पुनीत कौसल्या देवी

वैसे ही सुख और सम्पत्ति बिना बुलाये ही, स्वभावतः, धर्मात्मा पुरुष के पास जाते हैं। तुम गुरु, ब्राह्मण, गौ और देवता की सेवा करने वाले हो, वैसी ही पवित्र कौशल्या देवी भी हैं।

सुकृती तुम्ह समान जग माहीं ❀ भयउ न है कोउ होनेउ नाहीं
तुम्ह तें अधिक पुन्य बड़ काकें ❀ राजन राम सरिस सुत जाकें

तुम्हारे समान पुण्यात्मा संसार में न कोई हुआ, न है और न होने वाला है। हे राजन्! तुमसे अधिक और किसका पुण्य होगा, जिसके राम-सरीखे पुत्र हैं ?

बीर बिनीत धरम ब्रत धारी ❀ गुन सागर बर बालक चारी
तुम्ह कहुँ सर्ब काल कल्याना ❀ सजहु बरात बजाउ निसाना

तुम्हारे चारों बालक वीर, विनम्र, धर्म के व्रत को धारण करने वाले और

गुणों के सुन्दर समुद्र हैं। तुम्हें तो सभी समय कल्याणमय है। अतएव डंका बजवाकर बरात सजाओ।

दो०— चलहु बेगि सुनि गुर बचन भलेहि नाथ सिरु नाइ।
भूपति गवने भवन तब दूतन्ह बासु देवाइ ॥२९४॥

और 'जल्दी चलो' ऐसे गुरु के वचन सुनकर, 'हे नाथ! बहुत अच्छा' कहकर और सिर नवाकर तथा दूतों को डेरा दिलवाकर राजा महल में गये।

राजा सबु रनिवास बोलाई ❀ जनक पत्रिका बाँचि सुनाई
सुनि संदेसु सकल हरषानीं ❀ अपर कथा सब भूप बखानीं

राजा ने सारे रनिवास को बुलाया, और जनक की चिट्ठी बाँचकर सुना दी। समाचार सुनकर सब रानियाँ हर्षित हुईं। राजा ने फिर दूसरी बातें (जो दूतों से सुनी थीं) विस्तार के साथ बताईं।

प्रेम प्रफुल्लित राजहिं रानी ❀ मनहुँ सिखिनि सुनि बारिद बानी
मुदित असीस देहिं गुरनारीं ❀ अति आनंद मगन महतारीं

प्रेम में प्रफुल्लित रानियाँ ऐसी शोभायमान लगती हैं, जैसे मोरनी बादलों की गरज सुनकर (प्रफुल्लित होती है)। गुरु-पत्नी या बड़ी-बूढ़ी स्त्रियाँ प्रसन्न होकर आशीर्वाद दे रही हैं। मातायें अत्यन्त आनन्द में मग्न हैं।

लेहिं परसपर अति प्रिय पाती ❀ हृदयँ लगाइ जुड़ावहिं छाती
राम लषन कै कीरति करनी ❀ बारहिं बार भूपबर बरनी

उस अत्यन्त प्यारी चिट्ठी को आपस में लेकर सब हृदय से लगाकर छाती शीतल करती हैं। राजाओं में श्रेष्ठ राजा दशरथ ने राम-लक्ष्मण की कीर्त्ति-कथा का बारम्बार वर्णन किया।

मुनि प्रसादु कहि द्वार सिधाये ❀ रानिन्ह तब महिदेव बोलाये
दिये दान आनन्द समेता ❀ चले बिप्रबर आसिष देता

राजा 'यह सब मुनि की कृपा है' कहकर बाहर चले गये। तब रानियों ने ब्राह्मणों को बुलाया, और आनन्द-सहित उन्हें दान दिये। श्रेष्ठ ब्राह्मण आशीर्वाद देते हुये चले।

सो०— जाचक लिये हँकारि दीन्हि निछावरि कोटि बिधि।
चिरजीवहु सुत चारि चक्रबर्ति दसरत्थ के ॥२९५॥

तब उन्होंने भिक्षुकों को बुलवा लिया और उन्हें करोड़ों प्रकार की निछावरें दीं। (उन्होंने आशीर्वाद दिये—) चक्रवर्ती राजा दशरथ के चारों पुत्र चिरंजीवि हों।

कहत चले पहिरें पट नाना ❀ हरषि हने गहगहे निसाना
समाचार सब लोगन्हि पाये ❀ लागे घर घर होन वधाये

वे यह कहते हुये और अनेक प्रकार के सुन्दर वस्त्र पहन-पहनकर चले। आनन्दित होकर नगाड़े वालों ने नगाड़ों पर ज़ोर से चोटें लगाईं। जब यह सब समाचार लोगों ने पाया, तब घर-घर बधावे होने लगे।

भुवन चारि दस भरा उछाहू ❀ जनक सुता रघुवीर विआहू
सुनि सुभ कथा लोग अनुरागे ❀ मग गृह गलीं सँवारन लागे

चौदहों भुवनों में उत्साह भर उठा कि जनकजी की कन्या से रामचन्द्रजी का विवाह होगा। यह शुभ समाचार पाकर लोग प्रेम-मग्न हो गये, और रास्ते, घर और गलियाँ सजाने लगे।

जद्यपि अवध सदैव सुहावनि ❀ राम पुरी मंगलमय पावनि
तदपि प्रीति कै रीति सुहाई ❀ मंगल रचना रची वनाई

यद्यपि अयोध्या सदा सुहावनी है, क्योंकि वह राम की कल्याणमयी और पवित्र पुरी है, तो भी प्रीति की सुहावनी रीति के अनुसार मंगल-रचना से वह सजाई गई।

ध्वज पताक पट चामर चारू ❀ छावा परम विचित्र वजारू
कनक कलस तोरन मनिजाला ❀ हरद दूब दधि अच्छत माला

ध्वजा, पताका, परदे और सुन्दर चँवरों से सारा बाज़ार बहुत सुन्दर छाया हुआ है। सोने के घड़े, तोरण, मणियों के समूह, हलदी, दूब, दही, अक्षत और मालाओं से—

दो०— मंगल मय निज निज भवन लोगन्ह रचे वनाइ।
बीथी सींचीं चतुरसम[1] चौकें चारु पुराइ ॥२९६॥

लोगों ने अपने-अपने घरों को सजाकर मंगलमय बना दिया और गलियों को चतुरसम से सींचा और (द्वारों पर) सुन्दर चौक पुराये।

---

१. चन्दन चार भाग, केसर तीन भाग, कस्तूरी दो भाग और कपूर तीन भाग से बना हुआ एक सुगन्धित द्रव, अरगजा।

जहँ तहँ जूथ जूथ मिलि भामिनि ❀ सजि नवसत[1] सकल दुति दामिनि
बिधुबदनी मृग सावक लोचनि ❀ निज सरूप रति मान बिमोचनि

बिजली की-सी कान्ति वाली, चन्द्र-मुखी, हरिण के बच्चे के-से नेत्रों वाली और अपने सुन्दर रूप से कामदेव की स्त्री रति के अभिमान को छुड़ाने वाली सुहागिन स्त्रियाँ सोलहों शृङ्गार सजकर, जहाँ-तहाँ झुण्ड की झुण्ड मिलकर—

गावहिं मंगल मंजुल बानी ❀ सुनि कल रव कलकंठि[2] लजानी
भूप भवन किमि जाइ बखाना ❀ बिस्व बिमोहन रचेउ बिताना

मनोहर वाणी से मंगल-गीत गा रही हैं। जिनके सुन्दर स्वर को सुनकर कोयलें भी लजा जाती हैं। राजा के महल का वर्णन कैसे हो सकता है, जहाँ विश्व को मोहने वाला मंडप छाया हुआ है।

मंगल द्रव्य मनोहर नाना ❀ राजत बाजत बिपुल निसाना
कतहुँ बिरद बन्दी उच्चरहीं ❀ कतहु बेदधुनि भूसुर करहीं

नाना प्रकार के मनोहर मंगल-द्रव्य शोभित हो रहे हैं और बहुत-से नगाड़े बज रहे हैं। कहीं बन्दीजन विरुदावली गा रहे हैं और कहीं ब्राह्मण वेद-ध्वनि कर रहे हैं।

गावहिं सुन्दरि मंगल गीता ❀ लेइ लेइ नामु रामु अरु सीता
बहुत उछाहु भवनु अति थोरा ❀ मानहुँ उमगि चला चहुँ ओरा

सुन्दरी स्त्रियाँ राम और सीता का नाम ले-लेकर मंगल-गीत गा रही हैं। उत्साह बहुत है, महल अत्यंत ही छोटा है; इससे मानो आनन्द चारों ओर उमड़ चला है।

दो॰ सोभा दसरथ भवन कइ को कबि बरनै पार।
जहाँ सकल सुर सीस मनि राम लीन्ह अवतार।२९७

दशरथ के महल की शोभा का वर्णन कौन कवि कर सकता है? जहाँ सब देवताओं के शिरोमणि रामचन्द्रजी ने अवतार लिया है।

भूप भरत पुनि लिये बोलाई ❀ हय गय स्यंदन[3] साजहु जाई
चलहु बेगि रघुबीर बराता ❀ सुनत पुलक पूरे दोउ भ्राता

१. सोलह। २. कोयल। ३. रथ।

फिर राजा ने भरत को बुला लिया। (और कहा कि) जाकर घोड़े, हाथी और रथ सजाओ। रामचन्द्र की बरात में जल्दी चलो। यह सुनते ही दोनों भाई आनन्द से पूर्ण हो गये।

भरत सकल साहनी[1] बोलाये ❀ आयसु दीन्ह मुदित उठि धाये
रचि रुचि जीन तुरग तिन्ह साजे ❀ बरन बरन बर बाजि बिराजे

भरत ने घुड़साल के सब अध्यक्षों को बुलाया और उनको आज्ञा दी। वे प्रसन्न होकर उठ दौड़े। उन्होंने रुचि के साथ ज़ीन कसकर घोड़े सजाये। रंग-रंग के उत्तम घोड़े शोभित हो गये।

सुभग सकल सुठि चंचल करनी ❀ अय[2] इव जरत धरत पग धरनी
नाना जाति न जाहिं बखाने ❀ निदरि पवनु जनु चहत उड़ाने

सब घोड़े बड़े ही सुन्दर और चञ्चल चाल वाले हैं। वे धरती पर ऐसे पैर रखते हैं जैसे जलते हुये लोहे पर रखते हों। अनेकों जातियों के घोड़े हैं जिनका वर्णन नहीं हो सकता। वे मानो हवा का निरादर करके उड़ना चाहते हैं।

तिन्ह सब छयल भये असवारा ❀ भरत सरिस बय राजकुमारा
सब सुंदर सब भूषनधारी ❀ कर सर चाप तून कटि भारी

उन घोड़ों पर भरत के समान आयु वाले सब छैल-छबीले राजकुमार सवार हुये। ये सभी सुन्दर हैं और सभी आभूषण धारण किये हुये हैं। उनके हाथों में बाण और धनुष हैं, और कमर में भारी तरकस बँधे हैं।

दो० छरे छबीले छयल सब सूर सुजान नवीन।
जुग पदचर असवार प्रति जे असि कला प्रबीन।२९८

सभी चुने हुये छैल छबीले, बहादुर, चतुर और नवयुवक हैं। प्रत्येक सवार के साथ दो पैदल सिपाही हैं, जो तलवार चलाने की कला में बड़े निपुण हैं।

बाँधे बिरद बीर रन गाढ़े ❀ निकसि भए पुर बाहर ठाढ़े
फेरहिं चतुर तुरग गति नाना ❀ हरषहिं सुनि सुनि पनव निसाना

बड़े-बड़े युद्धों में पाई हुई कीर्ति से प्रशंसित वे वीर नगर से निकलकर बाहर जा खड़े हुये। वे चतुर अपने घोड़ों को तरह-तरह की चालों से फेर रहे हैं और भेरी और नगाड़े की आवाज़ सुन-सुनकर आनन्दित हो रहे हैं।

---

१. घुड़साल का अध्यक्ष। २. लोहा।

रथ सारथिन्ह विचित्र बनाए ❀ ध्वज पताक मनि भूषन लाए
चवँर चारु किंकिनि धुनि करहीं ❀ भानु जानु सोभा अपहरहीं

सारथियों ने ध्वजा, पताका, मणि और आभूषणों को लगाकर रथों को अद्भुत बना लिया है। उनमें सुन्दर चँवर लगे हैं और घंटियाँ बोल रही हैं। वे रथ इतने सुन्दर हैं कि सूर्य के रथ की सुन्दरता को भी छीने ले रहे हैं।

साँवकरन अगनित हय होते ❀ ते तिन्ह रथन्ह सारथिन्ह जोते
सुन्दर सकल अलंकृत सोहे ❀ जिन्हहि बिलोकत मुनि मन मोहे

श्यामकर्ण घोड़े अगणित थे। सारथियों ने वे उन रथों में जोत दिये जो सभी देखने में सुन्दर और गहनों से सजाये हुये शोभायमान हैं, जिनको देखकर मुनियों के मन भी मोहित हो जाते हैं।

जे जल चलहिं थलहि की नाईं ❀ टाप न बूड़ बेग अधिकाईं
अस्त्र सस्त्र सबु साज बनाई ❀ रथी सारथिन्ह लिए बोलाई

वे घोड़े जल पर भी स्थल के समान चलते हैं। वेग की अधिकता से उनके टाप पानी में डूबते नहीं। अस्त्र-शस्त्र से सब साज बनाकर सारथियों ने रथियों को बुला लिया।

दो॰ चढ़ि चढ़ि रथ बाहर नगर लागी जुरन[1] बरात।
होत सगुन सुन्दर सबन्हि जो जेहि कारज जात २९९

रथों पर चढ़-चढ़कर बरात नगर के बाहर जुटने लगी। जो जिस काम के लिये जाता है, सभी को सुन्दर सगुन होते हैं।

कलित करिबरन्हि परीं अँवारी ❀ कहि न जाइ जेहि भाँति सँवारी
चले मत्त गज घंट बिराजी ❀ मनहुँ सुभग सावनु घन राजी[2]

सुन्दर हाथियों पर अम्बारियाँ पड़ी हैं। वे जिस तरह सजाई गई हैं, वह कहा नहीं जा सकता। मतवाले हाथी घंटे बजाते हुये चले। मानों सावन के सुन्दर बादलों की पंक्ति हो।

बाहन अपर अनेक बिधाना ❀ सिबिका[3] सुभग सुखासन जाना
तिन्ह चढ़ि चले बिप्र बर बृन्दा ❀ जनु तनु धरे सकल स्रुति छन्दा

और भी अनेकों प्रकार की सवारियाँ हैं, जैसे—सुन्दर पालकियाँ और

१. जमा होने। २. पंक्ति। ३. पालकी।

बैठने में सुखदायक तामझाम और रथ आदि। श्रेष्ठ ब्राह्मणों के समूह उन पर चढ़कर चले, मानो वेदों के सब छन्द ही शरीर धारण किये हुये हों।

मागध सूत बंदि गुन गायक ❀ चले जान चढ़ि जो जेहि लायक
बेसर[1] ऊँट वृषभ बहु जाती ❀ चले वस्तु भरि अगनित भाँती

मागध, सूत और बन्दीजन (भाट) जो गुण-गान करने वाले हैं, वे सब जो जिस योग्य थे, वैसी सवारी पर चढ़कर चले। बहुत जातियों के खच्चर, ऊँट और बैल बहुत प्रकार की वस्तुयें लाद-लादकर चले।

कोटिन्ह काँवरि चले कहारा ❀ विविध वस्तु को बरनै पारा
चले सकल सेवक समुदाई ❀ निज निज साजु समाजु बनाई

कहार करोड़ों काँवरें लेकर चले। उनमें तरह-तरह की इतनी चीज़ें हैं, जिनका वर्णन कौन कर सकता है। सब सेवकों के समूह अपना-अपना साज-समाज बनाकर चले।

दो॰ सब के उर निर्भर[2] हरषु पूरित पुलक सरीर।
कबहिं देखिब नयन भरि राम लषन दोउ बीर ३००।

सबके हृदयों में अपार हर्ष उमड़ रहा है और शरीर पुलकायमान हैं। (सब सोच रहे हैं कि) कब हम राम-लक्ष्मण दोनों भाइयों को आँख भरकर देखेंगे।

गरजहिं गज घंटा धुनि घोरा ❀ रथ रव बाजि हिंस चहुँ ओरा
निदरि घनहिं घुम्मरहिं निसाना ❀ निज पराइ कछु सुनिअ न काना

हाथी चिंघाड़ रहे हैं। उनके घन्टों की बड़ी प्रचंड ध्वनि हो रही है। चारों ओर रथों की घरघराहट है और घोड़े हिनहिना रहे हैं। नगाड़े बादलों की गरज का तिरस्कार करके गम्भीर ध्वनि से बज रहे हैं। किसी को अपनी-परायी कोई बात कानों से सुनाई नहीं दे रही है।

महा भीर भूपति के द्वारे ❀ रज होइ जाइ पपान[3] पवारे
चढ़ी अटारिन्ह देखहिं नारी ❀ लिएँ आरतीं मंगल थारी

राजा दशरथ के द्वार पर इतनी बड़ी भीड़ हो रही है कि वहाँ पत्थर फेंका जाय तो वह भी पिसकर धूल हो जाय। स्त्रियाँ मंगल-थालों में आरती लिये हुये अटारियों पर चढ़ी हुई देख रही हैं।

---

१. खच्चर। २. अच्छी तरह भरा हुआ। ३. पत्थर।

गावहिं गीत मनोहर नाना ❀ अति आनंदु न जाइ बखाना
तव सुमंत्र दुइ स्यंदन साजी ❀ जोते रबि हय निंदक बाजी

वे नाना प्रकार के मनोहर गीत गा रही हैं। उनके अत्यन्त आनन्द का बखान नहीं हो सकता। तब सुमन्त्र ने दो रथ सजाकर, उनमें सूर्य के घोड़ों का भी तिरस्कार करने वाले घोड़े जोते।

दोउ रथ रुचिर भूप पहिं आने ❀ नहिं सारद पहिं जाहिं बखाने
राज समाजु एक रथ साजा ❀ दूसर तेज पुञ्ज अति भ्राजा

दोनों सुन्दर रथों को वे राजा दशरथ के पास ले आये। (वे इतने सुन्दर थे कि) उनका बखान सरस्वती से भी नहीं हो सकता। एक रथ राजसी ठाठ से सजाया गया और दूसरा बहुत ही दिव्य और अत्यन्त शोभायमान था।

दो०- तेहि रथ रुचिर बसिष्ठ कहुँ हरषि चढ़ाइ नरेसु।
आपु चढ़े स्यंदन सुमिरि हर गुर गौरि गनेसु॥३०१॥

उस सुन्दर रथ पर वशिष्ठजी को आनन्दपूर्वक चढ़ाकर फिर राजा दशरथ स्वयं शिव, गुरु, पार्वती और गणेशजी को स्मरण करके दूसरे रथ पर सवार हुये।

सहित बसिष्ठ सोह नृप कैसें ❀ सुर गुर संग पुरंदर जैसें
करि कुल रीति बेद बिधि राऊ ❀ देखि सबहि सब भाँति बनाऊ

वशिष्ठ के साथ राजा कैसे शोभित हो रहे हैं, जैसे देवताओं के गुरु बृहस्पति के साथ इन्द्र हों। वेद की विधि से और कुल की रीति के अनुसार कार्य करके तथा सब प्रकार से सब को सब प्रकार से सजे हुये देखकर,

सुमिरि रामु गुर आयसु पाई ❀ चले महीपति संख बजाई
हरषे बिबुध[1] बिलोकि बराता ❀ बरषहिं सुमन सुमंगल दाता

राम को स्मरण करके और गुरु की आज्ञा पाकर, राजा दशरथ शंख बजाकर चले। देवता बरात देखकर हर्षित हुये और सुन्दर मङ्गलदायक फूलों की वर्षा करने लगे।

भयेउ कोलाहल हय गय गाजे ❀ व्योम बरात बाजने बाजे
सुर नर नारि सुमंगल गाई ❀ सरस राग बाजहिं सहनाई

---

१. देवता।

बड़ा शोर मच गया। घोड़े और हाथी गरजने लगे। आकाश और बरात दोनों स्थानों में बाजे बजने लगे। देवताओं और मनुष्यों की स्त्रियाँ मंगल-गीत गाने लगीं और सरस राग से शहनाई बजने लगी।

घंट घंटि धुनि बरनि न जाई ❀ सरव[1] करहिं पायक[2] फहराई
करहिं बिदूषक कौतुक नाना ❀ हास कुसल कल गान सुजाना

घन्टे-घन्टियों की ध्वनि का वर्णन नहीं हो सकता। पैदल चलने वाले सिपाही या नट आदि झण्डियाँ फहराकर कसरत दिखाते हुये चल रहे हैं। हँसी करने में निपुण और सुन्दर गाने में चतुर विदूषक (भाँड़) तरह-तरह के तमाशे करते थे।

दो०— तुरग नचावहिं कुँअर वर अकनि मृदङ्ग निसान।
नागर नट चितवहिं चकित डिगहिं न ताल बँधान॥

सुन्दर राजकुमार मृदङ्ग और नगाड़े के शब्द सुनकर उन्हीं के अनुसार घोड़ों को ऐसा नचा रहे हैं कि वे ताल के बन्धन से ज़रा भी नहीं डिगते। होशियार नट चकित होकर यह देख रहे हैं।

बनइ न बरनत बनी बराता ❀ होहिं सगुन सुन्दर सुभदाता
चारा चाषु बाम दिसि लेई ❀ मनहुँ सकल मंगल कहि देई

बरात ऐसी बनी है कि उसका वर्णन करते नहीं बनता। सुन्दर कल्याणप्रद शकुन हो रहे हैं। नीलकंठ पक्षी बाईं ओर चारा ले रहा है, वह मानो सम्पूर्ण मंगलों की सूचना दे रहा है।

दाहिन काग सुखेत सुहावा ❀ नकुल दरसु सब काहूँ पावा
सानुकूल बह त्रिविध बयारी ❀ सघट सबाल आव बर नारी

दाहिनी ओर कौआ सुन्दर खेत में शोभा पा रहा है। नेवले का दर्शन भी सब किसी ने पाया। शीतल, मंद और सुगन्ध पवन अनुकूल दिशा में बह रहा है। सौभाग्यवती स्त्रियाँ भरे हुये घड़े और गोद में बालक लिये आ रही हैं।

लोवा[3] फिरि फिरि दरसु देखावा ❀ सुरभी सनमुख सिसुहि पियावा
मृगमाला फिरि दाहिनि आई ❀ मंगल गन जनु दीन्हि देखाई

---

१. श्रम, कसरत। २. पैदल चलने वाले। ३. लोमड़ी।

लोमड़ी (फिर-फिरकर) बार-बार दिखाई दे जाती है। गायें सामने खड़ी बछड़ों को दूध पिलाती हैं। हरिनों की टोली बाईं ओर से घूमकर दाहिनी ओर को आई, मानो सभी मंगलों का समूह दिखाई दिया।

छेमकरी[1] कह छेम बिसेषी ❀ स्यामा बाम सुतरु पर देखी
सनमुख आयउ दधि अरु मीना ❀ कर पुस्तक दुइ बिप्र प्रबीना

क्षेमकरी (सफ़ेद सिर वाली चील, सगुन चिड़िया) विशेष रूप से क्षेम (कल्याण) की बात कह रही है। श्यामा बाईं ओर सुन्दर पेड़ पर दिखाई पड़ी। दही, मछली और दो विद्वान् ब्राह्मण हाथ में पुस्तक लिये हुये सामने आये।

दो० **मंगलमय कल्यानमय अभिमत फल दातार।**
जनु सब साँचे होन हित भए सगुन एक बार॥३०३॥

सभी मङ्गलमय, कल्याणमय और मनोवाञ्छित फल देने वाले शकुन मानो सच्चे होने के लिये एक ही साथ हो गये।

मंगल सगुन सुगम सब ताकें ❀ सगुन ब्रह्म सुंदर सुत जाकें
राम सरिस बरु दुलहिनि सीता ❀ समधी दसरथु जनकु पुनीता

स्वयं सगुण ब्रह्म जिसके सुन्दर पुत्र हैं, उसके लिये सब मंगल-सूचक सगुन सुलभ हैं। जहाँ रामचन्द्रजी सरीखे दूल्हा और सीता सरीखी दुलहिन हैं, दशरथ और जनक सरीखे पवित्र समधी हैं।

सुनि अस ब्याह सगुन सब नाँचे ❀ अब कीन्हे बिरंचि हम साँचे
एहि बिधि कीन्ह बरात पयाना ❀ हय गय गाजहिं हने निसाना

ऐसा व्याह सुनकर मानो सभी शकुन नाच उठे और कहने लगे—अब ब्रह्मा जी ने हमको सच्चा कर दिया। इस तरह बरात ने प्रस्थान किया। नगाड़ों पर चोट पड़ते ही घोड़े-हाथी ज़ोर से बोलने लगते हैं।

आवत जानि भानु कुल केतू ❀ सरितन्हि जनक बँधाए सेतू
बीच बीच बर बास बनाए ❀ सुर पुर सरिस संपदा छाए

सूर्य-वंश के पताका-स्वरूप दशरथजी को आता हुआ जानकर जनकजी ने नदियों पर पुल बनवा दिये। बीच-बीच में (पड़ाव के लिये) सुन्दर घर बनवा दिये, जिनमें देवलोक के समान सम्पदा छाई है।

---

१. सफेद सिर वाली चील।

असन सयन बर बसन सुहाए ❀ पावहिं सब निज निज मन भाए
नित नूतन सुख लखि अनुकूले ❀ सकल बरातिन्ह मंदिर भूले

बरात के सब लोग अपने-अपने मन की पसन्द के अनुसार उत्तम भोजन, बिस्तर और सुन्दर वस्त्र पाते हैं। अपनी रुचि के अनुकूल नित्य नये सुखों को देखकर सब बरातियों को अपने-अपने घर भूल गये।

दो० आवत जानि बरात बर सुनि गहगहे निसान।
सजि गज रथ पदचर तुरग लेन चले अगवान॥३०४॥

बड़े ज़ोर से बजते हुये नगाड़ों की आवाज़ सुनकर, श्रेष्ठ बरात को आती हुई जानकर अगवानी करने वाले हाथी, रथ, पैदल और घोड़े सजाकर बरात लेने चले।

कनक कलस भरि कोपर[1] थारा ❀ भाजन ललित अनेक प्रकारा
भरे सुधा सम सब पकवाने ❀ भाँति भाँति नहिं जाहिं बखाने

सोने के कलश, परात, थाल आदि अनेक प्रकार के सुन्दर बर्तनों में जिन में अमृत के समान सब पकवान भरे हुये हैं, जो विविध प्रकार के हैं, जिनका वर्णन नहीं हो सकता,

फल अनेक बर बस्तु सुहाई ❀ हरषि भेंट हित भूप पठाई
भूषन बसन महा मनि नाना ❀ खग मृग हय गय बहुबिधि जाना[2]

उत्तम फल तथा और भी अनेकों सुन्दर चीज़ें राजा ने हर्षित होकर भेंट के लिये भेजीं। गहने, वस्त्र, तरह-तरह के जवाहिरात, पक्षी, पशु, घोड़े, हाथी और कई तरह की सवारियाँ—

मंगल सगुन सुगंध सुहाये ❀ बहुत भाँति महिपाल पठाये
दधि चिउरा उपहार अपारा ❀ भरि भरि काँवरि चले कहारा

सुहावने मंगल द्रव्य, सगुन की चीज़ें और बहुत प्रकार के सुगन्धित पदार्थ राजा ने भेजे। दही, चिउड़ा और अगणित उपहार की चीज़ें बहँगियों में भर-भरकर कहार ले चले।

अगवानन्ह जब दीखि बराता ❀ उर आनंदु पुलक भर गाता
देखि बनाव सहित अगवाना ❀ मुदित बरातिन्ह हने निसाना

---

१. परात। २. सवारी।

अगवानी करने वालों ने जब बरात देखी, तब उनके हृदय आनन्दित और शरीर पुलकायमान हो गये। अगवानियों को सजधज के साथ देखकर बरातियों ने भी प्रसन्न होकर नगाड़े बजाये।

दो०— हरषि परसपर मिलन हित कछुक चले बगमेल[1]।
जनु आनंद समुद्र दुइ मिलत बिहाइ सुबेल।३०५।

बराती तथा अगवानियों में से कुछ आपस में मिलने के लिये हर्ष के मारे सरपट दौड़ चले। मानो आनंद के दो समुद्र अपनी मर्यादा को छोड़कर मिलते हों।

बरषि सुमन सुर सुंदरि गावहिं ❀ मुदित देव दुंदुभी बजावहिं
बस्तु सकल राखीं नृप आगे ❀ बिनय कीन्हि तिन्ह अति अनुरागे

देवताओं की सुन्दरियाँ फूल बरसाकर गीत गा रही हैं और देवता आनन्दित होकर नगाड़े बजा रहे हैं। अगवानियों ने सब चीज़ें दशरथजी के आगे रख दीं और अत्यंत प्रेम से विनती की।

प्रेम समेत राय सबु लीन्हा ❀ भइ बकसीस[2] जाचकन्हि दीन्हा
करि पूजा मान्यता बड़ाई ❀ जनवासे कहँ चले लेवाई

राजा दशरथ ने प्रेम के साथ सब वस्तुएँ ले लीं। फिर बख़्शीशें हुई और वे याचकों को दे दी गईं। फिर पूजा करके, आदर-सत्कार और बड़ाई करके, अगवान लोग सबको जनवासे की ओर लिवा ले चले।

बसन बिचित्र पाँवड़े परहीं ❀ देखि धनदु धन मदु परिहरहीं
अति सुंदर दीन्हेउ जनवासा ❀ जहँ सब कहुँ सब भाँति सुपासा

विलक्षण वस्त्रों के पाँवड़े पड़ रहे हैं, जिन्हें देखकर कुबेर भी अपने धन का अभिमान छोड़ देते हैं। बड़ा सुन्दर जनवासा दिया गया, जहाँ सबको सब प्रकार का सुभीता था।

जानी सियँ बरात पुर आई ❀ कछु निज महिमा प्रगटि जनाई
हृदयँ सुमिरि सब सिद्धि बोलाईं ❀ भूप पहुनई करन पठाईं

जब सीता ने जाना कि नगर में बरात आ गई है, तब उन्होंने अपनी कुछ महिमा प्रकट करके दिखलाई। हृदय में स्मरण कर सब सिद्धियों को बुलाया

१. सरपट, वाग तुड़ाकर। २. बख़्शीश, इनाम।

और उन्हें राजा दशरथ का अतिथि-सत्कार करने को भेजा।

दो०—सिधि सब सिय आयसु अकनि[1] गईं जहाँ जनवास।
लियें संपदा सकल सुख सुरपुर भोग बिलास।३०६।

सीता की आज्ञा सुनकर सब सिद्धियाँ, जहाँ जनवासा था, वहाँ इन्द्रपुरी के सारे भोग-विलास और सब सुख और सम्पदा लिये हुए गईं।

निज निज बास बिलोकि बराती ❀ सुरसुख सकल सुलभ सब भाँती
बिभव भेद कछु कोउ न जाना ❀ सकल जनक कर करहिं बखाना

बरातियों ने अपने-अपने ठहरने के स्थान देखे। जहाँ देवताओं के सब सुखों को सब प्रकार से सुलभ पाया। इस ऐश्वर्य का कुछ भी भेद किसी ने जान नहीं पाया। सब जनकजी की प्रशंसा कर रहे हैं।

सिय महिमा रघुनायक जानी ❀ हरषे हृदयँ हेतु पहिचानी
पितु आगमन सुनत दोउ भाई ❀ हृदयँ न अति आनंदु अमाई[2]

राम ने सीता की महिमा जानी। वे सीता के प्रेम को पहचानकर हृदय में आनन्दित हुये। पिता (दशरथजी) के आने का समाचार सुनते ही दोनों भाइयों के हृदय में महान् आनंद समाता ही नहीं था।

सकुचन्ह कहि न सकत गुरु पाहीं ❀ पितु दरसन लालचु मन माहीं
बिस्वामित्र बिनय बड़ि देखी ❀ उपजा उर संतोष बिसेषी

संकोचवश वे गुरु से कह नहीं सकते थे, पर मन में पिता के दर्शनों की लालसा थी। विश्वामित्र ने उनकी बड़ी नम्रता देखी, तो उनके हृदय में बड़ा संतोष उत्पन्न हुआ।

हरषि बंधु दोउ हृदयँ लगाये ❀ पुलक अंग अंबक[3] जल छाये
चले जहाँ दसरथु जनवासे ❀ मनहुँ सरोबर तकेउ पियासे

हर्षित होकर उन्होंने दोनों भाइयों को हृदय से लगा लिया। उनका शरीर पुलकित हो गया और आँखों में आँसू आ गये। वे वहाँ चले, जहाँ दशरथजी का जनवासा था। मानो सरोवर प्यासे की ओर चला।

दो०—भूप बिलोके जबहिं मुनि आवत सुतन्ह समेत।
उठेउ हरषि सुख सिंधु महुँ चले थाह सी लेत।।३०७।।

१. सुनकर। २. भरना, समाना। ३. आँख।

जब राजा दशरथ ने पुत्रों के साथ मुनि को आते देखा, तब वे हर्षित होकर उठे और सुख के समुद्र में थाह-सी लेते हुये चले।

मुनिहिं दंडवत कीन्ह महीसा ❁ बार बार पद रज धरि सीसा
कौसिक राउ लिये उर लाई ❁ कहि असीस पूछी कुसलाई

पृथ्वीपति दशरथजी ने मुनि के पैरों की धूलि को बार-बार सिर चढ़ाकर दण्डवत् प्रणाम किया। विश्वामित्रजी ने राजा को उठाकर हृदय से लगा लिया और आशीर्वाद देकर कुशल-क्षेम पूछा।

पुनि दंडवत करत दोउ भाई ❁ देखि नृपति उर सुखु न समाई
सुत हिय लाइ दुसह दुखु मेटे ❁ मृतक सरीर प्रान जनु भेंटे

फिर दोनों भाइयों को दंडवत्-प्रणाम करते देखकर राजा के हृदय में सुख नहीं समाता था। पुत्रों को उठाकर हृदय से लगाकर उन्होंने असहनीय दुःख को मिटाया। मानो मृतक शरीर को प्राण मिल गये।

पुनि बसिष्ठ पद सिर तिन्ह नाये ❁ प्रेम मुदित मुनिवर उर लाये
बिप्र बृन्द बंदे दुहुँ भाई ❁ मनभावती असीसें पाई

फिर उन्होंने वशिष्ठजी के चरणों पर सिर नवाया। मुनि ने प्रेम में आनन्दित होकर उनको उठाकर हृदय से लगा लिया। दोनों भाइयों ने सब ब्राह्मणों की वन्दना की और मनभाये आशीर्वाद पाये।

भरत सहानुज कीन्ह प्रनामा ❁ लिये उठाइ लाइ उर रामा
हरषे लषन देखि दोउ भ्राता ❁ मिले प्रेम परिपूरित गाता

भरत ने अपने छोटे भाई शत्रुघ्न सहित राम को प्रणाम किया। राम ने उन्हें उठाकर छाती से लगा लिया। लक्ष्मण दोनों भाइयों को देखकर हर्षित हुये, और प्रेम से भरे हुये शरीर से वे उनसे मिले।

दो०— पुरजन परिजन जातिजन जाचक मंत्री मीत।
मिले जथाबिधि सबहिं प्रभु परम कृपालु बिनीत॥

फिर परम कृपालु और विनयी राम अयोध्या निवासियों, कुटुम्बियों, जाति के लोगों, याचकों, मन्त्रियों और मित्रों, इन सबसे यथायोग्य मिले।

रामहिं देखि बरात जुड़ानी ❁ प्रीति कि रीति न जाति बखानी
नृप समीप सोहहिं सुत चारी ❁ जनु धन धरमादिक तनुधारी

राम को देखकर बरात शीतल हुई। प्रीति की रीति का बखान नहीं हो सकता। राजा के पास चारों पुत्र ऐसी शोभा पा रहे हैं, जैसे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष शरीर धारण किये हुये हों।

सुतन्ह समेत दसरथहि देखी ❀ मुदित नगर नर नारि बिसेषी
सुमन बरिसि सुर हनहिं निसाना ❀ नाक[1] नटीं[2] नाचहिं करि गाना

पुत्रों के साथ दशरथजी को देखकर नगर के पुरुष-स्त्री बहुत प्रसन्न हो रहे हैं। देवता फूलों की वर्षा करके नगाड़े बजाते हैं और स्वर्ग की अप्सरायें गा-गा कर नाच रही हैं।

सतानंद अरु बिप्र सचिव गन ❀ मागध सूत बिदुष[3] बन्दीजन
सहित बरात राउ सनमाना ❀ आयसु माँगि फिरे अगवाना

अगवानी में आये हुए शतानन्दजी, अन्य ब्राह्मण, मन्त्रीगण, मागध, सूत, विद्वान् और भाटों ने बरात-सहित राजा दशरथ का आदर-सत्कार किया। फिर आज्ञा लेकर वे वापस लौटे।

प्रथम बरात लगन तें आई ❀ तातें पुर प्रमोद अधिकाई
ब्रह्मानंद लोग सब लहहीं ❀ बढ़हु दिवस निसि बिधि सन कहहीं

बरात लग्न के समय से पहले ही आ गई है, इससे जनकपुर में अधिक आनन्द छा रहा है। सब लोग ब्रह्म-सुख का अनुभव कर रहे हैं और ब्रह्मा से मनाते हैं कि दिन और रात बड़े हो जायँ।

दो॰ रामु सीय सोभा अवधि सुकृत अवधि[4] दोउ राज।
जहँ तहँ पुरजन कहहिं अस मिलि नर नारि समाज॥

राम और सीता तो सुन्दरता की सीमा हैं और दोनों राजा पुण्य की सीमा हैं; ऐसा जनकपुरवासी पुरुष-स्त्री जहाँ-तहाँ झुण्ड के झुण्ड मिलकर यही कह रहे हैं।

जनक सुकृत मूरति बैदेही ❀ दसरथ सुकृत रामु धरि देही
इन्ह सम काहुँ न सिव अवराधे ❀ काहुँ न इन्ह समान फल लाधे[5]

सीता जनकजी के पुण्य की साक्षात् मूर्ति हैं और दशरथ के पुण्य ने राम का शरीर धारण किया है। इन दोनों राजाओं के समान शिव की आराधना और

१. स्वर्ग। २. अप्सरा। ३. विद्वज्जन। ४. सीमा, हद। ५. पाया (गुजराती)।

किसी ने नहीं की और न इनके समान किसी ने फल ही पाये।

इन्ह सम कोउ न भयउ जग माहीं ❀ है नहिं कतहूँ होनेउ नाहीं
हम सब सकल सुकृत कै रासी ❀ भये जन जनमि जनकपुर बासी

इनके समान जगत् में न कोई हुआ, न कहीं है, और न होने वाला है। हम सब भी समस्त पुण्यों की राशि हैं, जो जगत् में जन्म लेकर जनकपुर के निवासी हुये।

जिन्ह जानकी राम छबि देखी ❀ को सुकृती हम सरिस बिसेषी
पुनि देखब रघुबीर बिआहू ❀ लेब भली बिधि लोचन लाहू

और जिन्होंने जानकी और राम की शोभा देखी है, भला, बताओ तो हमारे सरीखा विशेष पुण्यात्मा और कौन है ? और अब हम राम का विवाह देखेंगे और भली-भाँति नेत्रों का लाभ लेंगे।

कहहिं परसपर कोकिल बयनीं ❀ एहि बिआहँ बड़ लाभु सुनयनीं
बड़ें भाग बिधि बात बनाई ❀ नयन अतिथि होइहहिं दोउ भाई

कोयल के समान मधुर बोलने वाली स्त्रियाँ आपस में कहती हैं कि हे सुन्दर नेत्रों वाली ! इस विवाह में बड़े लाभ हैं। बड़े भाग्य से ब्रह्मा ने बात बना दी है कि ये दोनों भाई हमारे नेत्रों के अतिथि हुआ करेंगे।

दो० बारहिं बार सनेह बस जनक बोलाउब सीय।
लेन आइहहिं बंधु दोउ कोटि काम कमनीय॥३१०॥

जनकजी बार-बार स्नेह के वश होकर सीता को बुलायेंगे। फिर करोड़ों कामदेव के समान सुन्दर दोनों भाई सीता को विदा कराने आया करेंगे।

बिबिध भाँति होइहि पहुनाई ❀ प्रिय न काहि अस सासुर माई
तब तब राम लषनहिं निहारी ❀ होइहहिं सब पुर लोग सुखारी

तब अनेकों प्रकार से उनकी पहुनाई होगी। हे सखी ! ऐसी ससुराल किसे प्यारी न होगी ? तब-तब राम लक्ष्मण को देखकर हम सब नगर-निवासी सुखी होंगे।

सखि जस राम लषन कर जोटा ❀ तैसेइ भूप संग दुइ ढोटा
स्याम गौर सब अंग सुहाये ❀ ते सब कहहिं देखि जे आये

हे सखि ! राम-लक्ष्मण का जैसा जोड़ा है, वैसे ही दो कुमार राजा के

साथ और भी हैं। एक श्याम और दूसरा गौर वर्ण का है। उनके भी सब अंग बहुत सुन्दर हैं। यह वे सब लोग कहते हैं, जो उन्हें देख आये हैं।

कहा एक मैं आजु निहारे ❀ जनु विरंचि निज हाथ सँवारे
भरतु राम ही की अनुहारी ❀ सहसा लखि न सकहिं नर नारी

एक ने कहा—मैंने आज ही उन्हें देखा है, इतने सुन्दर हैं मानों ब्रह्मा ने उन्हें अपने ही हाथों से सँवारा है। भरत तो राम ही की शकल-सूरत के हैं। स्त्री-पुरुष उन्हें यकायक पहचान नहीं सकते।

लषनु सत्रुसूदनु एक रूपा ❀ नख सिख तें सब अङ्ग अनूपा
मन भावहिं मुख वरनि न जाहीं ❀ उपमा कहुँ त्रिभुवन कोउ नाहीं

लक्ष्मण और शत्रुघ्न दोनों एक रूप हैं। दोनों के सब अंग नख से लेकर शिखा तक अनुपम हैं। मन को प्यारे लगते हैं, पर मुख से वर्णन नहीं हो सकता। उनकी उपमा के लिये तीनों लोकों में कोई नहीं।

छंद—उपमा न कोउ कह दासतुलसी कतहुँ कबि कोविद कहें।
बल बिनय बिद्या सील सोभा सिंधु इन्ह से एइ अहें॥
पुर नारि सकल पसारि अंचल बिधिहिं बचन सुनावहीं।
ब्याहिअहुँ चारिउ भाइ एहि पुर हम सुमङ्गल गावहीं॥

तुलसीदास कहते हैं कि कवि और कोविद कहते हैं कि इनकी उपमा का (पुरुष) कहीं कोई नहीं है। बल, विनय, विद्या, शील और शोभा के समुद्र इनके समान ये ही हैं। जनकपुर की सब स्त्रियाँ आँचल फैलाकर ब्रह्मा को यह वचन सुनाती हैं कि इन चारों भाइयों का विवाह इसी नगर में करना, जिससे हम सुन्दर मंगल गायें।

सो०—कहहिं परसपर नारि बारि बिलोचन पुलक तन।
सखि सब करब पुरारि पुन्य पयोनिधि भूप दोउ।३११।

स्त्रियाँ आँखों में आँसू (प्रेमाश्रु) भरकर पुलकित शरीर से आपस में कहती हैं कि हे सखी! दोनों राजा पुण्य के समुद्र हैं, शिवजी सब मनोरथ पूर्ण करेंगे।

एहि बिधि सकल मनोरथ करहीं ❀ आनँद उमगि उमगि उर भरहीं
जे नृप सीय स्वयंबर आए ❀ देखि बंधु सब तिन्ह सुख पाये

इस प्रकार सब मनोरथ कर रही हैं और हृदय को उत्साहपूर्वक आनन्द से भर रही हैं। सीता के स्वयंवर में जो राजा आये थे, उन्होंने भी उन चारों भाइयों को देखकर सुख पाया।

कहत राम जसु बिसद बिसाला ❀ निज निज भवन गए महिपाला
गए बीति कछु दिन एहि भाँती ❀ प्रमुदित पुरजन सकल बराती

राजा लोग राम का सुन्दर और महान् यश कहते हुये अपने-अपने घर गये। इस प्रकार कुछ दिन बीत गये। जनकपुर के लोग और बराती सभी बड़े आनन्दित हैं।

मंगल मूल लगन दिनु आवा ❀ हिम ऋतु अगहनु मासु सुहावा
ग्रह तिथि नखतु जोगु बर बारू[1] ❀ लगन सोधि बिधि कीन्ह बिचारू

अब कल्याण का मूल विवाह का दिन आ गया। हेमन्त ऋतु में सुहावना अगहन का महीना था। ग्रह, तिथि, नक्षत्र, योग और वार श्रेष्ठ थे। ब्रह्मा ने लग्न शोधकर इस पर विचार किया।

पठै दीन्हि नारद सन सोई ❀ गनी जनक के गनकन्ह[2] जोई
सुनी सकल लोगन यह बाता ❀ कहहिं जोतिषी आहिं[3] बिधाता

और उसे नारदजी के हाथ भेज दिया। जनकजी के ज्योतिषियों ने भी वही गणना कर रक्खी थी। सब लोगों ने यह बात सुनी, तब वे कहने लगे—यहाँ के ज्योतिषी भी ब्रह्मा ही हैं।

दो०— धेनुधूरि बेला बिमल सकल सुमङ्गल मूल।
बिप्रन्ह कहेउ बिदेह सन जानि सगुन अनुकूल॥३१२॥

सभी सुन्दर मंगलों की मूल गोधूलि की पवित्र बेला आ गई, और शकुन अनुकूल होने लगे। तब ब्राह्मणों ने जनकजी को बताया।

उपरोहितहि कहेउ नरनाहा ❀ अब बिलंब कर कारनु काहा
सतानंद तब सचिव बोलाये ❀ मंगल सकल साजि सब ल्याये

तब राजा जनक ने पुरोहित शतानंदजी से कहा—अब देरी का क्या कारण है? तब शतानन्दजी ने मन्त्री को बुलाया। मन्त्री सब मंगल का सामान सजाकर ले आये।

---

१. वार, दिन। २. ज्योतिषियों ने। ३. हैं।

सङ्ख निसान पनव बहु बाजे ❀ मङ्गल कलस सगुन सुभ साजे
सुभग सुआसिनि[1] गावहिं गीता ❀ करहिं बेद धुनि बिप्र पुनीता

शंख, नगाड़े, भेरी और बहुत-से बाजे बजने लगे तथा मंगल घट आदि शुभ शकुन की वस्तुयें सजाई गईं। सुन्दर सुहागिन स्त्रियाँ गीत गा रही हैं और पवित्र ब्राह्मण वेद की ध्वनि कर रहे हैं।

लेन चले सादर एहि भाँती ❀ गए जहाँ जनवास बराती
कोसलपति कर देखि समाजू ❀ अति लघु लाग तिन्हहिं सुरराजू

सब लोग इस प्रकार आदरपूर्वक बरात को लेने चले और वहाँ गये, जहाँ बरातियों का जनवासा था। वहाँ अयोध्या-नरेश का ठाट-बाट देखकर उनको इन्द्र बहुत छोटा लगने लगा।

भयेउ समउ अब धारिअ पाऊ ❀ यह सुनि परा निसानहिं घाऊ
गुरहि पूछि करि कुल बिधि राजा ❀ चले सङ्ग मुनि साधु समाजा

उन्होंने निवेदन किया—समय हो गया, अब पधारिये। यह सुनते ही नगाड़ों पर चोट पड़ी। गुरु वशिष्ठ से पूछकर और कुल के सब लोकाचार करके राजा दशरथ मुनियों और साधुओं के समाज को साथ लेकर चले।



भाग्य बिभव अवधेस कर देखि देव ब्रह्मादि।
लगे सराहन सहस मुख जानि जनम निज बादि[2] ॥

अवध-नरेश दशरथ का भाग्य और ऐश्वर्य देखकर और अपना जन्म व्यर्थ जानकर, ब्रह्मा आदि देवता हज़ारों मुखों से उसकी सराहना करने लगे।

सुरन्ह सुमङ्गल अवसरु जाना ❀ बरषहिं सुमन बजाइ निसाना
सिव ब्रह्मादिक बिबुध बरूथा ❀ चढ़े बिमानन्हि नाना जूथा

देवगण सुन्दर मंगल का अवसर जानकर नगाड़े बजाकर फूल बरसा रहे हैं। शिव, ब्रह्मा आदि देवगण अनेक टोलियों में विमानों पर चढ़े हुये,

प्रेम पुलक तन हृदय उछाहू ❀ चले बिलोकन राम बिआहू
देखि जनकपुरु सुर अनुरागे ❀ निज निज लोक सबहिं लघु लागे

प्रेम से पुलकित शरीर हो और हृदय में बड़ा उत्साह भरकर राम का विवाह

१. सौभाग्यवती। २. व्यर्थ।



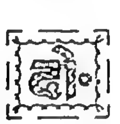
देखने चले। जनकपुर को देखकर देवता इतने अनुरक्त हो गये कि उन्हें अपने-अपने लोक बहुत तुच्छ लगने लगे।

चितवहिं चकित बिचित्र बिताना ❀ रचना सकल अलौकिक नाना
नगर नारि नर रूप निधाना ❀ सुघर सुधरम सुसील सुजाना

अद्भुत मंडप को तथा नाना प्रकार की अलौकिक रचनाओं को वे चकित होकर देख रहे हैं। नगर के स्त्री-पुरुष रूप के भंडार, सुघर और धर्मात्मा, सुशील और विचारवान हैं।

तिन्हहिं देखि सब सुर सुरनारी ❀ भए नखत जनु बिधु उँजियारी
बिधिहि भयेउ आचरजु बिसेपी ❀ निज करनी कछु कतहुँ न देखी

उन्हें देखकर सब देवता और उनकी स्त्रियाँ चन्द्रमा के प्रकाश में नक्षत्र की तरह फीके हो गये। ब्रह्मा को विशेष आश्चर्य हुआ क्योंकि वहाँ उन्होंने अपनी कोई रचना तो कहीं देखी ही नहीं।



सिव समुझाए देव सब जनि आचरज भुलाहु।
हृदय बिचारहु धीर धरि सिय रघुबीर बिआहु॥३१४॥

तब शिवजी ने सब देवताओं को समझाया कि तुम लोग आश्चर्य में मत भूलो और धीरज धरकर हृदय में विचार करो कि यह सीताराम का विवाह है।

जिन्ह कर नामु लेत जग माहीं ❀ सकल अमंगल मूल नसाहीं
करतल होहिं पदारथ चारी ❀ तेइ सिय रामु कहेउ कामारी

जिनका नाम लेते ही संसार में सब अमङ्गलों का मूल नष्ट हो जाता है और चारों पदार्थ (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) मुट्ठी में आ जाते हैं, वही सीता और राम हैं। काम के शत्रु शिवजी ने ऐसा कहा।

एहि बिधि संभु सुरन्ह समुझावा ❀ पुनि आगें बर बसह[1] चलावा
देवन्ह देखे दसरथु जाता ❀ महामोद मन पुलकित गाता

इस प्रकार शिवजी ने देवताओं को समझाया और फिर अपने श्रेष्ठ बैल नंदीश्वर को आगे हाँक दिया। देवताओं ने देखा कि मन में बड़े ही प्रसन्न और पुलकित शरीर से दशरथ जी जा रहे हैं।

---

१. बैल।

साधु समाजु संग महिदेवा ❀ जनु तनु धरे करहिं सुख सेवा
सोहत साथ सुभग सुत चारी ❀ जनु अपवरग[1] सकल तनु धारी

उनके साथ में साधुओं और ब्राह्मणों की मंडली ऐसी शोभा दे रही है, मानो सुख शरीर धारण करके उनकी सेवा कर रहे हैं। चारों सुन्दर पुत्र साथ में ऐसे शोभित हैं, मानो सम्पूर्ण मोक्ष (सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य, सायुज्य) शरीर धारण किये हुये हो।

मरकत कनक बरन बर जोरी ❀ देखि सुरन्ह भै प्रीति न थोरी
पुनि रामहिं बिलोकि हिय हरषे ❀ नृपहि सराहि सुमन तिन्ह बरषे

नीलमणि और सुवर्ण के रङ्ग की सुन्दर जोड़ियों को देखकर देवताओं को कम प्रीति नहीं हुई (अर्थात् बहुत ही प्रीति हुई)। फिर राम को देखकर वे हृदय में हर्षित हुये। उन्होंने राजा की सराहना करके फूल बरसाये।

दो० राम रूपु नख सिख सुभग बारहिं बार निहारि।
पुलक गात लोचन सजल उमा समेत पुरारि।३१५।

नख से शिखा तक राम का सुन्दर रूप बार-बार देखकर पार्वती-सहित शिवजी का शरीर पुलकित हो गया और नेत्र जल से भर गये।

केकि कंठ दुति स्यामल अंगा ❀ तड़ित बिनिंदक बसन सुरंगा
ब्याह बिभूषन बिबिध बनाए ❀ मंगलमय सब भाँति सुहाए

राम का मोर के कंठ की कान्ति वाला साँवला शरीर है। बिजली का अत्यंत उपहास करने वाला सुन्दर (पीले) रंग का उनका वस्त्र है। विवाह के तरह-तरह के मंगलमय और सब प्रकार से सुन्दर गहने शरीर पर सजाये हुये हैं।

सरद बिमल बिधु बदन सुहावन ❀ नयन नवल राजीव लजावन
सकल अलौकिक सुन्दरताई ❀ कहि न जाइ मन ही मन भाई

राम का मुख शरद् पूर्णिमा के निर्मल चन्द्रमा की तरह सुहावना है। नेत्र नवीन कमल को लजाने वाले हैं। सारी सुन्दरता अलौकिक है। वह कही नहीं जा सकती। मन ही मन प्रिय लगती है।

बंधु मनोहर सोहहिं संगा ❀ जात नचावत चपल तुरंगा
राजकुँअर बर बाजि देखावहिं ❀ बंस प्रसंसक[2] बिरिद सुनावहिं

१. स्वर्ग। २. वंदीजन, भाट।



मनोहर भाई साथ में सुशोभित हैं, जो चंचल घोड़ों को नचाते हुये चले जा रहे हैं। राजकुमार श्रेष्ठ घोड़ों को दिखला रहे हैं। और बंदीजन विरुदावली सुना रहे हैं।

जेहि तुरंग पर रामु बिराजे ❀ गति बिलोकि खग नायकु लाजे
कहि न जाइ सब भाँति सुहावा ❀ बाजि बेषु जनु काम बनावा

जिस घोड़े पर राम विराजमान हैं, उसकी चाल देखकर गरुड़ भी लजा जाते हैं। वह सब प्रकार से सुहावना है, उसका वर्णन नहीं हो सकता। मानो कामदेव ही ने घोड़े का वेष धारण कर लिया हो।

छंद—जनु बाजि बेषु बनाइ मनसिजु राम हित अति सोहई।
आपने बय बल रूप गुन गति सकल भुवन बिमोहई॥
जगमगत जीन जराव जोति सुमोति मनि मानिक लगे।
किंकिनि ललाम लगामु ललित बिलोकि सुर नर मुनि ठगे॥

मानो राम के लिये कामदेव घोड़े का वेष बनाकर बहुत शोभित हो रहा है। वह अपनी आयु, बल, रूप, गुण और गति से सब लोकों को मोहित कर रहा है। उस पर जड़ाऊ ज़ीन जगमगा रहा है, जिसमें सुन्दर चमक वाले मोती, मणि और माणिक्य लगे हैं। उसकी सुन्दर घंटियों वाली ललित लगाम देखकर देवता, मनुष्य और मुनि सभी ठगे जाते हैं।

दो०—प्रभु मनसहिं लयलीन मनु चलत बाजि छबि पाव।
भूषित उड़गन तड़ित घनु जनु बर बरहि[1] नचाव ३१६

प्रभु के मन से मन मिलाये चलता हुआ घोड़ा बड़ी शोभा पा रहा है। मानो तारागण तथा बिजली से अलंकृत मेघ सुन्दर मोर को नचा रहा हो।

जेहि बर बाजि रामु असवारा ❀ तेहि सारदउ न बरनै पारा
संकरु राम रूप अनुरागे ❀ नयन पंचदस अति प्रिय लागे

जिस श्रेष्ठ घोड़े पर राम सवार हैं, उसका वर्णन सरस्वती भी नहीं कर सकतीं। शिवजी राम के रूप में ऐसे अनुरक्त हुये कि उन्हें अपने पन्द्रह नेत्र बहुत ही प्यारे लगने लगे।

---

१. मोर।

हरि हित सहित रामु जब जोहे ❀ रमा समेत रमापति मोहे
निरखि रामछबि बिधि हरषाने ❀ आठै नयन जानि पछिताने

विष्णु ने जब प्रेम-सहित राम को देखा, तब वे लक्ष्मीपति लक्ष्मी-सहित मोहित हो गये। राम की शोभा देखकर ब्रह्मा बड़े प्रसन्न हुये, पर अपने आठ ही नेत्र जानकर पछताने लगे।

सुर सेनप उर बहुत उछाहू ❀ बिधि तें डेवढ़ सु लोचन लाहू
रामहिं चितव सुरेस सुजाना ❀ गौतम स्रापु परम हित माना

देवताओं के सेनापति स्वामिकार्तिक के हृदय में बड़ा उत्साह है, क्योंकि उन्हें ब्रह्मा से ड्योढ़े अर्थात् बारह नेत्रों का सुन्दर लाभ मिल रहा है। सुजान इन्द्र राम को देख रहा है और गौतम मुनि के शाप को अपने लिये हितकर मान रहा है।

देव सकल सुरपतिहिं सिहाहीं ❀ आजु पुरंदर[1] सम कोउ नाहीं
मुदित देवगन रामहिं देखी ❀ नृप समाज दुहुँ हरष बिसेषी

सब देवता इन्द्र से ईर्ष्या कर रहे हैं (और कहते हैं कि) आज इन्द्र के समान भाग्यवान् दूसरा कोई नहीं है। देवगण राम को देखकर प्रसन्न हैं। दोनों राजाओं के समाज में विशेष हर्ष छा रहा है।

छंद—अति हरषु राज समाजु दुहुँ दिसि दुन्दुभी बाजहिं घनी।
बरषहिं सुमन सुर हरषि कहि जय जयति जय रघुकुलमनी॥
एहि भाँति जानि बरात आवत बाजने बहु बाजहीं।
रानी सुआसिनि बोलि परिछन हेतु मंगल साजहीं॥

दोनों ओर से राज-समाज में अत्यन्त हर्ष है और बड़े ज़ोर से नगाड़े बज रहे हैं। देवता हर्षित होकर और रघुकुल के शिरोमणि राम की 'जय हो, जय हो, जय हो', कहकर फूल बरसा रहे हैं। इस प्रकार बरात को आती हुई जानकर बहुत प्रकार के बाजे बजने लगे। रानी सुहागिन स्त्रियों को बुलाकर परछन के लिये मंगल द्रव्य सजाने लगीं।

दो०—सजि आरती अनेक बिधि मंगल सकल सँवारि।
चलीं मुदित परिछन करन गजगामिनि बर नारि॥

१. इन्द्र।

अनेक प्रकार से आरती सजाकर और सब मंगल द्रव्यों को ठीक-ठीक रखकर हाथी की-सी चाल चलने वाली उत्तम स्त्रियाँ परछने के लिये प्रसन्न होकर चलीं ।

विधुवदनी सब सब मृगलोचनि ❀ सब निज तन छवि रति मदु मोचनि
पहिरे बरन बरन बर चीरा ❀ सकल विभूषन सजें सरीरा

सब स्त्रियाँ चन्द्रमा के समान मुँह वाली, सभी मृग की-सी आँखों वाली और सभी अपने शरीर की शोभा से रति के अभिमान को मिटाने वाली हैं। वे अनेक रंगों की सुन्दर साड़ियाँ पहने हैं और शरीर पर सब गहने सजाये हुये हैं।

सकल सुमंगल अंग बनाए ❀ करहिं गान कलकंठ लजाए
कंकन किंकिनि नूपुर बाजहिं ❀ चालि बिलोकि काम गज लाजहिं

सब अंगों को सुन्दर मंगलमय पदार्थों से सजाये हुये वे कोयल को लजाती हुई गान कर रही हैं। कंगन, करधनी और पाजेब बज रहे हैं। स्त्रियों की चाल देखकर कामदेव का हाथी भी लजा जाता है।

बाजहिं बाजन बिबिध प्रकारा ❀ नभ अरु नगर सुमंगल चारा
सची[1] सारदा रमा[2] भवानी ❀ जे सुरतिय सुचि सहज सयानी

अनेक प्रकार के बाजे बज रहे हैं। आकाश और नगर दोनों स्थानों में सुन्दर मंगलाचार हो रहे हैं। इंद्राणी, सरस्वती, लक्ष्मी, पार्वती और जो स्वभाव ही से पवित्र और सयानी देवांगनायें थीं,

कपट नारि बर बेष बनाई ❀ मिलीं सकल रनिवासहिं जाई
करहिं गान कल मंगल बानी ❀ हरष बिबस सब काहुँ न जानी

वे सब स्त्री का कपट-वेष बनाकर रनवास में जा मिलीं और मनोहर वाणी से मंगल गीत गाने लगीं। सब हर्ष में बेसुध हैं, किसी ने उन्हें पहचाना नहीं।

छंद—को जान केहि आनंद बस सब ब्रह्मु बर परिछन चली।
कल गान मधुर निसान बरषहिं सुमन सुर सोभा भली॥
आनंद कंदु बिलोकि दूलह सकल हिय हरषित भई।
अंभोज[3] अंबक अंबु उमगि सुअंग पुलकावलि छई॥

१. इन्द्राणी। २. लक्ष्मी। ३. कमल।

कौन किसे जाने-पहचाने? सब आनन्द के वश में ब्रह्मरूपी दूल्हे को परछने चलीं। मनोहर गान हो रहा है, मधुर-मधुर नगाड़े बज रहे हैं, देवता फूल बरसा रहे हैं; बड़ी अच्छी शोभा है। आनन्द के मूल दूलह को देखकर सब स्त्रियाँ हृदय में हर्षित हुईं। कमल ऐसे नेत्रों में आँसू उमड़ आये और सबके सुन्दर अंगों में रोमाञ्च हो आया।

दो०— जो सुखु भा[1] सिय मातु मन देखि राम वर बेषु।
सो न सकहिं कहि कलप सत सहस सारदा सेषु ।३१८।

राम का सुन्दर रूप देखकर सीता की माता के मन में जो सुख हुआ, उसे सौ हज़ार कल्पों में भी हज़ारों सरस्वती और शेष नहीं कह सकते।

नयन नीरु हठि मंगल जानी ❀ परिछन करहिं मुदित मन रानी
वेद विहित अरु कुल आचारू ❀ कीन्ह भली विधि सब व्यवहारू

मंगल अवसर जानकर नेत्रों के जल को रोके हुये रानी प्रसन्न मन से परछन कर रही हैं। वेदों में वर्णित तथा कुल में होने वाले सभी आचार और व्यवहार रानी ने भली भाँति किये।

पंच सबद धुनि मंगल गाना ❀ पट पाँवड़े परहिं विधि नाना
करि आरती अरघु तिन्ह दीन्हा ❀ राम गवनु मंडप तव कीन्हा

पाँच प्रकार के बाजों के शब्द (तंत्री, ताल, झाँझ, नगाड़ा और तुरही) और पाँच प्रकार की ध्वनियाँ (वेदध्वनि, वन्दिध्वनि, जयध्वनि, शंखध्वनि और हुलूध्वनि) और मंगल-गान हो रहे हैं। अनेक तरह के वस्त्रों के पाँवड़े पड़ रहे हैं। रानी ने आरती करके अर्घ्य दिया, तब राम ने मंडप में गमन किया।

दसरथु सहित समाज बिराजे ❀ विभव विलोकि लोकपति लाजे
समयँ समयँ सुर बरषहिं फूला ❀ सांति पढ़हिं महिसुर अनुकूला

महाराज दशरथ अपनी मंडली-सहित विराजमान हुये। उनके ऐश्वर्य को देखकर लोकों के स्वामी भी लजा गये। समय-समय पर देवता फूल बरसा रहे हैं, और ब्राह्मण लोग शान्ति पाठ कर रहे हैं।

नभ अरु नगर कोलाहल होई ❀ आपनि पर कछु सुनइ न कोई
एहि विधि रामु मंडपहिं आए ❀ अरघु देइ आसन बैठाए

---

१. हुआ।



आकाश और नगर में कोलाहल हो रहा है। कोई अपनी परायी कुछ नहीं सुनता। इस प्रकार राम मंडप में आये और अर्घ्य देकर आसन पर बैठाये गये।

छंद–बैठारि आसन आरती करि निरखि बरु सुख पावहीं।
मनि बसन भूषन भूरि वारहिं नारि मंगल गावहीं॥
ब्रह्मादि सुर बर बिप्र बेष बनाइ कौतुक देखहीं।
अवलोकि रघु कुल कमल रबि छबि सुफल जीवन लेखहीं॥

राम को आसन पर बैठाकर, आरती करके और दूलह को देखकर स्त्रियाँ सुख पा रही हैं। वे ढेर के ढेर मणि, वस्त्र और गहने निछावर करके मङ्गल गा रही हैं। ब्रह्मा आदि श्रेष्ठ देवता ब्राह्मण का वेष बनाकर कौतुक देख रहे हैं। वे रघुकुलरूपी कमल के सूर्य की छवि देखकर अपना जीवन सफल समझ रहे हैं।

दो०–नाऊ बारी भाट नट राम निछावरि पाइ।
मुदित असीसहिं नाइ सिर हरषु न हृदयँ समाइ॥३१९

नाई, वारी, भाट और नट राम की निछावर पाकर, प्रसन्न होकर, सिर नवाकर आशीर्वाद देते हैं, हर्ष उनके हृदय में समाता नहीं है।

मिले जनकु दसरथु अति प्रीती ❀ करि बैदिक लौकिक सब रीती
मिलत महा दोउ राज बिराजे ❀ उपमा खोजि खोजि कबि लाजे

वेदों में वर्णित और लोक में प्रचलित दोनों रीतियाँ पूरी करके जनकजी और दशरथजी बड़े प्रेम से मिले। दोनों महाराज मिलते हुये ऐसे शोभित हुये कि कवि उनके लिये उपमा खोज-खोजकर लजा गये।

लही न कतहुँ हारि हियँ मानी ❀ इन्ह सम एइ उपमा उर आनी
सामध देखि देव अनुरागे ❀ सुमन बरषि जसु गावन लागे

जब कहीं उपमा न मिली, तब हृदय से हार मानकर उन्होंने यह उपमा निश्चित की कि इनके समान ये ही हैं। समधियों का मिलाप या परस्पर सम्बन्ध देखकर देवता अनुरक्त हो गये। वे फूल बरसाकर उनका यश गाने लगे।

जगु बिरंचि उपजावा जब तें ❀ देखे सुने ब्याह बहु तब तें
सकल भाँति सम साजु समाजू ❀ सम समधी देखे हम आजू

वे कहने लगे—जब से ब्रह्मा ने जगत् को उत्पन्न किया, तब से हमने

बहुत-से विवाह देखे और सुने; पर सब प्रकार से समान साज-समाज और बराबरी में पूरे समधी हमने आज ही देखे।

देव गिरा सुनि सुंदरि साँची ❁ प्रीति अलौकिक दुहुँ दिसि माँची
देत पाँवड़े अरघु सुहाए ❁ सादर जनकु मंडपहिं ल्याए

देवताओं की सुन्दर और सच्ची वाणी सुनकर दोनों ओर अलौकिक प्रीति छा गई। सुन्दर पाँवड़े और अर्घ्य देते हुये जनकजी दशरथजी को आदर-सहित मंडप में ले आये।

छंद–मंडपु बिलोकि बिचित्र रचनाँ रुचिरताँ मुनि मन हरे।
निज पानि जनक सुजान सब कहुँ आनि सिंघासन धरे॥
कुल इष्ट सरिस बसिष्ठ पूजे बिनय करि आसिष लही।
कौसिकहिं पूजत परम प्रीति कि रीति तौ न परै कही॥

मंडप की विचित्र रचना देखकर उसकी सुन्दरता मुनि के मन को भी हरण कर लेती है। बुद्धिमान जनक ने अपने हाथों से ला-लाकर सबके लिये सिंहासन रक्खा। उन्होंने अपने कुल-देवता के समान वशिष्ठजी की पूजा की और विनय करके आशीर्वाद प्राप्त किया। विश्वामित्रजी की पूजा करते समय तो परम प्रीति की रीति का वर्णन ही नहीं किया जा सकता।

दो०–बामदेव आदिक रिषय पूजे मुदित महीस।
दिए दिब्य आसन सबहि सब सन लही असीस ॥३२०॥

राजा ने प्रसन्न मन से वामदेव आदि ऋषियों की पूजा की। सबको उन्होंने दिव्य आसन दिये और सबसे आशीर्वाद प्राप्त किया।

बहुरि कीन्हि कोसलपति पूजा ❁ जानि ईस सम भाव न दूजा
कीन्हि जोरि कर बिनय बड़ाई ❁ कहि निज भाग्य बिभव बहुताई

फिर उन्होंने कोसलाधीश राजा दशरथ की पूजा उन्हें ईश (शंकर) के समान जानकर ही की; और कोई दूसरा भाव नहीं था। हाथ जोड़कर उन्होंने विनती की और उनके सम्बन्ध से अपने भाग्य और ऐश्वर्य की वृद्धि की सराहना की।

पूजे भूपति सकल बराती ❁ समधी सम सादर सब भाँती
आसन उचित दिए सब काहू ❁ कहौं काह मुख एक उछाहू



राजा जनक ने सब बरातियों का पूजन सबको समधी (दशरथ) के समान मानकर सब प्रकार से आदरपूर्वक किया। सबको उन्होंने उचित आसन दिये। मैं एक मुख से उस उत्साह का वर्णन क्या करूँ ?

सकल बरात जनक सनमानी ❁ दान मान बिनती बर बानी
बिधि हरि हर दिसिपति दिनराऊ ❁ जे जानहिं रघुबीर प्रभाऊ

जनकजी ने दान, मान-सम्मान, विनय और मधुर वाणी से सारी बरात का सम्मान किया। ब्रह्मा, विष्णु, शिव, दिग्पाल और सूर्य जो रामचन्द्रजी का प्रभाव जानते हैं,

कपट बिप्र बर बेषु बनाएँ ❁ कौतुक देखहिं अति सचु पाएँ
पूजे जनक देव सम जानें ❁ दिए सुआसन बिनु पहिचानें

वे श्रेष्ठ ब्राह्मण का कपट-वेष बनाये हुये बहुत ही सुख पाते हुये सब कौतुक देख रहे थे। जनकजी ने उनको देव तुल्य जाना, उनका सत्कार किया और बिना पहचाने ही उन्हें सुन्दर आसन दिये।

छन्द—पहिचान को केहि जान सबहि अपान सुधि भोरी भई।
आनंद कंदु बिलोकि दूलहु उभय दिसि आनँदमई॥
सुर लखे राम सुजान पूजे मानसिक आसन दए।
अवलोकि सीलु सुभाउ प्रभु को बिबुध मन प्रमुदित भए॥

कौन किसे पहचाने ? सबको अपनी ही सुध भूली हुई है। आनन्द के मूल दूलह को देखकर दोनों ओर आनन्द छाया हुआ है। बुद्धिमान् राम ने देवताओं को पहचान लिया और उनका मानसिक सत्कार करके उन्हें मानसिक आसन दिये। प्रभु का शील-स्वभाव देखकर देवगण मन में बहुत आनन्दित हुये।

दो०— रामचंद्र मुख चंद्र छबि लोचन चारु चकोर।
करत पान सादर सकल प्रेमु प्रमोदु न थोर॥३२१॥

रामचन्द्र के मुखरूपी चन्द्रमा की छवि को सभी सुन्दर चकोररूपी लोचन आदरपूर्वक पान कर रहे हैं। प्रेम और आनन्द अधिक है।

समउ बिलोकि बसिष्ठ बुलाए ❁ सादर सतानंदु सुनि आए
बेगि कुअँरि अब आनहु जाई ❁ चले मुदित मुनि आयसु पाई

समय देखकर वशिष्ठजी ने शतानन्दजी को आदरपूर्वक बुलाया। बुलाहट सुनकर आदर-सहित शतानन्दजी आये। वशिष्ठजी ने कहा—राजकुमारी को शीघ्र ले आइये। मुनि की आज्ञा पाकर शतानन्दजी प्रसन्न होकर चले।

रानी सुनि उपरोहित बानी ❀ प्रमुदित सखिन्ह समेत सयानी
बिप्रबधू कुलबृद्ध बोलाई ❀ करि कुलरीति सुमंगल गाई

बुद्धिमती रानी पुरोहित की वाणी सुनकर सखियों-समेत प्रमुदित हुईं। उन्होंने ब्राह्मणों की स्त्रियों और कुल की बृद्धा स्त्रियों को बुलाया। उन्होंने कुल के रीति-रस्म पूरे करके सुन्दर मङ्गल-गीत गाये।

नारि बेष जे सुर बर बामा ❀ सकल सुभायँ सुन्दरी स्यामा
तिन्हहिं देखि सुख पावहिं नारीं ❀ बिनु पहिचानि प्रान तें प्यारीं

सुराङ्गनायें, जो मनुष्य की स्त्रियों के वेष में हैं, सभी स्वभाव ही से सुन्दरी और श्यामा (षोड़श वर्षीया) हैं। उनको देखकर रनिवास की स्त्रियाँ बहुत ही सुख पाती हैं और बिना पहचान ही के वे प्राणों से भी प्यारी हो रही हैं।

बार बार सनमानहिं रानी ❀ उमा रमा सारद सम जानी
सीय सँवारि समाज बनाई ❀ मुदित मंडपहिं चलीं लिवाई

रानी बार-बार उनका सम्मान उन्हें पार्वती, लक्ष्मी और सरस्वती के समान जानकर करती हैं। रनिवास की स्त्रियाँ और सखियाँ सीता का शृङ्गार करके, मंडली बनाकर, आनन्दित होकर, उन्हें मंडप की ओर लिवा ले चलीं।

छंद—चलि ल्याइ सीतहि सखीं सादर सजि सुमंगल भामिनीं।
नवसप्त साजें सुन्दरी सब मत्त कुंजर गामिनीं ॥
कल गान सुनि मुनि ध्यान त्यागहिं काम कोकिल लाजहीं।
मंजीर[1] नूपुर कलित कंकन ताल गति बर बाजहीं ॥

सुन्दर मङ्गल का साज सजकर स्त्रियाँ आदर-सहित सीता को लिवा चलीं। सभी सोलहों शृङ्गार से सुसज्जित मतवाले हाथी की सी चाल वाली हैं। उनके मनोहर गान को सुनकर मुनि लोग ध्यान छोड़ देते हैं और कामदेव के कोकिल

---

१. पाजेब।

भी लजा जाते हैं। पाजेब, पैंजनी और सुन्दर कंकण ताल की गति के अनुसार बड़े सुन्दर बज रहे हैं।

दो०—सोहति बनिता बृन्द महुँ सहज सुहावनि सीय।
छबि ललना गन मध्य जनु सुखमा तिय कमनीय॥

स्वभाव ही से सुन्दरी सीता स्त्रियों के समूह में इस प्रकार शोभित हो रही हैं, जैसे छविरूपी ललनाओं के समूह के बीच शोभारूपी सुन्दर स्त्री सुशोभित हो।

सिय सुंदरता बरनि न जाई ❀ लघु मति बहुत मनोहरताई
आवत दीख बरातिन्ह सीता ❀ रूप रासि सब भाँति पुनीता

सीता की सुन्दरता का वर्णन नहीं हो सकता। मेरी बुद्धि छोटी है और सुन्दरता बहुत बड़ी। रूप की राशि और सब प्रकार से पवित्र सीता को जब बरातियों ने आते देखा,

सबहिं मनहिं मन किए प्रनामा ❀ देखि राम भए पूरन कामा
हरषे दसरथ सुतन्ह समेताँ ❀ कहि न जाइ उर आनँद जेताँ

तब सबने मन ही मन उन्हें प्रणाम किया और राम को देखकर तो सभी कृतार्थ हो गये। राजा दशरथ पुत्रों-सहित हर्षित हुये। उनके हृदय में जितना आनन्द था, वह कहा नहीं जा सकता।

सुर प्रनामु करि बरिसहिं फूला ❀ मुनि असीस धुनि मंगल मूला
गान निसान कोलाहलु भारी ❀ प्रेम प्रमोद मगन नर नारी

देवता प्रणाम करके फूल बरसा रहे हैं। कल्याण के मूल मुनियों के आशीर्वादों की ध्वनियों तथा गानों और नगाड़ों के शब्द से बड़ा कोलाहल हो रहा है। पुरुष-स्त्री सभी प्रेम और आनन्द में मग्न हैं।

एहि बिधि सीय मंडपहिं आई ❀ प्रमुदित सांति पढ़हिं मुनिराई
तेहि अवसर कर बिधि व्यवहारू ❀ दुहुँ कुलगुर सब कीन्ह अचारू

इस प्रकार सीता मण्डप में आई। मुनिराज बहुत ही आनन्दित होकर शान्ति-पाठ पढ़ रहे हैं। उस अवसर की सब रीति, व्यवहार और कुलाचार दोनों कुल-गुरुओं ने किया।

छंद—आचार करि गुरु गौरि गनपति मुदित बिप्र पुजावहीं।
सुर प्रगटि पूजा लेहिं देहिं असीस अति सुखु पावहीं॥

मधुपर्क मङ्गल द्रव्य जो जेहि समय मुनि मन महुँ चहैं।
भरे कनक कोपर कलस सो तब लिएहिं परिचारक रहैं॥

कुलाचार करके गुरुजी प्रसन्न होकर, गणेशजी, गौरी और ब्राह्मणों की पूजा करा रहे हैं। देवता प्रकट होकर पूजा ग्रहण करते हैं, आशीर्वाद देते हैं और अत्यन्त सुख पा रहे हैं। मुनि मन में मधुपर्क आदि जो-जो मंगल-द्रव्य चाहते हैं, उनको सेवकगण उसी समय सोने की परातों और कलशों में भरकर लिये तैयार रहते हैं।

कुल रीति प्रीति समेत रबि कहि देत सबु सादर किए।
एहि भाँति देव पुजाइ सीतहि सुभग सिंघासनु दिए॥
सिय राम अवलोकनि परसपर प्रेमु काहु न लखि परै।
मन बुद्धि बर बानी अगोचर प्रगट कबि कैसे करै॥

सूर्यदेव प्रेम-सहित अपने कुल की रीतियाँ बता देते हैं; मुनि ने उन सब को आदर और प्रीति-सहित करा दिया। इस प्रकार देवताओं की पूजा करा के उन्होंने सीताजी को सुन्दर सिंहासन दिया। सीता राम का आपस में एक दूसरे को देखना तथा उनका परस्पर का प्रेम किसी को देख नहीं पड़ रहा है। भला, जो बात मन, बुद्धि और वाणी से भी परे है, उसे कवि कैसे कहे?

दो०। होम समय तनु धरि अनलु अति सुख आहुति लेहिं।
बिप्र बेष धरि बेद सब कहि बिबाह बिधि देहिं।३२३।

हवन के समय अग्निदेव शरीर धारण करके बड़े ही सुख से स्वयं आहुति ले लेते हैं। और सारे वेद ब्राह्मण का वेष धारण करके विवाह की विधियाँ बताये देते हैं।

जनक पाट महिषी जग जानी ❀ सीय मातु किमि जाइ बखानी
सुजसु सुकृतु सुखु सुन्दरताई ❀ सब समेटि बिधि रची बनाई

जनकजी की जगविख्यात पटरानी और सीता की माता का बखान तो कैसे हो सकता है? सुयश, पुण्य, सुख और सुन्दरता सबको बटोरकर ब्रह्मा ने उनकी रचना की है।

समउ जानि मुनिबरन्ह बोलाईं ❀ सुनत सुआसिनि सादर ल्याईं
जनक बाम दिसि सोह सुनयना ❀ हिमगिरि संग बनी[1] जनु मयना

समय जानकर श्रेष्ठ मुनियों ने उनको बुलवाया। यह सुनते ही सुहागिन स्त्रियाँ उन्हें आदर-पूर्वक ले आईं। सुनयना (जनकजी की पटरानी) जनकजी की बाईं ओर ऐसी सुशोभित हुईं, मानो हिमांचल के साथ मैना दुलहिन शोभित हों।

कनक कलस मनि कोपर रूरे ❀ सुचि सुगंध मंगल जल पूरे
निज कर मुदित रायँ अरु रानी ❀ धरे राम के आगें आनी

सोने के कलश और मणियों की सुन्दर परातें, जो पवित्र और सुगंधित मङ्गल-जल से भरे हैं, राजा और रानी ने प्रसन्न होकर अपने हाथों से आकर राम के आगे रक्खीं।

पढ़हिं बेद मुनि मंगल बानी ❀ गगन सुमन झरि अवसरु जानी
बर बिलोकि दंपति अनुरागे ❀ पाय पुनीत पखारन लागे

मुनि कल्याणमयी वाणी से वेद पढ़ रहे हैं; सुअवसर जानकर आकाश से फूलों की झड़ी लग गई है। दूलह को देखकर राजा-रानी प्रेम-मग्न हो गये और उनके पवित्र चरणों को पखारने लगे।

छंद—लागे पखारन्ह पाय पंकज प्रेम तनु पुलकावली।
नभ नगर गान निसान जय धुनि उमगि जनु चहुँ दिसि चली
जे पद सरोज मनोज अरि उर सर सदैव बिराजहीं।
जे सकृत[2] सुमिरत बिमलता मन सकल कलि मल भाजहीं

वे राम के कमल ऐसे चरणों को पखारने लगे। प्रेम से उनका शरीर पुलकित हो आया है। आकाश और नगर दोनों में होने वाले गान, नगाड़े और जय-जयकार की ध्वनि मानो चारों दिशाओं में उमड़ चली। जो कमल ऐसे चरण कामदेव के शत्रु शिवजी के हृदय-रूपी सरोवर में सदा विराजते हैं, जिन का एक बार भी स्मरण करने से मन में निर्मलता आती है और कलियुग के सारे पाप भाग जाते हैं,

---

१. दुलहिन (मारवाड़ी)। २. एक बार।

जे परसि मुनि बनिता लही गति रही जो पातकमई।
मकरंदु जिन्ह को संभु सिर सुचिता अवधि सुर बरनई॥
करि मधुप मुनि मन जोगि जन जे सेइ अभिमत गति लहैं।
ते पद पखारत भाग्य भाजन जनकु जय जय सब कहैं॥

जिसे स्पर्श करके गौतम मुनि की स्त्री अहल्या ने परम गति पाई, जो पापमयी थी; जिन चरण-कमलों का मकरंद रस (गंगाजी) शिवजी सिर पर धरते हैं, जिसे देवता पवित्रता की सीमा बताते हैं, मुनि और योगीजन अपने मन को जिन चरण-कमलों का भौंरा बनाकर तथा सेवन कर मनोवाञ्छित गति प्राप्त करते हैं, उन्हीं चरणों को भाग्य के पात्र जनक जी धो रहे हैं, यह देखकर सब 'जय-जयकार' कर रहे हैं।

बर कुअँरि करतल जोरि साखोचारु[1] दोउ कुलगुर करैं।
भयो पानिगहन बिलोकि बिधि सुर मनुज मुनि आनँद भरैं॥
सुखमूल दूलह देखि दम्पति पुलक तनु हुलस्यो हियो।
करि लोक बेद बिधानु कन्या दानु नृप भूषन कियो॥

दोनों कुलों के गुरु वर और कन्या की हथेलियों को मिलाकर शाखोच्चार करने लगे। पाणि-ग्रहण की विधि पूर्ण हुई देखकर ब्रह्मादि देवता, मनुष्य और मुनि आनन्द में भर गये। सुख के मूल दूलह को देखकर राजा-रानी का शरीर पुलकित हो गया और हृदय आनन्द से उमड़ आया। राजाओं के अलङ्कार-स्वरूप महाराज जनकजी ने लोक और वेद की विधि करके कन्यादान किया।

हिमवंत जिमि गिरिजा महेसहि हरिहि श्री[2] सागर दई।
तिमि जनक रामहि सिय समरपी बिस्व कल कीरति नई॥
क्यों करै बिनय बिदेहु कियो बिदेह मूरति सावँरी।
करि होम बिधिवत गाँठि जोरी होन लागी भावँरी॥

हिमाचल ने जैसे शिवजी को पार्वती दी थी और समुद्र ने विष्णु को लक्ष्मी दी थी, उसी प्रकार जनकजी ने राम को सीता समर्पित की। इससे संसार में

१. वंशावली वर्णन। २. लक्ष्मी।

सुन्दर नवीन कीर्ति छा गई। विदेह (जनक) कैसे विनय करें ? साँवली मूर्ति (राम) ने उन्हें विदेह (देह की सुध-बुध से रहित) कर दिया था। विधिपूर्वक हवन करके गठजोड़ी की गई और भाँवरें होने लगीं।

दो०—जय धुनि बंदी बेद धुनि मंगल गान निसान।
सुनि हरषहिं बरषहिं बिबुध सुर तरु सुमन सुजान॥

जय की ध्वनि, बन्दी-ध्वनि और वेद-ध्वनि, मङ्गल-गान और नगाड़े की ध्वनि सुनकर चतुर देवगण हर्षित हो रहे हैं, और कल्पवृक्ष के फूल बरसा रहे हैं।

कुअँरु कुअँरि कल भावँरि देहीं ❀ नयन लाभु सबु सादर लेहीं
जाइ न बरनि मनोहर जोरी ❀ जो उपमा कछु कहउँ सो थोरी

वर और कन्या सुन्दर भाँवर दे रहे हैं। सब दर्शक आदरपूर्वक नेत्रों का लाभ ले रहे हैं। उस मनोहर जोड़ी का वर्णन नहीं किया जा सकता; जो कुछ उपमा कहूँगा, सब थोड़ी ही होगी।

राम सीय सुंदर प्रतिछाहीं[1] ❀ जगमगाति मनि खम्भन्ह माहीं
मनहुँ मदन रति धरि बहु रूपा ❀ देखत राम बिआहु अनूपा

राम और सीता का सुन्दर प्रतिबिम्ब मणि के खम्भों में जगमगा रहा है। मानो कामदेव और रति बहुत-से रूप धारण करके राम का अनुपम विवाह देख रहे हैं।

दरस लालसा सकुच न थोरी ❀ प्रगटत दुरत[2] बहोरि बहोरी
भए मगन सब देखनिहारे ❀ जनक समान अपान[3] बिसारे

उनको दर्शन की लालसा भी बहुत है और संकोच भी कम नहीं है। इससे वे बार-बार प्रकट होते और छिपते हैं। सब देखने वाले आनन्द-विभोर हो गये और जनक की तरह सब ने अपनी सुध-बुध भुला दी।

प्रमुदित मुनिन्ह भाँवरीं फेरीं ❀ नेग[4] सहित सब रीति निबेरीं
राम सीय सिर सेंदुर देहीं ❀ सोभा कहि न जात बिधि केहीं

हर्ष पूर्वक मुनियों ने भाँवरें फिराईं और नेग दे-दिलाकर विवाह की सब रीतियाँ निपटा दीं। राम सीता के सिर में सिंदूर दे रहे हैं, वह शोभा किसी प्रकार भी कही नहीं जा सकती।

---

१. परछाईं। २. छिपते। ३. अपनी सुध-बुध। ४. बंधा हुआ हक़।

अरुन पराग जलजु भरि नीकें ❀ ससिहि भूष अहि लोभ अमी कें
बहुरि बसिष्ठ दीन्ह अनुसासन ❀ बर दुलहिनि बैठे एक आसन

मानो कमल को लाल पराग से अच्छी तरह भरकर अमृत पाने के लोभ से सर्प चन्द्रमा को भूषित कर रहा है। फिर वशिष्ठजी ने आदेश दिया, तब दूलह और दुलहिन एक आसन पर बैठे।

छन्द—बैठे बरासन रामु जानकि मुदित मन दसरथु भए।
तनु पुलक पुनि पुनि देखि अपनें सुकृत सुरतरु फल नये॥
भरि भुवन रहा उछाहु राम बिबाहु भा सबहीं कहा।
केहि भाँति बरनि सिरात रसना एक एहु मंगलु महा॥

राम और सीता श्रेष्ठ आसन पर बैठे, उन्हें देखकर दशरथजी मन में बहुत आनन्दित हुये। अपने पुण्यरूपी कल्पवृक्ष में नये फल देखकर उनका शरीर बार-बार पुलकायमान हो रहा है। उत्साह सारे भुवनों में भर गया। सबने कहा कि राम का विवाह हो गया। जीभ तो एक है, और यह मंगल महान् है। भला, वह किस प्रकार वर्णन करने पर चुक सकता है?

तब जनक पाइ बसिष्ठ आयसु ब्याह साज सँवारि कै।
मांडवी स्रुतकीरति उरमिला कुँअरि लईं हँकारि कै॥
कुसकेतु कन्या प्रथम जो गुन सील सुख सोभामई।
सब रीति प्रीति समेत करि सो ब्याहि नृप भरतहि दई॥

तब जनकजी ने वशिष्ठजी की आज्ञा पाकर विवाह का साज-सजाकर मांडवी, श्रुतिकीर्ति और उर्मिला नाम की राजकुमारियों को बुलवा लिया। कुशध्वज की बड़ी कन्या मांडवी को, जो गुण, शील, सुख और शोभा की रूप ही थी, राजा जनक ने प्रीति-सहित सब रीतियाँ करके भरत को व्याह दिया।

जानकी लघु भगिनी सकल सुन्दरि सिरोमनि जानि कै।
सो जनक दीन्ही ब्याहि लषनहि सकल बिधि सनमानि कै॥

जेहि नाम श्रुतकीरति सुलोचनि सुमुखि सब गुन आगरी।
सो दई रिपुसूदनहि भूपति रूप सील उजागरी॥

सीता की छोटी बहन उर्मिला को सब सुन्दरियों की शिरोमणि जानकर उस कन्या को सब प्रकार से सम्मान करके जनकजी ने लक्ष्मण को व्याह दिया। जिसका नाम श्रुतिकीर्ति है और जो सुन्दर नेत्रों वाली, सुन्दर मुख वाली, सब गुणों में निपुण और रूप और सुशीलता में विख्यात है, उसे राजा ने शत्रुघ्न को व्याह दिया।

अनुरूप बर दुलहिनि परसपर लखि सकुचि हियँ हरषहीं।
सब मुदित सुन्दरता सराहहिं सुमन सुर गन बरषहीं॥
सुंदरी सुंदर बरन्ह सह सब एक मंडप राजहीं।
जनु जीव उर चारिउ अवस्था[1] बिभुन[2] सहित बिराजहीं॥

दूलह और दुलहिन एक दूसरे के अनुरूप हैं। वे आपस में एक दूसरे को देखकर सकुचाते और हृदय में हर्षित हो रहे हैं। सब दर्शक प्रसन्न होकर उनकी सुन्दरता की सराहना करते हैं और देवगण फूल बरसाते हैं। सब सुन्दरी दुलहिनें सुन्दर दुलहों के साथ एक ही मण्डप में शोभा पा रही हैं। मानो हृदय में जीव की चारों अवस्थाएँ अपने चारों स्वामियों-सहित विराजमान हों।

दो०— मुदित अवधपति सकल सुत बधुन्ह समेत निहारि।
जनु पाये महिपाल मनि क्रियन्ह[3] सहित फल चारि[4]॥

अयोध्या के राजा दशरथजी बहुओं-सहित अपने सब पुत्रों को देखकर ऐसे आनंदित हैं, मानो राजाओं के शिरोमणि दशरथजी क्रियाओं-सहित चारों फल पा गये।

जसि रघुबीर ब्याह बिधि बरनी ❀ सकल कुअँर ब्याहे तेहि करनी
कहि न जाइ कछु दाइज भूरी ❀ रहा कनक मनि मंडप पूरी

---

१. चार अवस्था — जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीय।
२. चार अवस्थाओं के स्वामी—विश्व, तैजस, प्राज्ञ, ब्रह्म।
३. चार क्रियायें—यज्ञ-क्रिया, श्रद्धा-क्रिया, योग-क्रिया, ज्ञान-क्रिया।
४. चार फल—धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष।

राम के विवाह की विधि जिस प्रकार वर्णन की गई, उसी विधि से सब राजकुमार विवाहे गये। दहेज इतना अधिक दिया गया कि वह कहा नहीं जा सकता। सारा मण्डप सोने और मणियों से भर गया था।

कंवल बसन बिचित्र पटोरे ❀ भाँति भाँति बहु मोल न थोरे
गज रथ तुरग दास अरु दासी ❀ धेनु अलंकृत कामदुहा सी

कम्बल, वस्त्र और तरह-तरह के अद्भुत रेशमी कपड़े जो बड़े कीमती थे और संख्या में भी कम नहीं थे, तथा हाथी, रथ, घोड़े, दास, दासी और भूषणों से सजी हुई कामधेनु-सी गायें,

वस्तु अनेक करिअ किमि लेखा ❀ कहि न जाइ जानहिं जिन्ह देखा
लोकपाल अवलोकि सिहाने ❀ लीन्ह अवधपति सबु सुखु माने

(आदि) अनेकों वस्तुओं की गिनती कैसे की जाय ? कुछ कहा नहीं जा सकता। जिन्होंने देखा है, वही जानते हैं। उन्हें देखकर लोकपाल भी सिहा रहे हैं। राजा दशरथ ने सबको सुखपूर्वक स्वीकार किया।

दीन्ह जाचकन्हि जो जेहि भावा ❀ उबरा सो जनवासहिं आवा
तब कर जोरि जनक मृदु बानी ❀ बोले सब बरात सनमानी

राजा दशरथ ने दहेज की चीज़ें याचकों को, जो जिसे पसन्द आई, बाँट दीं। जो बच गई, वह जनवासे में आई। तब जनकजी हाथ जोड़कर सारी जन-वास को सम्मान करते हुये कोमल वाणी से बोले—

छंद—सनमानि सकल बरात आदर दान बिनय बड़ाइ कै।
प्रमुदित महा मुनि बृन्द बंदे पूजि प्रेम लड़ाइ[1] कै॥
सिरु नाइ देव मनाइ सब सन कहत कर संपुट किएँ।
सुर साधु चाहत भाउ सिंधु कि तोष जल अंजलि दिएँ॥

आदर, दान, विनय और बड़ाई से सारी बरात का सम्मान करके राजा ने हर्ष-सहित प्रेम उँड़ेलकर बड़े-बड़े मुनियों के समूह की पूजा और वन्दना की। सिर नवाकर, देवताओं को मनाकर, राजा हाथ जोड़कर सब से कहने लगे—देवता और साधु तो भाव ही चाहते हैं, पर क्या जल की एक अंजलि से कहीं समुद्र संतुष्ट हो सकता है ?

१. उँड़ेलकर।

कर जोरि जनक बहोरि बंधु समेत कोसलराय सों।
बोले मनोहर बयन सानि सनेह सील सुभाय सों॥
समबंध राजन रावरें हम बड़े अब सब बिधि भए।
एहि राज साज समेत सेवक जानिबे बिनु गथ लए॥

फिर जनक जी अपने भाई-सहित हाथ जोड़कर दशरथजी से स्नेह, शील और प्रेम में सानकर मधुर वाणी बोले—हे राजन्! आपके साथ सम्बन्ध करके अब हम सब प्रकार से बड़े हो गये। आप इस राज-पाट सहित हम दोनों को बिना दाम लिये हुये अपना सेवक ही समझिये।

ए दारिका परिचारिका करि पालबीं करुना नई।
अपराधु छमिबो बोलि पठए बहुत हौं ढीठ्यो कई॥
पुनि भानुकुल भूषन सकल सनमान निधि समधी किये।
कहि जात नहिं बिनती परसपर प्रेम परिपूरन हिये॥

इन कन्याओं को टहलनी की तरह मानकर, नई-नई दया करके पालन करना। मैंने आपको बुला भेजा, यह बड़ी ढिठाई हुई, इस अपराध को क्षमा कीजियेगा। फिर सूर्यकुल के शिरोमणि दशरथजी ने समधी (जनकजी) को सम्पूर्ण सम्मान का भण्डार कर दिया। उनकी परस्पर की विनय का वर्णन नहीं हो सकता। दोनों के हृदय प्रेम से परिपूर्ण हैं।

बृंदारका[2] गन सुमन बरषहिं राउ जनवासेहि चले।
दुन्दुभी जय धुनि बेद धुनि नभ नगर कौतूहल भले॥
तब सखीं मङ्गल गान करत मुनीस आयसु पाइ कै।
दूलह दुलहिनिन्ह सहित सुन्दरि चलीं कोहबर[3] ल्याइ कै।

देवगण फूल बरसा रहे हैं। राजा जनवासे को चले। नगाड़े की ध्वनि, जय-जयकार और वेद की ध्वनि से आकाश और नगर दोनों में ख़ूब कोलाहल हो रहा था। तब मुनिराज शतानन्द जी की आज्ञा पाकर सब सुन्दरी सखियाँ

१. सुन्दर भाव। २. देवता। ३. विवाह के पश्चात् वर-वधू के प्रथम मिलन का घर।

मङ्गल गीत गाती हुईं दुलहों और दुलहिनियों सहित सबको लिवाकर कोहबर को चलीं।

दो०—पुनि पुनि रामहिं चितव सिय सकुचति मन सकुचै न
हरत मनोहर मीन छवि प्रेम पिआसे नैन ॥३२६॥

सीता राम को बार-बार देखती हैं और सकुचा जाती हैं, पर मन नहीं सकुचाता। प्रेम के प्यासे उनके नेत्र सुन्दर मछलियों की शोभा को हर रहे हैं।

स्याम सरीरु सुभायँ सुहावन ❀ सोभा कोटि मनोज लजावन
जावक जुत पद कमल सुहाए ❀ मुनि मन मधुप रहत जिन्ह छाए

राम का साँवला शरीर स्वभाव ही से सुन्दर है। उनकी शोभा करोड़ों कामदेवों को लजाने वाली है। महावर से युक्त दोनों कमल ऐसे चरण सुहावने लगते हैं जिन पर मुनियों के मन रूपी भौंरे सदा मँडराया करते हैं।

पीत पुनीत मनोहर धोती ❀ हरत बाल रबि दामिनि जोती[1]
कल किंकिनि कटिसूत्र मनोहर ❀ बाहु बिसाल बिभूषन सुंदर

पीले रंग की सुन्दर पवित्र धोती प्रातः काल के सूर्य और बिजली की चमक को हर रही है। कमर में सुन्दर तगड़ी और कटिसूत्र है। उनकी विशाल भुजाओं में सुन्दर गहने हैं।

पीत जनेउ महा छवि देई ❀ कर मुद्रिका चोरि चितु लेई
सोहत ब्याह साज सब साजे ❀ उर आयत[2] भूषण उर राजे

पीला जनेऊ बड़ी छवि दे रहा है। हाथ की अँगूठी चित्त को चुराये ले रही है। ब्याह के सब साज सजे हुये वे शोभा पा रहे हैं। चौड़ी छाती है, उस पर गले के सुन्दर गहने सुशोभित हैं।

पियर[3] उपरना[4] काँखा सोती ❀ दुहुँ आँचरन्हि लगे मनि मोती
नयन कमल कल कुंडल काना ❀ बदनु सकल सौन्दर्जनिधाना

पीले रंग के दुपट्टे को (जनेऊ की तरह) काँखासोती डाले हैं। उसके दोनों छोरों पर मणि और मोती लगे हैं। कमल के समान उनके नेत्र हैं, कानों में सुन्दर कुण्डल हैं और मुख तो सारी सुन्दरता का ख़ज़ाना ही है।

---

१. ज्योति। २. चौड़ी। ३. पीला। ४. दुपट्टा।



सुन्दर भृकुटि मनोहर नासा ❀ भाल तिलकु रुचिरता निवासा
सोहत मौरु मनोहर माथे ❀ मङ्गलमय मुकुता मनि गाथे

भौंहें सुन्दर और नाक मनोहर है। माथे पर तिलक तो सुन्दरता का घर ही है। मोती और रत्नों से गुँथा हुआ कल्याणमय मनोहर मौर मस्तक पर शोभित है।

छंद—माथे महा मनि मौर मंजुल अङ्ग सब चित चोरहीं।
पुर नारि सुर सुन्दरीं बरहिं बिलोकि सब तिन तोरहीं॥
मुनि बसन भूषन वारि आरति करहिं मंगल गावहीं।
सुर सुमन बरिसहिं सूत मागध बन्दि सुजसु सुनावहीं॥

सुन्दर मौर में बहुमूल्य मणियाँ गुँथी हुई हैं। सारा अंग चित्त को चुराये लेता है। नगर की स्त्रियाँ और देवताओं की सब सुन्दरियाँ दूलह को देखकर तिनके तोड़ रही हैं। वे मणि, वस्त्र और आभूषण न्योछावर करके आरती उतार रही हैं। देवता फूल बरसा रहे हैं और सूत, मागध और बन्दीजन सुयश सुना रहे हैं।

कोहबरहि आने कुँअर कुँअरि सुआसिनिन्ह सुख पाइकै।
अति प्रीति लौकिक रीति लागीं करन मङ्गल गाइ कै॥
लहकौरि[1] गौरि सिखाव रामहिं सीय सन सारद कहैं।
रनिवासु हास बिलास रसबस जनम को फल सब लहैं॥

सुहागिनी स्त्रियाँ सुख पाकर राजकुमारों और राजकुमारियों को कोहबर में ले आकर बड़ी प्रीति से मंगल-गीत गा-गाकर लौकिक रीति करने लगीं। राम को पार्वतीजी तथा सीता को सरस्वती लहकौर (परस्पर ग्रास देना) सिखाती हैं। रनिवास हास-विलास के आनन्द में मग्न है। सभी जन्म का परम फल प्राप्त कर रही हैं।

निज पानि मनि महुँ देखि प्रतिमूरति सुरूपनिधान की।
चालति न भुजबल्ली बिलोकनि बिरह भय बस जानकी॥

---

१. वर-वधू का परस्पर ग्रास देना।

कौतुक बिनोद प्रमोदु प्रेमु न जाइ कहि जानहिं अली ।
बर कुँअरि सुन्दरि सकल सखी लिवाइ जनवासेहिं चली ॥

अपने हाथ की मणियों में सुन्दर रूप के भंडार (रामचन्द्रजी) की परछाहीं देखती हुई जानकी दर्शन में वियोग होने के भय से बाहुरूपी लता को और दृष्टि को हिलाती-डुलाती नहीं हैं। उस समय के खेल, हँसी-दिल्लगी, हर्ष और प्रेम का वर्णन नहीं हो सकता, उसे सखियाँ ही जानती हैं। इसके बाद वर-वधुओं को सब सुन्दर सखियाँ जनवासे को लिवाकर चलीं।

तेहि समय सुनिअ असीस जहँ तहँ नगर नभ आनंदु महा।
चिरजिअहु जोरी चारु चारिउ मुदित मन सबहीं कहा॥
जोगीन्द्र सिद्ध मुनीस देव बिलोकि प्रभु दुन्दुभि हनी।
चले हरषि बरषि प्रसून निज निज लोक जय जय जय भनी ॥

उस समय नगर और आकाश में जहाँ सुनिये वहीं आशीर्वाद की ध्वनि सुनाई दे रही है और बड़ा आनन्द छा रहा है। सभी ने प्रसन्न मन से कहा कि चारों सुन्दर जोड़ियाँ चिरंजीवी हों। योगीश्वर, सिद्ध, मुनिराज और देवताओं ने प्रभु रामचन्द्रजी को देखकर नगाड़े बजाये और हर्षित हो और फूलों की वर्षा करके तथा बारम्बार 'जय हो, जय हो, जय हो', कहते हुये अपने-अपने लोक को चले।

दो० सहित बधूटिन्ह कुँअर सब तब आये पितु पास।
सोभा मङ्गल मोद भरि उमगेउ जनु जनवास।३२७।

तब सब कुँवर बहुओं-सहित पिता के पास आये। ऐसा जान पड़ता है, मानो शोभा, मंगल और आनन्द से भरकर जनवासा उमड़ पड़ा हो।

पुनि जेवनार भई बहु भाँती ❀ पठये जनक बोलाइ बराती
परत पाँवड़े बसन अनूपा ❀ सुतन्ह समेत गवन किय भूपा

फिर बहुत प्रकार का व्यञ्जन तैयार हुआ। जनक ने बरातियों को बुला भेजा। पुत्रों-सहित राजा दशरथजी ने गमन किया। अनुपम वस्त्रों के पाँवड़े पड़ते थे।



सादर सब के पाय पखारे ❀ जथाजोग पीढ़न बैठारे
धोये जनक अवधपति चरना ❀ सील सनेह जाइ नहिं बरना

आदर के साथ सब के पाँव धोये और सब को यथायोग्य पीढ़ों पर बैठाया। तब जनकजी ने अयोध्या-नरेश दशरथजी के चरण धोये। उनके शील और स्नेह का वर्णन नहीं हो सकता।

बहुरि राम पद पङ्कज धोये ❀ जे हर हृदय कमल महुँ गोये
तीनिउ भाइ राम सम जानी ❀ धोये जनक चरन निज पानी

फिर जनक ने रामचन्द्रजी के चरण-कमलों को धोया, जो शिवजी के हृदय-कमल में छिपे रहते हैं। तीनों भाइयों को राम ही के समान जानकर जनकजी ने अपने हाथों से उनके भी चरण धोये।

आसन उचित सबहि नृप दीन्हे ❀ बोलि सूपकारक सब लीन्हे
सादर लगे परन पनवारे[1] ❀ कनक कील मनि पान[2] सँवारे

राजा जनक ने सभी को उचित आसन दिये और फिर सब परोसनेवालों को बुला लिया। आदर के साथ पत्तलें पड़ने लगीं, जो मणियों के पत्तों से सोने के कील लगाकर बनाई गई थीं।

दो० सूपोदन सुरभी सरपि सुन्दर स्वादु पुनीत।
छन महँ सब के परसि गे चतुर सुआर बिनीत।३२८।

चतुर और विनीत रसोइये सुन्दर स्वादिष्ट और स्वच्छ दाल, भात और गाय का घी, सबके सामने क्षण भर में परस गये।

पँच कौर[2] करि जेवन लागे ❀ गारि गान सुनि अति अनुरागे
भाँति अनेक परे पकवाने ❀ सुधा सरिस नहिं जाहिं बखाने

पाँचों प्राणों के लिये पाँच ग्रास निकालकर वे भोजन करने लगे। गाली का गाना सुनकर तो वे मुग्ध हो गये। अनेकों तरह के पकवान परसे गये जो अमृत के समान मीठे थे और जिनका बखान नहीं हो सकता।

---

१. पत्तल। २. पत्ता।

२. पाँच प्राणों के लिये पाँच ग्रास : प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा और समानाय स्वाहा कहकर।

परसन लगे सुआर सुजाना ❁ बिंजन बिबिध नाम को जाना
चारि भाँति भोजन[1] स्रुति गाई ❁ एक एक बिधि बरनि न जाई

चतुर रसोइये नाना प्रकार के व्यंजन परोसने लगे। उनका नाम कौन जानता है? वेदों ने चार प्रकार के भोजन कहे हैं, उनमें एक-एक ही के प्रकार का वर्णन नहीं किया जा सकता।

छरस[2] रुचिर बिंजन बहु जाती ❁ एक एक रस अगनित भाँती
जेंवत देहिं मधुर धुनि गारी ❁ लइ लइ नाम पुरुष अरु नारी

छओं रसों के बहुत प्रकार के सुन्दर व्यञ्जन हैं। एक-एक रस के अनगिनती प्रकार के बने हैं। भोजन करते समय पुरुषों और स्त्रियों के नाम ले-लेकर जनकपुर की स्त्रियाँ मधुर ध्वनि से गाली देने लगीं।

समय सुहावनि गारि बिराजा ❁ हँसत राउ सुनि सहित समाजा
एहि बिधि सबही भोजन कीन्हा ❁ आदर सहित आचमन लीन्हा

समय पर गालियाँ भी सुहावनी लगती हैं। उसे सुनकर समाज-सहित राजा दशरथ हँसते हैं। इस तरह सभी ने भोजन किया और आदर-पूर्वक आचमन लिया।

दो॰ देइ पान पूजे जनक दसरथु सहित समाज।
जनवासे गवने मुदित सकल भूप सिरताज।३२९।

जनकजी ने पान देकर समाज-सहित दशरथ जी का पूजन किया। सब राजाओं के शिरोमणि अयोध्यानरेश प्रसन्न होकर जनवासे को चले।

नित नूतन मङ्गल पुर माहीं ❁ निमिष सरिस दिन जामिनि जाहीं
बड़े भोर भूपति मनि जागे ❁ जाचक गुन गन गावन लागे

जनकपुर में नित्य नये मङ्गल हो रहे हैं। दिन और रात पल के समान बीत जाते हैं। बड़े सवेरे राजाओं के मणि (दशरथजी) जागे और याचक लोग उनके गुणों का गान करने लगे।

देखि कुँअर बर बधुन्ह समेता ❁ किमि कहि जात मोद मन जेता
प्रातक्रिया करि गे गुरु पाहीं ❁ महा प्रमोद प्रेम मन माहीं

---

१. चर्व्य, चोष्य, लेह्य, पेय।

२. खट्टा, मीठा, कड़ुआ, कसैला, तीता और नमकीन।



श्रेष्ठ कुँवरों को बधुओं सहित देखकर उनके मन में जितना आनन्द है, वह किस प्रकार कहा जा सकता है ? प्रातःक्रिया करके वे गुरु वशिष्ठ जी के पास गये। उनके मन में अतिशय आनंद और प्रेम भरा है।

करि प्रनामु पूजा कर जोरी ❀ बोले गिरा अमिअँ जनु बोरी
तुम्हरी कृपा सुनहु मुनिराजा ❀ भयउँ आजु मैं पूरन काजा

हाथ जोड़कर, प्रणाम और पूजन करके और फिर मानो अमृत में डुबोई हुई हो, ऐसी वाणी बोले—हे मुनिराज! सुनिये, आपकी कृपा से आज मैं सफल मनोरथ हो गया।

अब सब बिप्र बोलाइ गोसाईं ❀ देहु धेनु सब भाँति बनाई
सुनि गुर करि महिपाल बड़ाई ❀ पुनि पठये मुनि बृन्द बोलाई

अब हे स्वामिन्! सब ब्राह्मणों को बुलाकर उनको सब तरह से सजी हुई गायें दीजिये। यह सुनकर गुरुजी ने राजा की प्रशंसा करके फिर मुनि-गणों को बुलवा भेजा।

दो०— बामदेव अरु देवरिषि बालमीकि जाबालि।
आये मुनिबर निकर तब कौसिकादि तपसालि ३३०

वामदेव, नारद, वाल्मीकि, जाबालि और विश्वामित्र आदि तपस्वी मुनीश्वरों के समूह के समूह आये।

दंड प्रनाम सबहि नृप कीन्हे ❀ पूजि सप्रेम बरासन दीन्हे
चारि लच्छ बर धेनु मँगाई ❀ काम सुरभि सम सील सुहाई

राजा ने सब को दंड-प्रणाम किया और प्रेम से पूजन करके उन्हें उत्तम आसन दिये। चार लाख श्रेष्ठ गायें जो कामधेनु के समान अच्छे स्वभाव वाली और सुन्दर थीं, राजा ने मँगवाईं।

सब बिधि सकल अलंकृत कीन्हीं ❀ मुदित महिप महिदेवन्ह दीन्हीं
करत बिनय बहु बिधि नरनाहू ❀ लहेउँ आजु जग जीवन लाहू

उन सब को सब प्रकार से विभूषित करके राजा ने प्रसन्न होकर ब्राह्मणों को गायें दीं। राजा बहुत तरह से विनती कर रहे हैं कि आज ही मैंने संसार में जीने का लाभ पाया।

पाइ असीस महीसु अनन्दा ❀ लिये बोलि पुनि जाचक बृन्दा
कनक बसन मनि हय गय स्यन्दन ❀ दिये बूझि रुचि रविकुल नन्दन

ब्राह्मणों से आशीर्वाद पाकर राजा आनन्दित हुये। फिर उन्होंने याचक-वृन्द को बुलवा लिया और सबको उनकी रुचि पूछकर सोना, वस्त्र, मणि, घोड़ा, हाथी और रथ सूर्यकुल को आनंदित करने वाले दशरथजी ने दिये।

चले पढ़त गावत गुन गाथा ❀ जय जय जय दिनकर कुल नाथा
एहि विधि राम विवाह उछाहू ❀ सकइ न वरनि सहस मुख जाहू

वे सब विरद पढ़ते और गुणों की गाथा गाते हुये और सूर्यकुल के स्वामी की 'जय हो, जय हो, जय हो' कहते हुये चले। इस प्रकार राम के विवाह का उत्सव हुआ, जिसे जिन्हें सहस्र मुख हैं वे शेष भी नहीं कह सकते।

दो० बार बार कौसिक चरन सीसु नाइ कह राउ।
यह सबसुख मुनिराज तव कृपा कटाच्छ पसाउ ३३१

राजा बार-बार विश्वामित्रजी के चरणों में सिर नवाकर कहते हैं—हे मुनिराज! यह सब सुख आप ही के कृपा-कटाक्ष का प्रसाद है।

जनक सनेह सील करतूती ❀ नृप सब राति सराहत बीती❀
दिन उठि विदा अवधपति माँगा ❀ राखहिं जनक सहित अनुरागा

जनकजी के स्नेह, शील और करनी की सराहना करने में राजा की सारी रात बीत जाती है। सवेरे उठकर रोज़ अयोध्यानरेश विदा माँगते हैं; पर जनकजी उन्हें प्रेम से रख लेते हैं।

नित नूतन आदरु अधिकाई ❀ दिन प्रति सहस भाँति पहुनाई
नित नव नगर अनन्द उछाहू ❀ दसरथ गवनु सोहाइ न काहू

आदर नित्य नया बढ़ता जाता है। प्रतिदिन सहस्रों प्रकार से मेहमानी होती है। नगर में नित्य ही नवीन आनन्द और उत्साह रहता है, दशरथजी का जाना किसी को नहीं सुहाता।

बहुत दिवस बीते एहि भाँती ❀ जनु सनेह रजु[1] बँधे बराती
कौसिक सतानन्द तब जाई ❀ कहा विदेह नृपहि समुझाई

❀ पाठान्तर—नृप सब भाँति सराह विभूति।

१. रस्सी।

इस प्रकार बहुत दिन बीत गये, मानो बराती स्नेह की रस्सी से बँध गये हैं। तब विश्वामित्रजी और शतानन्दजी ने जाकर राजा जनक को समझाकर कहा—

अब दसरथ कहँ आयसु देहू ❀ जद्यपि छाड़ि न सकहु सनेहू
भलेहिं नाथ कहि सचिव बोलाये ❀ कहि जयजीव सीस तिन्ह नाये

यद्यपि आप स्नेह-वश उन्हें नहीं छोड़ सकते, तो भी अब दशरथजी को आज्ञा दीजिए। 'हे नाथ! बहुत अच्छा' कहकर जनकजी ने मन्त्रियों को बुलवाया। वे आये और 'जयजीव' कहकर उन्होंने मस्तक नवाया।

दो०—अवधनाथु चाहत चलन भीतर करहु जनाउ।
भये प्रेम बस सचिव सुनि बिप्र सभासद राउ॥३३२

जनकजी ने कहा—अयोध्यानाथ चलना चाहते हैं, भीतर (रनिवास में) खबर कर दो। यह सुनकर मन्त्री, ब्राह्मण, सभासद और राजा जनक सभी प्रेम के वश हो गये।

पुर बासी सुनि चलिहि बराता ❀ पूछत बिकल परसपर बाता
सत्य गवन सुनि सब बिलखाने ❀ मनहुँ साँझ सरसिज सकुचाने

पुरवासियों ने सुना कि बरात जायगी, वे व्याकुल होकर एक दूसरे से बात पूछने लगे। जाना सत्य है, यह सुनकर सब ऐसे विकल हो गये, जैसे संध्या के समय कमल सकुचा गये हों।

जहँ जहँ आवत बसे बराती ❀ तहँ तहँ सिद्ध[1] चला बहु भाँती
बिबिध भाँति मेवा पकवाना ❀ भोजन साजु न जाइ बखाना

आते समय जहाँ-तहाँ बराती टिके थे, वहाँ-वहाँ बहुत प्रकार की रसद-सामग्री रवाना हुई। अनेकों प्रकार के मेवे, पकवान और भोजन का सामान जो बखाना नहीं जा सकता।

भरि भरि बसहँ अपार कहारा ❀ पठये जनक अनेक सुआरा
तुरग लाख रथ सहस पचीसा ❀ सकल सँवारे नख अरु सीसा

अगणित बैलों और कहारों पर लाद-लादकर भेजा गया तथा अनेकों

---

१. सीधा, भोजन की सामग्री।

रसोई बनाने वालों को जनकजी ने भेजा। एक लाख घोड़े और पचीस हज़ार रथ सिर से पैर तक सजाये हुए,

मत्त सहस दस सिन्धुर साजे ❀ जिन्हहिं देखि दिसि कुंजर लाजे
कनक बसन मनि भरि भरि जाना ❀ महिषी धेनु वस्तु विधि नाना

दस हज़ार सजे हुये मतवाले हाथी, जिन्हें देखकर दिशाओं के हाथी भी लजा जाते हैं, तथा गाड़ियों में भर-भरकर सोना, वस्त्र और रत्न और भैंस, गाय तथा और भी नाना प्रकार की चीज़ें दीं।

दोहा—दाइज अमित न सकिय कहि दीन्ह विदेह बहोरि[१]।
जो अवलोकत लोकपति लोक सम्पदा थोरि॥३३३

जनकजी ने फिर से अपरिमित दहेज दिया जो कहा नहीं जा सकता, और जिसे देखकर लोकपालों को अपने-अपने लोकों की सम्पदा थोड़ी प्रतीत होती थी।

सब समाजु एहि भाँति बनाई ❀ जनक अवधपुर दीन्ह पठाई
चलिहि बरात सुनत सब रानी ❀ विकल मीन गन जनु लघु पानी

इस प्रकार सब सामान सजाकर सबको जनकजी ने अयोध्यापुरी को भेज दिया। बरात जायगी, यह बात सुनते ही सब रानियाँ विकल हो गईं, जैसे थोड़े जल में मछलियाँ अकुला रही हों।

पुनि पुनि सीय गोद करि लेहीं ❀ देइ असीस सिखावन देहीं
होयेहु सन्तत पियहि पियारी ❀ चिर अहिवात असीस हमारी

रानियाँ बार-बार सीता को गोद में ले लेती हैं और आशीर्वाद देकर सिखावन देती हैं—तुम सदा अपने पति की प्यारी होना, तुम्हारा सोहाग अचल हो—हमारा यही आशीर्वाद है।

सासु ससुर गुरु सेवा करहू ❀ पति रुख लखि आयसु अनुसरहू
अति सनेह बस सखीं सयानीं ❀ नारि धरम सिखवहिं मृदु बानीं

सास, ससुर और गुरु की सेवा करना, पति का रुख देखकर, उनकी आज्ञा का पालन करना। सयानी सखियाँ अत्यन्त स्नेह के वश कोमल वाणी से स्त्री-धर्म सिखलाती हैं।

---

१. फिर।



सादर सकल कुँअरि समुझाई ❀ रानिन्ह बार बार उर लाई
बहुरि बहुरि भेंटहिं महतारी ❀ कहहिं विरंचि रचीं कत नारी

आदर के साथ सब पुत्रियों को समझाकर रानियों ने बार-बार उन्हें हृदय से लगाया। मातायें फिर-फिर भेंटती और कहती हैं कि ब्रह्मा ने स्त्री-जाति को क्यों रचा ?

दो० तेहि अवसर भाइन्ह सहित रामु भानु कुल केतु।
चले जनक मन्दिर मुदित बिदा करावन हेतु।३३४।

उसी समय सूर्यवंश के पताका-स्वरूप रामचन्द्रजी भाइयों-सहित प्रसन्न होकर विदा कराने के लिए जनकजी के महल को चले।

चारिउ भाइ सुभायँ सुहाये ❀ नगर नारि नर देखन धाये
कोउ कह चलन चहत हहिं राजू ❀ कीन्ह विदेह बिदा कर साजू

चारों भाई स्वभाव ही से सुन्दर हैं। नगर के स्त्री-पुरुष उन्हें देखने को दौड़े। कोई कहता है—आज ये जाना चाहते हैं, विदेह ने विदा की तैयारी करा दी है।

लेहु नयन भरि रूप निहारी ❀ प्रिय पाहुने भूप सुत चारी
को जानइ केहिं सुकृत सयानी ❀ नयन अतिथि कीन्हे बिधि आनी

आँख भरकर इनका रूप देख लो, राजा के चारों पुत्र प्यारे मेहमान हैं। हे सयानी ! कौन जानता है, किस पुण्य से ब्रह्मा ने इन्हें यहाँ लाकर हमारे नेत्रों का अतिथि किया है ?

मरनसीलु जिमि पाव पियूषा ❀ सुर तरु लहइ जनम कर भूखा
पाव नारकी हरिपदु जैसें ❀ इन्ह कर दरसनु हम कहँ तैसें

मरने वाला प्राणी जिस तरह अमृत पा जाय और जन्म का भूखा कल्पवृक्ष पा जाय और जैसे नरक में रहने वाला भगवान् के परम पद को प्राप्त हो जाय, वैसे ही हमको इनके दर्शन हैं।

निरखि राम सोभा उर धरहू ❀ निज मन फनि[1] मूरति मनि करहू
एहि बिधि सबहि नयन फल देता ❀ गये कुँअर सब राज निकेता

रामचन्द्रजी की शोभा को निरखकर हृदय में धर लो। अपने मनरूपी साँप

१. साँप।

के लिये इनकी मूर्त्ति को मणि बना लो। इस प्रकार सब को नेत्रों का फल देते हुये सब कुँवर राजमहल में गये।

दो०— रूप सिन्धु सब बन्धु लखि हरषि उठेउ रनिवासु।
करहिं निछावरि आरती महा मुदित मन सासु।३३५।

रूप के समुद्र सब भाइयों को देखकर रनिवास हर्षित हो उठा। सासुयें अत्यन्त हर्षित मन से आरती और न्योछावर करती हैं।

देखि राम छवि अति अनुरागीं ❀ प्रेम विवस पुनि पुनि पद लागीं
रही न लाज प्रीति उर छाई ❀ सहज सनेहु बरनि किमि जाई

रामचन्द्रजी की छवि देखकर वे प्रेम में अत्यन्त मग्न हो गईं और वे प्रीति के वश बार-बार चरणों में लग रही हैं। हृदय में प्रीति छा गई है, इससे लज्जा नहीं रह गई। उनके स्वाभाविक स्नेह का वर्णन किस तरह किया जा सकता है?

भाइन्ह सहित उबटि[1] अन्हवाये ❀ छरस असन अति हेतु जेंवाये
बोले रामु सुअवसर जानी ❀ सील सनेह सकुचमय बानी

उन्होंने भाइयों-सहित रामचन्द्रजी को उबटन करके स्नान कराया और बड़ी प्रीति से षट्रस भोजन कराया। सुअवसर जानकर रामचन्द्रजी शील, स्नेह और संकोच-भरी वाणी बोले—

राउ अवधपुर चहत सिधाये ❀ बिदा होन हम इहाँ पठाये
मातु मुदित मन आयसु देहू ❀ बालक जानि करब नित नेहू

महाराज अयोध्यापुरी को चलना चाहते हैं, उन्होंने हमें विदा होने के लिये यहाँ भेजा है। हे माता! प्रसन्न मन से आज्ञा दीजिये और मुझे पुत्र जान कर सदा स्नेह बनाये रखना।

सुनत बचन बिलखेउ रनिवासू ❀ बोलि न सकहिं प्रेम बस सासू
हृदय लगाइ कुँअरि सब लीन्हीं ❀ पतिन्ह सौंपि बिनती अति कीन्हीं

इन वचनों को सुनते ही रनिवास उदास हो गया। सासुयें प्रेम-वश बोल नहीं सकती हैं। उन्होंने सब पुत्रियों को हृदय से लगा लिया और उनके पतियों को सौंपकर बहुत विनती की।

---

१. उबटन लगाकर।

छंद-करि बिनय सिय रामहिं समरपी जोरि कर पुनि पुनि कहै
बलि जाउँ तात सुजान तुम्ह कहँ बिदित गति सब की अहै
परिवार पुरजन मोहि राजहि प्रान प्रिय सिय जानिबी[1]
तुलसी सुसील सनेह लखि निज किङ्करी करि मानिबी[2]

विनती करके उन्होंने सीता को रामचन्द्रजी को समर्पित किया और हाथ जोड़कर बार-बार कहा—हे तात ! हे सुजान ! बलि जाती हूँ, तुमको सब की गति मालूम है। कुटुम्बियों, नगर-निवासियों, मुझको और राजा को सीता प्राणों के समान प्रिय हैं ऐसा जानना। तुलसीदास कहते हैं—इसके शील और स्नेह को देखकर इसे अपनी करके मानना।

सो०-तुम्ह परिपूरन काम जान[3] सिरोमनि भाव प्रिय।
जन गुन गाहक राम दोष दलन करुनायतन ३३६

तुम पूर्णकाम हो, ज्ञानियों के शिरोमणि हो और भाव-प्रिय हो (तुमको प्रेम प्यारा है) हे राम ! तुम भक्तों के गुणों को ग्रहण करने वाले, दोषों को नाश करने वाले और दया के घर हो।

अस कहि रही चरन गहि रानी ❀ प्रेम पङ्क जनु गिरा समानी
सुनि सनेह सानी बर बानी ❀ बहु बिधि राम सासु सनमानी

ऐसा कहकर रानी पाँव पकड़कर चुप रह गईं। मानो उनकी वाणी प्रेम-रूपी दलदल में समा गई हो। स्नेह से सनी हुई श्रेष्ठ वाणी सुनकर रामचन्द्रजी ने सास का बहुत तरह से सम्मान किया।

राम बिदा माँगत कर जोरी ❀ कीन्ह प्रनामु बहोरि बहोरी
पाइ असीस बहुरि सिरु नाई ❀ भाइन्ह सहित चले रघुराई

रामचन्द्रजी ने हाथ जोड़कर विदा माँगते हुये बार-बार प्रणाम किया। आशीर्वाद पाकर फिर मस्तक नवाया और भाइयों-सहित रघुनाथजी चले।

मञ्जु मधुर मूरति उर आनी ❀ भईं सनेह सिथिल सब रानी
पुनि धीरज धरि कुअँरि हँकारीं ❀ बार बार भेंटहिं महतारीं

रामचन्द्रजी की सुन्दर मधुर मूर्त्ति को हृदय में लाकर सब रानियाँ स्नेह

१. जानना। २. मानना। ३. ज्ञानी।

से शिथिल हो गईं। फिर धीरज धारण करके पुत्रियों को बुला मातायें उन्हें बारम्बार भेंटने लगीं।

पहुँचावहिं फिरि मिलहिं बहोरी ❀ बढ़ी परसपर प्रीति न थोरी
पुनि पुनि मिलति सखिन्ह बिलगाई[1] ❀ बाल बच्छ जिमि धेनु लवाई[2]

पहुँचाती हैं, फिर लौटकर मिलती हैं, दोनों ओर परस्पर बड़ी प्रीति बढ़ी। सीता सखियों से बार-बार अलग होकर मिलती हैं। जैसे हाल की ब्याई हुई गाय अपने बालक बछड़े से मिलती है।

दो०— प्रेम बिबस नरनारि सब सखिन्ह सहित रनिवासु।
मानहुँ कीन्ह बिदेहपुर करुनाँ बिरहँ निवासु ॥३३७॥

सब स्त्री-पुरुष और सखियों-सहित रनिवास प्रेम से बेसुध हो गई। मानो जनकपुर में करुणा और विरह ने डेरा डाला हो।

सुक सारिका जानकी ज्याये ❀ कनक पिञ्जरन्हि राखि पढ़ाये
ब्याकुल कहहिं कहाँ बैदेही ❀ सुनि धीरजु परिहरइ न केही

जानकी ने तोता और मैना जिलाया था, उन्हें सोने के पींजड़ों में रखकर पढ़ाया था। वे व्याकुल होकर कह रहे हैं—सीता कहाँ हैं? उनके ऐसे वचनों को सुनकर कौन धीरज नहीं छोड़ देगा?

भये बिकल खग मृग एहि भाँती ❀ मनुज दसा कैसें कहि जाती
बन्धु समेत जनकु तब आये ❀ प्रेम उमगि लोचन जल छाये

जब पक्षी और पशु इस तरह विकल हो गये, तब मनुष्यों की दशा कैसे कही जा सकती है? उसी समय भाई-सहित जनकजी वहाँ आये। प्रेम से उमड़कर जल उनकी आँखों में भर आया।

सीय बिलोकि धीरता भागी ❀ रहे कहावत परम बिरागी
लीन्हि राय उर लाइ जानकी ❀ मिटी महा मरजाद ज्ञान की

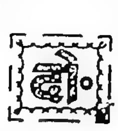
वे तो बड़े विरक्त कहलाते थे, पर सीताजी को देखकर उनका भी धैर्य जाता रहा। राजा ने जानकीजी को हृदय से लगा लिया। प्रेम के कारण ज्ञान की महान् मर्यादा मिट गई।

---

१. अलग लेजाकर। २. हाल की ब्याई हुई।

समुझावत सब सचिव सयाने ❀ कीन्ह बिचार अनवसर जाने
बारहि बार सुता उर लाईं ❀ सजि सुन्दर पालकी मँगाईं

सब बुद्धिमान् मन्त्री उन्हें समझाते हैं। तब राजा ने विचार किया कि विषाद करने का यह अवसर नहीं है। बारम्बार पुत्रियों को हृदय से लगाकर उन्होंने सुन्दर सजी हुई पालकियाँ मंगवाईं।



प्रेम बिबस परिवारु सब जानि सुलगन नरेस।
कुँअरि चढ़ाईं पालकिन्ह सुमिरे सिद्धि गनेस॥३३८

सारा परिवार प्रेम में बेसुध है। राजा ने अच्छी साइत जानकर सिद्धि-सहित गणेशजी का स्मरण करके कन्याओं को पालकियों पर चढ़ाया।

बहु बिधि भूप सुता समझाईं ❀ नारि धरम कुल रीति सिखाईं
दासी दास दिये बहुतेरे ❀ सुचि सेवक जे प्रिय सिय केरे

राजा ने पुत्रियों को बहुत तरह से समझाया और उन्हें स्त्री-धर्म और कुल की रीति सिखाई। बहुत से दास और दासियाँ दीं, जो सीताजी के प्रिय और विश्वासपात्र सेवक थे।

सीय चलत ब्याकुल पुरबासी ❀ होहिं सगुन सुभ मङ्गल रासी
भूसुर सचिव समेत समाजा ❀ संग चले पहुँचावन राजा

सीता के चलते समय नगर-निवासी व्याकुल हो गये। मङ्गल की राशि शुभ शकुन हो रहे हैं। ब्राह्मण और मन्त्रि-मण्डल सहित राजा जनकजी उन्हें पहुँचाने के लिये साथ चले।

समय बिलोकि बाजने बाजे ❀ रथ गज बाजि बरातिन्ह साजे
दसरथ बिप्र बोलि सब लीन्हे ❀ दान मान परिपूरन कीन्हे

समय देखकर बाजे बजने लगे। बरातियों ने रथ, हाथी और घोड़े सजाये। दशरथजी ने सब ब्राह्मणों को बुलवा लिया और उन्हें दान और सम्मान से परिपूर्ण कर दिया।

चरन सरोज धूरि धरि सीसा ❀ मुदित महीपति पाइ असीसा
सुमिरि गजाननु कीन्ह पयाना ❀ मंगल मूल सगुन भये नाना

ब्राह्मणों के चरण-कमलों की धूलि सिर पर रखकर और आशीर्वाद पाकर

राजा आनन्दित हुए। गणेशजी का स्मरण करके उन्होंने प्रस्थान किया। नाना प्रकार के मंगलों के मूल अनेकों शकुन हुये।

दो॰ सुर प्रसून बरषहिं हरषि करहिं अपछरा गान।
चले अवधपति अवधपुर मुदित बजाइ निसान॥३३९

देवता प्रसन्न होकर फूल बरसा रहे हैं और अप्सरायें गान कर रही हैं। अयोध्यानरेश आनन्द-पूर्वक नगाड़े बजाकर अयोध्यापुरी को चले।

नृप करि विनय महाजन फेरे ❀ सादर सकल माँगने[1] टेरे
भूषन बसन बाजि गज दीन्हे ❀ प्रेम पोषि ठाढ़े सब कीन्हे

राजा दशरथजी ने विनती करके प्रतिष्ठित जनों को लौटाया और आदर-पूर्वक सब मङ्गनों को बुलवाया। उन्हें गहने, कपड़े, घोड़े, हाथी दिये और प्रेम से सबको पोषण करके खड़ा किया।

बार बार बिरिदावलि भाखी ❀ फिरे सकल रामहिं उर राखी
बहुरि बहुरि कोसलपति कहहीं ❀ जनक प्रेम बस फिरन न चहहीं

वे सब बारम्बार वंश की कीर्ति का बखान कर और रामचन्द्रजी को हृदय में रखकर लौटे। अयोध्या-नरेश फिर-फिर लौटने को कहते हैं, पर प्रेम के अधीन हुए जनकजी लौटना नहीं चाहते।

पुनि कह भूपति वचन सुहाये ❀ फिरिअ महीप दूरि बड़ि आये
राउ बहोरि उतरि भये ठाढ़े ❀ प्रेम प्रवाह बिलोचन बाढ़े

फिर राजा दशरथ ने सुहावने वचन कहे—हे राजन्! बहुत दूर आ गये, अब लौटिये। फिर अयोध्या-नरेश रथ से उतरकर भूमि पर खड़े हो गये। उनकी आँखों में प्रेम का प्रवाह बढ़ आया।

तब बिदेह बोले कर जोरी ❀ वचन सनेह सुधा जनु बोरी[2]
करउँ कवन विधि विनय बनाई ❀ महाराज मोहि दीन्हि बड़ाई

तब जनकजी हाथ जोड़कर मानो स्नेहरूपी अमृत में डुबोकर वचन बोले—हे महाराज! मैं किस तरह बनाकर विनती करूँ? आपने मुझे बड़ी बड़ाई दी है।

---

१. मंगन, मँगते। २. डुबोकर।

दो०— कोसलपति समधी सजन सनमाने सब भाँति ।
मिलनि परसपर बिनय अति प्रीति न हृदय समाति ॥

अयोध्यानाथ दशरथजी ने अपने प्रियजन समधी का सब तरह से सम्मान किया । उनकी आपस में मिलने की नम्रता और अत्यन्त प्रीति हृदय में समाती नहीं थी ।

मुनि मंडलिहि जनक सिरु नावा ❁ आसिरबादु सबहि सन पावा
सादर पुनि भेंटे जामाता ❁ रूप सील गुन निधि सब भ्राता

जनकजी ने मुनि-मण्डली को सिर नवाया और सभी से आशीर्वाद पाया। फिर आदर के साथ वे सब दामादों से मिले । सभी भाई रूप, शील और गुणों के निधान थे ।

जोरि पङ्करुह पानि सुहाये ❁ बोले बचन प्रेम जनु जाये[1]
राम करउँ केहि भाँति प्रसंसा ❁ मुनि महेस मन मानस हंसा

सुन्दर कमल के समान हाथों को जोड़कर वे ऐसे वचन बोले, जो मानो प्रेम से ही जन्मे हों । हे राम ! मैं आपकी प्रशंसा किस प्रकार से करूँ ? आप मुनियों और शिवजी के मनरूपी मानसरोवर के हंस हैं ।

करहिं जोग जोगी जेहि लागी ❁ कोह मोह ममता मद त्यागी
व्यापक ब्रह्म अलखु अबिनासी ❁ चिदानन्दु निरगुन गुन रासी

योगी लोग जिनके लिये क्रोध, मोह, ममता और मद त्यागकर योग-साधन करते हैं, जो सब में व्यापक, ब्रह्म, अव्यक्त, नाश-रहित, चिदानन्द, निर्गुण और गुणों की राशि हैं ।

मन समेत जेहि जान न बानी ❁ तरकि न सकहिं सकल अनुमानी
महिमा निगम नेति कहि कहई ❁ जो तिहुँ काल एकरस अहई[2]

मन-सहित वाणी जिनको नहीं जानती और जिनकी तर्कना नहीं कर सकते, केवल अनुमान ही कर सकते हैं, जिनकी महिमा को वेद 'नेति' (इतना ही नहीं) कहकर बतलाते हैं, जो तीनों कालों में एकरस रहते हैं,

दो०— नयन बिषय मो कहँ भयउ सो समस्त सुखमूल ।
सबइ सुलभु जग जीव कहँ भये ईसु अनुकूल ॥३४१॥

१. पैदा किये, जन्माये । २. है, रहता है ।

वे ही सम्पूर्ण सुखों के मूल (आप) मेरे नेत्रों के विषय हुए। सच है, ईश्वर के अनुकूल होने पर संसार में जीवों को सब कुछ सुलभ हो जाता है।

सबहिं भाँति मोहि दीन्हि बड़ाई ❀ निज जन जानि लीन्ह अपनाई
होहिं सहस दस सारद सेषा ❀ करहिं कलप कोटिक भरि लेखा

आपने मुझे सभी प्रकार से बड़ाई दी और अपना जन जानकर अपना लिया। यदि दस हज़ार सरस्वती और शेष हों और करोड़ों कल्पों तक गणना करते रहें,

मोर भाग्य राउर[1] गुन गाथा ❀ कहि न सिराहिं सुनहु रघुनाथा
मैं कछु कहउँ एकु बल मोरें ❀ तुम्ह रीझहु सनेहु सुठि थोरें

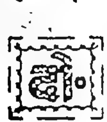
तो भी हे रघुनाथ ! मेरा सौभाग्य और आपके गुणों की कथा वे कहकर समाप्त नहीं कर सकते। मैं जो कुछ कह रहा हूँ, वह अपने इस एक ही बल पर कि आप बहुत थोड़े भी सच्चे प्रेम से प्रसन्न हो जाते हैं।

बार बार माँगउँ कर जोरें ❀ मन परिहरइ चरन जनि भोरें[2]
सुनि बर बचन प्रेम जनु पोषे ❀ पूरनकाम रामु परितोषे

मैं बार-बार हाथ जोड़कर यह माँगता हूँ कि मेरा मन आपके चरणों को भूलकर भी न छोड़े। जनकजी के श्रेष्ठ वचन जो मानो प्रेम से पोषित थे, सुनकर पूर्णकाम रामचन्द्रजी सन्तुष्ट हुए।

करि बर बिनय ससुर सनमाने ❀ पितु कौसिक बसिष्ठ सम जाने
बिनती बहुरि भरत सन कीन्ही ❀ मिलि सप्रेम पुनि आसिष दीन्ही

रामचन्द्रजी ने सुन्दर विनती करके ससुर को सम्मानित किया और उन्हें पिता दशरथजी, गुरु विश्वामित्रजी और कुलगुरु वशिष्ठजी के समान जाना। जनकजी ने भरत से विनती और प्रीति-पूर्वक मिलकर फिर उन्हें आशीर्वाद दिया।



मिले लखन रिपुसूदनहि दीन्ह असीस महीस।
भये परसपर प्रेम बस फिरि फिरि नावहिं सीस।३४२

फिर लक्ष्मण और शत्रुघ्न से मिलकर राजा ने उन्हें आशीर्वाद दिया। वे परस्पर प्रेम के वश होकर बार-बार सिर नवाने लगे।

---

१. आपके। २. भूलकर भी।



बार बार करि विनय बड़ाई ❀ रघुपति चले सङ्ग सब भाई
जनक गहे कौसिक पद जाई ❀ चरन रेनु सिर नयनन्हि लाई

बार-बार (जनकजी की) विनती और बड़ाई करके रामचन्द्रजी सब भाइयों के साथ चले। जनकजी ने जाकर विश्वामित्र जी के चरण पकड़ लिये, और उनके चरणों की धूलि को सिर और नेत्रों से लगाया।

सुनु मुनीस वर दरसन तोरें ❀ अगम न कछु प्रतीति मन मोरें
जो सुखु सुजसु लोकपति चहहीं ❀ करत मनोरथ सकुचत अहहीं

हे मुनीश्वर सुनिये, आप के दर्शन से कुछ भी दुर्लभ नहीं, मेरे मन में ऐसा विश्वास है। जो सुख और सुयश लोकपाल चाहते हैं और असंभव जानकर जिसके लिये मनोरथ करते हुए वे सकुचाते हैं,

सो सुखु सुजसु सुलभ मोहि स्वामी ❀ सब सिधि तव दरसन अनुगामी
कीन्ह विनय पुनि पुनि सिर नाई ❀ फिरे महीस आसिषा पाई

हे स्वामी! मुझे वही सुख और सुयश सुलभ हो गया; क्योंकि सारी सिद्धियाँ आपके दर्शनों के पीछे चलने वाली हैं। बार-बार विनती करके, सिर नवाकर और उनसे आशीर्वाद पाकर राजा लौटे।

चली बरात निसान बजाई ❀ मुदित छोट बड़ सब समुदाई
रामहिं निरखि ग्राम नर नारी ❀ पाइ नयन फलु होहिं सुखारी

नगाड़े बजाकर बरात चली। छोटे-बड़े सभी समूहों के लोग प्रसन्न हैं। रास्ते के गाँवों के स्त्री-पुरुष राम को देखकर और नेत्रों का फल पाकर सुखी होते हैं।

दो० बीच बीच बर बास करि मग लोगन्ह सुखु देत।
अवध समीप पुनीत दिन पहुँची आइ जनेत[1] ।३४३

बीच-बीच में सुन्दर पड़ाव करती हुई, रास्ते के लोगों को सुख देती हुई वह बरात पवित्र दिन में अयोध्यापुरी के समीप आ पहुँची।

हने निसान पनव बर बाजे ❀ भेरि सङ्ख धुनि हय गय गाजे
झाँझ बीन डिंडिमी[2] सुहाई ❀ सरस राग बाजहिं सहनाई

नगाड़ों पर चोटें पड़ने लगीं, सुन्दर ढोल बजने लगे; भेरी और शङ्ख बजने

१. बरात। २. डफली।

लगे; हाथी और घोड़े गरज रहे हैं। झाँझ, वीणा, सुहावनी डफलियाँ तथा रसीले राग से शहनाइयाँ बज रही हैं।

पुर जन आवत अकनि बराता ❀ मुदित सकल पुलकावलि गाता
निज निज सुन्दर सदन सँवारे ❀ हाट बाट चौहट पुर द्वारे

पुरजनों ने बरात का आना सुना, तब सब आनन्दित हो गये और सबके शरीर पुलकायमान हो गये। सबने अपने-अपने घरों, बाज़ारों, गलियों, चौराहों, नगर के द्वारों को सुन्दर सजा लिया।

गली सकल अरगजा[1] सिंचाई ❀ जहँ तहँ चौकें चारु पुराई
बना बजारु न जाइ बखाना ❀ तोरन केतु पताक बिताना

सारी गलियाँ अर्गजे से सिंचाई गईं, जहाँ-तहाँ सुन्दर चौक पुराये गये। बन्दनवारों, ध्वजा-पताकाओं और मण्डपों से बाज़ार ऐसा सजाया गया कि बखाना नहीं जा सकता।

सकल पूगफल[2] कदलि रसाला ❀ रोपे बकुल[3] कदम्ब तमाला
लगे सुभग तरु परसत धरनी ❀ मनिमय आलबाल[4] कल करनी

फल-सहित सुपारी, केला, आम, मौलसरी, कदम्ब और तमाल के पेड़ लगाये गये। वे लगे हुये सुन्दर वृक्ष धरती को छू रहे हैं। उनके थाले मणियों के हैं और अच्छी कारीगरी से बनाये गये हैं।

दो० **बिबिध भाँति मङ्गल कलस गृह गृह रचे सँवारि।**
सुर ब्रह्मादि सिहाहिं सब रघुबर पुरी निहारि ॥३४४॥

अनेक प्रकार के मङ्गल-कलश घर-घर सजाकर बनाये गये। ब्रह्मा आदि सब देवता राम की नगरी (अयोध्यापुरी) को देखकर सिहाते हैं।

भूप भवनु तेहि अवसर सोहा ❀ रचना देखि मदन मनु मोहा
मङ्गल सगुन मनोहरताई ❀ रिधि सिधि सुख सम्पदा सुहाई

उस समय राजमहल ऐसा शोभित था कि उसकी सजावट देखकर कामदेव का मन भी मोहित हो जाता है। मङ्गल-शकुन, सुन्दरता, ऋद्धि, सिद्धि, सुख और सुन्दर संपत्ति—

१. सुगन्धित द्रव्य। २. सुपारी। ३. मौलसिरी। ४. थाले।

जनु उछाह सब सहज सुहाये ❀ तनु धरि धरि दसरथ गृहँ आये
देखन हेतु राम बैदेही ❀ कहहु लालसा होइ न केही

मानो सहज सुन्दर उत्साह से शरीर धर-धरकर दशरथ के घर में आये हुये हैं। रामचन्द्रजी और सीता को देखने के लिये कहो, किसे लालसा न होगी?

जूथ जूथ मिलि चलीं सुआसिनि ❀ निज छवि निदरहिं मदन बिलासिनि
सकल सुमङ्गल सजे आरती ❀ गावहिं जनु बहु भेष भारती[1]

सुहागिनी स्त्रियाँ झुण्ड की झुण्ड मिलकर चलीं, जो अपनी छवि से कामदेव की स्त्री रति का भी निरादर कर रही हैं। सभी सुन्दर मंगल-द्रव्य और आरती सजाये हुये गान कर रही हैं, मानो सरस्वती ही बहुत-से रूप धारण किये गा रही हों।

भूपति भवन कोलाहल होई ❀ जाइ न बरनि समउ सुखु सोई
कौसल्यादि राम महतारीं ❀ प्रेम बिबस तनु दसा बिसारीं

राजमहल में (उत्सव का) हल्ला हो रहा है। उस समय का और सुख का वर्णन नहीं किया जा सकता। कौशल्या आदि रामचन्द्रजी की मातायें प्रेम के वश होकर शरीर की सुधि भूल गई हैं।

दो० दिये दान बिप्रन्ह बिपुल पूजि गनेस पुरारि।
प्रमुदित परम दरिद्र जनु पाइ पदारथ चारि ॥३४५

गणेशजी तथा शिवजी का पूजन करके उन्होंने ब्राह्मणों को बहुत-सा दान दिया। वे ऐसी प्रसन्न मालूम होती हैं मानो परम दरिद्री चारों पदार्थ (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) पा गया हो।

मोद प्रमोद बिबस सब माता ❀ चलहिं न चरन सिथिल भये गाता
राम दरस हित अति अनुरागीं ❀ परिछन साजु सजन सब लागीं

सब मातायें सुख और आनन्द में विमुग्ध हो रही हैं। उनके शरीर शिथिल हो गये हैं, और पैर आगे नहीं उठते। रामचन्द्रजी के दर्शनों के लिए वे अत्यन्त उत्सुकता से परछन का सब सामान सजाने लगीं।

बिबिध बिधान बाजने बाजे ❀ मंगल मुदित सुमित्राँ साजे
हरद दूब दधि पल्लव फूला ❀ पान पूगफल मंगल मूला

१. सरस्वती।

अनेक प्रकार के बाजे बज रहे थे। सुमित्रा ने प्रसन्नता से मङ्गल के साज सजाये। हल्दी, दूब, दही, पत्ते, फूल, पान और सुपारी आदि मङ्गल की मूल वस्तुएँ,

अच्छत अंकुर रोचन लाजा ❀ मंजुल मंजरि तुलसि बिराजा
छुहे[1] पुरट[2] घट सहज सुहाये ❀ मदन सकुन[3] जनु नीड़[4] बनाये

अक्षत (चावल), अँखुए, गोरोचन, लावा और तुलसी की सुन्दर मंजरियाँ सुशोभित हैं। नाना रंगों से चित्रित किये हुए सहज सुहावने सुवर्ण के कलश ऐसे मालूम होते थे, मानो कामदेवरूपी पक्षी ने घोंसले बनाये हों।

सगुन सुगन्ध न जाइ बखानी ❀ मंगल सकल सजहिं सब रानी
रची आरती बहुत बिधाना ❀ मुदित करहिं कल मंगल गाना

सगुन की सुगन्धित वस्तुएँ बखानी नहीं जा सकतीं। सब रानियाँ मङ्गल साज सज रही हैं। बहुत तरह की आरती रचकर प्रसन्नता से वे सुन्दर मङ्गल-गान कर रही हैं।

दो॰ कनक थार भरि मंगलन्हि कमल करन्हि लिये मातु।
चलीं मुदित परिछन करन पुलक पल्लवित गातु।३४६।

सुवर्ण के थालों को माङ्गलिक वस्तुओं से भरकर अपने कमल के समान हाथों में लिये हुये मातायें आनंदित होकर परछन करने चलीं। उनका शरीर पुलकित हो रहा है।

धूप धूम नभु मेचक भयऊ ❀ सावन घन घमंड जनु ठयऊ
सुरतरु सुमन माल सुर बरषहिं ❀ मनहुँ बलाक अवलि मनु करषहिं

धूप के धुएँ से आकाश काला हो गया है। मानो सावन के मेघ उमड़कर छा गये हों। देवता कल्पवृक्ष के फूलों की मालायें बरसा रहे हैं; वह मानो बगुलों की पाँत है जो मन को अपनी ओर खींच रही है।

मंजुल मनिमय बन्दनिवारे ❀ मनहु पाकरिपु[5] चाप सँवारे
प्रगटहिं दुरहिं अटन्हि पर भामिनि ❀ चारु चपल जनु दमकहिं दामिनि

सुन्दर मणियों के बन्दनवार ऐसे मालूम होते हैं, मानो इन्द्र-धनुष सजाये हों। अटारियों पर सुन्दर और चपल स्त्रियाँ प्रकट होती और छिप जाती हैं, मानो बिजलियाँ चमक रही हों।

---

१. चित्रित। २. सोना। ३. पक्षी। ४. घोंसला। ५. इन्द्र।

दुन्दुभि धुनि घन गरजनि घोरा ❀ जाचक चातक दादुर मोरा
सुर सुगन्ध सुचि बरषहिं बारी ❀ सुखी सकल ससि[1] पुर नर नारी

नगारे की ध्वनि ही बादलों का घोर गर्जन है और मंगन लोग पपीहा, मेंढक और मोर हैं। देवता शुद्ध सुगन्धित जल बरसा रहे हैं, जिससे खेतीरूपी नगर के सब स्त्री-पुरुष सुखी हो रहे हैं।

समउ जानि गुर आयसु दीन्हा ❀ पुर प्रबेसु रघुकुल मनि कीन्हा
सुमिरि सम्भु गिरिजा गनराजा ❀ मुदित महीपति सहित समाजा

प्रवेश का मुहूर्त्त जानकर गुरुजी ने आज्ञा दी, तब रघुकुल-मणि महाराज दशरथ ने नगर में प्रवेश किया। शिव, पार्वती और गणेशजी का स्मरण करके महाराज समाज-सहित आनंदित हो रहे हैं।

दो० होहिं सगुन बरषहिं सुमन सुर दुन्दुभी बजाइ।
बिबुध बधू नाचहिं मुदित मंजुल मङ्गल गाइ।३४७।

शकुन हो रहे हैं, देवता दुन्दुभी बजा-बजाकर फूल बरसा रहे हैं। देवताओं की स्त्रियाँ प्रसन्न होकर सुन्दर मंगल-गीत गा-गाकर नाच रही हैं।

मागध सूत बन्दि नट नागर ❀ गावहिं जस तिहुँ लोक उजागर
जय धुनि बिमल बेद बर बानी ❀ दस दिसि सुनिय सुमंगल सानी

मागध, सूत, बन्दीजन और चतुर नर तीनों लोकों में उजागर रामचन्द्रजी का यश गा रहे हैं। जय-ध्वनि तथा सुन्दर मंगल से सनी हुई वेद की निर्मल श्रेष्ठ वाणी दसों दिशाओं में सुनाई पड़ रही है।

बिपुल बाजने बाजन लागे ❀ नभ सुर नगर लोग अनुरागे
बने बराती बरनि न जाहीं ❀ महा मुदित मन सुख न समाहीं

बहुत-से बाजे बजने लगे। आकाश में देवता और नगर में लोग प्रेम में मस्त हैं। बराती ऐसे बने-ठने हैं कि उनका वर्णन नहीं हो सकता; परम आनंदित हैं; सुख उनके मन में समाता नहीं है।

पुरबासिन्ह तब राउ जोहारे ❀ देखत रामहिं भये सुखारे
करहिं निछावरि मनिगन चीरा ❀ बारि बिलोचन पुलक सरीरा

तब पुरवासियों ने राजा को प्रणाम किया। रामचन्द्रजी को देखते ही वे

१. शस्य, खेती।

सुखी हो गये। वे मणियाँ और वस्त्र निछावर कर रहे हैं। उनकी आँखों में जल भरा है और शरीर पुलकित हैं।

आरति करहिं मुदित पुर नारी ❀ हरषहिं निरखि कुँअर वर चारी
सिविका[1] सुभग ओहार[2] उघारी ❀ देखि दुलहिनिन्ह होहिं सुखारी

नगर की स्त्रियाँ आनंदित होकर आरती कर रही हैं और चारों श्रेष्ठ कुमारों को देखकर हर्षित हो रही हैं। पालकियों के सुन्दर परदे हटा-हटाकर वे दुलहिनों को देखकर सुखी होती हैं।

दो०— एहि बिधि सबही देत सुख आये राजदुआर।
मुदित मातु परिछन करहिं बधुन्ह समेत कुमार ३४८

इस तरह सबको सुख देते हुए राजद्वार पर आये। मातायें प्रसन्न होकर राजकुमारों-सहित बहुओं का परछन कर रही हैं।

करहिं आरती बारहिं बारा ❀ प्रेम प्रमोदु कहइ को पारा
भूषन मनि पट नाना जाती ❀ करहिं निछावरि अगनित भाँती

वे बार-बार आरती कर रही हैं। उस प्रेम और आनन्द को कहकर कौन पार पा सकता है? गहने, मणि, अनेक तरह के वस्त्र और असंख्य प्रकार की चीज़ें वे निछावर कर रही हैं।

बधुन्ह समेत देखि सुत चारी ❀ परमानन्द मगन महतारी
पुनि पुनि सीय राम छवि देखी ❀ मुदित सफल जग जीवन लेखी

पतोहुओं-सहित चारों पुत्रों को देखकर मातायें परम आनन्द में डूब गईं। बार-बार सीता और राम की छवि देखकर वे संसार में अपने जीवन को सफल मानकर आनंदित हो रही हैं।

सखीं सीय मुख पुनि पुनि चाही ❀ गान करहिं निज सुकृत सराही
बरषहिं सुमन छनहिं छन देवा ❀ नाचहिं गावहिं लावहिं सेवा

सखियाँ बार-बार सीता का मुख देखकर अपने-अपने पुण्यों की सराहना करती हुई गान कर रही हैं। देवता क्षण-क्षण में फूल बरसाते, नाचते और गाते हैं और अपनी-अपनी सेवायें समर्पण कर रहे हैं।

---

१. पालकी। २. पालकी का परदा।

देखि मनोहर चारिउ जोरीं ❀ सारद उपमा सकल ढँढोरीं[1]
देत न बनइ निपट लघु लागीं ❀ एकटक रहीं रूप अनुरागीं

चारों मनोहर जोड़ियों को देखकर सरस्वती ने सारी उपमाओं को ढूंढ डाला; पर कोई उपमा देते न बनी, क्योंकि उन्हें सभी बिलकुल तुच्छ जान पड़ीं। तब वह भी रूप में अनुरक्त होकर टकटकी लगाकर देखती रह गईं।

दो०- निगम[2] नीति कुल रीति करि अरघ पाँवड़े देत।
बधुन्ह सहित सुत परिछि सब चलीं लेवाइ निकेत॥

वेदों की विधि और कुल की रीति करके अर्घ्य तथा पाँवड़े देते हुए बधुओं समेत सब पुत्रों को परछन करके मातायें महल में लिवा चलीं।

चारि सिंघासन सहज सुहाये ❀ जनु मनोज निज हाथ बनाये
तिन्ह पर कुँअरि कुँअर बैठारे ❀ सादर पाय पुनीत पखारे

चार सिंहासन, जो सहज सुहावने थे मानो वे कामदेव ने अपने हाथ से बनाए थे, उन पर राजकुमारियों और राजकुमारों को बैठाकर, आदर के साथ उनके पवित्र चरण धोये।

धूप दीप नैवेद बेदबिधि ❀ पूजे बर दुलहिनि मङ्गल निधि
बारहिं बार आरती करहीं ❀ व्यजन चारु चामर सिर ढरहीं

धूप, दीप और नैवेद्य द्वारा वेद की विधि से मङ्गल-राशि दूलह और दुलहिनों की पूजा की। मातायें बारम्बार आरती कर रही हैं। वर-वधुओं के सिर पर सुन्दर पंखे तथा चँवर ढल रहे हैं।

बस्तु अनेक निछावरि होहीं ❀ भरी प्रमोद मातु सब सोहीं
पावा परम तत्व जनु जोगीं ❀ अमृत लहेउ जनु सन्तत रोगीं

अनेक वस्तुयें निछावर हो रही हैं। आनन्द से भरी हुई सभी मातायें ऐसी शोभा पा रही हैं, मानो योगी ने परम तत्व को प्राप्त कर लिया और सदा के रोगी ने अमृत पा लिया।

जनम रङ्क[3] जनु पारस पावा ❀ अन्धहि लोचन लाभु सुहावा
मूक बदन जनु सारद छाई ❀ मानहुँ समर सूर जय पाई

---

१. ढूँढ डाली। २. वेद। ३. गरीब, दरिद्र।

जन्म का दरिद्री मानो पारस-मणि पा गया हो और अन्धे को सुन्दर नेत्रों का लाभ हुआ हो। गूँगे के मुख में मानो सरस्वती आ विराजी हों, और मानो शूरवीर ने युद्ध में विजय प्राप्त की हो।

दो० एहि सुख तें सत कोटि गुन पावहिं मातु अनन्द।
भाइन्ह सहित बिआहि घर आये रघुकुल चन्द ॥३५०

इस प्रकार के सुखों से सौ करोड़ गुना बढ़कर आनन्द माताएँ पा रही हैं। इस प्रकार रघुकुल के चन्द्रमा (राम) विवाह करके भाइयों-सहित घर आये हैं।

लोकरीति जननी करहिं वर दुलहिनि सकुचाहिं।
मोदु विनोदु विलोकि वड़ राम मनहिं मुसुकाहिं ॥३५०(२)॥

मातायें लोक-रीति करती हैं और दूलह-दुलहिनें लजाते हैं। उस आनन्द और विनोद को देखकर रामचन्द्रजी मन ही मन मुस्करा रहे हैं।

देव पितर पूजे विधि नीकी ❀ पूजीं सकल वासना जी की
सवहि वन्दि माँगहिं वरदाना ❀ भाइन्ह सहित राम कल्याना

देवता और पितरों का भली-भाँति पूजन किया गया। मन की सभी वासनायें पूरी हुईं। सबकी वन्दना करके मातायें भाइयों-सहित रामचन्द्रजी के कल्याण का वरदान माँगती हैं।

अन्तरहित सुर आसिप देहीं ❀ मुदित मातु अञ्चल भरि लेहीं
भूपति वोलि वराती लीन्हे ❀ जान[1] वसन मनि भूपन दीन्हे

देवता अन्तरिक्ष से आशीर्वाद दे रहे हैं और मातायें आनन्दित हो आँचल भरकर ले रही हैं। तत्पश्चात् राजा ने वरातियों को बुलवा लिया और उन्हें सवारियाँ, वस्त्र, मणि और गहने दिये।

आयसु पाइ राखि उर रामहिं ❀ मुदित गये सव निज निज धामहिं
पुर नर नारि सकल पहिराये ❀ घर घर वाजन लगे वधाये

आज्ञा पाकर रामचन्द्रजी को हृदय में रखकर वे सब प्रसन्नता-पूर्वक अपने-अपने घर गये। राजा ने नगर के समस्त स्त्री-पुरुषों को कपड़े और गहने पहनाये। घर-घर आनन्द के वधावे वजने लगे।

१. यान, सवारी।

जाचक जन जाचहिं जोइ जोई ❀ प्रमुदित राउ देहिं सोइ सोई
सेवक सकल बजनियाँ नाना ❀ पूरन किये दान सनमाना

याचक लोग जो-जो माँगते हैं, राजा प्रसन्न होकर उन्हें वही-वही देते हैं। सारे सेवकों और बाजे वालों को राजा ने नाना प्रकार के दान और सम्मान से सन्तुष्ट किया।

दो०- देहिं असीस जोहारि सब गावहिं गुन गन गाथ।
तब गुरु भूसुर सहित गृह गवन कीन्ह नरनाथ ३५१

सब प्रणाम करके आशीर्वाद देते हैं और गुण समूहों की कथा गाते हैं। तब गुरु और ब्राह्मणों-सहित राजा दशरथजी ने महल में प्रवेश किया।

जो बसिष्ठ अनुसासन दीन्हीं ❀ लोक बेद बिधि सादर कीन्हीं
भूसुर भीर देखि सब रानी ❀ सादर उठीं भाग्य बड़ जानी

वशिष्ठजी ने जो आज्ञा दी, राजा ने उसे लोक और वेद की विधि के अनुसार आदर-पूर्वक किया। ब्राह्मणों की भीड़ देखकर सब रानियाँ अपना बड़ा भाग्य समझकर आदर के साथ उठ खड़ी हुईं।

पाय पखारि सकल अन्हवाये ❀ पूजि भली बिधि भूप जेंवाये
आदर दान प्रेम परिपोषे ❀ देत असीस चले मन तोषे

चरण धोकर उन्होंने सबको स्नान कराया और राजा ने उनका भली-भाँति पूजन करके उन्हें भोजन कराया। उन्हें आदर, दान और प्रेम से परिपुष्ट किया। वे संतुष्ट मन से आशीर्वाद देते हुए चले।

बहु बिधि कीन्हि गाधिसुत पूजा ❀ नाथ मोहि सम धन्य न दूजा
कीन्हि प्रसंसा भूपति भूरी[1] ❀ रानिन्ह सहित लीन्हि पग धूरी

राजा ने विश्वामित्रजी की बहुत तरह से पूजा की और कहा—हे नाथ! मेरे समान धन्य दूसरा कोई नहीं है। राजा ने उनकी बड़ी बड़ाई की और रानियों-सहित उनके पाँव की धूलि को ग्रहण किया।

भीतर भवन दीन्ह बर बासू ❀ मन जोगवत रह नृप रनिवासू
पूजे गुर पद कमल बहोरी ❀ कीन्ह बिनय उर प्रीति न थोरी

उनको महल के भीतर ठहरने को उत्तम स्थान दिया। राजा तथा रनिवास

१. बहुत।

उनका मन सदा सँभालते रहते थे। फिर राजा ने गुरु वशिष्ठजी के चरण-कमलों की पूजा और विनती की। हृदय में उनके लिये कम प्रीति नहीं थी।

दो० बधुन्ह समेत कुमार सब रानिन्ह सहित महीसु।
पुनि पुनि बन्दत गुरु चरन देत असीस मुनीसु ॥३५२॥

बहुओं-सहित सब राजकुमार और रानियों-समेत राजा बार-बार गुरु के चरणों की वन्दना करते हैं और मुनिराज आशीर्वाद देते हैं।

बिनय कीन्हि उर अति अनुरागे ❀ सुत सम्पदा राखि सब आगे
नेगु माँगि मुनिनायक लीन्हा ❀ आसिरबादु बहुत बिधि दीन्हा

अत्यन्त प्रेम-पूर्ण हृदय से पुत्रों और सारी सम्पत्ति को सामने रखकर राजा ने उन्हें (स्वीकार कर लेने के लिये) विनती की। परंतु मुनिराज ने (पुरोहित के नाते) अपना नेग माँग लिया और बहुत तरह से उन्हें आशीर्वाद दिया।

उर धरि रामहिं सीय समेता ❀ हरषि कीन्ह गुर गवन निकेता
बिप्र बधू सब भूप बोलाईं ❀ चैल[1] चारु भूषन पहिराईं

हृदय में सीता-सहित रामचन्द्रजी को रखकर गुरु प्रसन्नता से अपने स्थान को गये। राजा ने सब ब्राह्मणियों को बुलवाया और उन्हें सुन्दर वस्त्र और आभूषण पहनाये।

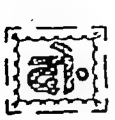
बहुरि बोलाइ सुआसिनि लीन्हीं ❀ रुचि बिचारि पहिरावनि दीन्हीं
नेगी नेग जोग सब लेहीं ❀ रुचि अनुरूप भूपमनि देहीं

फिर उन्होंने सुहागिनी स्त्रियों (नगर भर की सौभाग्यवती बहनों, बेटियों, भानजी आदि) को बुलवा लिया। उनकी रुचि समझकर उन्हें पहिरावनी दी। नेगी लोग सब अपना-अपना नेग-जोग लेते और राजाओं के मणि (दशरथजी) उनकी इच्छा के अनुसार देते हैं।

प्रिय पाहुने पूज्य जे जाने ❀ भूपति भली भाँति सनमाने
देव देखि रघुबीर बिबाहू ❀ बरषि प्रसून प्रसंसि उछाहू

जिन महमानों को प्रिय और पूजनीय जाना, उनका राजा ने अच्छी तरह सम्मान किया। देवगण रघुनाथजी का विवाह देखकर फूल बरसाकर, उत्सव की प्रशंसा करके,

१. वस्त्र।



चले निसान बजाइ सुर निज निज पुर सुख पाइ।
कहत परसपर राम जस प्रेम न हृदयँ समाइ।३५३।

नगाड़े बजाकर और सुख पाकर देवता अपने-अपने लोकों को चले। आपस में राम का यश कहते जाते हैं। उनके हृदय में प्रेम समाता नहीं है।

सब बिधि सबहि समदि नर नाहू ❀ रहा हृदयँ भरि पूरि उछाहू
जहँ रनिवास तहाँ पगु धारे ❀ सहित बधूटिन्ह कुँअर निहारे

सब प्रकार से सबका प्रेम-पूर्वक भली-भाँति आदर-सत्कार कर लेने पर राजा दशरथ के हृदय में पूर्ण उत्साह (आनंद) भर गया। फिर जहाँ रनिवास था, वे वहाँ पधारे और बहुओं-समेत उन्होंने कुँवरों को देखा।

लिये गोद करि मोद समेता ❀ को कहि सकइ भयउ सुख जेता[1]
बधू सप्रेम गोद बैठारी ❀ बार बार हिय हरषि दुलारी

आनंद-सहित उन्होंने पुत्रों को गोद में ले लिया। उस समय उन्हें जितना सुख हुआ, वह कौन कह सकता है ? फिर पतोहुओं को प्रीति के साथ गोदी में बैठाकर, बार-बार हृदय में हर्षित होकर उन्होंने उनका दुलार किया।

देखि समाजु मुदित रनिवासू ❀ सब के उर अनन्द कियो बासू
कहेउ भूप जिमि भयउ बिबाहू ❀ सुनि सुनि हरषु होइ सब काहू

यह समाज (समारोह) देखकर रनिवास प्रसन्न हो गया। सबके हृदय में आनन्द ने निवास कर लिया। तब राजा ने जिस तरह विवाह हुआ था, वह सब कहा। उसे सुन-सुनकर सब को हर्ष हो रहा है।

जनक राज गुन सीलु बड़ाई ❀ प्रीति रीति सम्पदा सुहाई
बहु बिधि भूप भाट जिमि बरनी ❀ रानीं सब प्रमुदित सुनि करनी

राजा जनकजी के गुण, शील, बड़प्पन, प्रीति की रीति और सुन्दर सम्पत्ति का वर्णन राजा ने भाट की तरह बहुत प्रकार से किया। जनकजी की करनी सुनकर सब रानियाँ बहुत प्रसन्न हुईं।



सुतन्ह समेत नहाइ नृप बोलि बिप्र गुर ज्ञाति[2]।
भोजन कीन्ह अनेक बिधि घरी पञ्च गइ राति।३५४।

१, जितना। २. जाति, बिरादरी।

पुत्रों-सहित स्नान करके राजा ने ब्राह्मण, गुरु और कुटुम्बियों को बुलाकर अनेक प्रकार के भोजन किये। इस प्रकार पाँच घड़ी रात बीत गई।

मङ्गल गान करहिं वर भामिनि ❀ भइ सुखमूल मनोहर जामिनि
अँचइ पान सब काहूँ पाये ❀ स्रग सुगन्ध भूषित छवि छाये

सुन्दर स्त्रियाँ मङ्गल-गान कर रही हैं। वह रात्रि मनोहारिणी और सुख की मूल हो गई। सबने आचमन करके पान खाये और फूलों की माला, सुगन्धित द्रव्य (इत्र आदि) से विभूषित होकर वे शोभा से छा गये।

रामहिं देखि रजायसु पाई ❀ निज निज भवन चले सिर नाई
प्रेमु प्रमोदु विनोदु बड़ाई ❀ समउ समाजु मनोहरताई

रामचन्द्रजी को देखकर, आज्ञा पाकर और सिर नवाकर वे अपने-अपने घर को चले। उस समय के प्रेम, आनन्द, विनोद, बड़ाई, समय, समाज और मनोहरता को,

कहि न सकहिं सत सारद सेसू ❀ वेद बिरञ्चि महेस गनेसू
सो मैं कहउँ कवन विधि बरनी ❀ भूमिनाग[1] सिर धरइ कि धरनी

सैंकड़ों सरस्वती, शेष, वेद, ब्रह्मा, शिव और गणेशजी भी नहीं कह सकते। उसको मैं किस तरह बखानकर कह सकता हूँ? कहीं केंचुआ भी धरती को सिर पर ले सकता है?

नृप सब भाँति सबहिं सनमानी ❀ कहि मृदु वचन बोलाईं रानी
बधू लरिकिनी पर घर आईं ❀ राखेहु नयन पलक की नाईं[2]

राजा ने सबका सब प्रकार से सम्मान करके, कोमल वचन कहकर रानियों को बुलाया और कहा—बहुएं अभी बच्ची हैं, पराये घर आई हैं; इनको नेत्र और पलक की भाँति रखना।

दो॰ लरिका स्रमित उनीद बस सयन करावहु जाइ।
अस कहि गे बिस्राम गृहँ राम चरन चितु लाइ।३५५।

लड़के थके हुए नींद के वश हो रहे हैं, इन्हें ले जाकर शयन कराओ। ऐसा कहकर राजा राम के चरणों में मन लगाकर विश्राम-भवन में चले गये।

---

१. केंचुवा। २. तरह।



भूप बचन सुनि सहज सुहाये ❀ जटित कनक मनि पलँग डसाये
सुभग सुरभि पय फेन समाना ❀ कोमल कलित सुपेतीं नाना

स्वभाव ही से राजा के सुहावने वचन सुनकर रानियों ने मणियों से जड़े सुवर्ण के पलङ्ग बिछवाए। गाय के दूध के फेन के समान सुन्दर कोमल नाना प्रकार की सुपेतियाँ (पतली और मुलायम रजाइयाँ), तथा

उपबरहन[1] बर बरनि न जाहीं ❀ स्रग[2] सुगन्ध मनि मन्दिर माहीं
रतन दीप सुठि चारु चँदोवा ❀ कहत न बनइ जान जेहि जोवा

उत्तम तकियों का वर्णन नहीं किया जा सकता। मणियों के मन्दिर में फूलों की मालायें और सुगन्ध द्रव्य सजे हैं। रत्न के दीपकों और सुन्दर चँदोवे की शोभा कहते नहीं बनती। जिसने देखा है, वही जान सकता है।

सेज रुचिर रचि रामु उठाये ❀ प्रेम समेत पलँग पौढ़ाये
अग्या पुनि पुनि भाइन्ह दीन्ही ❀ निज निज सेज सयन तिन्ह कीन्ही

सुन्दर सेज सजाकर राम को उठाया गया और प्रीति के साथ पलँग पर पौढ़ाया गया। रामचन्द्रजी ने बार-बार भाइयों को आज्ञा दी, तब वे भी अपनी-अपनी पलँगों पर सोये।

देखि स्याम मृदु मञ्जुल गाता ❀ कहहिं सप्रेम बचन सब माता
मारग जात भयावनि भारी ❀ केहि बिधि तात ताड़का मारी

रामचन्द्रजी के सुन्दर श्यामल कोमल अंगों को देखकर सब मातायें प्रेम से वचन कह रही हैं—हे तात! मार्ग में जाते हुए तुमने बड़ी भयावनी ताड़का राक्षसी को कैसे मारा?

दो० घोर निसाचर बिकट भट समर गनहिं नहिं काहु।
मारे सहित सहाय किमि खल मारीच सुबाहु।३५६।

भयङ्कर राक्षस, जो विकट योद्धा थे और जो युद्ध में किसी को कुछ गिनते ही नहीं, उन दुष्ट मारीच और सुबाहु को उनके सहायकों-सहित तुमने कैसे मारा?

मुनि प्रसाद बलि तात तुम्हारी ❀ ईस अनेक करवरें[3] टारी
मख रखवारी करि दोउ भाई ❀ गुर प्रसाद सब बिद्या पाई

१. तकिया। २. माला। ३. बलायें, मुसीबतें।

हे तात ! मैं तुम्हारी बलि जाती हूँ; मुनि की कृपा से ईश्वर ने बहुत-सी बलाओं को टाल दिया। दोनों भाइयों ने यज्ञ की रखवाली करके गुरुजी के प्रसाद से सब विद्यायें प्राप्त कीं।

मुनि तिय तरी लगत पग धूरी ❀ कीरति रही भुवन भरि पूरी
कमठ पीठि पवि कूट कठोरा ❀ नृप समाज महुँ सिव धनु तोरा

तुम्हारे चरणों की धूलि लगने से मुनि की स्त्री अहल्या तर गई। यह कीर्ति विश्व-भर में पूर्ण रीति से भर रही है। कछुए की पीठ, बज्र और पर्वत से भी कठोर शिवजी के धनुष को राज-समाज में तुमने तोड़ दिया,

बिस्व बिजय जसु जानकि पाई ❀ आये भवन ब्याहि सब भाई
सकल अमानुष करम तुम्हारे ❀ केवल कौसिक कृपाँ सुधारे

विश्व-विजय करने की कीर्त्ति और जानकी को तुमने पाया और सब भाइयों को व्याहकर घर आये। तुम्हारे सभी कर्म मनुष्य की शक्ति के बाहर के हैं। केवल विश्वामित्रजी की कृपा ने यह सब किया है।

आजु सुफल जग जनमु हमारा ❀ देखि तात बिधु बदन तुम्हारा
जे दिन गये तुम्हहिं बिनु देखें ❀ ते बिरञ्चि जनि पारहिं[1] लेखें

हे पुत्र ! तुम्हारा चन्द्र-मुख देखकर आज हमारा संसार में जन्म लेना सफल हुआ। जो दिन तुमको बिना देखे बीते हैं, ब्रह्मा उनको गिनती में न लायें, (हमारी आयु में न जोड़ें)।

दो०— राम प्रतोषीं मातु सब कहि बिनीत बर बैन।
सुमिरि सम्भु गुर बिप्र पद किये नींद बस नैन ॥३५७

रामचन्द्रजी ने विनययुक्त श्रेष्ठ वचन कहकर सब माताओं को सन्तुष्ट किया। फिर शिव, गुरु और ब्राह्मण के चरणों का स्मरण कर नेत्रों को नींद के वश किया।

नींदहु बदन सोह सुठि लोना[2] ❀ मनहुँ साँझ सरसीरुह सोना[3]
घर घर करहिं जागरन नारीं ❀ देहिं परसपर मङ्गल गारीं

नींद में भी उनका लावण्यमय मुख ऐसा सुन्दर लगता है, मानो सन्ध्या

---

१. डालें, लायें। २. सुन्दर। ३. लाल।

के समय लाल कमल। घर-घर में स्त्रियाँ जागरण कर रही हैं और एक दूसरी को मंगलमयी गालियाँ दे रही हैं।

पुरी बिराजति राजति रजनी ❀ रानीं कहहिं बिलोकहु सजनी
सुन्दर बधुन्ह सासु लेइ सोईं ❀ फनिकन्ह जनु सिर मनि उर गोईं

रानी कहती हैं—हे सजनी! देखो, रात कैसी शोभा दे रही है; उसमें अयोध्यापुरी बहुत ही सुहावनी लगती है। सुन्दर बहुओं को लेकर सासुयें सोई हैं। मानो सर्पों ने अपने सिर की मणियों को हृदय में छिपा लिया है।

प्रात पुनीत काल प्रभु जागे ❀ अरुनचूड़[1] बर बोलन लागे
बन्दि मागधन्हि गुनगन गाये ❀ पुरजन द्वार जोहारन आये

सवेरे पवित्र ब्राह्म-मुहूर्त में प्रभु जागे। मुर्गे सुन्दर बोलने लगे। बन्दीजन और मागध गुणावली गाने लगे तथा नगर के लोग फाटक पर प्रणाम करने को आये।

बन्दि बिप्र सुर गुर पितु माता ❀ पाइ असीस मुदित सब भ्राता
जननिन्ह सादर बदन निहारे ❀ भूपति सङ्ग द्वार पगु धारे

ब्राह्मणों, देवताओं, गुरु, पिता और माताओं को प्रणाम कर आशीर्वाद पाकर सब भाई प्रसन्न हुए। माताओं ने आदर से उनके मुख देखे। फिर वे राजा के साथ दरवाजे पर पधारे।

दो०— कीन्हि सौच सब सहज सुचि सरित पुनीत नहाइ।
प्रातक्रिया करि तात पहिं आये चारिउ भाइ॥३५८

स्वभाव ही से पवित्र चारों भाइयों ने सब शौच से निवृत्त होकर पवित्र नदी (सरयू) में स्नान किया और प्रातः क्रिया करके वे पिता के पास आये।

भूप बिलोकि लिये उर लाई ❀ बैठे हरषि रजायसु पाई
देखि रामु सब सभा जुड़ानी ❀ लोचन लाभ अवधि अनुमानी

राजा ने उन्हें देखते ही हृदय से लगा लिया। वे पिता की आज्ञा पाकर प्रसन्न होकर बैठ गये। रामचन्द्रजी को देखकर और नेत्रों के लाभ की बस यही सीमा है, ऐसा अनुमान कर सारी सभा शीतल हो गई।

---

१. मुर्गा।

पुनि बसिष्टु मुनि कौसिकु आये ❀ सुभग आसनन्हि मुनि बैठाये
सुतन्ह समेत पूजि पद लागे ❀ निरखि राम दोउ गुर अनुरागे

फिर वशिष्ठ और विश्वामित्र ऋषि आये। राजा ने उन्हें सुन्दर आसनों पर बैठाया। पुत्रों-समेत राजा ने उनकी पूजा करके उनके पाँव छुए। दोनों गुरु राम को देखकर प्रेम में मुग्ध हो गये।

कहहिं बसिष्ठु धरम इतिहासा ❀ सुनहिं महीपु सहित रनिवासा
मुनि मन अगम गाधिसुत करनी ❀ मुदित बसिष्ठ विपुल विधि बरनी

वशिष्ठजी धार्मिक इतिहास कह रहे हैं और महाराज रनिवास-सहित सुन रहे हैं। विश्वामित्रजी के कृत्य को, जो मुनियों के मन को भी अगम्य है, वशिष्ठजी ने आनन्दित होकर बहुत प्रकार से वर्णन किया।

बोले बामदेव सब साँची ❀ कीरति कलित[1] लोक तिहुँ माँची
सुनि आनंद भयउ सब काहू ❀ राम लखन उर अधिक उछाहू

वामदेवजी ने कहा—हाँ, ये सब बातें सत्य हैं, विश्वामित्रजी की सुन्दर कीर्ति तीनों लोकों में छाई हुई है। यह सुनकर सभी को आनन्द हुआ। राम-लक्ष्मण के हृदय में विशेष आनन्द आया।

दो०— मंगल मोद उछाह नित जाहिं दिवस एहि भाँति।
उमगी अवध अनंद भरि अधिक अधिक अधिकाति॥

नित्य ही मंगल, आनन्द और उत्सव होते हैं। इस तरह आनन्द में दिन बीतते जाते हैं। अयोध्यापुरी आनन्द से भरकर उमड़ पड़ी। आनन्द की अधिकता अधिक-अधिक बढ़ती ही जा रही है।

सुदिन सोधि कल कंकन छोरे ❀ मंगल मोद बिनोद न थोरे
नित नव सुखु सुर देखि सिहाहीं ❀ अवध जनम जाचहिं बिधि पाहीं

अच्छा दिन (शुभ मुहूर्त्त) शोधकर सुन्दर कङ्कण खोले गये। तब भी मंगल, आनन्द और विनोद कम नहीं हुये। ऐसे नित्य नये सुखों को देख-देख कर देवगण सिहाते हैं और ब्रह्मा से अयोध्या में जन्म पाने के लिये प्रार्थना करते हैं।

---

१. सुन्दर।

सो॰ सिय रघुबीर बिबाहु जे सप्रेम गावहिं सुनहिं ।
तिन कहुँ सदा उछाहु मंगलायतन[1] राम जसु ।३६१।

सीता और रामचन्द्रजी के विवाह को जो प्रेम के साथ गायेंगे और सुनेंगे, उनको सदा आनन्द है, क्योंकि राम का यश मंगल का धाम है ।

इति श्रीमद्रामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने
प्रथमः सोपानः समाप्तः

कलियुग के समस्त पापों को विध्वंस करने वाले श्रीमद्रामचरितमानस का यह पहला सोपान समाप्त हुआ ।

(बाल-कांड समाप्त)



१. मंगलों का धाम ।

श्रीगणेशाय नमः

श्रीजानकीवल्लभो विजयते

रा म च रि त मा न स

द्वितीय सोपान

अयोध्या-कांड

श्लोकाः

यस्यांके च विभाति भूधरसुता देवापगा मस्तके ।
भाले बालविधुर्गले च गरलं यस्योरसि व्यालराट् ॥
सोऽयं भूतिविभूषणः सुरवरः सर्वाधिपः सर्वदा ।
शर्वः सर्वगतः शिवः शशिनिभः श्रीशङ्करः पातु माम् ॥१॥

जिनकी गोद में हिमाचल-कन्या पार्वतीजी, मस्तक पर गङ्गाजी, ललाट पर द्वितीया का चन्द्रमा, कंठ में हलाहल विष और छाती पर सर्पराज शेष सुशोभित हैं, वे भस्म से विभूषित, देवताओं में श्रेष्ठ, सदा सब के स्वामी, कल्याणरूप, सर्वव्यापक और चन्द्रमा के समान कान्ति वाले श्रीशिवजी मेरी रक्षा करें !

प्रसन्नतां या न गताभिषेकतस्तथा न मम्ले वनवासदुःखतः ।
मुखाम्बुजश्री रघुनन्दनस्य मे सदाऽस्तु सा मञ्जुलमङ्गलप्रदा ॥२॥

रघुकुल को आनंद देने वाले श्रीरामचन्द्रजी के मुखरूपी कमल की जो शोभा राज्याभिषेक (की बात) से न तो प्रसन्नता को प्राप्त हुई और न वनवास के दुःख से मलिन ही हुई, वह मेरे लिये सदा सुन्दर मङ्गल की देने वाली हो।

नीलाम्बुजश्यामलकोमलाङ्गं सीतासमारोपितवामभागम् ।
पाणौ महासायकचारुचापं नमामि रामं रघुवंशनाथम् ॥३॥

नीले कमल के समान श्याम और कोमल जिनके अंग हैं, श्री सीताजी जिनके वाम भाग में विराजमान हैं और जिनके हाथों में अमोघ बाण और सुंदर धनुष हैं, उन रघुवंश के स्वामी श्रीरामचन्द्रजी को मैं नमस्कार करता हूँ।

दो०— श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुरु[1] सुधारि।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि॥

श्रीगुरुजी के चरण-कमलों की रज से अपने मनरूपी दर्पण को साफ़ करके मैं रामचन्द्रजी के उस निर्मल यश का वर्णन करता हूँ, जो चारों फलों (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) का देने वाला है।

जब तें रामु ब्याहि घर आए ❀ नित नव मङ्गल मोद बधाए
भुवन चारिदस भूधर भारी ❀ सुकृत मेघ बरषहिं सुख बारी

जब से रामचन्द्रजी विवाह करके घर आये, तब से नित्य नये मङ्गल हो रहे हैं और आनन्द के बधावे बज रहे हैं। चौदहों लोकरूपी बड़े-भारी पर्वतों पर पुण्यरूपी मेघ सुखरूपी जल बरसा रहे हैं।

रिधि सिधि संपति नदी सुहाई ❀ उमगि अवध अम्बुधि कहँ आई
मनि गन पुर नर नारि सुजाती ❀ सुचि अमोल सुंदर सब भाँती

ऋद्धि-सिद्धि और सम्पत्तिरूपी सुन्दर नदियाँ उमड़-उमड़कर अयोध्यारूपी समुद्र में आ मिलीं। नगर के स्त्री-पुरुष ही अच्छी जाति के मणियों के समूह हैं, जो सब प्रकार से पवित्र, अमोल और सुन्दर हैं।

कहि न जाइ कछु नगर बिभूती ❀ जनु एतनिअ बिरंचि करतूती
सब बिधि सब पुर लोग सुखारी ❀ रामचन्द मुख चंदु निहारी[2]

नगर का वैभव (ऐश्वर्य) कुछ कहा नहीं जाता। ऐसा जान पड़ता है कि मानो ब्रह्मा की कारीगरी बस इतनी ही है। श्रीरामचन्द्रजी के मुखरूपी चन्द्रमा को देखकर सब नगर-निवासी सब तरह से सुखी हैं।

मुदित मातु सब सखीं सहेली ❀ फलित बिलोकि मनोरथ बेली[3]
राम रूपु गुन सीलु सुभाऊ ❀ प्रमुदित होइ देखि सुनि राऊ

सब मातायें और सखी-सहेलियाँ अपनी मनोरथरूपी लता को फली हुई देखकर आनन्दित हैं। श्रीरामचन्द्रजी के रूप, गुण, शील और स्वभाव को देख

१. दर्पण। २. देखकर। ३. लता।

और सुनकर राजा दशरथ बहुत ही आनन्दित होते हैं।

दो०—सब के उर अभिलाषु अस कहहिं मनाइ महेसु।
आपु अछत जुबराज पद रामहिं देउ नरेसु ॥१॥

सभी लोगों के हृदयों में ऐसी अभिलाषा है और वे महादेवजी को मनाकर कहते हैं कि राजा अपने जीतेजी रामचन्द्रजी को युवराज-पद दें।

एक समय सब सहित समाजा ❀ राजसभाँ रघुराजु बिराजा
सकल सुकृत मूरति नरनाहू ❀ राम सुजसु सुनि अतिहि उछाहू

एक समय रघुकुल के राजा दशरथजी अपने सारे समाज सहित राजसभा में विराजमान थे। महाराज सम्पूर्ण पुण्यों की मूर्त्ति हैं, उनको रामचन्द्रजी की सुकीर्त्ति सुनकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है।

नृप सब रहहिं कृपा अभिलाषे ❀ लोकप करहिं प्रीति रुख राखें
त्रिभुवन तीनि काल जग माहीं ❀ भूरि भाग दसरथ सम नाहीं

सब राजा लोग महाराज दशरथ की कृपा की लालसा रखते हैं और लोकपालगण उनके रुख को देखते हुये प्रीति करते हैं। तीनों भुवनों (पृथ्वी, आकाश, पाताल) में और (भूत, भविष्य, वर्तमान) तीनों कालों में दशरथजी के समान भाग्यवान् और कोई नहीं है।

मङ्गल मूल रामु सुत जासू ❀ जो कछु कहिय थोर सबु तासू
राय सुभायँ मुकुरु कर लीन्हा ❀ बदनु[1] बिलोकि मुकुट सम कीन्हा

मंगलों के मूल रामचन्द्रजी जिनके पुत्र हैं, उनके लिये जो कुछ कहा जाय, सभी थोड़ा है। महाराज ने स्वाभाविक ही हाथ में दर्पण ले लिया और उसमें अपना मुंह देखकर मुकुट को सीधा किया।

स्रवन समीप भए सित[2] केसा ❀ मनहुँ जरठपनु अस उपदेसा
नृप जुबराजु राम कहुँ देहू ❀ जीवन जनम लाहु किन लेहू

कानों के पास बाल सफ़ेद हो गये हैं। मानो बुढ़ापा ऐसा उपदेश दे रहा है कि हे राजन्! रामचन्द्रजी को युवराज-पद देकर अपने जीवन और जन्म का लाभ क्यों नहीं लेते?

---

१. मुख। २. सफेद।

दो०—यह बिचारु उर आनि नृप सुदिन सुअवसरु पाइ।
प्रेम पुलकि तन मुदित मन गुरहिं सुनायेउ जाइ॥२॥

हृदय में इस विचार को लाकर शुभ दिन और सुन्दर समय पाकर, प्रेम से पुलकित शरीर हो आनंदित मन से राजा दशरथ ने उसे गुरु वशिष्ठजी को जा सुनाया।

कहइ भुआल सुनिअ मुनिनायक ❀ भए राम सब बिधि सब लायक
सेवक सचिव सकल पुरबासी ❀ जे हमरे अरि मित्र उदासी

राजा ने कहा—हे मुनिराज! सुनिए। अब रामचन्द्र सब तरह से सब लायक हो गये हैं। सेवक, मंत्री, सब नगर-निवासी और जो हमारे शत्रु-मित्र या उदासीन (तटस्थ) हैं,

सबहिं राम प्रिय जेहि बिधि मोही ❀ प्रभु असीस जनु तनु धरि सोही
बिप्र सहित परिवार गोसाईं ❀ करहिं छोहु सब रौरिहिं[1] नाईं

सभी को रामचन्द्र वैसे ही प्यारे हैं, जैसे मुझको हैं। आपका आशीर्वाद ही मानो शरीर धारण करके शोभित हो रहा है। हे स्वामी! सभी ब्राह्मण कुटुम्ब-समेत आपही के समान उन पर प्रेम करते हैं।

जे गुरु चरन रेनु सिर धरहीं ❀ ते जनु सकल बिभव बस करहीं
मोहि सम यहु अनुभयउ न दूजें ❀ सबु पायउँ रज पावनि पूजें

जो लोग गुरु के चरणों की रज को मस्तक पर धारण करते हैं, वे मानो सम्पूर्ण ऐश्वर्य को अपने वश में कर लेते हैं। मेरे समान और किसी ने इसका अनुभव नहीं किया। मैंने आपके पवित्र चरण-रज की पूजा करके सब कुछ पा लिया।

अब अभिलाषु एकु मन मोरें ❀ पूजिहि नाथ अनुग्रह तोरें
मुनि प्रसन्न लखि सहज सनेहू ❀ कहेउ नरेस रजायसु देहू

हे नाथ! अब मेरे मन में एक ही अभिलाषा है। वह भी आप ही के अनुग्रह से पूरी होगी। महाराज का स्वाभाविक प्रेम देखकर मुनि ने प्रसन्न होकर कहा—राजन्! आज्ञा दीजिये, क्या अभिलाषा है?

---

१. आपही की।

दो०—राजन राउर नामु जसु सब अभिमत दातार[1]।
फल अनुगामी महिप मनि मन अभिलाषु तुम्हार ॥३॥

हे राजन्! आपका नाम और यश सारे मनोरथों को पूरा करने वाला है। हे राजाओं में मणि! आपके मन की अभिलाषा फल के पीछे-पीछे चलती है। अर्थात् इच्छा करने से पहले ही फल प्राप्त हो जाता है। [अत्यंतातिशयोक्ति अलंकार]

सब विधि गुरु प्रसन्न जियँ जानी ❀ बोलेउ राउ रहँसि[2] मृदु बानी
नाथ रामु करिअहि जुबराजू ❀ कहिअ कृपा करि करिय समाजू

अपने जी में गुरुजी को सब तरह से प्रसन्न जानकर, आनन्द में भरकर, कोमल वाणी से राजा ने कहा—हे नाथ! रामचन्द्र को युवराज कीजिये। कृपा करके आज्ञा दीजिये, तो तैयारी की जाय।

मोहि अछत यहु होइ उछाहू ❀ लहहिं लोग सब लोचन लाहू
प्रभु प्रसाद सिव सबइ निबाहीं ❀ एह लालसा एक मन माहीं

मेरे जीतेजी यह आनन्द-उत्सव हो जाय और सब लोग अपने नेत्रों का लाभ पायें। आपकी कृपा से शिवजी ने और तो सब निबाह दिया; बस, अब यही एक लालसा मन में और रह गई है।

पुनि न सोच तनु रहउ कि जाऊ ❀ जेहिं न होय पाछें पछिताऊ
सुनि मुनि दसरथ बचन सुहाये ❀ मङ्गल मोद मूल मन भाये

फिर सोच नहीं, शरीर रहे या चला जाय; और जिससे फिर पीछे पछतावा न हो। दशरथजी के आनन्द और मंगल के मूल सुन्दर वचन मुनि को बहुत प्रिय लगे।

सुनु नृप जासु बिमुख पछिताहीं ❀ जासु भजन बिनु जरनि न जाहीं
भयउ तुम्हार तनय सोइ स्वामी ❀ रामु पुनीत प्रेम अनुगामी

(गुरुजी ने कहा—) हे राजन्! सुनिये, जिससे विमुख होकर लोग पछताते हैं और जिसके भजन बिना जी की जलन नहीं जाती, जो पवित्र प्रेम के पीछे चलने वाले हैं, वे ही स्वामी राम आपके पुत्र हुये हैं।

---

१. देने वाला। २. आनन्दित होकर।

दो० — बेगि बिलम्बु न करिअ नृप साजिअ सबुइ समाजु।
सुदिनु सुमङ्गलु तबहिं जब रामु होहिं जुबराजु ॥४॥

हे राजन्! अब देर न कीजिये। जल्दी ही सब तैयारी कीजिए। शुभ दिन और सुन्दर मङ्गलाचार तभी है जब रामचन्द्र युवराज हो जायँ।

मुदित महीपति मन्दिर आये ❀ सेवक सचिव सुमन्त्रु बोलाये
कहि जयजीव सीस तिन्ह नाये ❀ भूप सुमङ्गल बचन सुनाये

राजा आनन्दित होकर महल में आये और उन्होंने सेवकों तथा मन्त्री सुमंत्र को बुलवाया। उन्होंने 'जयजीव' कहकर सिर नवाये। फिर राजा ने उत्तम मंगलमय वचन उन्हें सुनाये।

प्रमुदित मोहि कहेउ गुर आजू ❀ रामहिं राय देहु जुबराजू
जौं पाँचहि[1] मत लागइ नीका ❀ करहु हरषि हिय रामहिं टीका[2]

हे मंत्री! आज गुरुजी ने प्रसन्न-चित्त से मुझे आज्ञा दी है कि हे राजन्! आप रामचन्द्रजी को युवराज-पद दें। जो यह मत पंचों को अच्छा लगे, तो प्रसन्न हृदय से आप लोग रामचन्द्र का राजतिलक कीजिये।

मन्त्री मुदित सुनत प्रिय बानी ❀ अभिमत बिरवँ[3] परेउ जनु पानी
बिनती सचिव करहिं कर जोरी ❀ जिअहु जगतपति बरिस करोरी[4]

इस प्रिय वाणी को सुनकर मन्त्री ऐसे आनन्दित हुए, मानो मनोरथरूपी पौधे पर जल पड़ गया हो। मन्त्री लोग हाथ जोड़कर विनती करते हैं कि हे जगत्पति! आप करोड़ों वर्ष जियें।

जग मङ्गल भल काजु बिचारा ❀ बेगिअ नाथ न लाइअ बारा[5]
नृपहिं मोदु सुनि सचिव सुभाखा ❀ बढ़त बौंड़[6] जनु लही सुसाखा

आपने जगत् का कल्याण करने वाला भला काम सोचा है। हे नाथ! जल्दी कीजिये, देर न लगाइये। मंत्रियों की सुन्दर वाणी सुनकर राजा को ऐसा आनन्द हुआ मानो बढ़ती हुई लता सुन्दर टहनियों से सज्जित हो गई।

दो० — कहेउ भूप मुनिराज कर जोइ जोइ आयसु होइ।
राम राज अभिषेक हित बेगि करहु सोइ सोइ ॥५॥

१. पंचों को। २. राजतिलक। ३. पौधा। ४. करोड़। ५. देरी। ६. लता, बेल।

राजा ने कहा—रामचन्द्र के राज्याभिषेक के लिये मुनिराज वशिष्ठजी की जो-जो आज्ञा हो, आप लोग वही सब तुरंत करें।

हरषि मुनीस कहेउ मृदु बानी ❀ आनहु सकल सुतीरथ पानी
औषध मूल फूल फल पाना ❀ कहे नाम गनि मङ्गल नाना

मुनि ने प्रसन्न होकर कोमल वाणी से कहा कि सब श्रेष्ठ तीर्थों का जल ले आओ। फिर उन्होंने नाम गिनाकर मंगलमय अनेक औषधियाँ, मूल, फूल, फल और पत्र आदि वस्तुओं के नाम गिनकर बताये।

चामर चरम बसन बहु भाँती ❀ रोम पाट[1] पट अगनित जाती
मनिगन मंगल वस्तु अनेका ❀ जो जग जोगु भूप अभिषेका

चँवर, मृगचर्म, बहुत तरह के वस्त्र, अगणित किस्मों के ऊनी और रेशमी कपड़े, मणियाँ तथा और भी बहुत-सी मंगल की चीज़ें, संसार में जो-जो चीज़ें राज्याभिषेक के योग्य होती हैं, (उन सबको इकट्ठा करने की उन्होंने आज्ञा दी।)

बेद बिदित कहि सकल बिधाना ❀ कहेउ रचहु पुर बिबिध बिताना
सफल रसाल पूगफल केरा ❀ रोपहु बीथिन्ह पुर चहुँ फेरा

मुनि ने वेदों में कहा हुआ सब विधान बताकर कहा—नगर में बहुत-से मण्डप बनवाओ। फलों-समेत आम, सुपारी और केले के पेड़ नगर की गलियों में चारों ओर रोप दो (लगाओ)।

रचहु मंजु मनि चौकइ चारू ❀ कहहु बनावन बेगि बजारू
पूजहु गनपति गुर कुल देवा ❀ सब बिधि करहु भूमिसुर[2] सेवा

सुन्दर मणियों के मनोहर चौक पुरवाओ और बाज़ार को जल्दी सजाने के लिये कह दो। श्रीगणेशजी, गुरु और कुलदेवता की पूजा करो और ब्राह्मणों की सब प्रकार से सेवा करो।



ध्वज पताक तोरन कलस सजहु तुरग रथ नाग।
सिर धरि मुनिबर बचन सबु निज निज काजहिं लाग।

ध्वजा, पताका, बन्दनवार, कलश, घोड़े, रथ और हाथी सबको सजाओ। मुनिवर की आज्ञा को शिरोधार्य करके सब लोग अपने-अपने काम में लग गये।

१. रेशम। २. ब्राह्मण।

जो मुनीस जेहि आयसु दीन्हा ❀ सो तेहिं काजु प्रथम जनु कीन्हा
बिप्र साधु सुर पूजत राजा ❀ करत राम हित मङ्गल काजा

मुनि ने जिसको जिस काम के करने की आज्ञा दी, उसने वह काम (इतनी जल्दी किया कि) मानो वह पहले ही कर रक्खा था। राजा ब्राह्मण, साधु और देवताओं को पूज रहे हैं और रामचन्द्र के हित के लिये मंगल-कार्य कर रहे हैं।

सुनत राम अभिषेक सुहावा ❀ बाज गहागह अवध बधावा
राम सीय तन सगुन जनाए ❀ फरकहिं मङ्गल अङ्ग सुहाए

रामचन्द्रजी के राज्याभिषेक की सुहावनी खबर सुनते ही सारी अयोध्या भर में धूम-धाम से बधावे बजने लगे। रामचन्द्र और सीता के शरीर में भी शुभ शकुन प्रकट हुये। उनके सुन्दर मंगल अंग फड़कने लगे।

पुलकि सप्रेम परसपर कहहीं ❀ भरत आगमनु सूचक अहहीं
भए बहुत दिन अति अवसेरी[1] ❀ सगुन प्रतीति भेंट प्रिय केरी

पुलकायमान होकर वे दोनों प्रेम सहित आपस में कहने लगे—ये सब शकुन भरत के आने की सूचना देने वाले हैं। उनको (मामा के घर) गये बहुत दिन हो गये; मिलने की बड़ी उत्कंठा है। इसलिये इन शकुनों से प्रिय के मिलने का विश्वास हो रहा है।

भरत सरिस प्रिय को जग माहीं ❀ इहइ सगुन फलु दूसर नाहीं
रामहिं बन्धु सोच दिन राती ❀ अंडन्हि कमठ हृदउ जेहि भाँती

जगत् में भरत के समान हमें कौन प्यारा है? शकुनों का यही फल है, दूसरा नहीं। रामचन्द्रजी को अपने भाई भरत का रात-दिन ऐसा सोच रहता है, जैसा कछुए के हृदय को अंडों की चिंता रहती है। (कहा जाता है कि कछुआ अपने अंडों को दूर रखकर हृदय की तरंगों से सेता है।)

दो०— एहि अवसर मंगलु परम सुनि रहँसेउ[2] रनिवासु।
सोभत लखि बिधु बढ़त जनु बारिधि बीचि[3] बिलासु ७

इस अवसर पर इस परम मंगल समाचार को सुनकर सारा रनिवास इस तरह हर्षित हो उठा, जैसे चन्द्रमा को देखकर समुद्र में लहरों का विलास

१. चिंता, उत्कंठा, प्रतीक्षा। २. हर्षित हुआ। ३. लहर।

(आनन्द) सुशोभित होता है। [उक्तविषया वस्तूत्प्रेक्षा अलंकार]

प्रथम जाइ जिन्ह वचन सुनाए ❀ भूषन वसन भूरि तिन्ह पाए
प्रेम पुलकि तन मन अनुरागीं ❀ मङ्गल कलस सजन सब लागीं

जिन्होंने रनिवास में जाकर यह समाचार सबसे पहले सुनाये, उन्होंने बहुत-से भूषण और वस्त्र पाये। रानियों का शरीर प्रेम से पुलकित हो उठा, उनका मन प्रेम-मग्न हो गया, वे सब मंगल-कलश सजाने लगीं।

चौकइँ चारु सुमित्रा पूरीं ❀ मनिमय विविध भाँति अति रूरी
आनँद मगन राम महतारी ❀ दिये दान बहु विप्र हँकारी

सुमित्रा ने अनेकों तरह की मनोहर मणियों की अत्यंत सुन्दर चौकें पूरीं। रामचन्द्र की माता कौशल्या आनन्द में मग्न हैं, उन्होंने ब्राह्मणों को बुलाकर बहुत दान दिये।

पूजीं ग्राम देवि सुर नागा ❀ कहेउ बहोरि देन बलि भागा
जेहि बिधि होइ राम कल्यानू ❀ देहु दया करि सो बरदानू
गावहिं मंगल कोकिल बयनी ❀ विधुवदनी मृग सावक नयनी

फिर गाँव के देवी-देवताओं और नागों की पूजा की और (फिर कार्य सिद्ध हो जाने पर) बलि भेंट चढ़ाने की मनौती मानी। (उनसे प्रार्थना की कि) जिस प्रकार से रामचन्द्रजी का कल्याण हो, वही वर दया करके दीजिये। कोकिल की-सी रसीली वाणी वाली, चन्द्रमा के समान मुँह वाली और मृग के बच्चे के-से नेत्र वाली स्त्रियाँ मंगल गीत गाने लगीं।

दो॰— राम राज अभिषेक सुनि हियँ हरषे नर नारि।
लगे सुमङ्गल सजन सब बिधि अनुकूल बिचारि।८।

रामचन्द्र का राज्याभिषेक सुनकर सभी स्त्री-पुरुष हृदय में बहुत प्रसन्न हुए और विधि को अनुकूल समझकर सुन्दर मंगल के साज सजाने लगे।

तब नरनाहँ बसिष्ठु बोलाए ❀ राम धाम सिख देन पठाये
गुरु आगमनु सुनत रघुनाथा ❀ द्वार आइ पद नायउ माथा

तब राजा ने वशिष्ठजी को बुलाया और शिक्षा (समयोचित उपदेश) देने के लिए उन्हें रामचन्द्रजी के महल में भेजा। गुरु का आगमन सुनते ही रामचन्द्रजी ने दरवाजे पर आकर उनके चरणों में मस्तक नवाया।

सादर अरघ देइ घर आने ❀ सोरह भाँति[1] पूजि सनमाने
गहे चरन सिय सहित बहोरी ❀ बोले रामु कमल कर जोरी

आदर-पूर्वक अर्घ्य देकर उन्हें घर में लिवा लाये और सोलह भाँति की (षोडशोपचार) पूजा करके उनका सम्मान किया। फिर सीता-समेत रामचन्द्रजी ने उनके चरण छुए और कमल के समान दोनों हाथ जोड़कर रामजी बोले—

सेवक सदन स्वामि आगमनू ❀ मङ्गल मूल अमंगल दमनू
तदपि उचित जनु बोलि सप्रीती ❀ पठइ अकाज नाथ असि नीती

सेवक के घर स्वामी का पधारना मंगलों का मूल और अमंगलों का नाश करने वाला होता है। तो भी हे नाथ! उचित तो यह है कि यदि कुछ कार्य हो तो प्रेम-पूर्वक दास ही को कार्य के लिये बुला भेजते। ऐसी ही नीति है।

प्रभुता तजि प्रभु कीन्ह सनेहू ❀ भयउ पुनीत आजु यहु गेहू
आयसु होइ सो करौं गोसाईं ❀ सेवकु लहै स्वामि सेवकाईं

परंतु प्रभु आपने प्रभुता (मालिकी का अभिमान) छोड़कर स्वयं पधारकर मुझ पर स्नेह किया, इससे आज यह घर पवित्र हो गया। हे गुसाईं! जो आज्ञा हो, मैं करूँ, सेवक को स्वामी की सेवा मिले।

दो०— सुनि सनेह साने बचन मुनि रघुबरहि प्रसंस।
राम कस न तुम्ह कहहु अस हंस[2] बंस अवतंस[3] ॥९॥

ऐसे प्रेम में सने हुए वचनों को सुनकर वशिष्ठजी ने रामचन्द्रजी की प्रशंसा की और कहा—हे राम! तुम सूर्य के वंश में भूषण रूप हो। भला, तुम ऐसी बात क्यों न कहो। [सम अलंकार]

बरनि राम गुन सीलु सुभाऊ ❀ बोले प्रेम पुलकि मुनिराऊ
भूप सजेउ अभिषेक समाजू ❀ चाहत देन तुम्हहिं जुबराजू

मुनिराज वशिष्ठजी रामचन्द्रजी के गुण, शील और स्वभाव का बखान कर, प्रेम से पुलकित होकर बोले—हे रामचन्द्र! राजा ने राज्याभिषेक की तैयारी की है। वे तुमको युवराज-पद देना चाहते हैं।

---

१. पूजन के १६ अंग—आवाहन, आसन, अर्घ्यपाद्य, आचमन, मधुपर्क, स्नान, वस्त्राभरण, यज्ञोपवीत, गंध, चंदन, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, तांबूल, परिक्रमा और वन्दना।

२. सूर्य। ३. शिरोमणि, भूषण।

राम करहु सब संजम आजू ❀ जौं बिधि कुसल निबाहइ काजू
गुर सिख देइ राय पहिं गयउ ❀ राम हृदयँ अस बिसमउ भयउ

(इसलिए) हे राम! आज तुम सब संयम (उपवास, हवन, ब्रह्मचर्यादि का पालन) करो, जिससे विधाता कुशल-पूर्वक इस काम को निबाह दें। गुरुजी शिक्षा देकर राजा (दशरथ) के पास चले गये, रामचन्द्रजी के हृदय में इस बात का विचार पैदा हुआ कि—

जनमें एक सङ्ग सब भाई ❀ भोजन सयन केलि लरिकाई
करनबेध उपवीत बिआहा ❀ संग संग सब भए उछाहा

हम सब भाई एक ही साथ जन्मे, सबके भोजन, शयन, खेल-कूद, लड़कपन, कर्णवेध (कान छिदना), यज्ञोपवीत और विवाह आदि उत्सव सब साथ ही साथ हुए।

बिमल बंस यहु अनुचित एकू ❀ बन्धु बिहाइ बड़ेहिं अभिषेकू
प्रभु सप्रेम पछितानि सुहाई ❀ हरउ भगत मन कै कुटिलाई

पर इस निर्मल वंश में एक यही बात अनुचित है कि और सब भाइयों को छोड़कर एक बड़े ही का राज्याभिषेक होता है। (तुलसीदासजी कहते हैं कि) प्रभु (रामचन्द्रजी) का यह सुन्दर प्रेमपूर्ण पछतावा भक्तों के मन की कुटिलता को हरण करे।

दो०—तेहि अवसर आए लषन मगन प्रेम आनंद।
सनमाने प्रिय बचन कहि रघुकुल कैरव चन्द ॥१०॥

उसी समय प्रेम और आनन्द में मग्न लक्ष्मणजी आये। रघुकुल रूपी कुमुद के खिलाने वाले चन्द्रमा रामचन्द्रजी ने प्रिय वचन कहकर उनका सम्मान किया।

बाजहिं बाजन बिबिध बिधाना ❀ पुर प्रमोदु नहिं जाइ बखाना
भरत आगमनु सकल मनावहिं ❀ आवहिं बेगि नयन फलु पावहिं

नाना प्रकार के बाजे बज रहे हैं। अयोध्यापुरी के अतिशय आनंद का वर्णन नहीं हो सकता। सब लोग भरतजी का आना मना रहे हैं, और कह रहे हैं कि वे भी जल्दी आ जायँ और नेत्रों का फल प्राप्त कर लें।

हाट बाट घर गली अथाई ❀ कहहिं परसपर लोग लुगाई
कालि लगन भलि केतिक बारा ❀ पूजिहि बिधि अभिलाषु हमारा

बाज़ार, रास्ते, घर और गली तथा अथाइयों (बैठकों) में जहाँ-तहाँ स्त्री-पुरुष इकट्ठे होकर आपस में कह रहे हैं कि कल ही तो वह शुभ लग्न है, अब देरी ही क्या है ? विधाता हमारी इच्छा पूरी करेंगे।

कनक सिंघासन सीय समेता ❀ बैठहिं रामु होइ चित चेता[1]
सकल कहहिं कब होइहि काली ❀ बिघन मनावहिं देव कुचाली

जब सीता-सहित रामचन्द्रजी सुवर्ण के सिंहासन पर बिराजेंगे और हमारी मनोकामना पूरी होगी। सब यही कह रहे हैं कि कल कब होगी; पर कुचाली (षड्यन्त्री) देवता विघ्न मना रहे हैं।

तिन्हहिं सुहाइ न अवध बधावा ❀ चोरहिं चंदिनि राति न भावा
सारद बोलि बिनय सुर करहीं ❀ बारहिं बार पाँय लै परहीं

उन (कुचक्री) देवताओं को अवध के बधावे नहीं सुहा रहे हैं, जैसे चोर को चाँदनी रात अच्छी नहीं लगती। सरस्वती को बुलाकर देवता विनय कर रहे हैं और बार-बार पैरों पड़ते हैं। [पहली पंक्ति में प्रतिवस्तूपमा तथा दृष्टांत अलंकार]

दो० बिपति हमारि बिलोकि बड़ि मातु करिअ सोइ आजु।
रामु जाहिं बन राजु तजि होइ सकल सुरकाजु ॥११॥

हे माता ! हमारी बड़ी विपत्ति को देखकर आज वही कीजिए, जिसमें रामचन्द्र राज्य को छोड़कर बन को चले जायँ और देवताओं के सब कार्य सिद्ध हों।

सुनि सुर बिनय ठाढ़ि पछिताती ❀ भइउँ सरोज बिपिन हिम राती
देखि देव पुनि कहहिं निहोरी ❀ मातु तोहि नहिं थोरिउ खोरी

देवताओं की विनती सुनकर सरस्वती खड़ी-खड़ी पछता रही हैं कि हाय ! मैं कमल-वन के लिये पाले की रात हुई। देवता उनको इस प्रकार पछताते देखकर, खुशामद करके फिर बोले—हे माता ! इसमें आपको ज़रा भी दोष न लगेगा। [पहली पंक्ति में ललित अलंकार]

---

१. सोचा हुआ।

विसमय हरष रहित रघुराऊ ❀ तुम्ह जानहु सब राम प्रभाऊ
जीव करम बस सुख दुख भागी ❀ जाइअ अवध देवहित लागी

आप तो रामचन्द्रजी के प्रभाव को जानती ही हैं, वे विषाद और हर्ष से रहित हैं। जीव अपने कर्म-वश ही सुख-दुख का भागी होता है। अतएव आप देवताओं के हित के लिए अयोध्या जाइये।

बार बार गहि चरन सँकोची ❀ चली बिचारि बिबुध मति पोची[1]
ऊँच निवासु नीचि करतूती ❀ देखि न सकहिं पराइ बिभूती

देवताओं ने बार-बार पाँव पकड़कर सरस्वती को संकोच में डाल दिया। तब वह यह विचारकर चली कि देवताओं की बुद्धि ओछी है। इनका निवास तो ऊँचा है; पर इनकी करनी नीच है। ये दूसरों का ऐश्वर्य नहीं देख सकते। [विषम अलंकार]

आगिल काजु बिचारि बहोरी ❀ करिहहिं चाह कुसल कबि मोरी
हरषि हृदय दसरथपुर आई ❀ जनु ग्रह दसा दुसह दुखदाई

पर भविष्य के काम को विचारकर चतुर कवि मेरी चाह करेंगे। सरस्वती (ऐसा सोचकर) दशरथजी की पुरी (अयोध्या) में आई। मानो वह असहनीय दुख देने वाली कोई ग्रह-दशा हो।

दो० नामु मन्थरा मन्दमति चेरी कैकेइ केरि।
अजस पेटारी ताहि करि गई गिरा[2] मति फेरि।१२।

कैकेयी की एक मंद-बुद्धि दासी थी, जिसका नाम मन्थरा था। उसे अपयश की पिटारी बनाकर सरस्वती उसकी बुद्धि को फेर कर चली गई।

दीख मंथरा नगरु बनावा ❀ मंजुल मङ्गल बाज बधावा
पूछेसि लोगन्ह काह उछाहू ❀ राम तिलकु सुनि भा उर दाहू

मन्थरा ने देखा कि नगर सजाया हुआ है, सुन्दर मंगलाचार हो रहे हैं और बधावे बज रहे हैं। उसने लोगों से पूछा कि कैसा उत्सव है? रामचन्द्रजी के राज-तिलक की बात सुनते ही उसका हृदय जल उठा।

करइ बिचारु कुबुद्धि कुजाती ❀ होइ अकाजु कवनि बिधि राती
देखि लागि मधु कुटिल किराती[3] ❀ जिमि गँव तकइ लेउँ केहि भाँती

---

१. ओछी। २. सरस्वती। ३. भीलनी।

वह दुर्बुद्धि नीच जाति वाली मन्थरा विचार करने लगी कि रात ही रात में यह काम कैसे बिगड़े ? जैसे कोई कुटिल भीलनी शहद का छत्ता लगा देखकर घात लगाती है कि इसको किस तरह से ले लूँ ? [उदाहरण अलंकार]

भरत मातु पहिं गइ बिलखानी ❀ का अनमनि[1] हसि[2] कह हँसि रानी
ऊतरु देइ न लेइ उसासू ❀ नारि चरित करि ढारइ आँसू

वह बिलखती हुई भरतजी की माता कैकेयी के पास गई। उसको देखकर कैकेयी ने हँसकर कहा—तू उदास क्यों है ? मन्थरा कुछ जवाब नहीं देती, केवल लम्बी साँस ले रही है और स्त्री-चरित करके आँखों से आँसू ढरका रही है।

हँसि कह रानि गालु बड़ तोरें ❀ दीन्ह लषन सिख अस मन मोरें
तबहुँ न बोल चेरि बड़ि पापिनि ❀ छाँड़इ स्वास कारि जनु साँपिनि

रानी कैकेयी हँसकर कहने लगी कि तेरे बड़े गाल हैं (तू बड़ी मुँहज़ोर है)। मेरा मन कहता है कि लक्ष्मण ने तुझे कुछ सीख दी है। इतने पर भी महापापिनी मन्थरा कुछ नहीं बोलती। वह ऐसी लम्बी साँसें छोड़ रही है मानो काली नागिन हो।

दो०—सभय रानि कह कहसि किन कुसल रामु महिपालु।
लषनु भरतु रिपुदमनु सुनि भा कुबरी उर सालु॥१३॥

रानी कैकेयी ने डरकर कहा—अरी ! कहती क्यों नहीं ? रामचन्द्र, राजा, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न कुशल से तो हैं ? यह सुनकर कुबरी मन्थरा के हृदय में बड़ी ही पीड़ा हुई।

कत सिख देइ हमहिं कोउ माई ❀ गालु करब केहि कर बलु पाई
रामहिं छाँड़ि कुसल केहि आजू ❀ जिनहि जनेसु देइ जुबराजू

वह बोली—हे माता ! हमें कोई क्या सीख देगा ? और मैं किसका बल पाकर मुँहजोरी करूँगी ? रामचन्द्र को छोड़कर और किसकी कुशल है, जिन्हें राजा युवराज-पद दे रहे हैं।

भयउ कौसिलहि बिधि अति दाहिन ❀ देखत गरब रहत उर नाहिन
देखहु कस न जाइ सब सोभा ❀ जो अवलोकि मोर मनु छोभा

आज विधाता कौशल्या के बहुत ही अनुकूल हुये हैं। उनको देखकर आज

---

१. उदास, बेचैन। २. है।

किसी के हृदय में गर्व रह नहीं जाता। तुम स्वयं जाकर सब शोभा क्यों नहीं देख लेतीं; जिसे देखकर मेरा मन खिन्न हुआ है।

पूतु बिदेस न सोचु तुम्हारें ❀ जानति हहु[1] बस नाहु हमारें
नींद बहुत प्रिय सेज तुराई ❀ लखहु न भूप कपट चतुराई

तुम्हारा पुत्र परदेश में है, तुम्हें कुछ सोच नहीं। तुम जानती हो कि स्वामी हमारे वश में है। तुम्हें तो तोशक-तकिये के सहारे पड़े-पड़े नींद लेना ही प्रिय लगता है। राजा की कपट-भरी चतुराई कुछ नहीं देखतीं ?

सुनि प्रिय बचन मलिन मनु जानी ❀ झुकी रानि अब रहु अरगानी[2]
पुनि अस कबहुँ कहसि घरफोरी[3] ❀ तब धरि जीभ कढ़ावउँ तोरी

मन्थरा के प्रिय वचन सुनकर और उसे मन की मैली जानकर रानी कैकेयी झुककर बोलीं—बस, अब चुप रह, घर फोड़ी कहीं की ! फिर ऐसा कभी कहा, तो तेरी जीभ पकड़कर खिंचवा लूँगी।

दो०—काने खोरे[3] कूबरे कुटिल कुचाली जानि।
तिय बिसेषि पुनि चेरि कहि भरत मातु मुसुकानि॥१४

काने, लँगड़े, कुबड़े ये बड़े कुटिल और कुचाली होते ही हैं, और उसमें भी स्त्री और खासकर दासी। ऐसा कहकर भरतजी की माता कैकेयी मुसकुराईं।

प्रियबादिनि सिष दीन्हिउँ तोही ❀ सपनेहु तो पर कोपु न मोही
सुदिनु सुमङ्गल दायकु सोई ❀ तोर कहा फुर जेहि दिन होई

हे प्रिय बोलने वाली मन्थरा ! मैंने तुझको यह सीख दी। मुझे तेरे ऊपर स्वप्न में भी क्रोध नहीं है। सुन्दर मंगलदायक शुभ दिन वही होगा, जिस दिन तेरा कहा (रामचन्द्र का राजतिलक) सच्चा हो जायगा।

जेठ स्वामि सेवक लघु भाई ❀ एह दिनकर कुल रीति सुहाई
राम तिलकु जौं साँचेहु काली ❀ देउँ माँगु मन भावत आली

बड़ा भाई स्वामी और छोटा भाई सेवक होता है। सूर्यवंश की यह सुहावनी रीति है। जो सचमुच ही कल रामचन्द्र का तिलक है, तो हे सखी ! अपनी मनचाही चीज़ मुझसे माँग ले, मैं दूँगी।

---

१. हो। २. चुप। घर में फूट डालने वाली। ३. लंगड़ा, पंगुल।

कौसल्या सम सब महतारी ❀ रामहिं सहज सुभायँ पियारी
मो पर करहिं सनेहु बिसेषी ❀ मैं करि प्रीति परीछा देखी

राम को सहज स्वभाव ही से सब मातायें कौसल्या के समान ही प्यारी हैं। मुझ पर तो वे विशेष रूप से प्रेम करते हैं। मैंने उनकी प्रीति की परीक्षा करके देख लिया है।

जौं बिधि जनमु देइ करि छोहू[1] ❀ होहुँ राम सिय पूत पतोहू
प्रान तें अधिक रामु प्रिय मोरें ❀ तिन्ह के तिलक छोभु कस तोरें

जो विधाता कृपा कर मुझे फिर जन्म दें, तो राम मेरे पुत्र और सीता बहू हों। राम मुझे प्राणों से भी अधिक प्रिय हैं। उनके तिलक से तुझे दुःख क्यों हुआ ?

दो०—भरत सपथ तोहि सत्य कहु परिहरि कपट दुराउ।
हरष समय बिसमउ करसि कारन मोहि सुनाउ।१५।

तुझको भरत की सौगन्ध है, तू छल-कपट छोड़कर सच-सच कह। तू हर्ष के समय में बिषाद कर रही है, इसका कारण मुझे सुना।

एकहिं बार आस सब पूजी ❀ अब कछु कहब जीभ करि दूजी
फोरै जोगु कपारु अभागा ❀ भलेउ कहत दुख रउरेहि[2] लागा

(मन्थरा ने कहा—) एक ही बार कहने से सारी आशायें पूरी हो गईं। अब क्या दूसरी जीभ लगाकर कुछ कहूँगी। मेरा अभागा कपाल तो फोड़ने ही के योग्य है। हित की बात कहने पर भी आपको दुःख होता है।

कहहिं झूठि फुरि बात बनाई ❀ ते प्रिय तुम्हहिं करुइ[3] मैं माई
हमहुँ कहबि अब ठकुर सोहाती[4] ❀ नाहिं त मौन रहब दिनु राती

जो झूठी सच्ची बातें बनाकर कहते हैं, हे माता ! वे ही तुम्हें प्रिय हैं और मैं तो कड़वी लगती हूँ। अब मैं भी ठकुर-सोहाती (मुँह-देखी) कहा करूँगी, नहीं तो दिन-रात चुप रहा करूँगी।

करि कुरूप बिधि परबस कीन्हा ❀ बवा सो लुनिअ लहिअ जो दीन्हा
कोउ नृप होउ हमहि का हानी ❀ चेरि छाँड़ि अब होब कि रानी

१. कृपा। २. आपको। ३. कड़वी। ४. मुँहदेखी।

विधाता ने कुरूप बनाकर मुझे परवश कर दिया। जो बोया है, सो काटती हूँ, जो दिया है, सो पाती हूँ। कोई भी राजा हो, हमारी क्या हानि है? दासी छोड़कर क्या अब मैं रानी होऊँगी?

जारै[1] जोगु सुभाउ हमारा ❀ अनभल देखि न जाइ तुम्हारा
ता तें कछुक बात अनुसारी ❀ छमिअ देवि बड़ि चूक हमारी

हमारा स्वभाव तो जलाने ही लायक है। तुम्हारा अहित नहीं देखा जाता, इसलिए कुछ बात चलाई थी। किन्तु हे देवि! क्षमा करो, हमारी बड़ी भूल हुई।


गूढ़ कपट प्रिय बचन सुनि तीय अधरबुधि रानि।
सुर माया बस बैरिनिहि सुहृद जानि पतिआनि।१६।

ओठों पर बुद्धि रखने वाली (क्षणिक बुद्धि) रानी कैकेयी ने मंथरा के कपट-भरे हुए रहस्य-युक्त प्रिय वचनों को सुनकर देवताओं की माया के वश में हो उस बैरिन को अपनी सुहृद जानकर उसका विश्वास कर लिया।

सादर पुनि पुनि पूँछति ओही ❀ सबरी गान मृगी जनु मोही
तसि मति फिरी अहइ जसि भावी ❀ रहसी चेरि घात जनु फावी

कैकेयी आदर के साथ बारम्बार उसे पूछ रही हैं; मानो भीलनी के गान से हिरनी मोहित हो गई हो। जैसा होनहार है, वैसी ही बुद्धि भी पलट गई है। दासी अपना दाँव लगा जानकर हर्षित हो गई।

तुम्ह पूँछहु मैं कहत डेराऊँ ❀ धरेउ मोर घरफोरी नाऊँ
सजि प्रतीति बहुबिधि गढ़ि छोली ❀ अवध साढ़साती[2] तब बोली

तुम पूछती हो, किन्तु मैं कहते डरती हूँ; क्योंकि तुमने मेरा नाम घरफोड़ी रख लिया है। ख़ूब विश्वास जमाकर, बहुत तरह से गढ़-छोलकर तब वह अयोध्या की साढ़साती (शनि की साढ़े सात वर्ष की दशा) बोली—

प्रिय सिय रामु कहा तुम्ह रानी ❀ रामहि तुम्ह प्रिय सो फुरि[3] बानी
रहा प्रथम अब ते दिन बीते ❀ समउ फिरें रिपु होहिं पिरीते[4]

हे रानी! तुमने जो कहा कि मुझे सीताराम प्रिय हैं और राम को तुम प्रिय हो, यह बात सच्ची है। परन्तु यह बात पहले थी, अब वे दिन बीत गये।

---

१. जलाने। २. शनि की साढ़े सात वर्ष की दशा। ३. सत्य। ४. मित्र।

समय पलटता है, तो मित्र भी शत्रु हो जाते हैं।

भानु कमल कुल पोषनि हारा ❀ बिनु जर[1] जारि करइ सोइ छारा
जरि तुम्हारि चह सवति उखारी ❀ रूँधहु करि उपाउ बर बारी[2]

देखिये, सूर्य कमल के कुल का पालन करने वाला है। पर बिना पानी के वही सूर्य उन्हीं कमलों को जलाकर भस्म कर देता है। (वैसे ही) तुम्हारी जड़ तुम्हारी सौत (कौशल्या) उखाड़ना चाहती है। अतः उपायरूपी मज़बूत वाड़ लगाकर उसे रूँध दो।

दो०—तुम्हहिं न सोचु सोहाग बल निज बस जानहु राउ।
मन मलीन मुहँ मीठ नृपु राउर सरल सुभाउ॥१७॥

तुम्हें अपने सुहाग के बल पर कुछ सोच नहीं है। राजा को अपने वश में जानती हो। पर राजा मन के मैले और मुँह के मीठे हैं और तुम्हारा सीधा स्वभाव है।

चतुर गँभीर राम महतारी ❀ बीचु[3] पाइ निज बात सँवारी
पठये भरतु भूप ननिअउरें ❀ राम मातु मत जानव रउरें

राम की माता कौशल्या बड़ी चतुर और गम्भीर हैं। उन्होंने मौका पाकर अपनी बात बना ली। राजा ने जो भरत को ननिहाल भेज दिया है, उसमें राम की माता ही की सलाह समझना।

सेवहिं सकल सवति मोहि नीकें ❀ गरबित भरत मातु बल पी कें
सालु[4] तुम्हार कौसिलहि माई ❀ कपट चतुर नहिं होइ जनाई

कौशल्या समझती हैं कि सब सौतें तो मेरी अच्छी तरह टहल करती हैं, एक भरत की माँ पति के बल पर घमंड में रहती है। हे माई! कौशल्या को तुम्हीं खटक रही हो। वे चतुर हैं, उनका कपट जानने में नहीं आता।

राजहिं तुम्ह पर प्रेम बिसेषी ❀ सवति सुभाउ सकइ नहिं देखी
रचि प्रपंचु भूपहि अपनाई ❀ राम तिलक हित[5] लगन धराई

राजा का तुम पर विशेष प्रेम है। सौत का स्वभाव है, वे इसे देख नहीं सकतीं। इसलिये कौशल्या ने प्रपंच (जाल) रचकर, राजा को अपने वश में करके, राम के राजतिलक का लग्न निश्चय करा लिया।

---

१. जड़। २. वाड़, घेरा। ३. मौका। ४. काँटा, खटकने वाली वस्तु। ५. लिये, वास्ते।

यहु कुल उचित राम कहुँ टीका ❀ सबहि सुहाइ मोहिं सुठि नीका
आगिलि बात समुझि डर मोही ❀ देउ दैउ फिरि सो फलु ओही[1]

इस कुल की रीति से राम का तिलक हो, यह तो उचित ही है। यह बात सभी को सुहाती है, और मुझे तो और भी अच्छी लगती है। पर मुझे तो आगे की बात विचारकर डर लगता है। दैव उलटकर इसका फल उसी कौशल्या को दें।

दो०- रचि पचि कोटिक कुटिलपन कीन्हेसि कपट प्रबोधु।
कहिसि कथा सत सवति कै जेहि बिधि बाढ़ बिरोधु॥१८

इस तरह करोड़ों कुटिलपन की बातें बनाकर मन्थरा ने कैकेयी को बहुत-सी छल-कपट की पट्टी पढ़ाई। और सैकड़ों सौतों की कहानियाँ सुनाईं, जिनसे विरोध बढ़े।

भावी बस प्रतीति उर आई ❀ पूँछ रानि पुनि सपथ देवाई
का पूछहु तुम्ह अबहुँ न जाना ❀ निज हित अनहित पसु पहिचाना

होनहार-वश कैकेयी के मन में विश्वास हो आया। रानी फिर सौगन्ध दिलाकर पूछने लगी। (मन्थरा ने कहा—) रानी! क्या पूछती हो? तुमने अब भी नहीं समझा? अपने हित और अनहित (भले-बुरे) को तो पशु भी पहचान लेते हैं।

भयेउ पाखु दिनु सजत समाजू ❀ तुम्ह पाई सुधि मोहि सन आजू
खाइअ पहिरिअ राज तुम्हारें ❀ सत्य कहे नहिं दोषु हमारें

अरे! तैयारियाँ होते-होते पन्द्रह दिन हो गये और तुमने मुझसे आज खबर पाई है? मैं तुम्हारे राज में खाती हूँ, पहनती हूँ, इसलिए सच कहने में मुझे कोई दोष नहीं है।

जौं असत्य कछु कहब बनाई ❀ तौ बिधि देइहि हमहिं सजाई
रामहि तिलक कालि जौं भयऊ ❀ तुम्ह कहुँ बिपति बीजु बिधि बयऊ

यदि मैं कुछ बात बनाकर झूठ बोलती होऊँगी, तो विधाता मुझे दंड देंगे। यदि कल राम को राजतिलक हो गया तो (समझ रखना कि) तुम्हारे लिए ब्रह्मा ने विपत्ति का बीज बो दिया।

---

१. उसी को।



रेख खँचाइ कहहुँ बल भाखी ❀ भामिनि भइहु दूध कइ माखी
जौं सुत सहित करहु सेवकाई ❀ तौ घर रहहु न आन उपाई

मैं लकीर खींचकर बलपूर्वक कहती हूँ कि हे भामिनी ! तुम तो अब दूध की मक्खी हो गई। यदि पुत्र-सहित (सौत की) सेवकाई करो, तो घर में रहो; नहीं तो दूसरा उपाय नहीं।

दो० कद्रू बिनतहि दीन्ह दुखु तुम्हहिं कौसिला देब।
भरतु बन्दिगृह सेइहहिं लषनु राम के नेब[1] ॥१९॥

कद्रू ने बिनता को दुःख दिया, तुम्हें कौशल्या देगी। भरत तो जेलखाने में पड़ेंगे और लक्ष्मण राम के नायब (सहकारी) होंगे।

कैकय सुता सुनत कटु बानी ❀ कहि न सकइ कछु सहमि सुखानी
तन पसेउ[2] कदली जिमि काँपी ❀ कुबरीं दसन जीभ तब चाँपी[3]

कैकेयी मन्थरा की कड़वी वाणी सुन भय से सूख गई। कुछ कह नहीं सकती। उसके शरीर में पसीना हो आया और वह केले की तरह काँपने लगी। तब कुबरी मन्थरा ने अपनी जीभ दाँतों तले दबा ली।

कहि कहि कोटिक कपट कहानी ❀ धीरजु धरहु प्रबोधिसि रानी
कीन्हिसि कठिन पढ़ाइ कुपाठू ❀ जिमि न नवइ फिरि उकठि कुकाठू

फिर कपट की करोड़ों कहानियाँ कह-कहकर उसने रानी को ख़ूब समझाया कि धीरज धरो। उसने कैकेयी को कपट का पाठ पढ़ाकर ऐसा पक्का कर दिया, जिस तरह कुकाठ (बबूल, बहेड़ा आदि) उकठ (सूखकर ऐंठ) जाने पर फिर नहीं नवते।

फिरा करमु प्रिय लागि कुचाली ❀ बकिहि सराहइ मानि मराली
सुनु मंथरा बात फुरि तोरी ❀ दहिनि आँखि नित फरकइ मोरी

कैकेयी का भाग्य पलट गया, उसे कुचाल प्यारी लगी। वह बगुली को हंसिनी मानकर उसकी सराहना करने लगी। (कैकेयी बोली—) मन्थरा ! सुन, तेरी बात सच है। मेरी दाहिनी आँख नित्य फड़का करती है।

दिन प्रति देखउँ राति कुसपने ❀ कहउँ न तोहि मोह बस अपने
काह करउँ सखि सूध सुभाऊ ❀ दाहिन बाम न जानउँ काऊ

१. नायब, सहकारी। २. पसीना। ३. दबाली।

मैं रोज रात को बुरे स्वप्न देखती हूँ। मोह-वश तुमसे नहीं कहती। सखी ! क्या करूँ, मेरा तो सीधा स्वभाव है। कौन दायाँ (अनुकूल) है, कौन बायाँ (प्रतिकूल), मैं कुछ नहीं जानती।

दो० अपनें चलत न आजु लगि अनभल काहुक कीन्ह।
केहिं अघ एकहि बार मोहि दैअँ दुसह दुखु दीन्ह २०

अपनी भरसक आजतक मैंने कभी किसी का कुछ नहीं बिगाड़ा। फिर न जाने किस पाप से मुझे दैव ने एक साथ ही यह दुःसह दुःख दिया।

नैहर जनमु भरब बरु जाई ❀ जियत न करबि सवति सेवकाई
अरि बस दैउ जियावत जाही ❀ मरनु नीक तेहि जीवन चाही[1]

भले ही मैं नैहर में जाकर वहीं जीवन बिता दूँगी, पर जीते जी सौत की चाकरी न करूँगी। दैव जिसको शत्रु के वश में रखकर जिलाता है, उसके लिये तो जीने की अपेक्षा मरना ही अच्छा है।

दीन वचन कह बहु बिधि रानी ❀ सुनि कुबरीं तियमाया ठानी
अस कस कहहु मानि मन ऊना[2] ❀ सुखु सोहागु तुम्ह कहुँ दिन दूना

रानी ने बहुत तरह से दीन वचन कहे। सुनकर कुबरी ने त्रिया-चरित्र फैलाया। कुबरी बोली—रानी ! तुम मन को छोटा करके ऐसा क्यों कह रही हो ? तुम्हारा सुख और सुहाग दिन-दिन दूना होगा।

जेहि राउर अति अनभल ताका ❀ सोइ पाइहि एहु फलु परिपाका
जब तें कुमत सुना मैं स्वामिनि ❀ भूख न बासर नींद न जामिनि

जिसने तुम्हारा बुरा चाहा है वही अन्त में इसका फल पायेगी। हे स्वामिनि ! मैंने जब से यह खोटी सलाह सुनी है, तब से मुझे न तो दिन में भूख लगती है और न रात में नींद ही आती है।

पूँछेउँ गुनिन्ह रेख तिन्ह खाँची ❀ भरत भुआल होहिं एह साँची
भामिनि करहु त कहौं उपाऊ ❀ है तुम्हरीं सेवा बस राऊ

मैंने ज्योतिषियों से पूछा तो उन्होंने रेखा खींचकर (गणित करके) कहा कि भरत राजा होंगे, यह सत्य है। हे भामिनि ! तुम करो, तो उपाय तो मैं बता दूँ; राजा तुम्हारी सेवा के वश में हैं ही।

---

१. अपेक्षा। २. छोटा, ग्लानि।

दो० — परउँ कूप तुअ बचन पर सकउँ पूत पति त्यागि ।
कहसि मोर दुखु देखि बड़ कस न करब हित लागि ॥

कैकेयी ने कहा—मैं तेरे कहने पर कुएँ में भी गिर सकती हूँ, पति और पुत्र को भी त्याग सकती हूँ। अरी ! जब तू मेरा बड़ा भारी दुःख देखकर कहती है, तो भला, मैं अपने हित के लिये उसे क्यों न करूँगी ?

कुबरी करी कुबलि कैकेई ❀ कपट छुरी उर पाहन टेई
लखइ न रानि निकट दुखु कैसें ❀ चरइ हरित तिन[1] बलि पसु जैसें

कुबरी ने कैकेयी को कुबलि का पशु बनाकर अपनी कपटरूपी छुरी को हृदयरूपी पत्थर पर टेया (धार को तेज़ किया)। रानी कैकेयी अपने पास के दुख को ऐसे नहीं देखती, जैसे बलिदान दिया जाने वाला पशु हरी-हरी घास चरता है (वह अपने निकट मरण को नहीं जानता)। (कुबलि इसलिये कहा कि मादा पशु की बलि नहीं दी जाती)।

सुनत बात मृदु अंत कठोरी ❀ देति मनहुँ मधु माहुर घोरी
कहइ चेरि सुधि अहइ कि नाहीं ❀ स्वामिनि कहिहु कथा मोहि पाहीं

मन्थरा की बातें सुनने में तो कोमल हैं, पर परिणाम में कठोर हैं। मानो वह शहद में घोलकर विष पिलार ही है। दासी मन्थरा कहती है—हे मालकिन ! तुमने जो कथा मुझसे कही थी, उसकी याद है कि नहीं ?

दुइ बरदान भूप सन थाती ❀ माँगहु आजु जुड़ावहु छाती
सुतहि राजु रामहि बनबासू ❀ देहु लेहु सब सवति हुलासू

तुम्हारे दो वरदान राजा के पास धरोहर हैं। आज उन्हें माँगकर छाती ठण्डी कर लो। पुत्र को राज्य और राम को वनवास दो और सौत का सारा आनन्द तुम ले लो।

भूपति राम सपथ जब करई ❀ तव माँगेहु जेहिं बचनु न टरई
होइ अकाजु आजु निसि बीतें ❀ बचनु मोर प्रिय मानेहु जी तें

जब राजा रामचन्द्र की सौगन्ध खा लें, तब वर माँगना, जिससे वे अपने वचन को टाल न सकें। आज की रात बीत गई, तो काम बिगड़ जायगा। मेरे वचन को जी-जान से प्यारा समझना।

---

१. तृण, घास।

दो० बड़ कुघातु करि पातकिनि कहेसि कोपगृहँ[1] जाहु।
काजु सँवारेहु सजग सबु सहसा जनि पतिआहु ।२२।

पापिनी मन्थरा ने बड़ी बुरी घात लगाकर कहा—कोप-भवन में जाओ। होशियारी से सब काम बना लेना, एकदम विश्वास न कर लेना।

कुवरिहि रानि प्रानप्रिय जानी ❀ बार बार बड़ि बुद्धि बखानी
तोहि सम हित न मोर संसारा ❀ बहे जात कइ भइसि[2] अधारा

रानी ने कुबरी को प्राणों के समान प्रिय समझा और बार-बार उसकी बुद्धि की सराहना की। (वह बोली—) संसार में तेरे बराबर मेरा हितकारी कोई दूसरा नहीं है। मुझे बही जाती हुई को तू सहारा मिल गई।

जौं बिधि पुरब[3] मनोरथ काली ❀ करौं तोहि चख पूतरि आली
बहु बिधि चेरिहि आदरु देई ❀ कोप भवन गवनी कैकेई

हे सखी! जो विधाता कल मेरा मनोरथ पूर्ण कर दें, तो मैं तुझे अपनी आँख की पुतली बनाऊँगी। इस प्रकार दासी को बहुत तरह से आदर देकर कैकेयी कोप-भवन में चली गई।

बिपति बीजु बरषा रितु चेरी ❀ भुइँ भइ कुमति कैकई केरी
पाइ कपट जलु अंकुर जामा ❀ बर दोउ दल दुख फल परिनामा

विपत्ति बीज है, दासी वर्षा-ऋतु है, कैकेयी की कुबुद्धि ज़मीन है, उसमें कपट-रूपी जल पाकर अंकुर फूट निकला। दोनों वरदान अंकुर के दो पत्ते हैं। अंत में दुख-रूपी फल फलेगा। [सांगरूपक अलंकार]

कोप समाजु साजि सबु सोई ❀ राजु करत निज कुमति बिगोई
राउर[4] नगर कोलाहलु होई ❀ यह कुचालि कछु जान न कोई

कोप का सब साज सजाकर कैकेयी कोप-भवन में जा सोई। राज्य कर रही थी, पर अपनी दुष्ट बुद्धि से नष्ट हो गई। राजमहल और नगर में धूम-धाम मच रही है, इस कुचाल को कोई कुछ नहीं जानता।

दो० प्रमुदित पुर नर नारि सब सजहिं सुमङ्गलचार।
एक प्रबिसहिं एक निर्गमहिं भीर भूप दरबार ॥२३॥

---

१. प्राचीन काल में राजभवनों में एक कोप-गृह भी होता था, जिसमें कुटुम्ब के जिस व्यक्ति को कुछ नाराजी होती थी, तो वह जा बैठता था। २. हुई। ३. पूरा करें। ४. राजा का महल।